स्वर्ण जयंती स्मारिका 2017

अखिल भारतीय मिथिला संघ (पंजी.)

जयतु मिथिला

जयतु मैथिली

50 वर्ष

अ.भा.मि.सं.

मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह

अखिल भारतीय मिथिला संघ (पंजी.)

SIS SECURITY
Security and Intelligence
Services (India) Limited

अखिल भारतीय मिथिला संघक
स्वर्ण जयंती आ
मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह 2017

(ज्योतिरीश्वर, विद्यापति, सलहेस, लोरिक, दीना-भद्री आ आओर प्रेरणा पुंज सबहक स्मृति)

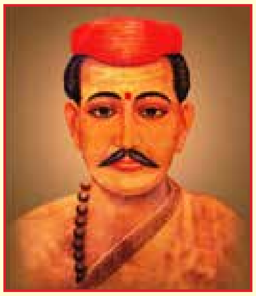
विद्यापति

ज्योतिरीश्वर

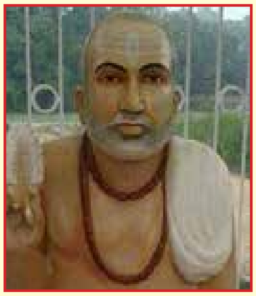
वाचस्पति मिश्र

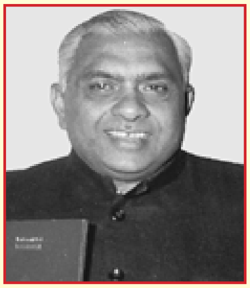
ललित ना. मिश्र

भोला पासवान शास्त्री

कर्पूरी ठाकुर

भोगेन्द्र झा

गुणानंद ठाकुर

भागवत झा आजाद

आर.पी. यादव

आदित्यनाथ झा

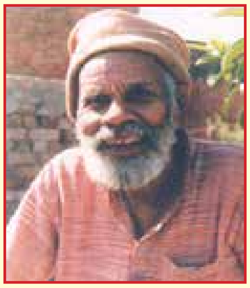
बाबा नागार्जुन

सुभद्र झा

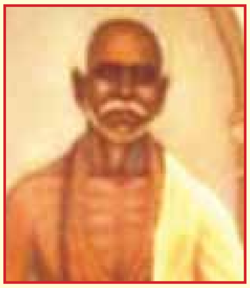
लाल दास

मणिपद्म

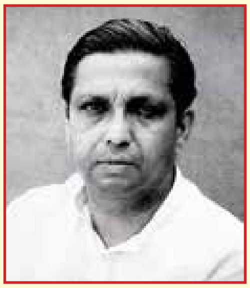
बिन्देश्वरी प्रसाद मंडल

आद्या झा

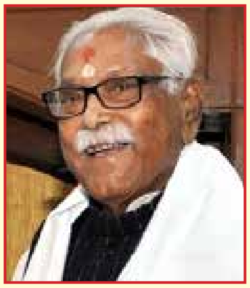
ताराकांत झा

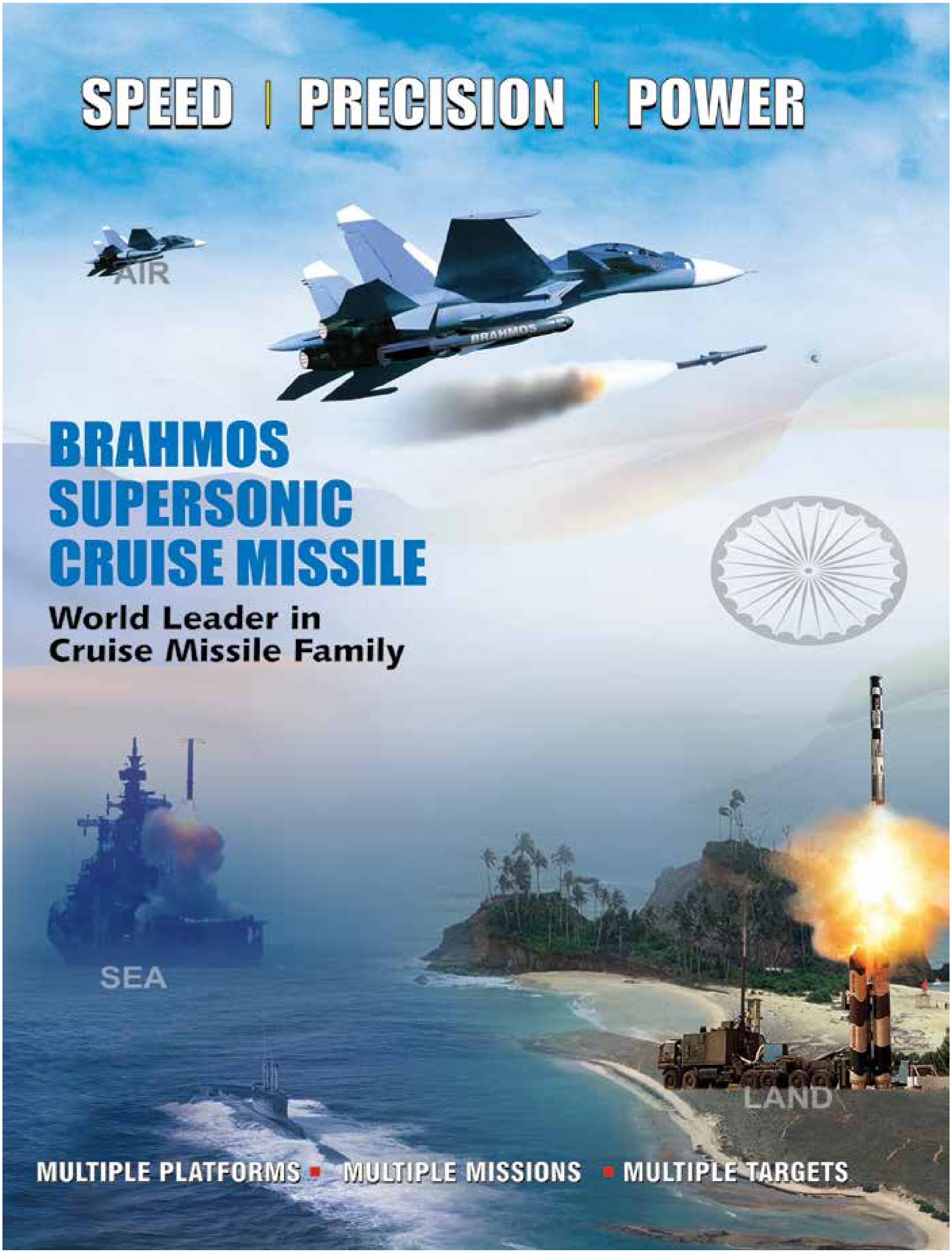
SPEED | PRECISION | POWER
AIR
BRAHMOS
BRAHMOS
SUPERSONIC
CRUISE MISSILE
World Leader in
Cruise Missile Family
SEA
LAND
MULTIPLE PLATFORMS ▪ MULTIPLE MISSIONS ▪ MULTIPLE TARGETS

प्रबंध संपादक
विजयचन्द्र झा
विद्यानंद ठाकुर

संपादन परामर्श
वीरेन्द्र मल्लिक

संपादक
ऋतेश पाठक

संपादक मंडल
प्रसून लतांत
विनीत उत्पल
रौशन कुमार झा
रमण कुमार सिंह
भास्कर ज्योति
डॉ. प्रवीण कुमार झा
त्रिपुरारि ठाकुर
गोविन्द कुमार झा

डिजाइनर
मणिशंकर कुमार

स्थायी पता
एच-435, गली नं. 7, ई-ब्लॉक,
संगम विहार, नई दिल्ली-110062
पत्राचार पता
एच-14-15, पुरानी सीमापुरी,
दिल्ली-110095
फोन:
9650461788, 9717539000
ईमेल
akhilbhartiyamithilasangh
@gmail.com

(उपरोक्त सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं)

की कतय अछि

शुभकामना संदेश 7-18

सफरनामा 19-50

बीतल जमाना 19
अखिल भारतीय मिथिला संघ कार्यकारिणी 20
स्वर्ण जयंती समारोह समिति 21
संपादकीय 23
संस्थाक गीत 24
प्रेरणा पुंज 25
अखिल भारतीय मिथिला संघ विविध वार्षिक सम्मान 30
साक्षात्कार : मिथिलाक सर्वांगीण विकास एकमात्र सपना: विजयचन्द्र झा / *विनीत उत्पल* 31
बाटक संगी 37
महासचिवक प्रतिवेदन 43
मीलक पत्थर 44
किछु खबरि 45
मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह 2016 46

विभूति खंड 51-100

ललित बाबू: एक विलक्षण व्यक्तित्व / *डॉ. जगन्नाथ मिश्र* 51
भोगेन्द्र झा: मिथिलाक अंतिम विदेह आ अंतिम देसिल बयना केँ प्रहरी / *डॉ. कैलाश कुमार मिश्र* 55
आर.पी. यादव: संक्षिप्त जीवनवृत्त / *सत्यप्रभा* 63

चौधरीजीक नामे पारलोकी पत्र / *लक्ष्मण झा 'सागर'* 65
आचार्य मंडन मिश्रः एकटा परिचय / *डॉ. तारानंद वियोगी* 69
षडदर्शन टीकाकार पं. वाचस्पति मिश्र / *प्रो. काशी नाथ झा* 75
मिथिला विभूति उदयनाचार्य / *डॉ. परमानन्द मिश्र* 79
युगप्रवर्तक चन्दा झा / *भीमनाथ झा* 81
परमहंस गोस्वामी लक्ष्मीनाथः एक परिचय / *प्रो. अरविन्द कुमार मिश्र 'नीरज'* 85
मणिपद्मः स्मृतिक किछु कण / *डॉ. शेफालिका वर्मा* 89
सब बंधन सँ मुक्त छलाह यात्री / *हेमेन्द्र मिश्र* 91
प्रचण्ड स्वाभिमानी कविः आरसी प्रसाद सिंह / *डॉ. परमानन्द मिश्र* 93
मैथिलीक ध्वजवाहकः प्रबोध नारायण सिंह / *विनीत उत्पल* 95
मंजूषा कलाक शान चक्रवर्ती देवी / *प्रसून लतांत* 98

विकास खंड 101-125

मिथिलाक सर्वांगीण विकासः दशा आओर दिशा / *राम कुमार झा* 101
मिथिलाक विकासः शिक्षा आ शिक्षार्थीक भूमिका / *भास्कर ज्योति* 105
मिथिलाक सामाजिक विकास / *डॉ. सविता झा खान* 109
मिथिला पेंटिंग आ मिथिलाक स्त्री विकास / *संजू दास* 113
कला आ उच्च शिक्षा मैथिलीक दशा / *विजयव्रत कंठ* 116
मिथिलामे सहकारिता दुग्ध उद्योग / *रत्नेश्वर झा* 117
आन्हर कुकुर, मारे तिड़पित / *रौशन कुमार झा* 119
वर्तमान मैथिल समाज पर सामाजिक संजालक प्रभाव / *मनीष झा 'बौआभाइ'* 121
नागदह पोखड़िक उद्भव आ वर्तमान / *संजय कुमार झा* 124

साहित्य खंड 129-175

साहित्य अकादेमी सँ आय धरि पुरस्कृत मैथिली पोथी सबहक सूची 129
सौन्दर्य सर्वेक्षण विद्यापतिक सौन्दर्य दर्शन / *डॉ. वीरेन्द्र मल्लिक* 133
वर्णरत्नाकरः मध्यकालीन मिथिलाक झांकी / *सुरेन्द्र राउत* 145
मैथिली नाट्य लेखनक स्थिति आ वर्तमान स्वरूप / *प्रकाश झा* 149

मैथिली अनुवाद कार्य, जेना हम बुझैत छियैक! / *रमाकान्त राय 'रमा'* 153
दू गोट मैथिली गजल / *प्रो. अरविन्द मिश्र 'नीरज'* 155
गोबरक दाम / *डॉ. गंगेश गुंजन* 157
अन्हार गलियारी / *गिरिजानन्द झा 'अर्धनारीश्वर'* 159
किछु चारिपतिया मिथिला नामे / *अमरनाथ झा* 163
नफरत / *रमण कुमार सिंह* 164
तों एक्के गोली सँ नञ मरि सकै छें, दोस... / *अरुणाभ सौरभ* 166
दू गोट कविता / *डॉ. सच्चिदानन्द पाठक* 167
दू गोट नवतुरिया कविता / *स्वाती शाकम्भरी* 168
दू गोट कविता / *विनीत उत्पल* 169
मिथिला-मैथिलीक लेल / *धीरेन्द्र कुमार झा* 170
डॉ. इन्द्रकान्त झाक किछु कविता / *डॉ. इन्द्रकांत झा* 171
दू गोट नवगीत / *शिव कुमार झा टिल्लू* 172
काव्य रंग / *कुमकुम झा, कल्पना झा, नीलमाधव चौधरी* 173
छुटकी / *मृणाल आशुतोष* 174
दू गोट बीहनि कथा / *घनश्याम घनेरो* 175

संस्कृति खंड 177-195

पुनौरा धाम / *सिद्धार्थ झा* 177
सिमरियामे 1411 साल बाद महाकुंभ / *हितेन्द्र गुप्ता* 179
मिथिलाक चित्रकला: कोबर आ अरिपन / *राकेश झा* 181
सामा-चकेवा / *धर्मव्रत चौधरी* 185
ककर दोख / *अरूण कुमार यादव* 186
विविध संस्कार: किछु गीत / *मनोरमा देवी* 188
पाबनि - तिहार / *पं. रामानन्द ठाकुर* 190
सामान्य पर्वादिक मन्त्र / *पं. श्री भवनाथ झा* 192
अन्य व्यवहारिक एवम् सांस्कारिक मन्त्र / *पं. श्री भवनाथ झा* 194
लेखा - जोखा 196

अखिल भारतीय मिथिला संघक

स्वर्ण जयन्ती समारोह

वास्ते

दिश सं

बहुत रास शुभकामना

सत्यमेव जयते

भारत के उपराष्ट्रपति

VICE-PRESIDENT OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि 24 दिसंबर, 2017 को नई दिल्ली में मिथिला-मैथिली के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए प्रतिबद्ध अखिल भारतीय मिथिला संघ के स्वर्ण जयंती महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है तथा इस शुभ अवसर पर संघ की ओर से एक भव्य स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है जो कि एक सराहनीय प्रयास है।

मिथिला आरंभ से राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय चेतना एवं राजनीतिक संघर्ष का केन्द्र बिंदू रहा है। दक्षिण में गंगा, उत्तर में हिमालय वन, पश्चिम में गंडक तथा पूरब में कोसी तक फैले मिथिला में प्राचीन लोकनाटक, लोक संगीत व लोक संस्कृति की परंपरा रही है। देश की राजधानी दिल्ली में लगभग 40 लाख मैथिली लोग रहते हैं। अखिल भारतीय मिथिला संघ स्वयं में ज्ञनोत्कर्ष के साधक के रूप में अग्रसरित होता प्रतीत होता है।

यह संघ अपने सभी लक्ष्यों की सिद्धि हेतु सदैव प्रवृत्त रहेगा, ऐसी हमारी आशा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अखिल भारतीय मिथिला संघ भविष्य में एक उत्कृष्ट बौद्धिक वर्ग के अन्वेषण और निर्माण में एक अन्यतम संस्था के रूप में उभरकर सामने आएगा।

मैं, अखिल भारतीय मिथिला संघ के समस्त पदाधिकारियों/कर्मचारियों के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं। मैं आयोज्यमान "स्वर्ण जयंती महोत्सव" एवं प्रकाश्यमान "स्मारिका" की सफलता हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूं।

(एम. वेंकैया नायडु)

नई दिल्ली
27 नवंबर, 2017

सत्यमेव जयते

अध्यक्ष, लोक सभा
SPEAKER, LOK SABHA

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि अखिल भारतीय मिथिला संघ अपनी स्थापना के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का आयोजन दिनांक 24 दिसम्बर 2017 को नई दिल्ली में करने जा रहा है। यह संस्था मैथिली भाषा एवं संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन के कार्य में पिछले पचास वर्षों से सक्रिय है। मैथिली भाषा का गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। राजनीतिक, साहित्यिक, सामाजिक, कला एवं संस्कृति से संबंधित सभी क्षेत्रों में मिथिलावासियों ने अपनी प्रतिभा, लगन, मेहनत एवं समृद्ध संस्कृति की छाप छोड़ी है।

मैं इस संस्था के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के शुभ अवसर पर समस्त मिथिला समाज को बधाई देती हूं एवं इस अवसर पर प्रकाशित की जाने वाली स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करती हूं।

(सुमित्रा महाजन)

श्री प्रभात झा
स्वागताध्यक्ष एवं सांसद, राज्य सभा
अखिल भारतीय मिथिला संघ
एफ-14-15, पुरानी सीमापुरी
दिल्ली-110095

डॉ. हर्ष वर्धन
DR. HARSH VARDHAN

मंत्री
विज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी विज्ञान ;
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन
भारत सरकार
नई दिल्ली - 110001
MINISTER
SCIENCE & TECHNOLOGY AND EARTH SCIENCES ;
ENVIRONMENT, FOREST AND CLIMATE CHANGE
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI - 110001

सत्यमेव जयते

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि 'अखिल भारतीय मिथिला संघ' अपनी 50 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव, का आयोजन 24 दिसम्बर, 2017 को तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली में किया जा रहा है। इस अवसर पर स्मारिका का भी प्रकाशन किया जा रहा है।

मेरी ओर से इस आयोजन से जुड़े सभी लोगों को हार्दिक धन्यवाद।

(डॉ. हर्ष वर्धन)

209, अनुसंधान भवन, 2, रफी मार्ग, नई दिल्ली–110001 दूरभाष : +91–11–23316766, 23714230, फैक्स : +91–11–23316745
209, Anusandhan Bhawan, 2, Rafi Marg, New Delhi-110001 Ph.: +91-11-23316766, 23714230; Fax: +91-11-23316745

चतुर्थ तल, आकाश विंग, पर्यावरण भवन, जोर बाग, नई दिल्ली–110003 दूरभाष : +91–11–24695136 फैक्स : +91–11–24695329
4th Floor, Aakash Wing, Paryavaran Bhawan, Jor Bagh, New Delhi-110003 Ph.: +91-11-24695136 Fax: +91-11-24695329

डॉ. जगन्नाथ मिश्र
पूर्व मुख्यमंत्री (बिहार)
एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री

शुभकामना - संदेश

अत्यधिक हर्षित ओ आह्लादित भेलहुं ई जानि जे अखिल भारतीय मिथिला संघ, दिल्लीक पचासम वर्ष पूर्ण भेला पर स्वर्ण जयंती समारोहक आयोजन ताल कटोरा स्टेडियममे कएल जायत एवं मिथिला विभूति स्मृति पर्व सेहो मनाओल जायत। अपन मिथिलाक विस्तार आब देश-विदेशमे कतिपय रूपमे भऽ चुकल अछि। निस्संदेह अपन मातृभाषा मैथिली एवं मिथिलाक ऐतिहासिक समृद्ध संस्कृति सर्वत्र संरक्षित होइत रहत। मिथिला चित्रकलाक संग-संग मैथिली भाषाक गरिमा संरक्षित, विस्तारित एवं समृद्ध-संपन्न करबामे स्व॰ ललित बाबू पूर्व रेलमंत्री, भारत सरकारक स्वर्णाक्षरमे उल्लेखनीय ऐतिहासिक योगदान चिरकाल धरि समस्त मिथिला, मैथिल, मैथिली ओ मिथिला सांस्कृतिक अनवरत उत्थान आ संवर्द्धनमे प्रेरणा कें अजस्त्र स्रोत बनल रहत। एहि क्रममे संस्था कें सक्रिय रूपमे दृढ़ता आ प्रतिष्ठा दियेबामे, एकर कार्यक्रम कें सफल बनेवामे जाहि महानुभाव लोकनिक अविस्मरणीय सेवा सर्वविदित अछि ओ लोकनि धन्यवाद संग बधाईक पात्र तऽ छथिहे, ओहि उत्कृष्ट कोटिक किछु नाम हमरा जनैत एहि संस्थाक प्रसंगमे लिखबाक जोकर अछि, जेना, माननीय भूतपूर्व सांसद स्व॰ भोगेन्द्र झा, पूर्व केन्द्रीय मंत्री स्व॰ चतुरानंन मिश्र आदि तथा माननीय सांसद स्व॰ आर॰पी॰ यादव एहि संस्थाक एहन महत्वपूर्ण संचालक भेलनि, जे संस्था हुनका संत्तति अवश्य मोन राखत।

त्रिनिनाद, मॉरिशस आदि देशमे जेना भारतीय संस्कृति विभिन्न रूपमे संरक्षित अछि, तहिना देश-विदेशक मैथिल लोकनि सं मिथिलाक संस्कृति संरक्षित रहत, ई हमर दृढ विश्वास अछि। अखिल भारतीय मिथिला संघ निश्चित रूपमे मिथिला संस्कृति, मिथिलाक सभ कला एवं संस्कृति कें प्रतिष्ठित-संरक्षित करबामे उदाहरणीय भूमिका संपादित कऽ रहल अछि, एहू सँ हमर उक्त आशा अत्यधिक प्रस्फुटित भेल अछि। ई विदित अछि जे उक्त पर्व समारोहक अवसर पर एक स्मारिका कें प्रकाशन सेहो संकल्पित अछि।

अस्तु! उक्त आयोजनक संग स्मारिकाक सफल प्रकाशनक लेल हमर हार्दिक शुभकामना स्वीकार कएल जाय।

असीम शुभकामनाक संग

भवदीय

(जगन्नाथ मिश्र)

सत्यमेव जयते

वसुन्धरा राजे

मुख्यमंत्री राजस्थान

संदेश

हर्ष का विषय है कि अखिल भारतीय मिथिला संघ अपनी स्थापना के पचास वर्ष पूरे होने के अवसर पर स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन कर रहा है और इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

मिथिला–मैथिली के संरक्षण और मिथिला विभूति सम्मान समारोह जैसा प्रयासों से मिथिला की संस्कृति साहित्य और भाषा संवर्धित होगी, ऐसी आशा है।

अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा आयोजित स्वर्ण जयंती समारोह मिथिलावासियों के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देगा।

मैं समारोह की सफलता और स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करती हूं।

वसुन्धरा राजे

(वसुन्धरा राजे)

योगी आदित्यनाथ

लाल बहादुर शास्त्री भवन,
लखनऊ

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

दिनांक : 03-12-2017

संदेश

हर्ष का विषय है कि अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा अपनी स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में दिनांक 24 दिसम्बर, 2017 को नई दिल्ली में स्वर्ण जयन्ती महोत्सव आयोजित किया जा रहा है। इस पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जाएगी।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाएं समाज में चेतना जागृत करके सौहार्द एवं सामाजिक समरसता को सुदृढ़ करती हैं। इसके दृष्टिगत संस्था द्वारा मिथिला–मैथिली के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए किया जा रहा प्रयास सराहनीय है। मुझे विश्वास है कि अखिल भारतीय मिथिला संघ भविष्य में भी इसी प्रकार समाज सेवा हेतु तत्पर रहेगा।

आयोजन की सफलता एवं स्मारिका के उद्देश्यपरक प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(योगी आदित्यनाथ)

सी.के.मिश्रा
C.K.Mishra

सत्यमेव जयते

सचिव
भारत सरकार
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय
SECRETARY
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF ENVIRONMENT, FOREST & CLIMATE CHANGE

शुभकामना सन्देश

अखिल भारतीय मिथिला संघक स्वर्ण जयंती समारोहक आयोजन २४ दिसम्बर २०१७ क दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में भ रहल अछि |इ समारोह मिथिलावासी लोकनि के वास्ते मिथिलाक संस्कृति एवं लोक कला के जानक लेल बढ़िया स्रोत अछि |समारोहक अवसर पर स्मरिकाक प्रकाशन सेहो होयत |हम हृदय स समारोहक सफलताक लेल अखिल भारतीय मिथिला संघक पदाधिकारी लोकनि के शुभकामना दैत छियनि|

(सी के मिश्र)

इंदिरा पर्यावरण भवन, जोर बाग रोड, नई दिल्ली-110 003, फोन : (011) 24695262, 24695265 फैक्स : (011) 24695270
INDIRA PARYAVARAN BHAWAN, JOR BAGH ROAD, NEW DELHI-110 003, TEL. :(011) 24695262, 24695265 Fax :(011) 24695270,
E-mail : secy-moef@nic.in, Website : moef.gov.in

विनोद नारायण झा
मंत्री
लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग
बिहार, पटना

बिहार सरकार

कार्या०:- विश्वेश्वरैया भवन, बेली रोड, पटना
दूरभाष : 0612-2545180 (का.)
फैक्स : 0612-2545181 (का.)
मोबाईल: 9431815798
ई-मेल : ministerphed0099@gmail.com

पत्रांकः 419

दिनांक : 05.12.17

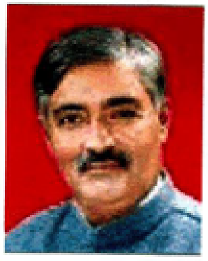

शुभकामना संदेश

ई जानि क अत्यन्त प्रशन्नता भेल जे अखिल भारतीय मिथिला संघ, दिल्ली अपन गौरवमयी परम्परा के अनुरूप 24 दिसम्बर, 2017 क तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली में अपन स्थापना के पचास वर्ष पूर्ण हेवाक उपलक्ष में स्वर्ण जयन्ती महोत्सव क आयोजन करय जा रहल अछि। मिथिला संघ अपन संस्कृति एवं मैथिली भाषा के संरक्षण तथा सम्वर्धन हेतु सतत् प्रयत्नशील रहल अछि। इ कार्यक्रम ताहि दिशा में महत्वपूर्ण डेग प्रमाणित होयत–से विश्वास अछि।

मिथिला क धरती प्राचीण काल स महान विभूति सवहक धरती रहल अछि। राजा जनक, याज्ञवल्क, मंडन–भारती, गार्गी, मैत्रेयी, कपिल, कणाद, कालीदास, आयाची, ज्योतीश्वर, महाकवि विद्यापति, वाचस्पति सहित अनेक विद्वान क इ जन्म धरती रहल अछि। कवि कोकिल विद्यापति क गीत पिछला 600 वर्ष स आई धरि सम्पूर्ण देश–दुनियाँ के प्रभावित करैत रहल अछि।

एहि अवसर पर संस्था स्मारिका क प्रकाशन क निर्णय से हो लेलक अछि। इ प्रशंसनीय अछि। एहि स्मारिका क माध्यम स मिथिला आ मैथिली क गौरवमयी इतिहास, परम्परा एवं महान संस्कृति क जानकारी सम्पूर्ण देश में जन–जन तक पहुँचत से आशा अछि। हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे स्मारिका पठनीय एवं संग्रहणीय होयत।

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के आयोजन हेतु आहाँ सब धन्यवाद के पात्र छी। स्मारिका के सफल प्रकाशन तथा सम्पूर्ण आयोजन के सफलता हेतु हमर हार्दिक शुभकामना प्रेषित अछि।

शुभकामनाक संग

भ व दी य

विनोद नारायण 5.12.2017

(विनोद नारायण झा)

सेवा में,
श्री विद्यानंद ठाकुर,
स्वागत सचिव,
अखिल भारतीय मिथिला संघ (पंजी0)

महाबल मिश्रा
पूर्व सांसद
(लोक सभा)

Mahabal Mishra
Ex. Member of Parliament
(Lok Sabha)

सत्यमेव जयते

मकान नं. 86, गली नं. 2,
वैशाली डाबडी, पालम रोड
नई दिल्ली-110045
फोन नं. (आ.) 25380005 (निवास) 2539000

H.N0.-86, Gali No.-2, Vaishali Dabri
Palam Road, New Delhi-110045
Cell. : 9811289600, 9958095781, 90131801

सुभकामना संदेश

दिनांक : 30.11.2017

सेवा में ,
श्री विजय चंद्र झा
अखिल भारतीय मिथिला संघ
नई दिल्ली

हमरा ई जानि अति प्रसन्नता भ ' रहल अछि जे अखिल भारतीय मिथिला संघ अपन स्वर्ण जयंती समारोह आगामी 24-12-2017 क ' मनाब ' जा रहल अछि ! विद्यापति, बाबा नागार्जुन, लोरिक, सलहेस, भोगेन्द्र झा इत्यादिक स्मृतिमे मनाओल जा रहल एहि पर्वमे स्मारिका एवं कार्यक्रमक सफलता हेतु हमर सुभकामना अर्पित अछि ! संस्थासं हम स्वयं जुडिक' एकर एक कार्यकर्ताक रूपमे अपन माटि - पानी एवं भाषा हेतु सतत संघर्षशील रहलहुँ ! हम पुनश्च एक बेर एहि कार्यक्रमक सफलता हेतु सुभकामना दैत छी !

धन्यवाद

(महाबल मिश्रा)

दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी

دہلی پردیش کانگریس کمیٹی

DELHI PRADESH CONGRESS COMMITTEE

AJAY MAKEN
President

दिनांक – 17.11.2017

प्रिय विद्यानन्द ठाकुर जी,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अखिल भारतीय मिथिला संघ, अपनी गौरवमयी परम्परा को निभाते हुए इस वर्ष 24 दिसम्बर 2017 को अपनी 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में **स्वर्ण–जयंती महोत्सव** का आयोजन तालकटोरा स्टेडियम में करने जा रहा है।

यह अत्यंत हर्ष की बात है कि स्वर्ण–जयंती महोत्सव के ऐतिहासिक अवसर पर पुरी पीठाधीश्वर श्रीमज्जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती जी महाराज ने दर्शन व आर्शीवाद देना स्वीकार कर लिया है।

मैं इस ऐतिहासिक अवसर पर मिथिलावासियों को अपनी शुभकामनाएं देता हूँ और स्वर्ण–जयंती समारोह के सफल आयोजन की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

आपका

अजय माकन

अजय माकन

श्री विद्यानन्द ठाकुर,
स्वागत सचिव,
अखिल भारतीय मिथिला संघ,
एच 14–15, पुरानी सीमापुरी
दिल्ली – 110095

आत्मा राम सनातन धर्म कॉलेज
ATMA RAM SANATAN DHARMA COLLEGE

ACCREDITED GRADE 'A' BY NAAC

(दिल्ली विश्वविद्यालय) (University Of Delhi)

धौलाकुआँ, नई दिल्ली-110021 DHAULA KUAN, NEW DELHI - 110021

फोन / Phone : (+91) (11) 24113436, 24117508 फैक्स / Fax : (+91) (11) 24111390

web : www.arsdcollege.net

संदर्भ सं / Ref. No. .... दिनांक/ Date 12.12.2017

शुभकामना संदेश

ई अति प्रसन्नताक बात थिक जे मैथिलीक लब्धप्रतिष्ठित संस्था 'अखिल भारतीय मिथिला संघ' अपन स्वर्ण जयंती समारोह दिनांक 24 दिसम्बर 2017 के तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली मे मानब' जा रहल अछि। मिथिला मैथिलीक उत्थान ओ उन्नतिक लेल 'अखिल भारतीय मिथिला संघ' सतत प्रयत्नशील रहल अछि। अहि संस्थाक अतीत में उपलब्धि उल्लेखनीय रहल छैक आ वर्तमान में एकर गतिविधि सतत होइत रहैत अछि। हमर शुभकामना अछि जे भविष्य में सेहो ई संस्था अपन गतिविधि कें जारी रखैत अनेको कीर्तिमान स्थापित करत।

शुभास्ते पंथानः संतु!

भवदीय

डॉ. ज्ञानतोष कुमार झा

प्राचार्य

सेवा मे,

श्रीयुत विजय चन्द्र झा

अध्यक्ष

अखिल भारतीय मिथिला संघ (पंजी)

विवेक कुमार सिंह, भा०प्र०से०
प्रधान सचिव
राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग
बिहार सरकार
मुख्य सचिवालय, पटना–800015

बिहार सरकार

दूरभाष : 0612-2215259
फैक्स : 0612-2235811
0612-2235138
ई–मेल : revenuebihar@gmail.com

शुभकामना सन्देश

आदरणीय विजय चद्र झाजी,

अपनेक आग्रहपत्र प्राप्त भेल। हमरा ई जानि अति प्रसन्नता भ रहल अछी जे अखिल भारतीय मिथिला संघ आगामी 24 दिसम्बर 2017 क, स्वर्ण जयंती समारोह मनाब जा रहल अछी। अहाँ के शत शत बधाई, अपनेक संगठन मिथिला और मैथिलि के लेल जे काज कएल जा रहल अछी. ऊ सराहनीय एवं उत्कृष्ट अछी। संस्था स हम स्वयं जुडी क एकर एक कार्यकर्त्ताक रूप में अपन माटी–पानी एवं भाष हेतु सतत संघर्षशील रहलौं।

हमसब मिथलावाशी जे प्रवासी छी, सदैव अपनेक संगे छी। हम पुनश्च एक बेर एहि कार्यक्रमक सफलता हेतु शुभकामना देत छी।

18.12.17

विवेक कुमार सिंह
प्रधान सचिव।

अखिल भारतीय मिथिला संघक किछु गतिविधि: 1988

वर्ष 1988 मे अखिल भारतीय मिथिला संघक समारोहमे उपस्थित दर्शक गण आ मुस्तैद कार्यकर्ता

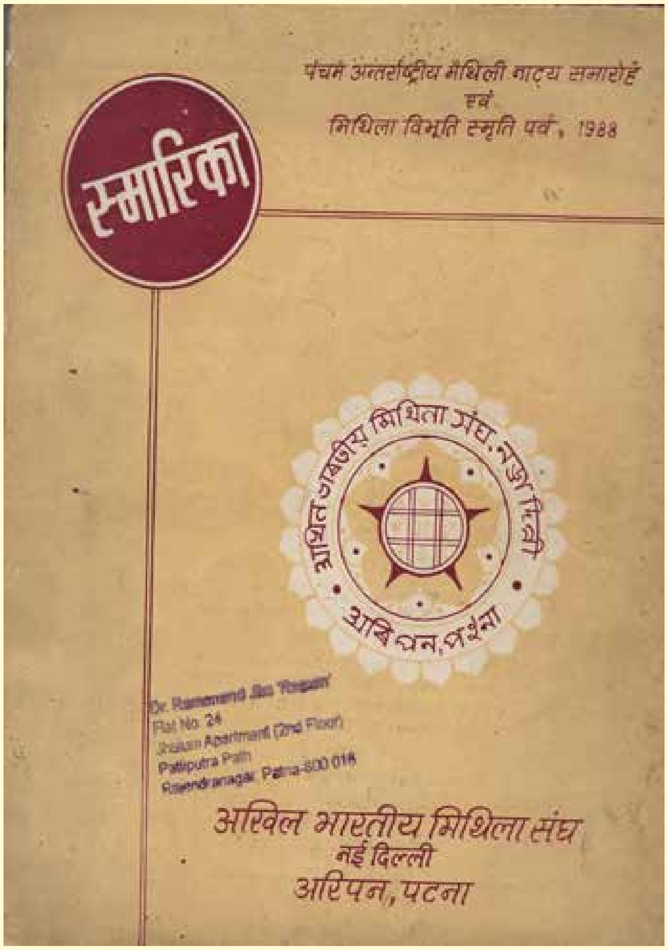

पंचम अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाट्य समारोह
एवं
मिथिला विभूति स्मृति पर्व, 1988

स्मारिका

Dr. Ramanand Jha 'Raman'
Flat No. 24
Jhelum Apartment (2nd Floor)
Patliputra Path
Rajendranagar Patna-800 016

अखिल भारतीय मिथिला संघ
नई दिल्ली
अरिपन, पटना

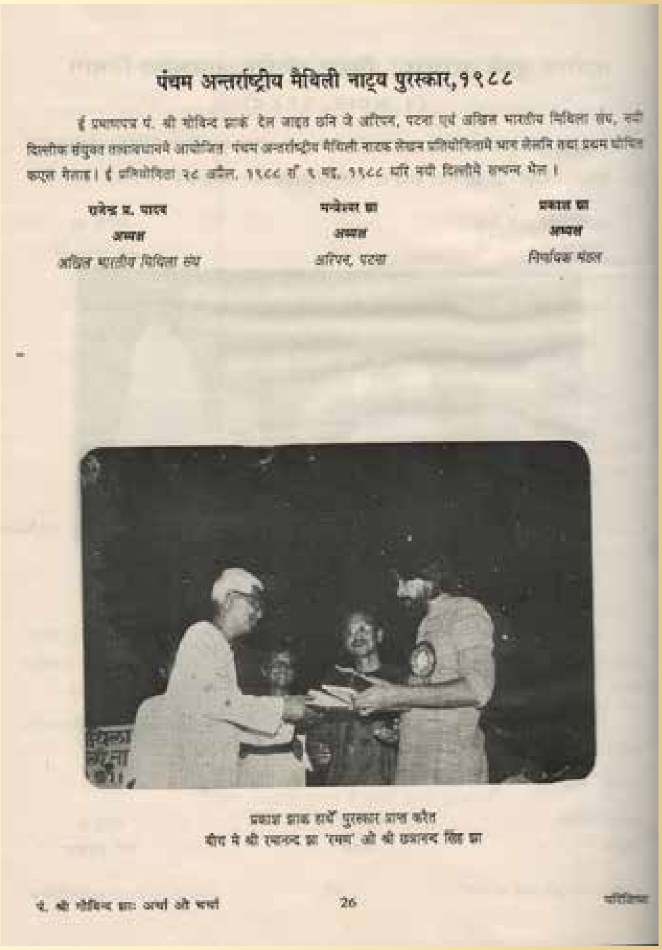

पंचम अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाट्य पुरस्कार, १९८८

ई प्रमाणपत्र पं. श्री गोविन्द झाक देल जाइत छनि जे अरिपन, पटना एवं अखिल भारतीय मिथिला संघ, नयी दिल्लीक संयुक्त तत्वावधानमे आयोजित पंचम अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक लेखन प्रतियोगितामे भाग लेलनि तथा प्रथम घोषित कएल गेलाह। ई प्रतियोगिता २८ अप्रैल, १९८८ सँ ६ मइ, १९८८ धरि नयी दिल्लीमे सम्पन्न भेल।

राजेन्द्र प्र. यादव	मन्त्रेश्वर झा	प्रकाश झा
अध्यक्ष	अध्यक्ष	अध्यक्ष
अखिल भारतीय मिथिला संघ	अरिपन, पटना	निर्णायक मंडल

प्रकाश झाक हाथेँ पुरस्कार प्राप्त करैत
बीच मे श्री रमानन्द झा 'रमण' ओ श्री छत्रानन्द सिंह झा

पं. श्री गोविन्द झा: अर्चा ओ चर्चा 26 परिशिष्ट

इतिहासक झलक: दस्तावेजक नजरिमे

अखिल भारतीय मिथिला संघ
कार्यकारिणी

अध्यक्ष
श्री विजय चन्द्र झा (9650461788)

उपाध्यक्ष

श्री पवन कुमार सिंह यादव	9810553119, 01127857765
श्री हेमचंद्र झा	9835211953
श्री अनिल झा	9868410643, 01128053286
श्री राकेश रमण झा	9810644976
डॉ. ममता ठाकुर	9717258787

महासचिव

श्री परमेश्वर सिंह	9968216711
श्री शम्भु नाथ मिश्र	8800426656
श्री विद्यानंद ठाकुर	9717539000
श्री राधानाथ झा	9971034185

कोषाध्यक्ष

श्री शीतलकांत झा	9717241189

सचिव

श्री ऋषि कुमार झा	9560306681, 9312919334
श्री यन्त्र नाथ मिश्र	9873346849
श्री अमरनाथ झा (फरीदाबाद)	9213367892
श्री घूरण झा	01126516117
श्री शुभ नारायण झा	9891830976
श्री नन्द कुमार झा	9999635196
श्री रौशन कुमार झा	9350216092

कार्यकारिणी सदस्य

डॉ. संजीव मिश्र	9871278809
श्री त्रिपुरारी कुमार ठाकुर	9718608191
श्री विनीत उत्पल	9911364316
डॉ. प्रवीण कुमार झा	9868330336
श्री लक्ष्मेश्वर तिवारी	8826847709
श्री सर्वनारायण मिश्र	01127915589
श्री जगन्नाथ झा	9810835117
श्री अरुण कुमार यादव	9810655246
श्री राज किशोर झा (गुजरात)	9227236855
श्री आशुतोष झा	9310332533
श्री विश्वमोहन झा	9811423665
डॉ. प्रकाश झा	9811774106
श्री ऋतेश पाठक	9213152822
श्री अरविंद पासवान	9810996557
श्री संजीव झा	9818789902
श्री सरोज झा (मुम्बई)	9820785991
श्री प्रेमकान्त चौधरी	9435342658

अखिल भारतीय मिथिला संघ
स्वर्ण जयंती समारोह समिति

मुख्य संरक्षक

श्री आर.के. सिन्हा, सांसद, राज्यसभा

सहसंरक्षक

श्रीमती ज्ञानसुधा मिश्रा, पूर्व न्यायाधीश, सर्वोच्च न्यायालय

संरक्षक

डॉ. बिंदेश्वर पाठक, पद्म विभूषण

श्री आलोक झा, आयुक्त, कस्टम आओर उत्पाद शुल्क

श्री उदित नारायण झा, पद्म विभूषण

श्री वीरेन्द्र मल्लिक, मैथिली साहित्यकार

स्वागताध्यक्ष

श्री प्रभात झा, सांसद, राज्यसभा एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, बीजेपी

उपस्वागताध्यक्ष

श्री संजय झा, पूर्व विधायक एवं राष्ट्रीय महासचिव, जेडीयू

स्वागत समिति

श्री विजयचंद्र झा, अध्यक्ष, अखिल भारतीय मिथिला संघ
श्री विद्यानन्द ठाकुर, महासचिव, अखिल भारतीय मिथिला संघ
श्री हुकुमदेव नारायण यादव, सांसद, लोकसभा
श्री सुखदेव पासवान, पूर्व सांसद
श्री महाबल मिश्र, पूर्व सांसद
श्री वीरेन्द्र कुमार चौधरी, सांसद, लोकसभा
श्री मनोज तिवारी, सांसद, लोकसभा
श्री देवेश चंद्र ठाकुर, विधायक, बिहार विधान, काउंसिल
श्री संजीव झा, विधायक, दिल्ली विधानसभा
श्री इंदुशेखर झा,
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, पॉवरग्रिड कॉरपोरेशन

श्री मनन कुमार मिश्रा, अध्यक्ष, बारकाउंसिल ऑफ इंडिया
श्री बलवंत शास्त्री,
सदस्य, राजभाषा समिति, पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय
श्री मानस बिहारी वर्मा, वैज्ञानिक, डीआरडीओ
डॉ. संदीप झा, शिक्षाविद
श्री संत चौधरी, शिक्षाविद
श्री दयानन्दराय, उद्योगपति
श्री प्रकाश झा, फिल्म निर्देशक
डॉ. संजीव मिश्रा, वित्तीय सलाहकार, एनएसजी एवं सीआरपीएफ
श्री संजय झा, भारतीय पुलिस सेवा
श्री कुंजबिहारी, गायक

स्वागतातुर: समस्त पदाधिकारी आ कार्यकारिणी सदस्यगण, अखिल भारतीय मिथिला संघ

अखिल भारतीय मिथिला संघ
स्वर्ण जयंती समारोह समिति

अन्य उपसमिति

वित्तीय उपसमिति
1. श्री प्रभात झा, सांसद, राज्यसभा
2. श्री विजय चंद्र झा, अध्यक्ष, अ.भा.मि.सं.
3. श्री विद्यानंद ठाकुर, महासचिव, अ.भा.मि.सं.
4. श्री संजय झा, पूर्व एमएलसी, बिहार
5. श्री राधानाथ झा
6. श्री शीतलकांत झा
7. श्री वरुण चौधरी, आजादपुर

सांस्कृतिक आयोजन हेतु उपसमिति
8. अवनींद्र ठाकुर (संयोजक)
9. डॉ. प्रकाश झा
10. श्री ऋषि कुमार झा 'मलंगिया'
11. शुभनारायण झा

प्रचार-प्रसार उपसमिति
1. श्री सिद्धार्थ झा (संयोजक)
1. डॉ. प्रवीण कुमार झा, उपसंयोजक
2. श्री शंभुनाथ मिश्र
3. श्री के.एन. झा, पालम
4. श्री अनिल झा, बुरारी
5. श्री हेमंत झा, बुरारी
6. श्री मनोज ठाकुर, साहाबाद
7. श्री अरुण पंजियार
8. पंडित कौशल कुमार झा
9. श्री शैलेंद्र मिश्र, नोएडा
10. श्री सुधीर कुमार झा
11. श्री तपन झा, बुरारी
12. श्री रंजीत झा, किराड़ी

स्मारिका उपसमिति
1. ऋतेश पाठक (संयोजक)
2. डॉ. प्रवीण कुमार झा
3. श्री रोशन कुमार झा
4. श्री रमन कुमार सिंह
5. श्री भास्कर ज्योति
6. श्री विनीत उत्पल

आईटी सेल उपसमिति
1. श्री अरुण कुमार यादव (संयोजक)
2. श्री गोविन्द कुमार झा (उप-संयोजक)
3. श्री त्रिपुरारी ठाकुर
4. सुश्री मनीषा झा
5. श्री सुधीर झा
6. श्री गणेश झा

खान-पान उपसमिति
1. श्री अनिल कुमार झा, संयोजक
2. श्री तपन झा, उपसंयोजक
3. श्री गणेश झा, बदरपुर
4. श्री सुधीर झा, विपिन गार्डन
5. श्री राजभूषण झा

आयोजन समिति

1. नवोनाथ मिश्र
2. योगनाथ मिश्र
3. नीतेश कुमार झा
4. विनोद झा
5. गजेन्दर जी
6. मनोज झा
7. राहुल झा
8. नेहा मिश्र
9. मोनू मिश्र
10. जगन्नाथ झा
11. चन्द्रभूषण मिश्र
12. आशुतोष झा
13. कौशल झा
14. रौशन झा
15. अजय कुमार झा
16. संजय झा
17. उमेश चन्द्र
18. मदन कुमार झा
19. संजय कुमार झा
20. नरेन्द्र मिश्र
21. पवन सिंह यादव
22. कौशल झा
23. पवन कुमार
24. प्रमोद कुमार यादव
25. विनय कुमार झा
26. अशोक कुमार ठाकुर
27. ललन झा
28. सरोज कुमार झा
29. अर्जुन झा
30. दिगंबर झा
31. मनोज ठाकुर
32. उज्ज्वल कुमार मिश्र
33. विरेन्द्र मिश्र
34. डॉ. ममता ठाकुर
35. शुभनाथ मिश्र
36. अनिल झा
37. चंदन चौधरी
38. सुभाष झा

संपादकीय

जाहि देश-प्रदेशमे हर पाँचम वर्ष चुनावक रंग देखि राज-समाजक सुर बदलि जाएत होय, ताहि देश-प्रदेशमे कोनो एक विषयकेँ पचास वर्ष धरि जीयत रहब अपना-आपमे एकटा बड्ड पैघ घटना कहल जा सकैत अछि। तें विश्वास करू जे आय आंहु एकटा इतिहासक साक्षी बनि गेल छी। मिथिला, मैथिली आ मैथिल संस्कृतिक संरक्षण-संवर्द्धनक उद्घोष करैत शुरू भेल संस्था अखिल भारतीय मिथिला संघ आय अपन पचासम वर्षमे प्रवेश क' रहल अछि। सबसँ बढ़िक' खुशीक आ आत्मविश्वासर्वद्धक गप ई अछि जे ताहिकालमे एहि संघर्षक आरंभ केनिहार लोकनिमेसँ किछु गोटे आय धरि ओहिना कन्हा सँ कन्हा मिला मजगूतीसँ ठाढ़ छथि।

ओना अहां कहि सकैत छी, जे, जों एकहि टा ध्येय आधा सदी धरि जीबैत रहल तखन संघर्ष की? मुदा गप एहन नञ। ई ध्येय एतेक विशाल अछि जे एहिमे नित-नूतन आयाम जुटले जाइछ। आ खाली अखिल भारतीय मिथिला संघ कियेक, कतेको रास संगठन एहि दिशामे अपना संपूर्ण ताकत झोंकने छथि। रेल लाइनसं अष्टम् अनुसूचि धरि प्रगति, अरिपनसं गोसाउनि धरि स्मृति, हेरायत-भुतलायत ऐतिहासिक विरासत, माय मैथिलीक प्रतिभा सबहक संरक्षण... आ एहन कतेको रास काज। एहि महायज्ञमे किछु आहुतिक सौभाग्य एहि संगठनक हिस्सामे सेहो आयल। अखिल भारतीय मिथिला संघ केर स्थापनाक पाछु लक्ष्य सभमे एकटा इहो लक्ष्य छल जे देशभरिमे मिथिला-मैथिलीक लेल संघर्षरत संगठन सभकेँ एक छतरी नीचा जुटाओल जाए। ताहि समय सँ आय धरि संगठन बहुतो तरहक उठा-पटक देखलक जकर विवरण अपने सब अध्यक्ष जीक साक्षात्कारमे पढ़ि सकैत छी। एहि सब उठा-पटक केर बीच सँ संगठन संघर्ष पथ पर किछु पाथर गारैमे सफल रहल जकर परिणति रेल लाइन सुधार, अष्टम अनुसूचीमे मैथिली, दिल्ली मैथिली अकादेमीक स्थापना, आ एहन कतेको काजक रूपमे द्रष्टव्य अछि।

मुदा ई अवसर खाली उपलब्धि गिनबाक वा ओहिमे समअल रहबाक ने। ई अवसर अछि, आओर जोर सँ, आओर तागत सँ ठाढ़ भ' नव लक्ष्य, नव दिशा निर्धारित करबाक आ ओहिकेँ प्राप्ति लेल डेग बढाबै के। एहि महत्वपूर्ण क्षणमे एहि स्मारिकाक स्वरूप कें सेहो अहि गति, लय सँ तालमेलमे राखबाक प्रयास कएल गेल अछि। संपादक मंडलक परिश्रम जाहि स्वरूपमे साकार भ' सकल, से अपनेक समक्ष प्रस्तुत अछि। समयक अभाव आ अवसरक दवाबमे संभव अछि जे बहुत रास त्रुटि सँ सेहो अपनेक साक्षात्कार होमय। ताहि लेल समस्त संपादन टीम दिश सँ अग्रिम माफी मांगैत ई जरूर कहब जे एहि स्मारिकामे कोनो तरहक नवाचार सेहो भेटत। ओ नवाचार एहि अवसरक तालमेलमे कएल गेल अछि जाहिसँ अपन समाज, संस्कृति, साहित्य आ धरोहरक संरक्षण-संवर्द्धन दिशामे नवमार्ग, नवचिंतन ताकल जा सकै। स्मारिकाकेँ एहि स्वरूपमे साकार करबाक लेल समस्त संपादक मंडलक हम आभारी छी। खासकय, अगज विनीत उत्पल आ अनुज भास्कर ज्योति केर विशेष सहयोगक बिन ई एहि यज्ञक पूर्णाहुति संभव नञ छल। एहन महती जिममेदारी हमरा देबाक लेल हम अखिल भारतीय मिथिलर संघक कार्यकारिणी केर सेहा आभारी छी।

उम्मीद करब जे सुधी पाठकगण कें ई पसंद आओत आ अपन विचार सँ ओ सब अवगत जरूर करौताह। संगहि नवप्रस्थानक लेल सोत्साह उद्यत हेताह।

स्नेहाकांक्षी

– **ऋतेश पाठक**

संस्थाक गीत

डॉ. चन्द्रमणि झा

अखिल भारतीय मिथिला संघ!
अखिल भारतीय मिथिला संघ!!
दसको पूर्व प्रवासी मैथिलकेँ एकठाम जुटौलनि
अपन माटि-पानिक दरेग, दिल्लीमे संघ बनौलनि
मिथिला-रत्न भोगेन्द्र प्रयासेँ, मैथिल भेलाह संग
अखिल भारतीय...2

संसद केँ झकझोरि देलक मिथिलाक बेटा
मिथिला मैथिल मैथिलीक, आवाज़ उठौलनि नेता
भरि देशक मैथिल जागल, पटना दिल्ली आ बंग
अखिल भारतीय...2

अखिल भारतीय मिथिला संघक रहलै अथक प्रयास
दरभंगे की? गाम गाममे शिक्षा केर भेल विकास
कोशी डैमक मांग एखनधरि चलिये रहल नि:संग
अखिल भारतीय...2

खुलल जयन्ती जनता वैशाली, मिथिलापुरी धरि चललै
दिल्लीमे मैथिली अकादेमी, संघक बल पर बनलै
एहन कतेको काज भेल अछि, बनले छैक उमंग
अखिल भारतीय...2

जन आंदोलन बल सँ सबटा, वस्तु संगोरल गेलै
अप्पन भाखा मैथिली भाखा, संविधानमे एलै
संघ सदा जीवनदानी, लड़िए रहल जंग
अखिल भारतीय मिथिला संघ!
अखिल भारतीय मिथिला संघ!!

प्रेरणा पुंज

भोला पासवान शास्त्री

- जन्म: सन् 1914 ई0
- स्थान: गांव बैरगाछी, जिला-पूर्णियां, बिहार
- पिता: श्री धुसर पासवान
- माता: श्रीमती देवकी देवी
- शिक्षा: प्राथमिक शिक्षा गामक स्कूलमे
- माध्यमिक शिक्षा: धर्मपुर गांधी विद्यालय रहटा।
- बिहार विद्यापीठ पटना सँ स्नातक
- काशी विद्यापीठ बनारस सँ शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण।
- राजनीतिक कार्यकतर्त्ता एवम स्वतंत्रता आन्दोलनमे सहभागी। परिणामत: जेल गेलाह।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा संचालित हरिजन कल्याण कार्यमे पूर्ण दिलचस्पी।
- जिला बोर्ड एवम् लोकल बोर्ड पूर्णियां केँ सदस्य एवम् बिहार विधान सभाक सदस्य।
- बिहार सरकारमे मंत्री: 1952-1963 धरि।
- बिहार प्रदेशक मुख्य मंत्री, पूर्वमे बिहार प्रदेश लोकतांत्रिक कांग्रेससँ जुटल रहलाह। बादमे ओकर नेता चुनल गेलाह।
- केन्द्रीय मंत्रीक रूपमे वर्कर्स हाउसिंग एवं शहरी विकास मंत्रालय केँ फरवरी 1973 सँ अक्टूबर 1974 धरि।
- जुलाई 1972मे राज्य सभाक सदस्य निर्वाचित, पुन: अप्रैल 1976 मे निर्वाचित।
- विदेश यात्रा: मारीशस।
- प्रकाशन: दैनिक एवं साप्ताहिक समाचार सम्पादन।
- देहावसान: अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा अहि महान विभूतिक सम्मानमे श्रद्धा सुमन अर्पित।

पद्मश्री
आदित्यनाथ झा

- जन्म-18 अगस्त, 1911-इलाहाबादमे।
- आरंभिक शिक्षा क्वीन्स कॉलेज, वाराणसीमे।
- बादक शिक्षा गवर्नमेट इंटर कॉलेज प्रयागमे।
- इलाहाबाद विश्वविद्यालय बी.एल. (आनर्स) अंग्रेजी परीक्षामे अपन ज्येष्ठ भाई डॉ. अमरनाथ झाक (पद्मभूषण) कीर्तिमान तोड़लनि।
- एम.ए. के बाद एल.एल.बी. के शिक्षा इलाहाबादमे।
- 1934मे तत्कालीन भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.सी. एस.)मे प्रथम स्थान प्राप्त केलनि।
- 1934मे विलायतक ऑक्सफोर्ड जाय प्रशासनिक व्यावहारिक शिक्षा (ट्रेनिंग) प्राप्त केलनि।
- 1936मे स्वदेश घुरलाह पर संयुक्त दंडाधिकारीक पद पर फैजाबादमे नियुक्ति।
- 1939मे बनारस नगर सह दंडाधिकारीक पद पर ओ पहिल भारतीय छलाह जे पदभार ग्रहण केलनि।
- तत्पश्चात् किछु कालक लेल पूर्वी राज्य सभक Political Agengt नियुक्त भेलाह।
- 1948 सँ 1954 धरि यू.पी.मे विभिन्न विभागक कार्य करैत तराईक विकास पर ध्यान देलनि। हुनका नाम पर रूद्रपुरमे इंटरमीडिएट कृषि महाविद्यालय अछि।
- 1954मे सब सँ कम उम्रक उत्तर प्रदेशक मुख्य सचिवक कार्यभार ग्रहण केलनि।
- 1958मे देशक सर्वप्रथम संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसीमे उप-कुलपति क' पद केँ सुशोभित केलनि।
- 1959मे केन्द्रमे नेशनल एकेडमी ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन मसूरीमे प्रथम निदेशक पद सुशोभित केलनि।
- 1963मे केन्द्रमे योजना आयोगक अतिरिक्त सचिव के पदभार ग्रहण केलनि।
- 1963मे रक्षा उत्पादनक सचिव पद सुशोभित कयलनि।
- 1964मे जखन इन्दिरा गांधी सूचना एवं प्रसारण मंत्री बनली त' डॉ. झा केँ सचिव बनौलनि।
- 1966मे डा. झा दिल्लीक चीफ कमिश्नर बनलाह आ ओही वर्ष केन्द्र शासित प्रदेश, दिल्लीक प्रथम उप राज्यपाल भेलाह।
- 18 जनवरी 1972 परलोकवासी भेलाह।
- 26 जनवरी 1972 मरणोपरान्त देशक दोसर सभ सँ पैघ उपाधि पद्मविभूषण सँ अलंकृत कैल गेल।

प्रेरणा पुंज

गुणानन्द ठाकुर

स्व. श्री गुणानन्द ठाकुरक जन्म तत्कालीन सहर्षा जिला आ वर्तमान सुपौल जिलाक बनैनियां गाममे 19 दिसम्बर 1934 कें एक सामान्य ब्राह्मण परिवारमे भेल छलैन्ह। हिनक पिता स्व. पं. महावीर ठाकुरजी स्वतंत्रता सेनानी छलाह। ठाकुरजी बच्चहिं सँ बड्ड तेज आ समाज सेवाक प्रति जागरूक छलाह। भोला उच्च विद्यालय डेवढ़मे हिनक प्रारंभिक शिक्षा भेल आ बादमे स्नातकोत्तरक शिक्षा चन्द्रधारी सिंह मिथिला कॉलेज दरभंगा सँ भेल।

बालक गुणानन्द ठाकुरमे गजबकेँ प्रतिभा आ संगठन क्षमता छलैन्ह। ई ओहि समयकेँ समाजवादी पार्टीक कर्मठ कार्यकर्ता छलाह। स्व. राम मनोहर लोहियाजीक समर्पित अनुयायी। मात्र 26-27 वर्षक अवस्थामे ई सोशलिस्ट पार्टीक टिकट सँ 1967 ई.मे सांसद बनलाह। अहिसँ पहिने ई निर्मली कॉलेजक स्थापना चन्दा-चिट्ठा मांगि कयलन्हि। कतेको उच्च विद्यालयक स्थापनामे ई अपन अग्रणी भूमिका अदा कयलन्हि। बादमे ई कांग्रेस पार्टी क' दिससँ राज्यसभाक सदस्य छह सालक लेल बनाओल गेलाह। ठाकुरजी सही मायनेमे समाजवादी छलाह। ईमानदारी हिनकामे कूटि-कूटिकेँ भरल रहैन्ह। ई नित्य अपना आवास, 13बी, फिरोजशाह रोड, नई दिल्लीमे सुनिश्चित करैत छलाह जे कुनू आगंतुक भूखल नहीं सुतैथ आ तकर बादे ई रात्रि विश्राम हेतु जाइत छलाह। वास्तवमे 13बी, फिरोजशाह रोड एकटा मिनि मिथिला बुझाइत छल। मिथिला संघकेँ दिल्लीक मावलंकर हॉलमे पहुंचेवाक श्रेय स्व. ठाकुरजी कें जाइत छैन्ह, जतय ओहि समयक नामी-गरामी कलाकार रविन्द्र-महेन्द्र, शारदा सिन्हा आदि कतेको वर अपन प्रस्तुति देने छथि।

एहेन प्रतिभावान व्यक्तित्वकेँ समय सँ पूर्वेहिं काल अपना गालमे समा लेलकन्हि आ अचानक 28 सितम्बर 1982 कें दिल्लीक राममनोहर लोहिया अस्पतालमे ठाकुरजीक मृत्यु भऽ गेलैन्ह। समस्त हुनकर अनुयायी एक तरहें अनाथ भए गेलाह। वास्तवमे स्व. ठाकुर गुदरीक लाल एवं मिथिलाक गौरव छलाह।

मिथिला केशरी
जानकी नंदन सिंह

जन्म तिथि: 14 जनवरी 1907
जन्म स्थान: इन्दरपुर डेयोढ़ी (प्रसाद), मधुबनी
पुण्य तिथि: 2 मई, 1969
गिरफ्तारी: मिथिला राज्यक लेल आंदोलन करैत आसनसोलमे 22 जनवरी, 1954 कें
विधायक: 1952-1956
विधान पार्षद: 1957-1962

कर्पूरी ठाकुर

- जननायक कर्पूरी ठाकुरक जन्म समस्तीपुर जिलाक एकटा गाम पितौंझिया, जेकरा आब कर्पूरीग्राम कहल जायत अछि, मे 24 जनवरी, 1924 के भेल छल।
- ओ स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षक, राजनीतिज्ञ आ बिहार राज्यक दोसर उपमुख्यमंत्री संग दू बेर मुख्यमंत्री रहल छलाह।
- भारत छोड़ो आन्दोलनक समय ओ 26 मास जेलमे बितौने छलाह।
- सामाजिक रूपसं पिछड़ल मुदा सेवा भाव जेहन महान लक्ष्यकें चरितार्थ करय बला नउवा जाइतमे जन्म लहि बला एहि महानायक राजनीति के सेहो जन सेवाक संग जीलक।
- मुख्यमंत्री रहैत श्री कर्पूरी ठाकुर पिछड़ा वर्गके 27 प्रतिशत आरक्षण देलक।
- हुनक निधन 17 फरवरी 1988 के भेल।

ताराकांत झा

- बिहारक मधुबनी जिलाक बेनीपट्टी अनुमंडलक शिवनगर गाममे 1927 मे श्री ताराकांत झाके जन्म भेल छल।
- पेशे सं वकील ताराकांत झा बिहारक महाधिवक्ताक पदके सेहो सुशोभित केलाह आ बिहार विधान परिषद् के अध्यक्ष सेहो भेलाह।
- वर्ष 1952 सं आरएसएस आ जनसंघ सं जुटल रहल। ओ भाजपाक संस्थापक सदस्य छलाह।
- बिहार प्रदेश भाजपाक अध्यक्ष पद पर आसीन रहय बला ताराकांत झा बादमे जनता दल मे शामिल भेलाह।
- श्री ताराकांत झा 1956 सं ल' क' जीवन पर्यंत वकालत करैत रहलाह।
- ओ बिहार बार काउंसिलके 22 बरख धरि सदस्य रहलाह आ अध्यक्ष सेहो भेलाह। बार काउंसिल ऑफ़ इंडिया के छह बरख आ नेशनल स्कूल ऑफ़ लॉ, बेंगलुरु के एग्जीक्यूटिव काउंसिलक सदस्य छह बरख धरि रहलाह।
- मैथिली भाषा को संविधान की अष्टम सूची में शामिल कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी।
- हुनक निधन 2014 मे भेल।

सूरज नारायण सिंह

'मिथिला आदिकालसँ जहिना राष्ट्रीय - अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतनाक केन्द्र रहल अछि तहिना सामाजिक आ राजनीतिक संघर्षक केन्द्र-बिन्दु। ओही कड़ीक परतंत्र आ स्वतंत्र भारतक राजनीतिक क्षितिज पर महान क्रान्तिकारी नेता रहथि शहीद सूरज नारायण सिंह, जिनक जन्म मधुबनी जिलान्तर्गत नरपतिनगर गामक एकटा साधारण किसान परिवारमे 17 मई 1909 ई. मे भेल। बाल्यावस्थेसँ स्वतंत्र भारतक सपना देखनिहार बलौर मिडिल स्कूलमे अंग्रेजक खिलाफ झंडा उठौलन्हि आ वाटसन स्कूल, मधुबनी अबैत देरी स्वतंत्रता आन्दोलनक क्रान्तिकारी गतिविधिस पूर्णत: जुटि गेलाह। स्कूलसँ निष्कासित भेलोपरान्त जिला स्कूलमे नामांकन करौलन्हि, मुदा ओतहु पुलिस हिनक पाछां नञ छोड़लक, फलस्वरूप काशी विद्यापीठसँ विशारदक उपाधि प्राप्त केलन्हि।

सूरजबाबूक जिनगीक अधिकांश भाग संघर्ष आ जहलेमे बितलन्हि, जाहिमे मुख्य रूपसँ नमक सत्याग्रह, तार कटबाक अभियोग, मधुबनीमे विदेशी कपड़ा आ शरबखानाक विरूद्ध सत्याग्रह, 1932 ई. मे हाजीपुर रेल डकैती आ हथियार संग्रह करबाक अभियाग, 1934 ई. मे सी आई डी वेदानन्द झाक हत्याक प्रयाससँ संबंधित अभियोगमे बनारसमे गिरफ्तारी सहित अनेको मामिलामे गिरफतार होइत रहलाह।

1934 ई. मे दरभंगा राजक विरूद्ध व कास्त जमीन वापसीक हेतु संघर्ष आ ओहिसँ सम्बंधित अनेको मामिलामे जीत एक दिस सूरजबाबूकेँ एकटा महान् क्रान्तिकारी नेताक पहचान देलक त' दोसर दिस 1942क 'भारत छोड़ो आन्दोलन' शुरू भेलोपरान्त जयप्रकाश आ रामनंदन मिश्र जीक संग जहलक देबाल फानिक' भगनाइ आ हनुमाननगर जहल पर हमला केनाइ आदि घटना राजनीतिक हीरो बनौलक।

1946 ई. मे बिहार जहलसँ रिहाइ भेलोपरान्त सूरज बाबू मुख्य रूपसँ किसान - मजदूरक शोषणक विरूद्ध संघर्षमे जुटलाह जाहिमे रेलवे, चीनी मिल आ इंजीनियरिंग उद्योग आदिकेँ कार्य-क्षेत्र बनौलन्हि। जिनगीक अन्तिम क्षण धरि हिन्द-मजदूर सभाक अध्यक्ष रहलाह।

1962 ई. मे बिहार विधान सभाक सदस्य निर्वाचित भेलोपरान्त विधानसभामें प्रभावशाली भूमिका निभौलन्हि।

21 अप्रैल 1973 ई0 क' भारतीय जनतंत्रक एकटा शर्मनाक घटनान्तर्गत उषा मार्टिन कंपनीक गेट पर मजदूर सभक मांगक समर्थनमे अनशन पर बैसल एहि लोकप्रिय नेताक हत्या कम्पनी मालिकक लठैत आ पुलिस द्वारा कैल गेल।

एहन मान्यता अछि जे राष्ट्रहित, लोकहित, सामाजिक हित आ सामूहिक हितमे संघर्ष करैत मृत्यु प्राप्त होम'बला 'शहीद' कहबैत अछि आ शहादत व्यर्थ नञ होइछ। मुदा यथा-ज्ञात, सूरज बाबूक शहादतक प्रतीक नरपतिनगर गामक प्रवेश द्वार धरि सिमटि गेल।

प्रत्येक वर्ष मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह आयोजित केनिहार मैथिली मंच आ संस्था सब सेहो एहन महान् विभूति केँ नजरअन्दाजक करैत रहल।

सैद्धांतिक आ व्यावहारिक समाजवादी दृष्टिकोण, लोकप्रिय क्रान्तिकारी छवि आ जिनगी भरि शोषण विरूद्ध संघर्ष करैत लोकहितमे सूरज बाबूक शहादत मिथिलाक समकालीन राजनीतिक क्षितिज पर महान् विभूतिक संज्ञा दैत अछि।

अखिल भारतीय मिथिला संघ परिवार दिससँ एहि महान् क्रान्तिकारीक प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि।

सूरज बाबूक सम्बंधमे लिखित सामग्रीक प्राय: अभाव अछि् तैं जीवन परिचय समकालीन किछु व्यक्तिसँ सुनल आ एकाधटा अछि।

-परमेश्वर सिंह

S.K. CHAUDHARY EDUCATIONAL TRUST'S

SHANKARA GROUP OF INSTITUTIONS

Kukas, Jaipur

B.Tech (028)
CS, IT, EC, EE, ME, AE

MBA (285) Finance, HR, Marketing, IT & Comm.

MCA (138)
BCA, BBA

PGDM
SIM (284)
SISMR (286)

FOR ADMISSION CONTACT
9950928077 | 9928023777
8178033477 | 9928024777

OR ON TOLL FREE NUMBER
18003002017

www.shankaragroup.in | www.shankaratechnology.org

SOCIETY FOR COMPUTER EDUCATION AND MANAGEMENT'S STUDIES

NDIIT
The Key To Learn & Excel
New Delhi Institute For Information Technology & Management

NEW DELHI INSTITUTE FOR INFORMATION TECHNOLOGY & MANAGEMENT

Nehru Place, New Delhi

COURSES OFFERED

MBA MCA BBA BCA PGDM
MASS COMMUNICATION HOTEL MANAGEMENT

For Admission Contact us: 011-46515851, 26293177, 26294177, 26295277, 26295177
+91 7042089177, 7042734877

Toll Free No.: 18003002017
for more details visit: www.ndiit.org

सफरनामा

पहिल कार्यकारिणी (दिल्ली) 1967

(भोगेन्द्र झा जीक नेतृत्वमे दिल्लीमे अभियान शुरू)

पहिल सम्मलेन	:	1971
पहिल अध्यक्ष	:	चंद्रकांत झा
पहिल उपाध्यक्ष	:	रामदेव झा
पहिल उपाध्यक्ष	:	बलिराम ठाकुर
पहिल महासचिव	:	गंगाधर झा 'शास्त्री'
पहिल संयुक्त सचिव	:	विजय चन्द्र झा
पहिल कार्यकारिणी (कोलकाता)	:	1950-51

अखिल भारतीय मिथिला संघः अध्यक्षगण

स्व. चंद्रकांत झा	:	1970-1974
स्व. राजकुमार पूर्वे	:	1974-1975
स्व. श्रीमती आद्या झा	:	1975-1977
स्व. राजेन्द्र प्रसाद यादव	:	1977-1985
श्री अजीतनाथ झा (कार्यकारी)	:	1985-1989
स्व. राजेन्द्र प्रसाद यादव	:	1985-2001
श्री शुभचंद्र झा	:	2001-2005
स्व. राजेन्द्र प्रसाद यादव	:	2005-2010
श्री रामचंद्र चौधरी (कार्यकारी)	:	2010-2013
श्री विजयचंद्र झा	:	2013 सँ पदासीन

अखिल भारतीय मिथिला संघ
विविध वार्षिक सम्मान

अखिल भारतीय मिथिला संघ हर साल मिथिला विभूति स्मृति सम्मान समारोहक आयोजन करैत आबि रहल अछि। वर्ष 2015 सँ एहि समारोह केँ किछु विशिष्ट स्वरूप देबय केँ प्रयास शुरू कएल गेल। एहि क्रममे तीन टा विशिष्ट सम्मान, नामतः, सर गंगानाथ झा सम्मान, बाबू साहेब चौधरी सम्मान आ भोगेन्द्र झा सम्मान आरंभ कएल गेल। अगिला वर्ष अर्थात् 2016 मे एहि कड़ीमे यात्री सम्मान सेहो जुटि गेल। एहि चारु पुरस्कार सँ एखन धरि सम्मानित विभूति सबहक सूची नीचा प्रस्तुत अछिः

सर गंगानाथ झा सम्मान

अकादमिक क्षेत्रमे उत्कृष्ट योगदानक लेल
(वर्ष 2015 सँ आरंभ)

2015 : श्री संदीप झा, संदीप फाउंडेशन, मुम्बई
2016 : श्री उदयनारायण सिंह नचिकेता, कोलकाता
2017 : श्री मानस बिहारी वर्मा, दरभंगा

बाबू साहेब चौधरी सम्मान

मिथिला-मैथिलिक लेल संघर्षरत व्यक्तिक सम्मान
(2015 सँ आरंभ)

2015 : श्री अशोक झा, कोलकाता
2016 : श्री कमलेश झा, मधुबनी
2017 : श्री लक्ष्मण झा 'सागर', कोलकाता

भोगेन्द्र झा सम्मान

राजनीति समाजमे उल्लेखनीय योगदानक लेल
(2015 सँ आरंभ)

2015 : मैथिली पुत्र प्रदीप, दरभंगा
2016 : श्री एन. के. झा, सीए, पटना
2017 : श्री वीरेन्द्र मल्लिक, दिल्ली

यात्री सम्मान

मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ट योगदानक लेल
(2016 सँ आरंभ)

2016 : श्री जगदीश मंडल, दिल्ली
2017 : श्री भीमनाथ झा, दरभंगा

मिथिलाक सर्वांगीण विकास एकमात्र सपना: विजयचन्द्र झा

अहि बरख 2017मे अखिल भारतीय मिथिला संघ अपन स्वर्णजयंती मना रहल छैथ। संघक इतिहास स्वर्णिम रहल अछि आ मिथिला सँ लऽ कऽ राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली धरि ई तमाम संघर्षक साक्षी रहल अछि। सड़कसँ संसद धरि बड़ी रेल लाइन मिथिलामे बिछाबै के लेल, द्रुतगति ट्रेन चलाबैक लेल, मैथिली भाषाक उत्थान लेल सतत प्रयासरत रहल अछि। अहि मौका पर संघ केर अध्यक्ष श्री विजय चन्द्र झा सँ वरिष्ठ पत्रकार विनीत उत्पल केँ गप्प-शप्प...

विनीत उत्पल : अहां अहि संस्था सँ कोना जुड़लहुँ? कनी विस्तार सँ बताऊ?

विजय चन्द्र झा : 1968 केँ मई-जूनमे हम दिल्ली अहिलहुं। अहि ठाम गंगाधर शास्त्री जिनका लोक दादा बिहारी कहैत छल, ओ हमरा डेरा पर अयलाह, आ कहलथि जे अहि ठाम एगो संगठन बनेबाक अछि। हमरा ई नञ बुझल रहय जे अहि ठाम अखिल भारतीय मिथिला संघ बनि गेल अछि। दादा बिहारी हमरा कहलखिन जे एना-एना बात अछि। हम दूनू गोटे घूमि-घूमि के, ओहि समयमे एत्तऽ लोक कम छलय, लोकक घरे-घरे जाकेँ दू टाका के मेबरशिप क' केँ संघठन केँ बनैलौं। एकर प्रथम उद्घाटन सम्मेलन जमुना बाजारकेँ धर्मसंग भवनमे केलहुं। ओहि समयमे हम माननीय गुलाम अली ठाकुर केँ आनलहुँ। बादमे संगठन काज करय लागलय, दिनोदिन काज बढ़य लगलय, मिथिलांचलक सर्वांगीण विकास एकर मुख्य एजेंडा रहय, धरना-प्रदर्शन आ सड़क पर राजनीतिमे आंदोलन सँ अहि संगठन केँ जन्म भेल अछि। बादमे हमरा लोकनि सभ पार्टी आ राजनीतिमे जा लगलहुँते किछु साल केँ बाद पता लागल जे अहि संस्था केँ स्थापना केनिहार स्वतंत्रता सेनानी कामरेड भोगेन्द्र झा छलाह। हमर ई पता लागल।

हम साकौंझ भेलहुं। हमरा गाम-घरमे सब या ते वामपंथी छल या सोशलिस्ट। हमर जे पिताजी छलाह, से सूर्यनारायण सिंहकेँ भक्त छलाह। दादा बिहारी वामपंथी छलाह। ओहि समय जखन बैसकी भेल ते कहलक जे अध्यक्ष भ' जाऊ श्री गंगाधर झाजी आ महासचिव विजय चन्द्र झा जी। हम ओहि समयमे बड्ड कम उम्र केँ छलहुँ, पढ़ैतो रहि, ट्रेनिंग सेहो करैत रहि ओहि समयमे। हम कहलहुँ जे हम बच्चा छी, कारण जे गंगाधर जी केँ बालक हमरा क्लास फेलो छल। हुनकासँ हम भरि मुंह बज्बो नाहि छलहुं। तखन हमरा भेल जे ई सब तऽ कम्युनिस्ट छैथ तऽ एकरा कम्युनिस्ट तऽ नञ क' देथिन। तखन हमरा सब चंद्रकांत झा, जे हमरा सबकेँ बाबा लगथिन, सुरग बाबू केँ सेक्रेटरी रहथिन, हुनका डेरा पर जा केँ सब बात कहलहूं जे अहाँ एकर अध्यक्ष होईयो। ओ मना केलथि जे हम अहि सबमे नञ परब, राजनीति छोड़ि देलहुं, तऽ कहलहुँ जे ई राजनीती नञ सामाजिक काज छियै बाबा, अहिमे आबियो अहाँ। अंतमे ओ मानलाह आ अध्यक्ष चंद्रकांत झाजी भेलाह आ महासचिव गंगाधर झाजी

भेलाह। पंडित रामदेव झा आ बलराम ठाकुर एकर उपाध्यक्ष भेलखिन आ हम जॉइंट सेक्रेटरी भेलहुं। कोषाध्यक्ष श्री कुलानंद झा भेलाह।

विनीत उत्पल : ई कोन साल केँ गप अछि?

विजय चन्द्र झा : सन 1968 सँ तऽ हम सब मेंबर बनाबैमे लागल रहि। ई अधिवेशन भेल जा केँ 1970मे। भोगेन्द्र झा वोटक्लब पर तत्कालीन सांसद सब जे रहय, ओ धरना देने रहथिन। ललित बाबू सेहो रहथिन। धरना देने रहथिन जे मिथिला विश्वविद्यालय केँ स्थापना होमऽ, आकाशवाणी सँ समाचार मैथिलीमे प्रसारित होमऽ, बड़ी लाइन होमऽ, हया घाट पेपर मिल होमऽ, निर्मली-भवटिहाई पुल होमऽ, अहि सबकेँ ल' केँ ओ सभ धरना-प्रदर्शन केले छलाह। स्वर्गीय गंगाधर शास्त्री हमरा ई सभ नञ बतेने रहथि। जखन सम्मलेन शुरू भ' गेला, ललित बाबू आइल रहथिन, देवकांत बरुआ आयल रहैथ, ओहिमे हमर सभ केँ पहिल मांग रहय जे जयन्ती जनता ट्रेनक लेल, ओहि समयमे एक्को टा ट्रेन नञ रहय। ललित बाबू कहलखिन जे हम अहाँ सबकेँ ई मांग मानलहूँ आ हम जल्दिये अहाँ सबकेँ ई ट्रेन द' देब। जखन सम्मलेन होमऽ लागले तऽ ओहि बीचमे की भेलय, ललित बाबू पदार्पण केलखिन, ओहि समयमे ललित बाबू केँ राजा हरिश्चंद्र कहियो या कर्णक उपमा दीयों, हुनकर तूती बजैत रहय।

किछु साल बाद की भेलय जे अहिमे लोकमंच बनि गेलय। जे हमर महामंत्री रहय सँ ओततो महामंत्री बनि गेलखिन। हमरा सबकेँ कहल गेल जे ई अखिल भारतीय मिथिला संघ सँ विंग छियै आ कवि सम्मलेन टा हेतय अहि सं। पहिने तऽ हम सब विरोध केलिय जे एना कोना हेतय, अखिल भारतीय मिथिला संघ सम्मलेन करतय। हमहुँ सत्रह-अठारह साल केँ रहि, जना लोक बुझैलक तना हमू बुझि गेलिये। बादमे हमरा पता लागल जे मिथिला लोकमंच रजिस्टर्ड भऽ गेल, तखन हमर कान ठाढ़ि भ' गेल कि ई की भ' गेल। हम कहलिये जे माय-बाप केँ पते नञ, बेटा किलकारी मारय। ओहि ठाम हम विरोध क' देलिये। आय कवि सम्मेलन छियै, हमरा मोन ये जे ई आरकेँ पुरममे भेल रहय, हम विरोध क' देलिये, जे अहाँ सब एक्को टा फंक्शन नञ क' सकैत छी, ई हमर दाबी अछि। सब ठाम बउवेहम आबय छी, अहाँ सब कोना बना लेलहुं।

विनीत उत्पल : ओहि समयमे अखिल भारतीय संगठन सँ कत्तेक लोक जुडल रहय?

विजय चन्द्र झा : ओहि समयमे करीब तीन सए सदस्य रहय, दू टकिया। पंद्रह-बीसँ टा हमरा सभहक लाइफमेंबर रहय। लेकिन समारोह जे भेल रहय, अद्वितीय रह मावलंकर हालमे। लोक केँ जगह नञ भेटय। ओहि समयमे एक्के टा संगठन रहय। चंद्रकांत जी केँ नेतृत्वमे हम सब बनलये।

बिहारमे जखन बाढि आइले 1977मे,संघ केँ बैसार भेल आ एग्जीक्यूटिव कमिटीमे निर्णय भेल जे बाढ़क लेल किछु कायल जाय। हम सब दिन राति लागि गेलहुं, तखन देखलहुं जे मिथिला संघ लिखल अछि, तखन लागल जे ई की भेलय। हम फेर विरोध केलिये, तखन हमरा कहल गेल जे अहाँ नञ बुझय छियै, प्रेस सँ गलती भ' गेलय। साल-दू-साल बाद फेर देखलये जे मिथिला संघ रजिस्टर्ड। ओहि ठाम फेर हम विरोध केलहुं। तकर बाद बड़का टा पंचायत भेलय, जाहिमे माननीय रामेश्वर ठाकुर, श्रीमती आद्या झा जेहन सब मिलान ठाकुर अहिठाम बैसार भेलय आ कहल गेल जे अहाँ ई की क' देलिये। अखिल भारतीय मिथिला संघ केँ एकटा इतिहास भ' गेल अछि। तखन एना कियै। तऽ कहल गेल जे गलती सँ भ' गेल। तखन पूछल गेल जे रजिस्ट्रेशन कोना भ' गेल। अखिल भारतीय मिथिला संघ केँ रजिस्ट्रेशन कियैक नञ भेलय। सब गोटा बहुत किछु कहलखिन आ कहलखिन जे हम तऽ विजय केँ संग छी आ एकर सपोर्ट हम सब करैत छी। तखन हम सब अध्यक्ष बनेलहुं आद्या झा केँ हम सब मिलकेँ काज शुरू केलहुं। ओहि बीचमे हम सभ सब दल लग जाय लगलहुँ। तखन फेर गंगाधर शास्त्री घुरि केँ फेर हमरा सब लग अयलाह। महामंत्रीसँ हुनका बर्खास्त नञ कल गेल रहय, मुदा जखन दोसर संगठनमे चलि गेलाह तऽ अपने बर्खास्त छलै। 1977 केँ बाद हम सब जनता पार्टी केँ सरकार भ' गेल छलय आ रामकृपाल सिन्हा जी कतय गेलहुं। ओ अहि समयमे शायद श्रमराज्य मंत्री रहथिन। ओ सब बात सुनि लेलखिन आ कहलखिन रे बौआ, जा धरि अहि मैथिलीकेँ संगठनमे भोगेन्द्र झा नञ रहथिन, ता धरि एकरा पूर्ण मैथिली केँ संगठन नञ कहल जा सकैत अछि। क्या कि हुनके पोस्टर-पर्चा मैथिलीमे होयत अछि, ओ मैथिलीमे भाषण करैत छथिन।

लोकसभामे ओ मैथिली लेल लडैत छथिन, तें हुनका अहि ठाम अनबा बेसी जरुरी अछि। हम सभ कम्युनिस्ट आ सोशलिस्ट कें गप सोचैत हुनका लग गेलहुं। हुनक जखन प्रतिक्रिया देखलयेन तऽ हम मंत्रमुग्ध भ' गेलहुं, जे ई तऽ मैथिल दधीची छथि। ओ सबटा खिस्सा कहलखिन जे हम गंगाधर जी कें पाय देलय रहियैन, मिथिला संघक रसीद छपैने रहिये। अहाँ सब तऽ संघ कें उघार क' देलहुं। हम सब हुनका सँ गलती मानलहुँ। फेर ओहि ठाम फेर वहि सब लोक जुटलाह। भरि राति जागि कें ओहि ठाम अखिल भारतीय मिथिला संघकें संविधान बनलहि। श्रीमती आद्या झा अध्यक्ष रहबे करति। तखन भेल जे राजकुमार पूर्वे कें अध्यक्ष बनाओल जाय। अहिमे सब जाइत, सम्प्रदाय लोक कें जुटान अछि। मुदा राजकुमार पूर्वे तैयार नञ भेलाह। तखन मधेपुरा सँ आबय बला राजेंद्र प्रसाद यादव जी, जे वीपी मंडल कें हरौने छलाह, हुनका सँ भोगेन्द्र यादव जी गप केलाह, हुनका लग हम सब गेलहुं। हम नाम ल' क' कहेल चाहैत छी जे गुणानंद ठाकुर हुनका मना करय लेल अयल्खिन। तऽ ओ कहलखिन जे हम तऽ शब्द द' देलिये, अहाँ सब संगठन कें तोड़ि कें बड्ड गलती करलिये। तखन अखिल भारतीय मिथिला संघ यादवजी कें नेतृत्वमे आगा बढ़ल। चिरंजीव झा, कमलनाथ झा, जमुना प्रसाद मंडल जी, जे सांसद रहय सभ हमरा मंचसँ समर्थन केलक। तखन सँ ई संगठन पाछां मुड़ी कें नञ देखलके।

विनीत उत्पल : की अखिल भारतीय मिथिला संघ सदिक्खन राजनीतिक लोकक संग रहलय या सामाजिक लोक कें ल' कें आगू बढलय?

विजय चन्द्र झा: यएह एकटा संगठन अछि जे सर्वदलीय रहैत संपूर्ण समय अपन मिथिला, मिथिलांचल कें विकास, दिल्लीमे जे मैथिल अछि विकास लेल काज करैत रहलय। सब दलक लोक देवकांत बरुआ सँ ल' क' आडवानी धरि अहि मंच पर अयलखिन, कुनू पार्टी-पॉलिटिक्सँ नञ अछि लेकिन एकटा गप कहैलऽ चाहब जे बिना राजनीति सँ कोनो काजो नञ होय अछि। प्रजातंत्र अछि, लोकसभा, राज्यसभामे कोनो गप एमपी या विधायाकें उठेते। तऽ द्वारे हम सब सभ दल कें ल' क' चलल छिये।

विनीत उत्पल : जखन अहाँ कहैत छियै जे अहि संगठन कें कम्युनिस्ट भोगेन्द्र झा स्थापित कयने छलाह मुदा अहि स्वर्ण जयन्ती कें अवसर पर कार्यक्रम कें स्वागत अध्यक्ष श्री प्रभात झा जी कें बनैने छियै, ओ तऽ भाजपा कें सांसद छथिन, तऽ कोना सामंजस्य बनाबैत छैये।

विजय चन्द्र झा : कम्युनिस्ट स्थापना नञ केने रहैथ, फाउंडरमे सँ रहैथ। ओ भोगेन्द्र झा कहियो आय धरि कोनो पद नञ लेलखिन। श्री प्रभात झा जी दोसर बेर अहि समिति कें अध्यक्ष छथि। अहि सँ पहिने बालेश्वर राम तीन बेर स्वागत अध्यक्ष रहि चुकल छल, ओ कांग्रेस कें महामंत्री रहथिन, रामदुलारी सिन्हा कांग्रेस कें मंत्री रहथिन, ओ दू बेर स्वागत समिति कें अध्यक्ष रहथिन, डूमरलाल बैठा दू बेर, भागवत झा आजाद सेहो स्वागत समिति कें अध्यक्ष रहि चुकल छथिन। एकर एकटा बड़का इतिहास रहल अछि। अहि मंच पर पहिने राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, लोकसभा अध्यक्ष सहित सभ दल कें लोक आयाल्खिनये। भागवत झा आजाद, सीताराम केसरी, जगन्नाथ मिश्र, शकील अहमद, रामलखन सिंह यादव, इन्द्रजीत गुप्ता, गीता मुखर्जी, भोगेन्द्र झा, कृष्ण लाल शर्मा, धनिक लाल मंडल, हुकुमदेव नारायण यादव जी अहि आंदोलनक मंच पर कहियों कियो नही आयल हेते। लेकिन ई अहि संगठनक इतिहास अछि।

विनीत उत्पल : अहाँ अप्पन स्वर्णजयंती समारोहमे देशक प्रबुद्ध लोक कें कोना जोड़लहुँ?

विजय चन्द्र झा :जतेक नाम अछि अहि सँ देखि सकैत छी जे अहि ठाम सभ लोक अछि। सभ तरह कें लोक अछि। अखिल भारतीय मिथिला संघ एकटा फूलक माला अछि, जाहिमे एक-एक फूल अलग-अलग तरह कें अछि।

विनीत उत्पल : अखिल भारतीय मिथिला संघ आय धरि कोन एहन काज केने अछि जे ई आन संगठन सँ अलग अछि।

विजय चन्द्र झा : मिथिला संघ स्थापन काल सँ आन्दोलन सँ जुडल अछि। ई संगठन कल्कत्तोमे छल वएह संगठन दिल्लीमे सेहो अछि। राजनीति कें सड़कक भाषा बैनेने मिथिला संघक काज छी। दिल्लीमे 1968 सँ ल' क' 1988 तक कें बात क' रहल छी,ओहि समयमे दिल्लीमे राशन कार्ड कें बड्ड असुविधा रहय। बिहार कें लोक जे किरायेदार रहय ओकरा मकान मालिक सँ बाद झगड़ा होयत रहय। अस्पतालमे एतय कियो केकरो देखनिहार नञ होयत छलय। भोगेन्द्र झा कें चिट्ठी, रामेश्वर

ठाकुर, डूमरलाल बैठा, कें आशीर्वाद सँ हम सब 35 हजार सँ बेसी लोक कें राशनकार्ड एक पाय बिना लेने बनेलिये। कोनो गड़बड़ी पता लागल तऽ अहि आदमी कें तुरंत संगठन सँ निष्काशित क' देल गेलय। एहि संगठन कें जतय आन्दोलन कें सवाल अछि, हमर सब कें पहिलुक मांग रहय मिथिला विश्वविद्यालय के, तऽ ओ बनलय, मैथिली आठम अनुसूचीमे भेलय, ई नञ बुझु जे अहि संगठन कें द्वारे ई काज भेलय। अहिमे सभ संगठन, साहित्यकार, कलाकार, लेखक, सभक प्रयास भेलय। मिथिला संघ दिल्लीमे छलय, एकर दायित्व बेसी छलय, महिना-महिना वोट क्लब पर धरना-प्रदर्शन करैत रहलय, एकदिन ब्यूरोक्रेटी सभ के, एकदिन श्रमिक के, एकदिन महिला कें हर दिन आन्दोलन होय, सभ पार्टी कें लोक बराबर एहि कें ल' क' आन्दोलन करैत रहलिये। बड़ी रेल लाइन समस्तीपुर-मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर-जयनगर, दरभंगा- नरकटियागंज, सकरी-हसनपुर रेल लाइन, निर्मली-भवटियाही पुल, अहाँ कें बुझल अछि जे पांच किलोमीटर हेडक्वार्टर जाइक लेल दू सौ किलोमीटर जा पड़ैत छलेये, अहि लेल आन्दोलन करैत रहल। पेपर मीलकें लेल लड़ैत रहलहुं मुदा ओहिमे सरकार कें उदासीनता, बिजनेसमेन कें दलाली, ओहिमे हम सब सक्षम नञ भ' सकहलहुँ। बड़ी रेल लेल हम सब प्रतिदिन आन्दोलन करैत रहलहुं, ललित बाबु जे हताहत भेलाह, समस्तीपुर-मुजफ्फरपुर बड़ी रेल लाइन कें उद्घाटन रहय, ओहिमे अखिल भारतीय मिथिला संघक बड योगदान रहय। सरकार काज करैत अछि अपना हिसाब सें, प्रश्न करैत रहय भोगेन्द्र झा, क्रियान्वयित करैत रहैत ललित बाबू, हिनका आपसमे तालमेल रहैत। अहाँ कें हम चिट्ठी देखा सकैत छी, जे जखन समस्तीपुर-जयनगर रेल लाइन बनैत रहय तऽ ओकरा बीचमे रोका देल रहय। कें रोकलके, क्या रोकलकें, हम ओकरामे नञ जायब, अन्दर संसदमे भोगेन्द्र झाजी, बाहर गोलंबरमे अहि ठारक मास अखिल भारतीय मिथिला संघ ठिठुरैत धरना प्रदर्शन केलक आ पांच सौ सँ बेसी लोक देर राति ओतय रहलहुं। भोगेन्द्र झा जी सेहो नञ उठाल्खिन, नरसिम्हा राव प्रधानमंत्री रहथि, ओ हुनकर बात मानल्खिन आ कहलखिन जे हम कहैत छी मुदा भोगेन्द्र झा कहलखिन जे हाथ सँ लिखि कें दियो, ऊ पत्र कोनो स्मारिकामे छपलो अछि, तखन विद्याचरण शुक्ल गाड़ीमे ल' क' आयलखिन आ हमरा सब कें उठेलखिन तखन हम सब 24, रकाबगंज रोड गेलहुं, जतय मिथिला संघ कें ऑफिस रहय। ओतय विद्याचरण शुक्ल ओ चिट्ठी पढ़ि कें सुनैल्खिन जे अहाँ सबकें मान मानल गेल। ई लाइन रुकते नै। भगवनक कृपा सँ ई सभ रेल लाइन बनि गेलय। फेर हम दोहरायब जे अहिमे सबहक योगदान अछि।

विनीत उत्पल : अहाँ जखन अहि तरहे सामाजिक काजमे जुटल रहि तऽ कोना पारिवारिक संतुलन बनैलिये?

विजय चन्द्र झा : हम बड गरीब परिवार सँ आयल छी, हम बड कम पढ़ल-लिखल लोक छी। पारिवारिक स्थिति तहां भयावह रहय जे ओकर वर्णन करब तऽ अहाँ कानय लागब। दिल्लीमे जे परिस्थितिमे आय्लाहूँ, जे कष्ट कटलहुँ, हम भगवान सँ प्रार्थना करैत छिये जे मैथिल समाज कें कियो एहन कष्ट नञ काटय। हम दिल्ली भागी कें आयल छी, हमर पिता कें बड्ड अरमान कें हमर बेटा ग्रेजुएशन करय,फलां करत, चिल्लां करत मुदा हमर पारिवारिक जे परिस्थिति रहय, गाममे हम देखलिये जे पूंजी रहय नै, दबंग रहती, 25टा मुकदमा रहय, हम भागी कें चलि आयलये दिल्ली। राइत कें कहियो कोनो फुटपाथ पर सुति, कोनो मंदिर कें आगा सुती, बरखामे भीज जाय, ताना-ताना कष्ट काटलहुँ, मुदा हम धन्यवाद देत छियैन सोमदत्त शर्मा कें जे हमरा राजनिवास ल' गेलखिन। माननीय आदित्यनाथ झा रहथिन लेफ्टिनेंट गवर्नर। 1968-69 कें गप बता रहल छी। हुनको इच्छा रहय जे एकटा मैथिल संघ बनय। डीडीएमे नौकरी धरा देलखिन, आ फेर हम कतेक दर्जन लोक कें ओतय नौकरी धरैलिये, हुनका बल पर। राजनिवास जाइत अफसर सब देखय आ हमर गप मानय।

विनीत उत्पल : अहाँ कें गाम कोन अछि?

विजय चन्द्र झा : हमर गाम अछि परिहारपुर, मधुबनी स्टेशन सँ उत्तर, राजनगर सँ पश्चिम। अप्पन परिहारपुर कें विशेषता ई अछि जे बछोर अपने, परगना अपने। जन्म भेल अपन मामाक गाम कोइलखमे।

विनीत उत्पल : फेर अहाँ गाम सँ दिल्ली कोना आइलिये?

विजय चन्द्र झा : हमर गाम कें लोक सभ, बाबा सभ बद्रीनाथ जाय रहथिन। हम मैट्रिक परीक्षा द' देने रहिये। हम उनकें पाछु लागि गेलिये। ओ सब बैसथिन कोनो बोगीमे हम बैसिये कोनो बोगीमे, हमरा लग

21 गो रुपया रहय, ओ ई रुपया रहय जे मैट्रिक केँ परीक्षा देबय ले गेल रही तऽ कंजूसी केँ के,बचा केँ रखने रहि। एक गो कपडा जे पहिरने रहि, एगो धोती, एगो कुरता, एगो झोड़ा, ई हमरा लगमे रहय। पिताजी हमर मवेशी केँ ल' क' कत्तो गेल रहथिन, ओ हमरा नञ जाई लेल देत रहथिन, ओ हमरा बड मानित कियाकि हम हुनकर सेवा बड करियें। हुनकर इच्छा रहे जे हुनकर बेटा पढय। जेखन ओ सभ बद्रीनाथ जाय रहैत, हमरा बलजोबरी उतरि देलखिन। जहिना ट्रेन खुललय, हम पिछलका डिब्बामे फेर बैसि गेलहुं। बनारसमे फेर पकड़ा गेलहुं। ओ सभ फेर खुआ-पिया केँ बुझैलखिन, जे अहाँ केँ उम्र अछि अहाँ पढ़ू-लिखू। गाड़ी खुल गेल। हम स्टेशन पर रहि गेलहुँ। कियो हमर कोटामे रहैत रहैथ, हम पुछलिये जे इ ट्रेन कोटा जाइत की, तऽ हम ओहि ट्रेन केँ फर्स्ट क्लासमे ऊपर जाय केँ बिना टिकट चैढ गेलहुं। हम कत्तो नञ उतरलहूँ। एकटा मिलिट्री मैन भेटल ओ हमरा पूछलक कि 'तुम कहाँ जाओगे।' हम कहलयेन जे कोटा। तऽ ओ कहलक 'यह तो दिल्ली जा रही है' तऽ हम बाजलहूँ तऽ हम दिल्ली चलि जायब। तऽ कहलक जे दिल्लीमे तऽ अहाँ केँ पुलिस पकड़ी लेत तऽ ओ हमरा पिलखुआमे उतारि देलक। ओतय सँ जेना-तेना हम अहिलाहुँ दिल्ली, ओतय हमर पितियेंन छैथ,जे चिट्ठी लिखाबथिं रहैत, ओ पित्ती रहैत रहैत अहिठाम। जे बाबा हरिदास मंदिर, जमुना बाजार, निगमबोध घाट, दिल्ली-6, ई हमरा रटल रहय। बस, ट्रैक सँ लटकी केँ हम बाबा लग आयलहूँ। बाबा लग आयलहँ तऽ ऊ हमरा बड़ मानलक। जहिया सँ हमर उपनेन भेल तहिया सँ हम शालीग्राम केँ पूजा सें करैत रहैथ। बाबा भोजन-भात करैलक। गाम-घरमे कोनो केस-मुकदमा बला लोक हुनका किछु कहि देलकय तऽ ओ हमरा भगबय केँ कोशिश केलक। आठ-दस दिनमे हमर ओ चलि-प्रकृति देखलक तऽ हमरा माने लगलाह। फेर हमर राजनिवासमे प्रवेश भ' गेल। डीडीएमे नौकरी पकड़लहुँ, ओकरा छोड़लहुँ, आईटीआईमे नौकरी केलहुं।

विनीत उत्पल : मैथिली-भोजपुरी अकादेमी कोना बनल आ आठम अनुसूचीमे कोना शामिल भेल मैथिली?

विजय चन्द्र झा : अहिमे हमर कोनो योगदान नञ। जे काज केलक सँ अखिल भारतीय मिथिला संघ। दिल्ली केलक आ दिल्लीमे रहय बाल मैथिल लोक। हम निमित्त मात्र छी। हम जहिया संघमे कोनो पद नञ रहय तहियो हम एकरा छोड़लिये नञ। हम एकर उदाहरण देब। आखिल भारतीय मिथिला संघ आन्दोलन सँ लक रचनात्मक काज केलक। 1987मे हम कोनो पद पर नञ रहि, एग्जीक्यूटिवमे रहि। तीन-चारि टा महामंत्री रहय। हमरा जेना भोगेन्द्र जी मानित रहैथ, तहिना जगन्नाथ जी, तहिना भागवत जी, तहिना हुकुमदेव जी। चाहे हमर काज से, तऽ लोक कहैत रहय जे विजयजी क्या। तऽ भोगेन्द्र जी कहाल्खिन केँ अहि बेर अहाँ कोनो पद नञ लियो, हम कहलिये जे एग्जीक्यूटिव पदमे सेहो नै, तऽ ओहिमे रहियो। तऽ आरपी यादव केँ बुझल रहैत, ओ कहलखिन जे विजय जी महामंत्री नञ रहत तऽ काज केँ करत। यादवजी केँ हम आश्वासन देलहुं जे हम काज करब। आरपी यादव अध्यक्ष बनलाह। ओहि समयमे बाढ़ि आयल छल। भोगेन्द्र झा, आरपी यादव केँ बैसकी भेल तऽ हम कहलियाई हम तऽ किछु नञ छी। अजीतनाथ झा, मन्त्रेश्वर झा, जवाहर मिश्र, बालेन्दु बाबु, गजेन्द्र जी सब एकटा बैसार केलिये, हमरा अहिमे संयोजक बनाओल गेल। 19 गांठ कम्बल केवल एक गोटा देने रहय। हम सब बोगी भरि केँ ल' गेलिये सामान आ डीएम केँ सुलझा देलिये।

विनीत उत्पल : सभ साल समारोह करय केँ परिकल्पना कोना आयल?

विजय चन्द्र झा : समारोह मनाबय केँ परिकल्पना स्थापना काल सँ अछि। मिथिला विभूति, विद्यापति जयंती करैत रहि। विद्यापति सँ काज नञ चलय बला अछि, समाजमे आन लोक सेहो काज करैत अछि। विद्यापति सँ समाजक एक विशेष वर्ग भ' जाय अछि। हम सब राजा सलहेस, लोरी, दीना-भदरी, कर्पूरी ठाकुर, भोला पासवान, ललित बाबू, सबकेँ ल' क' मिथिला विभूति स्मृति समारोह सभ साल करय छी।

विनीत उत्पल : अहाँ सब पर आरोप ये अछि अहाँ पाग पहरे केँ बेवकूफ बनाबय छियै। ई कतय धरि सत्य अछि?

विजयचन्द्र झाः रामायणमे कहल गेल अछि, 'जाकर रहि भावना जैसी।' हमरा सब सबकेँ सम्मान देबाक अछि। पाग पहिने मैथिले टा केँ रहय, हमर मानब ये जे मिथिलामे उच्च कोटि केँ लोक अछि, विद्वान अछि, उहो ई पाग

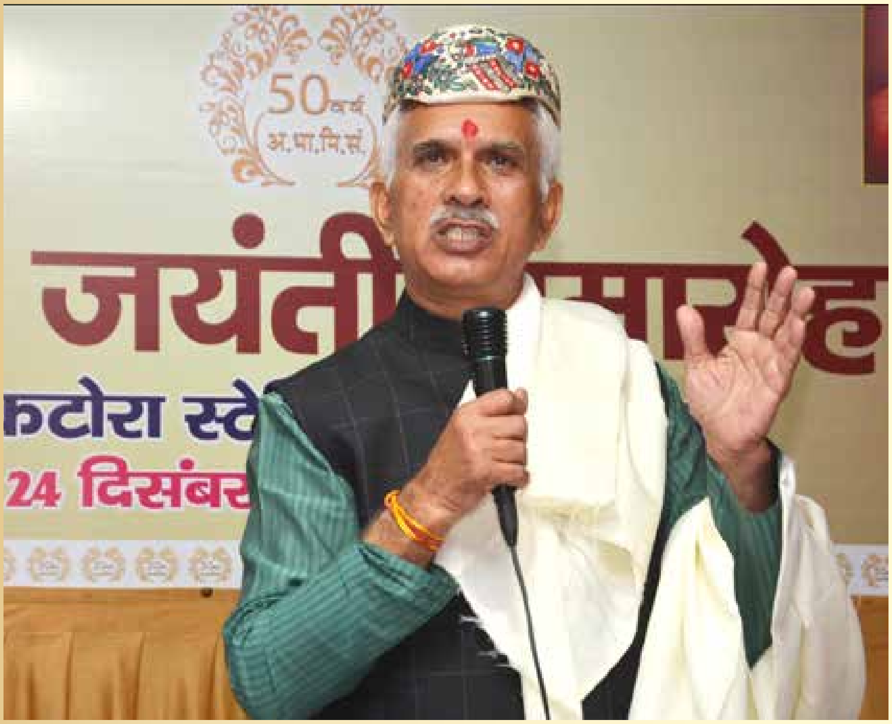

पहिरे कें उत्तराधिकारी अछि, ते हमरा सभ कें मनमे कनियो नञ अछि जे हम सभ पाग पहिनेकें केकरो वेबकूफ बनाबैत छी। पाग मिथिला कें सम्मान छियै। सभ जाइत के, सभ संप्रदाय कें हम सम्मान करैत छियै।

विनीत उत्पल : कत्तो एहन तऽ नञ अछि जे मिथिलामे ब्राह्मण पाग पहिरय अछि तऽ अहाँ ब्राह्मणवाद फैला रहल छियै?

विजयचन्द्र झा : ब्राह्मणवाद, यादववाद आ पासवानवाद अहि सभमे हम सब कहियो परबे नञ केलहुं। संगठन सेहो नञ परले। राजेंद्र प्रसाद यादव जखन अखिल भारतीय मिथिला संघ कें अध्यक्ष छलेये तखन ई संस्था बुलंदी पर गेलय। जे काज करत सँ पाग पहिरय कें अधिकारी अछि। अहाँ कें बुझल होयत जे हम सब ताकि-ताकि कें यादव के, पासवान कें सदस्य बनाबैत छी। हम सब तऽ कहैत छियै जे अहाँ सब लड़ि कें अप्पन अधिकार लियअ। दिल्लीमे ब्राह्मणकें अलावा जे जाइत अछि मैथिली कें बचाकें वएह राखने अछि। हमर परिकल्पना अछि जे मैथिली कें बचा कें जे राखने अछि, वहि पाग पहिरय कें अधिकारी अछि।

विनीत उत्पल : मधुबनी-दरभंगा कें मिथिला बाजल जायत अछि तऽ अहाँ कोना चंपारण सँ चम्पानगर (भागलपुर) धरि के एक्के मिथिला मानित छैये?

विजयचन्द्र झा : देखियो, ई अंगिका, बज्जिका जे छियै सँ अछि मैथिली कें कमजोर करय कें तरीका। मिथिलांचलमे अररिया, पूर्णिया, खगड़िया, कटिहार,मधेपुरा, मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर, भागलपुर संग नञ रहतय ताबे धरि मिथिला कें परिकल्पना करब कठिन अछि। ई सभ लोक एखनो मैथिली कें मुहावरा कें बचा कें राखने अछि। राजेंद्र यादव जी मधेपुरा कें रहैथ। जिया-उर-रहमान हमरा सभकें महामंत्री आ कोषाध्यक्ष रहैथ।

विनीत उत्पल : सीता कें जन्मस्थान पुनौराधाम (सीतामढी) अछि आ सीता कें ननद शांता कें सासुर मालिनी (भागलपुर)। तखन रामायण सर्किटमे भागलपुर कें सोहो जोड़ल जाय, अहि ल' क' अखिल भारतीय मिथिला संघ जागरूक अछि। किछु काज क' रहल अछि?

विजयचन्द्र झा: सीताजी क' ल' क' श्री प्रभात झा जी राज्यसभामे बात उठैने छलाह आ ओहि पर काज बड़ जोर-शोर सँ क' रहल अछि। वेद- पुराणक गप तऽ पंडित कहथिन। हमरा मिथिला कें याहि विशेषता अछि जे सबहक समावेश अछि। राम कें भगवान बनाबै बला सीते छथिन। पहिले सीता तखन राम। बिना सीताकें राम कथी। हमर सभहक इतिहास बड्ड पुरान अछि। मिथिला कें इतिहास बड पुरान अछि, सुगौली एक्ट सँ हम दू सहोदर भाई कें बाँटि देलक ये। एक सए बरस कें संधि रहय आ आब ओ ख़तम भ' रहल अछि। जनकपुर मिथिलाकें राजधानी होमऽ। हमर सँ परिकल्पना अछि, हम मिथिला देशो नञ मांगी रहल छी। पुरान मिथिला एक हो तऽ हमरा सभकें खुशी होयत।

विनीत उत्पल : आय जेना मैथिल लोक विस्थापित भ' रहल अछि, बिहारक लोक पलायन क' रहैत अछि, एकरा अहाँ कोना देखैत छैये?

विजयचन्द्र झा : मिथिला कें विस्थापन आ पलायन ता धरि होयत जा धरि मिथिला कें औद्योगिक विकास नञ होयत। पलायन भेला सँ मिथिला कमजोर भेलय अछि मुदा आर्थिक दृष्टि सँ सुदृढ़ भेलय ये। माननीय एल.के. झा कें नेतृत्वमे इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट ऑफ़ नार्थ बिहारकें एकटा कमिटी बनल रहय, जेकर मेंबर रहय श्री अजीत नाथ झा आ योगेन्द्र झा। ओ रिपोर्ट देने रहय जे जा धरि मिथिलामे इंडस्ट्री नञ बनतय ता धरि मिथिला सँ पलायन नञ रुकतय। दुर्भाग्य सँ सरकारों अहि दिस ध्यान नञ द' रहल अछि। मिथिलामे बीसटा चीनी मिल छल, खूब कुशियार होयत छल, लोक कें पास एत्तेक पाय होयत छल जे बाहर आबयकें गप सोचतो नञ छल। जा धरि मिथिलांचल बोर्ड कें गठन नञ हेतय ता धरि मिथिला केर विकास संभव नञ अछि। राजनीति समाज कें बांटि देने अछि। जाइत-पाइतमे। विकास कें गप कियो नञ करैत अछि। भोगेन्द्र झाकें बाद मैथिली-मिथिलाक गप प्रभात झा शुरू केने छथि। चाहे सीता सर्किट होमऽ, पुनौराधाम होमऽ। आय मिथिलाकें गप लोकसभामे नञ गूंज रहल अछि।

बाटक संगी

एहि प्रयासमे ओ सभ लोकनिक संक्षिप्त विवरण एतय देल जा रहल अछि जे अखिल भारतीय मिथिला संघक संग पछिला 30-40 वर्ष सँ अपन जीवनक सफरमे एहि संघ केँ साथी बनौने छथि। हमरा सबकें भरिसक प्रयास रहल अछि जे, जे कियौ एहि संस्था सं पिछला 30-40 वर्षसं जुड़ल छथि तिनका सं सम्पर्क क' क संस्थाक समृद्ध परम्पराक उल्लेख करि, मुदा पूर्ण विश्वास अछि जे एखनो धरि बहुत रास बाटक संगी कें एहि क्रममे नहि जोड़ी सकलौं, त' एकर एक मात्र कारण हुनका सँ असम्पर्कता रहल। ताहि लेल क्षमायाचना प्रार्थित अछि। उम्मेद अछि जे यात्रा आगु जारी रहत आ अपने सभक स्नेह आ आशीर्वाद भेटैत रहत...

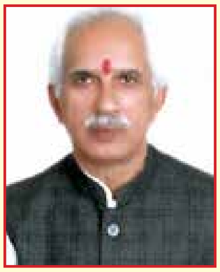

विजय चन्द्र झा
आईटीआई, दिल्ली सरकारसँ सेवानिवृत्त
अध्यक्ष (वर्तमान)
सदस्यता वर्षः 1969
पताः ग्रा.+पो. परिहारपुर,
जिला-मधुबनी
मो.: 9650461788

अजित नाथ झा
कार्यकारी अध्यक्ष
सदस्यता वर्षः 1972
पताः सेक्टर-9, फ्लैट नं.-961,
राधा अपार्टमेंट, द्वारका, दिल्ली
मो.: 09810234571

सलिल कुमार झा
सदस्यता वर्षः 1977
पताः ग्रा.+पो.-कलिगांव,
जिला-दरभंगा
मो.: 9838106717

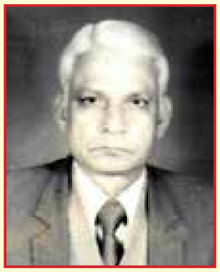

यू एन झा
सदस्य
सदस्यता वर्षः 1977
पताः ग्रा.+पो.-मंगरौनी,
जिला-मधुबनी
मो.: 09711867909

श्रीमती इन्दिरा झा
कार्यसमिति
सदस्यता वर्षः 1977
पताः ग्रा.+पो.-मंगरौनी,
जिला-मधुबनी
मो.: 09711867909

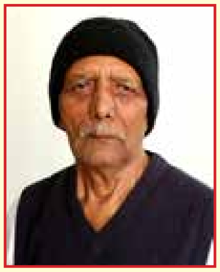

पद्म नारायण झा 'विरंचि'
कार्यसमिति
सदस्यता वर्षः 1982
पताः ग्रा.+पो.-खोजपुर
जिला-मधुबनी
मो.: 09931390927

सुशील चौधरी
कोषाध्यक्ष एवं सचिव (पूर्व)
सदस्यता वर्षः 1975
पताः ग्रा.-सौहरिया, पो.-देवहार
जिला-मधुबनी
मो.: 09968310054

हरिबल्लभ झा
सदस्यता वर्षः ....
पताः ग्रा.+पो.-कोठिया,
जिला-मधुबनी
मो.:

जिया उर रहमान
तीन बेर महासचिव आ
तीन बेर कोषाध्यक्ष
सदस्यता वर्षः 1977
पताः ग्रा.+पो.-बभरगामा, बिस्फी,
जिला-मधुबनी
मो.: 9868137766

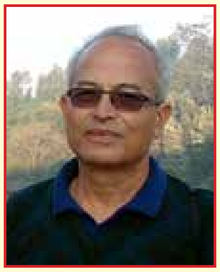

श्यामानन्द झा (IAS)
सदस्यता वर्षः 1975
पताः ग्रा.+पो.-बरुआर,
जिला-मधुबनी
मो.: 08826637590

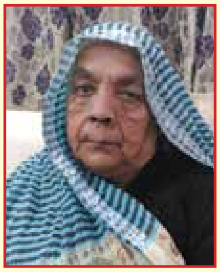

त्रियुगा झा
सदस्यता वर्षः 1977
पताः ग्रा.+पो.-बलहा,
जिला-मधुबनी
मो.: 9810961071

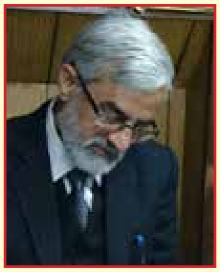

बालेन्दु अरूण झा
महासचिव
सदस्यता वर्षः 1980
पताः ग्रा.+पो.-भालगढ़,
जिला-सीतामढ़ी
मो.: 09810464135

एस एन झा
सदस्यता वर्षः 1977
पताः ग्रा.+पो.-सखबार,
जिला-दरभंगा
मो.: 9868126160/9971819660

आर. सी. झा
कार्यसमिति
सदस्यता वर्षः 1975
पताः ग्रा.+पो.-लौकहा,
जिला-मधुबनी
मो.: 09811805299

वाई पी सिंह
कार्यकारिणी
सदस्यता वर्षः 1977
पताः ग्रा.+पो.-मधेपुरी,
जिला-मधुबनी
मो.: 09810172967

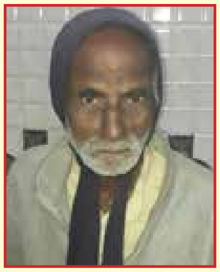

देवचन्द चौधरी
कार्यकारिणी
सदस्यता वर्षः 1969
पताः ग्रा.+पो.-दुर्गौली,
जिला-मधुबनी
मो.: 9953618061

सर्व नारायण मिश्र
सचिव
सदस्यता वर्षः 1977
पताः ग्रा.+पो.-दुरगौली,
जिला-मधुबनी
मो.: 09868737962

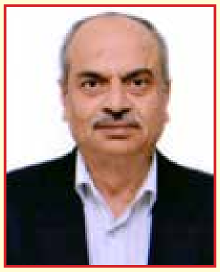

प्रो. सतीश चन्द्र झा
सदस्यता वर्षः 1982
मो.: 09891412890

बाटक संगी

लक्ष्मीश्वर तिवारी
सचिव
सदस्यता वर्ष: 1972
पता: ग्रा.+पो.-लालपुर,
जिला-मधुबनी
मो.: 9873643774

गणेश झा
उपाध्यक्ष (पूर्व)
सदस्यता वर्ष: 1982
पता: ग्रा.+पो.-अवाम,
जिला-दरभंगा
मो.: 9810211504

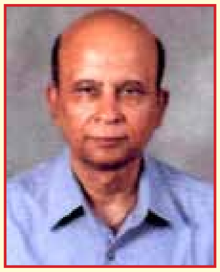

पी. के मिश्रा
सदस्य
सदस्यता वर्ष: 1982
पता: ग्रा.+पो.-सुखी,
जिला-मधुबनी
मो.: 09999601988

वीरेन्द्र मिश्र
कोषाध्यक्ष (पूर्व)
सदस्यता वर्ष: 1982
पता: ग्रा.+पो.-कहरिया,
जिला-दरभंगा
मो.: 09818352303

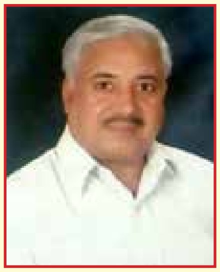

हरे राम झा
सचिव (पूर्व)
सदस्यता वर्ष: 1979
पता: ग्रा.+पो.-भटसिमर,
जिला-मधुबनी
मो.: 09990266179

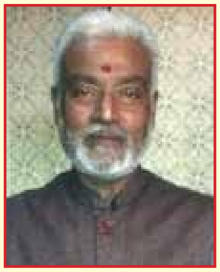

अमरनाथ झा (फरीदाबाद)
सचिव (वर्तमान)
पता: ग्रा.+पो.-नवनगर
जिला-मधुबनी

विद्यानंद ठाकुर
महासचिव (वर्तमान)
सदस्यता वर्ष: 1982
पता: ग्रा.+पो.-बलहा,
जिला-मधुबनी
मो.: 09717539000

भवेन्द्र झा
सदस्यता वर्ष: 1977
मो.: 9718506578

गंगेश्वर झा
सदस्यता वर्ष: 1982
पता: ग्रा.+पो.-घोंघौर,
बाबूबरही, जिला-मधुबनी
मो.: 9953875388

यंत्रनाथ मिश्र
सचिव (वर्तमान)
सदस्यता वर्ष: 1982
पता: ग्रा.+पो.-देवधा, रोसड़ा,
जिला-समस्तीपुर
मो.: 09873346849

बाटक संगी

राधा नाथ झा
महासचिव (वर्तमान)
सदस्यता वर्ष: 1987
पता: ग्रा.+पो.-हरड़ी,
जिला-मधुबनी
मो.: 9310225344

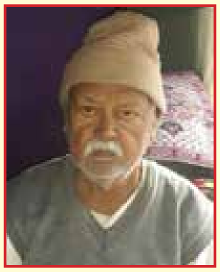

शुभचन्द्र झा
सदस्य
सदस्यता वर्ष: 1982
पता: ग्रा.+पो.-कैरवार,
जिला-मधुबनी
मो.: 08800283083

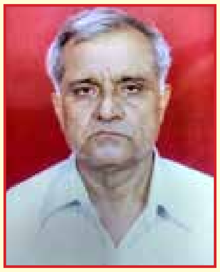

हरि देव मिश्रा
सदस्यता वर्ष: 1983
पता: ग्रा.+पो.-परिहारपुर,
जिला-मधुबनी
मो.: 9990844845

राम कुमार मिश्र
सदस्यता वर्ष: 1986
पता: ग्राम-खुटवारा,
जिला-दरभंगा
मो.: 9821916593

हरी शंकर मिश्रा
सदस्यता वर्ष: 1986
पता: ग्राम-खुटवारा,
जिला-दरभंगा
मो.: 9899129512

चन्द्रनाथ झा
सदस्यता वर्ष: 1986
पता: ग्राम-आवाम,
जिला-दरभंगा
मो.: 9810158711

रमेश झा
सदस्यता वर्ष: 1986
पता: ग्राम-नवहोल,
जिला-मधुबनी
मो.: 9968306225

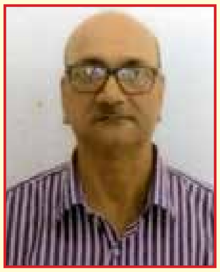

सुरेन्द्र चौधरी
कार्यसमिति
सदस्यता वर्ष: 1975
पता: ग्रा.-सौहरिया, पो.-देवहार
जिला-मधुबनी
मो.: 09717531857

पंचानन्द झा
सचिव (पूर्व)
सदस्यता वर्ष: 1982
पता: ग्रा.+पो.-हरिपुर,
जिला-मधुबनी
मो.: 09643927748

टी. के. मिश्रा
सदस्यता वर्ष: 1982
पता: ग्रा.+पो.-हरिपुर, डीहटोल,
जिला-मधुबनी
मो.: 09350523312

इन्द नाथ झा
सदस्यता वर्षः 1982
पताः ग्रा.+पो.-सरड़ा मदना
जिला-मधुबनी
मो.: 09811462465

टी एन ठाकुर
सदस्यता वर्षः 1982
पताः ग्रा.+पो.-बहेड़ी,
जिला-दरभंगा
मो.: 09811165559

योगेन्द्र मिश्र
सचिव (पूर्व)
सदस्यता वर्षः 1977
पताः ग्रा.+पो.-नवनगर,
जिला-मधुबनी
मो.: 09213833113

मन्त्रेश्वर झा (आईएएस)
सदस्यता वर्षः ....
पताः ग्रा.+पो.-लालगंज,
जिला-मधुबनी
मो.: 9631857998

पं. रामदेव झा
उपाध्यक्ष (पूर्व)
सदस्यता वर्षः 1968
पताः ग्रा.+पो.-लखनपुर
जिला-दरभंगा
मो.:

ब्रह्मानन्द झा
सदस्यता वर्षः 1975
पताः ग्रा.+पो.-नवानी,
जिला-मधुबनी
मो.: 08171010069

मानेश्वर झा
सदस्यता वर्षः 1977
पताः ग्रा.+पो.-भटसिमर,
जिला-मधुबनी
मो.: 08826640113

विमल चौधरी पंचोभ
सदस्यता वर्षः 1977
पताः ग्रा.+पो.-पंचोम
जिला-मधुबनी
मो.: 9472421906

आर. आर. झा
सदस्यता वर्षः .....
पताः ग्रा.+पो.-कोयलख,
जिला-मधुबनी
मो.: 9818064680

नवोनाथ मिश्र
सचिव
सदस्यता वर्षः 1977
पताः ग्रा.+पो.-दहिला,
जिला-मधुबनी
मो.: 08448018470

अखिल भारतीय मिथिला संघक

स्वर्ण जयन्ती समारोह

वास्ते

आईसीपीएस इन्जिनयरिंग प्राइवेट लिमिटेड

दिश सं

बहुत रास शुभकामना

खनन से आगे...

खनन से आगे.....

सामाजिक दायित्व के प्रति प्रतिबद्ध वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड

जहां एक ओर राष्ट्र की ऊर्जा–आवश्यकताओं को पूरा करने लिए कोयला खनन करना वेकोलि का प्रमुख दायित्व है. वहीं, दूसरी ओर अपने अधिकार क्षेत्र में रह रही आबादी की जरूरी जरूरतों; जैसे स्वच्छ वायु, साफ पानी, बेहतर स्वास्थ्य तथा कौशल–विकास आदि की पूर्ति कर हम उन्हें सक्षम और सशक्त भी बनाते हैं.

एक अग्रणी सार्वजनिक मिनी रत्न कम्पनी : वेकोलि

वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड

(कोल इंडिया लिमिटेड की सहायक कम्पनी)

कोल इस्टेट, सिविल लाईन्स, नागपुर – 440 001

http://westerncoal.nic.in

advision

भेंट घांट

महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द सँ भेंटवार्ताक अगुआई करैत माननीय सांसद श्री हुकुमदेव नारायण यादव

महासचिवक प्रतिवेदन

अखिल भारतीय मिथिला संघक स्थापना 1950 ई. में स्वर्गीय बाबू साहेब चौधरी आ देवनारायण झाक नेतृत्वमे ताहि दिनक कलकत्तामे भेल। दिल्लीमे एकर स्थापना 1967 ई. मे भेल, ताहि सं अहि बरख एहि संस्था अप्पन स्वर्ण जयंती मना रहल अछि। एहि 50 बरखमे संघ बड्ड रास उतार-चढाव देखलक आ अपन समर्पित कार्यकर्त्ताक संग आगू बढ़ैत रहल। मिथिला आ मैथिलीक सर्वांगीण विकासक लेल संघ जमीनी स्तर पर संघर्ष करैत रहल। एहि पचास बरखक यात्रा पर जं एक बेर ध्यान दी त' पबैत छी जे मैथिलीक अष्टम अनुसूचीमे मान्यता, दिल्लीमे मैथिली-भोजपुरी अकादेमीक गठन, मिथिलामे रेल लाइनक आधुनिकीकरण आदिमे ई संघ सड़कसं संसद धरि लड़ाई लड़लक।

हमरा सभक हर्षक विषय अछि जे स्थापना सं ल' क' आय धरि एकटा लोक हमरा बीच छथि, ओ छथि अखिल भारतीय मिथिला संघक वर्तमान अध्यक्ष श्री विजयचन्द्र झाजी। ओ वहि लोक छथिन जे सत्तर-अस्सीके दशकसं आय धरि दिल्लीक कोना-कोनामे रहै बला मैथिलक लेल दिन-राति काज क' रहल छथि। हुनकर अथक प्रयासक फल छैन जे आय ई संस्था अपन स्वर्ण जयंती मना रहल अछि। दिल्लीमे हुनकर काज क' ल' क' मिथिलावासी ऋणी अछि।

हमरा जनैत प्रत्येक समयक अपन किछु खास मांग होइत छैक। आइ अखिल भारतीय मिथिला संघक मांग अछि जे-

- सूचना आ प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा देशक 80 सं बेसी शहरमे बीपीओक स्थापना करबाक योजना अछि, जाहिमे मिथिलाक एक्कोटा शहर नहि अछि। मिथिलाक प्रतिभासं पूरा विश्व परिचित अछि। संघ अहि मंचसं मिथिलाक पांचटा शहरमे अहि बीपीओ खुजयके मांग क' रहल अछि।
- बेंगलुरु, हैदराबाद, पुणे, चंडीगढ़ जेहन शहर आईटी हबके रूपमे विकसित भेल अछि, जाहिमे लाखक लाख मिथिलाक युवा काज क' रहल अछि। संघ बिहार सरकारसं निवेदन क' रहल अछि जे मिथिलाक कोनो शहरमे एकटा आईटी हब विकसित कैल जाय, जतय मिथिलाक युवा एकटा नव इतिहास लिखय।
- मिथिलाक युवा जे राजमिस्त्री, बरही, प्लंबर, बिजली मिस्त्री, मजदूर अछि यानी श्रम काजमे जुडल छैथ आ देशक विकासमे लागल अछि, हुनक पलायन रोकबाक लेल बिहार सरकार केंद्र सरकारसं मिलके एकटा कार्ययोजना तैयार करय, जाहि सं मिथिलाक श्रम मिथिलाक विकासमे लागय आ मिथिलाक विकास हुए।
- मिथिलामे औद्योगिक विकास लेल राज्य सरकार आ केंद्र सरकार चीनी मिल, जूट मिल, हस्तकरघा, पेपर मिलकें अविलंब चलाबथि।
- रेलक समस्या विकराल अछि, रेलमंत्रीसं आग्रह जे मिथिलाक आबादीक ध्यानमे राखैत रेलगाड़ीक संख्या बढ़ाबथि। भागलपुर आ सहरसा भ' के राजधानी चलायल जाय, बड़ी रेल लाइन बनल अछि आ ओहि द' के चलाबयमे कोनो दिक्कत नहि अछि। दिल्लीसं दरभंगा, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर सं भ' के दुरंतो ट्रेन चलायल जाय।
- दरभंगा, पूर्णिया आ भागलपुरमे हवाईपट्टीक निर्माण क' दिल्लीसं जोड़ल जाय।
- असलका दिक्कत मिथिलामे बिजली, बाढ़ि आ रौदी अछि ओकर निदानक वास्ते कोशीक बराह क्षेत्र, कमलाके शीशा पानी आ बागमतीके नुनथरमे अविलंब डैमक निर्माणक प्रयास करथि।
- राजधानी दिल्लीमे मैथिली अकादेमीक गठन तं भ' गेल मुदा मैथिलीक प्रचार-प्रसारक लेल कवि सम्मलेनक अलावे मैथिली भाषा प्रशिक्षण, अनुवाद, पोथी प्रकाशनक संग सुचारू रूप सं पत्रिकाक प्रकाशन कैल जाय। एकटा गप ओ जे पहिने मैथिली अकादेमी के स्थापनाक घोषणा भेल मुदा बाद मे भोजपुरी के घुसा देल गेल। मैथिलीक विकास लेल मैथिली आ भोजपुरीक अलग-अलग अकादेमीक जरूरत छैक। एहि वास्ते दिल्ली सरकार के ध्यान संघ आकृष्ट करैत अछि।
- दिल्लीक स्कूल संग दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू), जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय (जेएनयू), इंदिरा गांधी ओपन यूनिवर्सिटी (इग्नू) आ जामिया मिलिया इस्लामिया मे मैथिलीक पढ़ाय शुरू होए।
- ज्योतिरीश्वर, विद्यापति, नागार्जुन, अमर शहीद ललित बाबूक नाम पर सड़कक नामकरण राजधानी दिल्लीमे करल जाय।
- मिथिलाक विकास लेल मिथिला विकास बोर्डक गठन हुए।
- माछ, पान आ मखानक उत्पादनकें बढ़यबाक लेल अनुकूल माहौल बनाओल जाय आ दिल्ली मे एकर बिक्रीक व्यवस्था करल जाय।
- मिथिलाक सांस्कृतिक पहिचानकें जीवंत रखबाक लेल अखिल भारतीय मिथिला संघ लगातार प्रयासरत रहल आ रहत।

बहुत-बहुत आभार आ धन्यवाद।

जय मिथिला, जय मैथिली, जय मैथिल

– विद्यानंद ठाकुर

अखिल भारतीय मिथिला संघक लोगो आ संस्था गीतक लोकार्पण

राजधानी दिल्ली मे पिछला पचास साल सँ मिथिलावासीक लेल कार्यरत अखिल भारतीय मिथिला संघक आकर्षक लोगो (प्रतीक चिह्न) आ संघक उद्घोष गान राज्यसभा सांसद श्री प्रभात झा एवंसंघक एवं संघक अध्यक्ष श्री विजय चन्द्र झा लोकार्पित केलथि।

संघक लोगो हस्तशिल्प संस्था, मधुवनी सँ जूड़ल युवा कलाकार राकेश कुमार झा बनौलथि अछि जाहि मे मिथिलाक सांस्कृतिक प्रतीक; पाग, पान, मखान आ लोकदेवता सलहेसक घोड़ा के राखलगेल अछि। संस्थाक गीत डॉ॰ चन्द्रमणि जी लिखलन्हि अछि आ तकरा अपन स्वर देलथि अछि मैथिलीक प्रसिद्ध गायक अवनीन्द्र ठाकुर जी। एहि गीत मे मिथिलाक सांस्कृतिक विशेषताक संग अखिलभारतीय मिथिला संघक उद्देश्य आ पिछला पचास सालक उपलब्धिक उल्लेख भेल अछि। ई लोगो आ संस्थाक गीत अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा आगामी 24 दिसम्बर, 2017 क' राजधानी दिल्ली स्थिततालकटोरा स्टेडियम मे अपन स्वर्ण जयंती समारोह आयोजन लेल लोकार्पित कयल गेल अछि।

एहि अवसर पर स्वर्ण जयंती समारोहक स्वागताध्यक्ष आ राज्यसभा सांसद श्री प्रभात झा आ संघक अध्यक्ष विजय चन्द्र झा जनतब देलन्हि जे लोगो आ संस्था गीत कोनो संस्थानक मूल परिचार होइतअछि। एहि संघक छत्रछाया मे देश आ विदेश मे पसरल मिथिलावासी के जोड़बाक प्रयास कयल जायत। सीताक जन्मस्थली पुनौरा धाम के पर्यटनक दृष्टि सँ विकसित कयल जायत आ एहि पवित्र भूमि केरामायण सर्किट सँ जोड़बाक अभियान मे सेहो अखिल भारतीय मिथिला संघ संग अछि। एहि

लेल राज्यसभा मे सेहो स्वर उठाओल गेल अछि। तालकटोरा स्टेडियम मे आगामी 24 दिसम्बर क' मैथिलीकला, संस्कृति, भाषा आ साहित्य पर विचार मंथन करनिहार विद्वतजन कें मिथिला विभूतिक नाम सँ स्थापित बाबा साहेब चौधरी, सर गंगानंद, नागार्जुन आ भोगेन्द्र झा सम्मान सँ सम्मानित कयल जेतन्हि।

अखिल भारतीय मिथिला संघक अध्यक्ष विजय चन्द्र झा कहलन्हि जे संस्था दिल्लीक संग संग मिथिला तक कला आ संस्कृति सहित मैथिली भाषाक विकासक लेल कतेको कार्य केलक अछि। मिथिलासमाजक लेल संघक इहो प्रयास भेल जे मैथिली भाषा के संविधानक अष्टम सूची मे स्थान भेटल, राजधानी मे मैथिली अकादेमी स्थापित भेल। मिथिला क्षेत्र मे बड़ी लाइन बनल आ तेज गतिक ट्रेन चलबप्रारंभ भेल। संघ मिथिला क्षेत्रक कला, साहित्य सहित पुराख्रमहत्वक स्थलक संवर्धन आ पर्यटनक विकास लेल सेहो लगातार प्रयासरत अछि। संघ बिहारक मिथिला क्षेत्रक संगख्रसंग राजधानी दिल्ली मे रहनिहारमिथिलावासीक हित मे कतेको डेग उठौलक अछि। कैंसर रोगीक सहायता, मिथिलाक छात्र लोकन्हि के छात्रवृत्ति सेहो प्रदान केलक अछि। सत्तरिक दशक मे दिल्ली मे रहनिहार करीब 35 हजार प्रवासीमैथिली के राशन कार्ड बनाब' मे नि:शुल्क मदति केलक अछि। दिल्लीक गीता कालोनी मे लागल आगि सँ पिड़ित ओहिठामक लेकन्हि के 50 हजार रुपयाक गृह समान सँ मदति, बिहार मे 1987 मेआयल बाढ़िक समय संघ द्वारा ट्रेनक एक बॉगी सामान ओहिठाम पठौल गेल। 2008 मे बिहारक मुख्यमंत्री कोष मे 51 हजार टाका आ दस बोरा सामान सेहो संघ देलक अछि।

किछु खबरि

अभा मिथिला संघ का स्वर्ण जयंती समारोह 24 को

नई दिल्ली। राजधानी में पिछले 50 सालों से मिथिलावासी के बीच कार्यरत अखिल भारतीय मिथिला संघ का आकर्षक लोगो (प्रतीक चिह्न) और संस्था गीत संस्था के अध्यक्ष विजय चंद्र झा ने शुक्रवार को जारी किया। विजय चंद्र झा ने बताया कि 24 दिसंबर को तालकटोरा स्टेडियम में अखिल भारतीय मिथिला संघ अपना स्वर्ण जयंती समारोह मना रहा है। लोगो और संस्था गीत जारी किया गया। संघ का लोगो हस्तशिल्प संस्था, मधुबनी से जुड़े युवा कलाकार राकेश कुमार झा ने तैयार किया है। इसमें मिथिला की संस्कृति के प्रतीक-चिह्नों के साथ लोक देवता सलहेस का घोड़ा शामिल है। संस्था के गीत को डॉ. चंद्रमणि ने लिखा है, जिसे प्रसिद्ध मैथिली गायक अवनींद्र ठाकुर ने स्वर दिया है। इस गीत में मिथिला की सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ अखिल भारतीय मिथिला संघ के उद्देश्यों और पचास साल के सफर की उपलब्धियों का उल्लेख किया गया है। उन्होंने बताया कि संस्था के बैनर तले देश-विदेश में फैले मिथिला के तमाम लोगों को जोड़ा जाएगा।

सुप्रीम कोर्ट ने उचित कदम उठाने के निर्देश

NBT नवभारत टाइम्स

मैथिल संगठन की स्वर्ण जयंती 24 दिसंबर को

दैनिक जागरण

विराट वैभव

24 को अखिल भारतीय मिथिला संघ का स्वर्ण जयंती समारोह

नवोदय टाइम्स

मिथिला की सांस्कृतिक झलक दिखेगी समारोह में

शाह टाइम्स

राष्ट्रीय सहारा

मिथिला संघ का स्वर्ण जयंती समारोह 24 को

मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह 2016

समारोहमे उपस्थित कलाकारगण

मुख्य पाहुन सुधीर मिश्रा, सीईओ, ब्रह्मोस केर स्वागत करैत अ.भा.मि.सं. के अध्यक्ष श्री विजयचन्द्र झा

श्री मदनमोहन झा, तत्कालीन शिक्षा मंत्री बिहार सरकार केर स्वागत करैत श्री प्रभात झा, सांसद

श्री कमलेश झा केँ बाबू साहेब चौधरी सम्मानसँ सम्मानित करैत अ.भा.मि.सं. के अध्यक्ष श्री विजयचन्द्र झा

सिविल सेवा परीक्षामे मैथिली सँ चयनित सुश्री रजनी झा केँ स्वागत करैत अ.भा.मि.सं. के उपाध्यक्ष डॉ. ममता ठाकुर

मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह 2016

प्रो. उदयनारायण सिंह 'नचिकेता' केँ सर गंगानाथ झा सम्मान सँ सम्मानित करैत पाहुन

सुरमे तल्लीन मशहूर गायक अवनींद्र ठाकुर

समारोह केँ संबोधित करैत महासचिव विद्यानंद ठाकुर

मैलोरंग रेपर्टरीक कलाकारगण

उत्साहक पल

मैथिलीक सुर

रंगारंग प्रस्तुति

कलाकार सभ संग पदाधिकारीगण

मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह 2016

गप-शप

मेल मिलाप

गायिका मैथिली ठाकुर, गायक विकास झा आ अन्य

प्रस्तुति मे तल्लीन सिंगिंग स्टार मैथिली ठाकुर

स्वागत-सत्कार

भारतीय डाक
India Post
जैसी आपकी ज़रूरतें
वैसी हमारी सेवाएँ
डाक जीवन बीमा
डाक घर बचत योजना
धन प्रेषण
स्पीड पोस्ट
बिज़नेस पोस्ट
एक्सप्रेस / बिज़नेस पार्सल
ई-पोस्ट
लॉजिस्टिक्स पोस्ट
रिटेल पोस्ट
@PostOffice.IN @IndiaPostOffice • www.indiapost.gov.in
अधिक जानकारी के लिए, कॉल करें 1800-11-8282 या ई-मेल करें : business@indiapost.gov.in

ललित बाबू: एक विलक्षण व्यक्तित्व

✍ डॉ. जगन्नाथ मिश्र

लेखक स्व. ललित नारायण मिश्र जीक अनुज छथि। ओ तीन बेर बिहारक मुख्यमंत्री रहलाह। मिथिला-मैथिलीक विकासक लेल सदिखन प्रयासरत रहैत छथि। केन्द्र सरकारमे सेहो मंत्री रहि चुकल छथि।

राष्ट्रीय आ बिहारक राजनीतिक पुरोधा, लोकप्रियताक रहनुमा ललित बाबू राजनीतिमे प्रखर नेता, सांसद आ केन्द्रीय मंत्रीक रूपमे मार्गदर्शक जेना नम्हर काल धरि बहुमूल्य योगदानक लेल याद केल जायत रहता। ओ एकटा आदर्श व्यक्तित्वक धनी पुरुष छला, जे अप्पन राजनीतिक दूरदर्शिता, धर्मनिरपेक्षता, प्रशासनिक दक्षता, राष्ट्र-भक्ति आ नि:स्वार्थ जन-सेवाक लेल जन-जनमे चर्चित अछि। आइ जरूरत अहि गपकेँ अछि जे युवा पीढ़ी हुनकर आदर्श जीवन-दर्शन सँ प्रेरणा ल' क' राष्ट्र-निर्माणक काजमे सक्रिय भूमिका निभाबय। ओ पार्टीक नेता आ कार्यकर्ताक सम्मान देबाक काज केने छला। समाजमे अहिने विरल व्यक्तित्वक प्रादुर्भाव होयत अछि जिनकर जीवन समकालीन इतिहासक अंग बनि जायत अछि। एहन विरल लोक सभमे ललित बाबू छथि। ललित बाबूक जेहन जनसेवाक रहल अछि, ओकरा देखैत सभटा राजनीतिक आ सामाजिक कार्यकर्ता केँ जनताक व्यापक हित केँ मनमे राखैत गंभीरता सँ आत्ममंथन आ आत्मचिंतन करबाक चाही। ललित बाबूक अनवरत प्रयासक प्रत्यक्ष परिणामकेँ देखि केँ लोकक मनमे हुनका प्रति एकटा नब प्रकाश-पुरुषक आकृति स्वत: आबि जायत अछि।

महात्मा गांधी, इन्दिरा गांधी आ राजीव गांधीक हत्याक कड़ीमे ललित बाबूक हत्या स्वत: जुड़ जाइत अछि, की ई सभटा हत्या साम्प्रदायिक आ उग्रवादी विचार सँ प्रेरित भ' क' केल गेल छल। मुदा सबस दुखद पक्ष त' ई अछि जे अहि सभ घटनाक बादो राष्ट्र एहन अवांछित तत्वक विरुद्ध सजग आ सक्रिय नञ भ' रहल अछि। ललित बाबूक स्मृति सँ हमर मनमे राजनीतिक मूल्यक गिरावट लेल कृतसंकल्प रहैक एकटा भावना जागैत अछि आ ख्याल आबैत अछि जे ललित बाबू केँ विकास पुरुषक उपाधि सँ अलंकृत करबाक ओ स्वरूप छल, जाहिमे सामाजिक सौहार्द्र आ समरसताक भाव कुटि- कुटि क' भरल छल। मुदा आय सामाजिक सौहार्द्रक ओ भावनामे बिखराव आ टकराव आबय सँ राष्ट्रक धर्मनिरपेक्षता संकटमे अछि। अहि कारण सँ मजदूर, सभ वर्गक किसान, गरीब, शिक्षक, सभ स्तरक कर्मचारी,नौजवान, छात्र आ युवा सभहक् बीच निराशाक भाव व्याप्त भ' रहल अछि।

ललित बाबूक जीवन गरीब सभकेँ सामाजिक समानताक स्तर पर आनय, अल्पसंख्यक सभकेँ बराबरीक अधिकार दिलाबयसँ जुड़ल संवैधानिक प्रावधानक प्रति प्रतिबद्ध रहल। मुदा, आइ संविधान सम्मत ''समाजवादी, पंथ निरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' पर चारू कात सँ संकट छायल अछि। आइ देश साम्प्रदायिक, फासीवाद, अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, साम्राज्यवाद आओर पूंजीवाद सँ जुड़ल तागतक आगू ठेघुन टेक रहल अछि। गांधी, नेहरु, इन्दिरा गांधी आ जयप्रकाश सँ संवारल गेल देश आइ

जातिवाद, सम्प्रदायवाद आ क्षेत्रवादक दलदलमे फंसि गेल अछि। देशक चिन्तनशील लोकक आगू एकरा सँ दुखक गैप आउर की भ' सकैत अछि जे अलग-अलग राज्यक लोक क्षेत्रीय भावना सँ ग्रस्त भ' एक-दोसराक प्रति असहिष्णु बनिजाय। ललित बाबू अलग-अलग मंत्रालयमे रहिकेँ सभ राज्यक सम्यक् विकासक लेल काज केने छला। हुनकर आत्मा केँ संकीर्ण क्षेत्रवाद की मनोवृति सँ कतेक पैघ ठेसँ पहुंचल होयत, ई अनुमानक विषय अछि। ललित बाबू बिहार केँ पिछड़ापन सँ निकालि क' एकटा विकसित राज्य बनाबैक कतेक रास परियोजना मंजूर कयलनि। केन्द्र आ बिहार सरकारक नेता सभहक बीच बेसी सँ बेसी गप-शप करा केँ बड कठिन समस्या सभकेँ समाधान करेने छला। कोशी जेहन शोकदायी धारक बाढि आ महामारी सँ पीड़ित असंख्य लोक केँ मुक्ति दियाबैक उद्देश्य सँ ओकरा नियंत्रित करबाक योजना स्वीकृत करेने छला। अहि परिवारक कतेक रास लोक 1920सँ स्वतंत्रता संग्राममे सक्रिय छला। हुनकँ परिवारक 11 टा सदस्य स्वतंत्रता आदोलनमे यातना सहने छला। छात्र जीवन सँ ललित बाबू अप्पन राष्ट्रीयताक भावना प्रदर्शित करैत स्वतंत्रता संग्राममे अगुवा छल। पांच बरखक कठोर सजा जेलमे भोगने छला। विश्वविद्यालयमे स्नातकोत्तर पाठ्चर्या आ शोधकाज सम्पन्न करैत ओ राजनीतिमे सक्रियता सँ भाग लेलनि आ कांग्रेस पार्टी केँ सबल स्तम्भ प्रमाणित भेलखिन। बिहारमे डा. श्रीकृष्ण सिंह आ राष्ट्रीय स्तर पर पं. नेहरु आ इन्दिरा गांधीक विश्वास ओ अर्जित केने छला आ अप्पन योग्यता, कर्मठता आ सक्रियता सँ हुनका सभकेँ प्रभावित केने छला। लोक सेवाक प्रति हुनकर समर्पण-भाव आ जनसेवाक लेल हुनकर प्रतिबद्धता हुनका केन्द्रमे संसदीय सचिव, उपमंत्री, राज्यमंत्री आ अंतत: कैबिनेट मंत्री बनौलक आ कांग्रेसक सर्वोच्च निकाय राष्ट्रीय कार्य समितिक सदस्यक रूपमे स्थापित करौलक। अहि पद पर रहैत ललित बाबू समाजवादी विचारधारा आ पंथ निरपेक्षताक प्रति अप्पनपूर्ण आस्था दिखैने छला। हुनकर विचार आ क्रियाकलापमे गांधी, विनोबा, नेहरु आ इन्दिरा गांधीक सिद्धांत निरंतर लखाह दैत छल। हुनकर दृष्टिकोण राष्ट्रीय विचार सँ ओतप्रोत रहैत छल।

पिछड़ल बिहार केँ राष्ट्रीय मुख्यधाराक समकक्ष आनैक लेल ललित बाबू सभ दिन कटिबद्ध रहला। ओ अप्पन कर्मभूमि मिथिलांचलक राष्ट्रीय पहचान बनाबैक लेल पूर्ण तन्मयता सँ प्रयास कयलनि। ओ मिथिला चित्रकलाक देश-विदेशमे प्रचारित क'ओकर एकटा अलग पहचान बनबैलक। अशोक पेपर मिलक स्थापना केँ एकटा नब आशाक संचार केने छला आ दरभंगा व पूर्णियामे वायु सैनिक हवाई अड्डा बनाबय सँ अहि क्षेत्र दिस राष्ट्रक ध्यान सहसा आकृष्ट भेल छल। मिथिलांचलक विकासक कड़ीमे ललित बाबू लखनऊ सँ असम धरि लेटरल रोडक मंजूरी करेने छला, जे मुजफ्फरपुर आ दरभंगा होयत फारबिसगंज धरि लेल स्वीकृत भेल छल। अहि पथक निर्माण आय सेहो कार्यान्वयनक क्रममे अछि। मिथिलाक भाषा आ संस्कृतिक विकासमे हुनकर महत्वपूर्ण योगदान अछि। मैथिली केँ साहित्य अकादेमीमे स्थान दियाबैक लेल, मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना करबाक लेल आ मैथिली केँ लोक सेवा आयोगक चयनित विषयक सूचीमे जोड़बाक लेल हुनकर सहयोग सदिखन स्मरण कयल जायत।

रेल मंत्रीक रूपमे मिथिलांचलक पिछड़ल क्षेत्रमे झंझारपुर-लौकहा रेल लाइन, भपटियाही सँ फारबिसगंज रेल लाइन आ कटिहारस बाराबंकी, समस्तीपुर सँ दरभंगा बड़ी लाइनक निर्माण मानसीसँ फारबिसगंज बड़ी लाइन, कटिहार सँ जोगबनी बड़ी लाइन, सकरी सँ हसनपुर रेल लाइन आ जयनगर-सीतामढ़ी रेल लाइन जेहन 36टा रेल योजनाक सर्वेक्षणक स्वीकृति अपना आपमे हुनकर कार्यक्षमता, दूरदर्शिता आ विकासशीलताक ज्वलंत उदाहरण अछि। मुजफ्फरपुर, पटना आ रांचीमे रेल सेवा आयोगक स्थापना क' विशेष रूपसँ बिहार राज्यक नवयुवकक लेल नियोजनक संभावना बनैने छला। हुनकर रेल विस्तार योजनामे पटनामे गंगा नदी आ कोशी महासेतु पुल निर्माणक

ललित बाबूक जीवन : एक नजरि

- जन्म: 2 फरवरी 1922 ई. (मातृक बाजितपुर, मुजफ्फरपुर मे)
- पैतृक गांव: बलुआ बाजार, सहरसा
- शिक्षा: सी. एम. कॉलेज, दरभंगा
- टी. एन. बी. कॉलेज, भागलपुर
- पटना विश्वविद्यालय, पटना
- 1939: छात्रजीवन सँ राष्ट्रीय आन्दोलनमे संलग्न
- 1941-42: जेल यात्रा
- 1948-49: पटना वि.वि. सीनेट फेलो
- 1950: अ. भा. कांग्रेस कमिटि सदस्य
- 1952: प्रथम लोकसभाक सदस्य
- 1957: पुन: लोकसभामे निर्वाचित आ संसदीय सचिव पद पर नियुक्त
- 1960: श्रम, सेवा: योजना उपमंत्री तथा नियोजन उपमंत्री
- 1960: उप-गृह मंत्री
- 1964: उप-वित्त मंत्री
- 1967: श्रम एवं पुनर्वास राज्यमंत्री, पुन: प्रतिरक्षा उत्पादन राज्यमंत्री
- 1970: विदेशव्यापार राज्य मंत्री
- 1972: कांग्रेस कार्यकारिणी समितिक सदस्य निर्वाचित
- 1973: केन्द्रीय मंत्रिमंडलमे रेलमंत्री
- 2 जनवरी 1975: समस्तीपुर-मुजफ्फरपुर बड़ी लाइनक उद्घाटन करैत बमकांडमे आहत भ' 3 जनवरी केँ नश्वर शरीरक त्याग।

योजना सेहो शामिल छल।

विदेश व्यापार मंत्रीक रूपमे ललित बाबू देशक लगभग 150 रुग्ण सूती मिलक अधिग्रहण क' लाख मजदूरक जीवन सुरक्षित केने छला आ कपड़ाक निर्यातक संभावना कें बढ़ा कें बेसी उत्पादन कें लेल प्रोत्साहन देलक। अहि निर्णय सँ बिहारक गया आ मोकामा स्थित दूटा सूती मिल कें सेहो लाभ भेटल। ललित बाबू बिहारक जूट उत्पादकक लाभक दृष्टि सँ राष्ट्रीय स्तर पर जूट कारपोरेशनक स्थापना कयलनि आ ओहि कारपोरेशनक माध्यम सँ समर्थन मूल्य द' क' प्रत्यक्ष खरीदारीक व्यवस्था करौलनि। ओ जूट कारपोरेशन सेहो आजुक काल निष्क्रिय बनि पड़ल अछि जेकरा चलते जूट उत्पादक कें विवशतामे अल्प दर पर अप्पन जूट बेचहि परैत अछि।

रक्षा मंत्रीक रूपमे ललित बाबू भारत-चीन युद्धक कड़वा अनुभव कें देखैत रक्षा सामग्रीक उपलब्धता सुनिश्चित करबाक लेल सार्वजनिक क्षेत्रमे कतेक रास रक्षा उत्पादन उद्योग कें सेहो स्थापना करेने छला। पं. नेहरू आओर इन्दिरा गांधीक दूरदर्शिता सँ प्रेरणा ल' क'ललित बाबू रक्षा मंत्रालय कें आधुनिकतम अस्त्र-शस्त्र सँ सुसज्जित केने छला। पं. नेहरू आ इन्दिरा गांधीक आर्थिक सोचक अनुरूप, जाहिमे आत्मनिर्भरता कें आवश्यक अंग मानल गेल छल, ओकरा सार्वजनिक क्षेत्रक विस्तार देलनि। लक्ष्य ई छल जे आत्मनिर्भरता बढ़य आ विदेशी पूंजीक कम उपयोग हुअय आ आयातक मात्रा घटाबैक उपाय कें आर्थिक नीतिक मूल आधार बनाओल जाए।

हुनका सांसद बनय सँ पहिने प्रथम पंचवर्षीय योजना आरंभ भ' चुकल छल। 1954 ई.मे कोशीक भीषण बाढ़िक विभीषिका ओ पं. जवाहर लाल नेहरू आ डा. श्रीकृष्ण सिंह कें दिखैने छला। लोकसभामे त' ओ बराबर कोशीक समस्याक निदानक लेल वकालत करिते

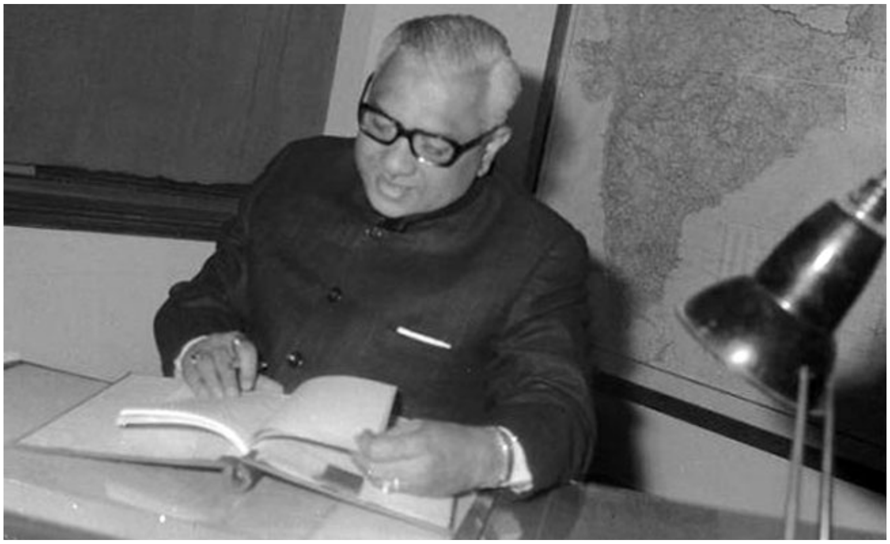

छला। हुनकर प्रयत्नक परिणाम भेल जे प्रथम पंचवर्षीय योजनामे कोशी-योजना कें सेहो सम्मिलित क' लेल गेल। 1955 ई.मे कोशी योजनाक श्रीगणेश भेल। पं. जवाहर लाल नेहरू आ गुलजारी लाल नन्दाक सुझाव सँ ललित बाबू कोशी-योजनामे जन-सहयोगक प्रयोग कयलनि। अहि काजमे हुनका भारत सेवक समाज सँ सेहो बड़ रास सहायता भेटल। श्रमदानक द्वारा तटबंधक निर्माण करल गेल। ओहि काल जूट-उत्पादक स्थिति सेहो बड दयनीय भ' गेल छल। जूटक दाम बड़ गिर गेल छल। अहि समस्या दिस ओ संसदक ध्यान आकृष्ट केने छल। कोशीक प्रलयकारी बाढ़िमे रेलवे लाइने तहस-नहस भ' गेल छल। अहि लाइन सबहक पुनर्निर्माणक लेल ओ संसदमे जोरदार चर्चा केने छला। विदेश व्यापार मंत्रीक रूपमे ओ जूट उत्पादकक हितमे जूट कारपोरेशनक स्थापना कयलनि।

ललित बाबूमे संगठनक अद्‌भुत क्षमता छल। एकर प्रत्यक्ष प्रमाण हमरा ओहि काल देखहि लेल भेटल, जखन 1969 ई.मे कांग्रेसमे बंटवारा भेला सँ पार्टी दू फांकमे बंटि गेल छल। बिहारक सभटा शीर्षस्थ नेता सिन्डीकेटक पक्षमे छल। असगरे ललित बाबू इन्दिरा गांधीक समर्थित कांग्रेसक नैयाक पतवार थामने छला। ओ 1971 आ 1972 ई. केर चुनावमे अहि निष्ठा आ कर्मठताक संग काज कयलनि जाहि सँ कांग्रेसकें अजेय बहुमत भेटल आ देशमे इन्दिरा गांधी सँ आशीर्वाद प्राप्त कांग्रेसक झंडा बुलन्द भेल। अप्पन जन्मभूमिक वातावरणमे गूंजैत मैथिली भाषाक प्रति हुनकर अपार अनुराग छल। एकरे परिणाम छल जे मैथिली भाषाकें ओ साहित्य अकादेमीमे सम्मिलित करलखिन। ललित बाबू संसारक कतेक रास देशक परिभ्रमण केने छला। हुनका संसारक कतेक रास नवीन सभ्यताक सम्मोहनसँ भरल संपर्कमे आबय केर अवसर सेहो भेटल, मुदा ओ अप्पन धरतीक पुरना परंपरा सँ अहि तरहे सम्बद्ध छला जे कोनो बाह्य प्रभाव कें ग्रहण नञ क' सकैत छल। ओकर रंगमे रंग नञ सकैत छला। ओ भारतीय संस्कृतिक कट्टर उपासक रहथिन। ओ अप्पन कला, संस्कृति आ साहित्यक रक्षाक लेल हर संभव उपाय करैत छलखिन। यैह कारण अछि जे ओ भूलल-बिसुरल मधुबनी कला कें पुनर्जीवित कयलनि। ओ संसारक कला-मानचित्र पर मधुबनी कला कें स्थापित कयलनि। आब ई हमरा सबहक जिम्मेदारी अछि जे हम ललित बाबूक केल गेल काजक रक्षा कोन हद तक क' सकैत छी आ ओकर सर्वांगीण विकासमे आउर कतेक योगदान द' सकैत छी।

सेल SAIL
पसंद
आर्किटेक्टस् की
विश्वास
उपभोक्ताओं का
SAIL TMT HCR
SAIL TMT EQR
सेल टीएमटी
• भूकंप प्रतिरोधक
• ज़ंग प्रतिरोधी भी उपलब्ध
• सीमेंट से बेजोड़ पकड़
• हर निर्माण की जान
सेल टीएमटी के उपयोग
• बिल्डिंग, पुल एवं कांक्रीट के अन्य निर्माण के सुदृढ़ीकरण के लिए एक मज़बूत विकल्प
सेल ज्योति
गैल्वनाइज़्ड प्लेन व कॉर्युगेटेड शीट्स
• सर्वोच्च गुणवत्ता
• कम वज़न, मज़बूती ज्यादा
• विभिन्न मोटाइयों में उपलब्ध
सेल ज्योति के उपयोग
घर की छत, फैक्टरी शेड, मालगोदाम, पैनल, दरवाजे, शटर, अनाज धानी, एसी डक्ट, कूलर, आइस बॉक्स, ड्रम, बाल्टी, टब, टंकी, उपकरण, वाहन निर्माण
स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
www.sail.co.in
हर किसी कि जिन्दगी से जुड़ा हुआ है सेल
www.chiranjn.com
सेल एकीकृत इस्पात संयंत्रों के उत्पाद : अपने करीबी क्षेत्रीय कार्यालय से सम्पर्क करें
क्षेत्रीय कार्यालय
उत्तरी क्षेत्रः
17वीं मंज़िल, उत्तरी टावर, कोर-1,
स्कोप मिनार, लक्ष्मी नगर जिला केंद्र,
दिल्ली–110 092.
ई-मेलः rmnr@sail-steel.com
फोनः 011-22441825
011-22442105, 011-22444572
पूर्वी क्षेत्रः
इस्पात भवन
40, जवाहरलाल नेहरू रोड
कोलकाता–700 071.
ई-मेलः rmer@sail-steel.com
फोनः 033-22880634
033-22882986, 033-22886423
पश्चिमी क्षेत्रः
दि मेट्रोपॉलिटन
8वीं व 9वीं मंज़िल बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स,
बांद्रा (पूर्व) मुम्बई-400 051.
ई-मेलः rmwr@sail-steel.com
फोनः 022-26571827
022-26571836, 022-26571838
दक्षिणी क्षेत्रः
इस्पात भवन
5 कोडमबक्कम हाई रोड
चेन्नई-600 034.
ई-मेलः rmsr@sail-steel.com
फोनः 044-28259660
044-28257164, 044-28285009

भोगेन्द्र झाः मिथिलाक अंतिम विदेह आ अंतिम देसिल बयना कें प्रहरी

✍ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

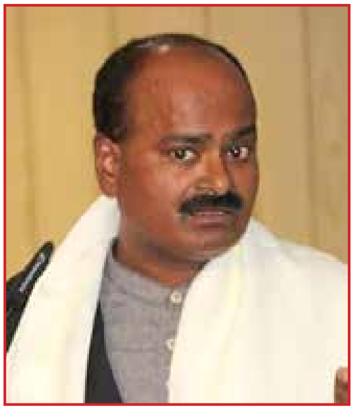

लेखक मानवशास्त्र, कला इतिहास, मानवाधिकार आ साहित्यक लोक छथि। अनेक संस्था सँ जुड़ल छथि। ललितकला अकादेमीक परामर्शदाता, मैथिली-भोजपुरी अकादेमीक सदस्य, ब्रेनकोठीक चेयरमैन छथि। विभिन्न राष्ट्रीय आ अंतरराष्ट्रीय संस्था जेना कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण संस्थान, इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केंद्र, यूनेस्को आदि सँग काज करबाक अनुभव छनि।

संपर्क :
बी-2/333, तारा नगर,
ओल्ड पालम रोड, ककरौला, सेक्टर 15, द्वारका, नई दिल्ली 110078

स्वर्गीय भोगेन्द्र झा मैथिली संस्कृति, माटि आ मैथिली भाषा कें संरक्षक कें रूपमे अथाह छथि, शाश्वत छथि, अनंत छथि। भाई विजयचन्द्र झा हमरा कहलनि जे अपन अनुभव कें आधार पर भोगेन्द्र जी पर किछु लिखू। भेल कोना लिखू? फेर भेल, हठात मना कोना क' देबनि! निर्णय लेलौं जे लिखब। लिखब त' कोना लिखब? हमर शिक्षा मानव विज्ञानमे भेल अछि। मानवशास्त्रमे केस स्टडी कें विधान छैक। एहि विधानमे ई ट्रेंनिंग देल जाइत छैक जे कोनो व्यक्ति पर अहां हुनका संगे रहिक' अपन व्यक्तिगत अनुभव पर हुनक व्यक्तित्व कें व्याख्या करू। व्यष्टि सँ समष्टि। परमाणु सँ अणु कें यात्रा। एक सँ अनेक कें बुझब। हम अही धर्म कें पालन करैत स्वर्गीय भोगेन्द्र झा पर किछु चर्च करबाक प्रयास करैत छी। भोगेन्द्र झा आ यात्री नागार्जुन कें जीवन रूप मे यथार्थ कम्युनिस्ट छलनि। ओ अवसरवादिता, गुटबाजी, गठबन्धन कें नाम पर सिद्धांत कें ताक पर राखवाक परिपाटी सँ दूर छला। नागार्जुन कें कविता कें दू पंक्ति:

"रोजी-रोटी, हक की बातें
जो भी मुंह पर लाएगा!
कोई भी हो, निश्चय ही
वह कम्युनिस्ट कहलाएगा!!"

जेना दुनू पर लागू होइत छलनि। मुदा दुनू महामानव कें मिथिला कें लोक ओ सम्मान नञ द' सकलनि जकर ओ अधिकारी छला। एहि दुनू कें साम्यवाद कें आजुक नेता आ बहुत बुद्धिजीवी सेहो तिलांजलि द' देने छथि। बात भोगेन्द्र जी कें करैत छी त' बता दी जे भोगेन्द्र जी नास्तिक नञ छला। ओ छद्म, प्रपंच, दुराचार, धर्म कें नाम पर ऊंच-नीच, जाति-पाति, छुआछूत कें विरोधी छला। मुदा धर्म कें नीक तत्व आ बातक समर्थक छला।

हमरा एना लगैत अछि जे भोगेन्द्र झा कें कोनो पार्टी विशेष कें लोक कें रूपमे जोड़िक' नञ देखक चाही। ओ समाज कें छला, मैथिली भाषा कें छला, मिथिला कें समस्या कें बारेमे सोचय बला सजग प्रहरी छला। ताहि हुनका नामक आगा हम कहियो कॉमरेड शब्द कें प्रयोग नञ करैत छी। हुनका पर हम अपन अनुभव कें आधार पर किछु लिखबाक प्रयास करैत छी। जीवनक दू अवस्थामे भोगेन्द्र जी कें सान्निध्य भेटबाक सौभाग्य प्राप्त भेल अछि हमरा। प्रथम ताहि क्षण जखन 11-12 वर्ष कें बच्चा रही। दोसर जखन दिल्ली यूनिवर्सिटीमे शोध करैत रही ताहि समय कें दुनू साहचर्य संयोग सँ बिना कोनो पूर्व योजना कें मुदा दुनू हमर जीवन पर अमिट छाप छोड़लक।

बात प्रथम भेट सँ करैत छी। ई बात 1977-78 कें अछि। हमर पिता ओहि

समय सिमडेगा (आजुक झारखण्ड)मे खादी भण्डार कें मैनेजर छला। पढ़ाई हमर ठीक सँ नञ भ' रहल छल। पिताजी हमर मां कें कहलथिन जे ककरो संगे सिमडेगा चलि आबथि कैलाश। हमर गामक रोहित मिश्र कम्युनिस्ट नेता छला। ओ रांची कें रसियन हॉस्टलमे रहैत छला। संयोग सँ गाम आयल छला रोहित। मां निवेदन केलथिन त' ओ तैयार भेला जे हमरा अपना संगे रांची लेने जेता आ ओतय सिमडेगा बला बसमे बैसा देता। हम रोहित भाई संग रांची लेल बिदा भेलौं। सबस पहिने पटना लेल बिदा भेलौं। ताहि समय पटना कें गांधी सेतु बनिते रहैक। पानी जहाज सँ हम सब पटना पहुंचलौं, फेर पहलेजा सँ महेन्द्रू घाट। पटना गेला कें बाद अजय भवनमे गेलौं। संयोग सँ भोगेन्द्र जी ओतहि छला। पटनामे पांच दिन रहलौं। सब दिन 6-8 घंटा हुनका संगे बिताबी। बुझेबे नञ कैल जे एतेक पैघ लोक छथि? सब तरहक बात करथि। कहथि, "अहांक अरेड़ गामक लोक त' पहलमानीमे माहिर अछि। इहो कहलनि जे बंगट मिश्र सँ आ किछु आन पहलमान सब सँ थोड़ेक बहुत कुश्ती हमहूं सिखने छी। फेर कुश्ती कें नियम ओकर चालि मांजल ओस्ताद (पहलमान) जकां बताबथि। हमर क्षीण शरीर छल मुदा गाममे लोक सब कें अखाड़ा सब पर पहलमानी करैत देखैत रहैत छलहुं, ताहि ल' कें अहि विधा पर थोड़ेक इच्छा जरूर छल। भोगेन्द्र जी धोबिया पाट, चित, पट करक अनेक गुण कें गूढ़ सब कहलनि। फेर अरेड़, जरैल, सतलखा, करही, बरहा आदि कें नामी पहलमानक गुण कहथि, कथा कहथि। इहो कहथि जे केरा खाई, कारण ई सम्पूर्ण पौष्टिक आहार छैक। मोट छिलका भेलाक कारने सुरक्षित छैक, एहिमे कोनो प्रदूषण अथवा मिलावट कें खतरा नञ छैक आदि-आदि। लगैत छल सब दिन हिनका सँ सीखते रही। सब सँ पैघ बात ई लागल जे ओ बाल मनोविज्ञान कें खूब जनैत छला। एहने बात सब बाजथि जाहिमे हमरा मोन लागय। जतबे ओ बाजथि ततबे हम बाजी। जहिना हम मनोयोग पूर्वक हुनका सुनी, तहिना ओ हमरा सुनथि। अपन पांच दिनक अनुभव कें आधार पर कहि सकैत छी जे ओ हमरा जीवनक सर्वश्रेष्ठ शिक्षक छला। हुनकर शब्द आइओ ओहिना घुमरैत अछि। जीवन भरि याद रहत।

दोसर अनुभव 1992 ईस्वी कें अछि। हम दिल्ली यूनिवर्सिटीमे रिसर्च करैत रही। एम. फिल. पूरा होब' बला छल। मानसरोवर हॉस्टलमे रहैत रही। बिहार सरकार एकाएक बिहार लोक सेवा सँ मैथिली कें हटा देलकैक। यूनिवर्सिटी कें शोधार्थी, युवा शिक्षक आ विद्यार्थी एहि पर एक आपातकालीन बैसार यूनिवर्सिटी कें जवाहर वाटिकामे रखलनि। हमरो आबय लेल कहै गेला। नेनपन सँ मिथिला सँ बाहर रहला सँ हम मैथिली साहित्य साफे नञ पढ़ने रही। बजैत जरूर रही, मुदा लिखबाक लुइर नञ छल। खैर हम पहुंच गेलौं। बहुत लोकक जुटान रहैक। अन्तिम निर्णय ई भेलैक जे एक फोरम "मैथिली बचाओ आन्दोलन" कें नाम सँ तुरंत बनै। फोरम बनि गेलैक, शिशिर कुमार झा (रामजस कॉलेज) ओकर संयोजक, राधा माधव भारद्वाज (दीनदयाल कॉलेज) ओकर अध्यक्ष भेला आ हमरा बलजोरी महासचिव बनाओल गेल। निर्णय ई भेलैक जे राजघाट पर एकटा धरना कें आयोजन करी। धरनास्थल पर हमरा लोकनि एकत्रित भेलौं। एक घंटा कें बाद ओतय भोगेन्द्रजी अखिल भारतीय मिथिला संघ कें किछु कार्यकर्त्ता संगे आबि गेला। ओहि समय विजय चन्द्र झा एहि संस्था कें महासचिव छला। बातचीत भेल आ निर्णय भेलैक जे संगठित भ' लड़ाई लड़ी, तखने किछु संभव अछि। आब भोगेन्द्र जी संगे नव समीकरण बनल। पता नञ कियैक हमरा हुनक व्यक्तित्वमे चुम्बकीय आकर्षण बुझाइ छल। हुनक सोच बिलकुल

अलग छलनि। जखन ओ मैथिली भाषा, मिथिला संस्कृति, मिथिला क्षेत्र केँ बात करैत छला त' हुनकर सोच पोलिटिकल आइडियोलॉजी, सोशलिज्म, पार्टी लाइन सँ भिन्न होइत छलनि। लगैत छल जे आदमी जं हिनका संगे लागि जाय त' मैथिली संस्कृति केँ सब आयाम केँ प्रकाण्ड ज्ञाता भ' जायत। भोगेन्द्र जी जखन मैथिली भाषा आ संस्कृति केँ बात करैत छला त' आर कोनो गप्प नहि। राजनीति सँ हजारो कोस दूर भ' जाइत छला। आब कहां भेटैत अछि ओहेन लोक-निश्छल, निष्कलंक आ केवल आ केवल मातृभूमि लेल समर्पित! हुनका हमरा द' बुझल छलनि जे हमरा कम्युनिस्ट आइडियोलॉजी आ भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी सँ किछु लेबाक-देबाक नञ अछि, हमर आइडियोलॉजी विपरीत अछि। तथापि ओ हमरा कोनो बहुत अधिक समर्पित कम्युनिस्ट सँ अधिकेँ सिनेह करैत छला।

भोगेन्द्रजी मैथिली केँ अष्टम अनुसूचीमे स्थान भेटि जाइक ताहि लेल राति-दिन एक केने रहैत छला। सब दिन किछु ने किछु कागजात बनेनाई आ फेर ओहि पर काज केनाई हुनकर दैनिक क्रिया-कलाप भ' गेल रहनि। ताहिमे अधिक काल विजयचन्द्र झा जी हुनक हनुमान बनल रहैत छला। कतेक बेर तत्कालीन गृहमंत्री श्री यशवंत राव चौहान, त' कखनो प्रधानमंत्री कार्यालय त' कखनो लालकृष्ण अडवाणी लग त' कखनो ककरो लग, सत्ता सँ विपक्ष धरि सब ठाम घुमैत रहैत छला। उद्देश्य एतबे जे सत्ता अथवा विपक्ष कियोकि एकर विपरीत नञ बाजय। एक मिशन छल मैथिली केँ भारतक संविधान केँ अष्टम अनुसूचीमे स्थान। कखनो-कखनो हुनका इहो होइत छलनि जे पत्नी केँ असमय मृत्यु केँ बादो ओ अपन कर्तव्यमे कतौ ने कतौ पिछड़ि गेला। जेना हुइस गेला!

भोगेन्द्रजी केँ लगैत छलनि जे मैथिली भाषा केँ विकास लेल जरूरी छैक जे एकरामे सब जाति, वर्ग, क्षेत्र द्वारा व्यवहरित शब्द, फकड़ा, खिस्सा, कहानी, पिहानी, लोक परम्परा, विध बेभहार केँ समावेश हो। ओ मैथिली भाषा केँ बहुरंगी चहट्गर चुनरी केँ रूपमे देखैत छला एकरंगी अमंगलकारी बाल विधवाक मारकिन बला रंगहीन नुआ नहि।

भोगेन्द्रजी मिथिला केँ नदी केँ संतुलन कय बाढ़ि रोकबा लेल अपसियाँत रहैत छला। हुनकर इच्छा छलनि, जे पूर्ण रूप सँ वैज्ञानिक छलनि, जे कोशी-कमला-बागमती-भुतही-बलानकेँ बाढ़िक प्रकोप सँ बचेबा लेल नेपालमे डैम बना बृहत् स्तर पर पनबिजली केँ उत्पादन कैल जाय। एहि सँ बाढिक समस्या केँ स्फूर्त निदान संभव अछि आ पर्याप्त बिजली केँ आपूर्ति भेला सँ नव-नव उद्योग केँ स्थापना शुरू हैतेई, लोक उद्योग लगेता, रोजगार केँ अवसर भेटतै, लोकक जत्था-के-जत्थामे जे पलायन भ' रहल अछि ताहि पर तुरंत अंकुश लागि जेतैक; क्षेत्रक दरिद्रता केँ निवारण शुरू हेतैक, मिथिला सब तरहें सम्पन्न हैत। जे पानि आई विनाश केँ कारण छैक सँ एहि सँ विकासक यंत्र बनत। एहि विषय पर भोगेन्द्र जी अनेक भाषण देला, लेख तैयार केलनि आ किछु पोथी सेहो लिखला। प्रमुख पोथी (अथवा बुकलेट)मे निम्नलिखित केँ नाम लेल जा सकैत अछि:

1. मल्टीपरपस हाई डैम्स (मैथिली, हिंदी आ अंग्रेजी)
2. रीवर मैनेजमेट (अंग्रेजी)
3. एन्सिएंट इंडियन ट्रेडिशन एंड कम्युनिज्म (मैथिली आ अंग्रेजी)
4. भारतीय दर्शनक क ख ग घ (मैथिली)
5. क्रान्तियोग (मैथिली)

मुदा पोथी सँ हजारो गुणा अधिक बात आ तथ्य हुनक बजबामे छलनि। ओ वाचन परंपरा केँ मनीषी छला-नित्य स्तुत्य आ प्रणम्य, गुण-ग्राहक, सर्वजन समाजक उद्घोषक।

भोगेन्द्रजी केँ एहि योजना केँ राष्ट्रीय आ अंतर्राष्ट्रीय स्तर केँ पानि विशेषज्ञ, इंजिनियर सब कियो पसीन केलक। भारत केँ तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी एक बेर नेपाल आ भारत केँ संयुक्त योजना केँ लेल एक विशिष्ट मण्डल केँ गठन केलनि। भोगेन्द्र जी ओहि मण्डल केँ सदस्य छला। ओ नेपाल सेहो गेला। एहि परियोजनामे बहुत पैघ राशि केँ आवश्यकता रहैक मुदा राज्य सरकार आ केन्द्र सरकार केँ सतत उदासीनता केँ कारण ई परियोजना फाइलमे धूरा-गर्दा फंकैत रहलै। नेपाल केँ आर्थिक स्थिति एहेन नञ छैक जे ओ एहि खर्च केँ वहन क' सकय। मिथिला बाढ़िक प्रकोप सँ त्राहिमाम करैत रहैत अछि। अहि साल केँ भीषण बाढ़ि सँ कतेक जान-माल केँ क्षति भेल अछि ताहि सँ हमरा लोकनि नीक जकां अवगत छी। मिथिलाक आन्दोलनी, युवक, छात्र नेता, प्लानर, सोशल एनिमेटर सबकेँ एहि दिश सोच' केँ जरूरत छनि। राज्य सरकार आ केन्द्र सरकार पर दबाब केँ राजनीति बनेबाक जरूरत छैक, तखने एकर निदान संभव अछि। आ एकर निदान मात्र आ मात्र भोगेन्द्र जीक सोच सँ संभव अछि।

मिथिलाक सीता पर आई हमर सोच, हमर लेख आदि केँ लोक आ विद्वान सब बहुत प्रशंसा करैत छथि।

होइत अछि भोगेन्द्र जी रहितथि त' कतेक भाव विभोर होइतथि? कारण ई जे मिथिला केँ धिया सिया केँ अवधारणा हम भोगेन्द्र जी सँ हुनकर संसर्गमे हुनकेँ सँ सिखने छी। हमर पीएचडी केँ शोध विषय छल "स्ट्रक्चर एंड कॉग्निशन ऑफ़ मैथिली फोक सोंग्स: एन एनालिटिकल स्टडी ऑफ़ एंथ्रोपोलॉजी ऑफ़ म्यूजिक" एहि पर हमर काज मूलत: चारि लोकक विचार सँ प्रेरित अछि - भोगेन्द्र झा, प्रोफेसर बैद्यनाथ सरस्वती, प्रोफेसर हेतुकर झा आ प्रोफेसर डी. के. भट्टाचार्य। आश्चर्य तखन लगैत छल जखन भोगेन्द्र जी स्त्रीगण सबहक मैथिली गीतक बात करथि। कतेक गीत हुनका कंठाग्र रहनि तकर अंत नहि। सीता केँ जखन बात होनि त बाजथि: "राम बियाहने कोन फल भेल, सीता जन्म कनिते गेल!" आ से जखन कहथि त' हुनकर पुरुष हृदयमे जेना स्त्रीगण केँ आत्मा घुइस जानि - हे भगवान! कोन कसूर बिधना भेल बाम कहब दु:ख ककरा?

भोगेन्द्रजी कहथि: "जनैत छी के. के. (हम दिल्ली यूनिवर्सिटीमे के. के. नाम सँ जानल जाईत रही), एखनो मिथिला केँ स्त्रीगन कहां स्वतंत्र छथि? वेदनामे बहिते रहैत छथि। एखनो जखन मैथिलानी सब कष्टमे रहैत छथि त' दोदिल होइत बाजि उठैत छथि: 'फाटू हे धरती?' उफ़, जेना सबमे सीता बैसल होथि! जेना धरती सब किछु सहि लेती मुदा अपन धिया केँ अपमान नहि! जेना मैथिलानी केँ जनमिते कानमे कहि देल जाई छनि जे जखन सबतरि सँ थाकि जैब त' धरती केँ शरण मांगि लेब!" ई बात कहैत भोगेन्द्र जी केँ आंखि नोर सँ भरि जानि। मुदा ओहि नोर केँ ठोप देखबा लेल कियो कहां भेल तैयार?

खैर, बात आगां बढ़बैत छी। भोगेन्द्रजी जनक, याज्ञवल्क्य, विद्यापति, पक्षधर, वाचस्पति, मंडन, अयाची, शंकर, केँ बात करैत छला। ओ लखिमा आ विश्वास देवी केँ गुणक ग्राहक छला। ओ गार्गी केँ आगां अनैत मैथिलानी केँ सब क्षेत्रमे आगां आनय केँ समर्थक छला। ओ वैदिक संस्कृति केँ पक्षधर छला जे कर्म आधारित साम्यवादक समाज केँ बात करैत अछि। हुनका पंजी व्यवस्था, मूल, मूलग्राम, बीज पुरुष सब चीज केँ ज्ञान छलनि। भोगेन्द्र जी कहियो कोनो मंदिर अथवा पूजा स्थलीमे जूता चप्पल पहिरने नञ प्रवेश केलनि। ओ पूजा भले मंदिरमे नञ करैत छला मुदा हृदय केँ कण-कणमे हुनका भैरवि आ भगवान बसैत छलथिन। ओ नीक परंपरा केँ भंजक नञ अपितु संरक्षक छला। विद्यापति केँ बाद मैथिली भाषा लेल हुनका सँ साकांक्ष कियोक नञ भेल। ओ देसिल बयना केँ कर्णधार छला। आई मैथिली केँ अष्टम अनुसूची लेल सब कियोक बड़का-बड़का तीर मारैत छथि मुदा एहि स्थान पर मैथिली केँ आनय बला मात्र भोगेन्द्र जी छला। हुनकर व्यक्तिगत जीवनमे भारतीय संस्कृति, वेद, धर्म शास्त्र, रामायण, महाभारत, गीता, मनुस्मृति केँ छाप छलनि। ओ कुरान आ बाइबिल सेहो पढ़ने छला। ओ सहज मुद्रामे सिद्ध ऋषि जकां लोक केँ कहैत छलथिन "हम भारतीय दर्शन, धर्मशास्त्र पढ़ि क' कम्युनिस्ट भेल छी। मार्क्स सँ अधिक कम्युनिस्ट बनेबामे हमरा लेल भारतीय दर्शन प्रभावकारी अछि।" एहि बात केँ ओ सब लोक स्वीकार करता जे हुनका मैथिली लेल दौड़ैत, लड़ैत, संघर्ष करैत देखने छथि। हुनका लेल जनकल्याण परिवार सँ पैघ छलनि। कहियो अपन परिवार दिस ध्यान नञ देलनि।

बातक क्रममे भोगेन्द्र जी एक दिन हमरा कहलनि: "जनैत छी के.के.? हमर नेतागिरी केँ कोनो फायदा त' हमर पुत्र सबकेँ नञ भेलनि, ओकर हानि जरूर भ' गेलनि। कहियो कोनो गुप्त आ महत्वपूर्ण विभाग हमरा द्वारे हमरा बेटा केँ नञ भेटैत छनि। " उचितो छलनि कहब। आखिर एक पिता अपन बात ककरो लग त' बाजत ने?

एतेक कहीं सिम्प्लीसिटी भेलैक अछि? एक कम्युनिस्ट जीवन भरि गांधीवादी विचारधारा केँ पोषक बनल रहल। सत्य आ अहिंसा केँ गुणगान करैत रहल। मोटका खादी धोती, दुसुत्ती खादी केँ कुर्ता, गोल गला गंजी, बंडी आ ऊपर सँ खादी केँ गमछा। यैह छलनि भोगेन्द्र जी केँ जीवन भरिक ड्रेस कोड अथवा वस्त्र विन्यास स्मरण नञ आबि रहल अछि जे एहि केँ अतिरिक्त हुनका कहियो कोनो आन वस्त्र अथवा अही वस्त्रमे कोनो ताम-झाम संग कतौ देखने होई!

राजनीति केँ अलग चक्र चलैत छैक। लोक ओहि चक्रमे फंसैत अछि। उबरैत अछि। नव समीकरण कखनो-कखनो सब किछु केँ समाप्त क' दैत छैक। एहने सन समय केँ फेरमे भोगेन्द्र जी सेहो फंसला। उचिते फंसला। सब दिन सीता केँ चर्च करब त सीताक दुखो ने झेलब! चलू इतिहासमे चलैत छी संगे-संगे। 1976मे मधुबनी लोकसभामे नब परसीमन लागू भेलै। 1976मे एक बात आरो भेलैक-पूर्वी लोकसभा केँ झंझारपुर नाम देल गेलैक, जकरा जयनगर लोकसभा कहल जाइत छलैक आब ओ मधुबनी लोकसभा क्षेत्र भ' गेलैक। अहि परसीमन सँ झंझारपुरमे कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ़ इंडिया

(सीपीआई) कमजोर भ' गेलैक। जेना सब समीकरण ढनमना गेल हो! आब देखू की होइत छैक एकर परिणाम।

इमरजेंसी कँ बाद जनता दल कँ लहरि भेलैक, जाहिमे श्री हुकुमदेव नारायण यादव खूब नीक मार्जिन सँ चुनावमे विजयी भेला। भोगेन्द्र जी चुनाव हारि गेला। आपसी कलहकँ कारण जनता दलमे टूट भेलैक आ 1980 ईस्वीमे फेरो मध्यावधि चुनाव कँ घोषणा भेलैक। जनमानसमे एक बेर फेरो स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी लेल करुणा जागि गेलैक। परिणाम ई भेलैक जे कांग्रेस कँ उम्मीदवार सफिकुल्लाह अंसारी मधुबनी लोकसभा सँ चुनाव जितलाह। अहि तरहे एक बेर जनतादल कँ लहरिमे भोगेन्द्र जी, हुकुमदेव नारायण यादव सँ चुनाव हारला आ मध्यावधि चुनावमे 1980मे इंदिरा लहरिमे कांग्रेसक उम्मीदवार सफिकुल्लाह अंसारी सँ। ताहिसँ की! ओ त' निरंकार ऋषि छला। निष्काम भाव सँ अपन काजमे लागल रहला – ने जीतक दम्भ होनि हुनका ने हारक अपमान। सब दिन एक समान। ई कहब सहज छैक मुदा एकरा जीवनमे आनब दुष्कर। भोगेन्द्र जी अतबे सहजता सँ एकरा जीवनमे अनलथि। मानि लेलनि जे पांच वर्ष धरि जनजागरण अभियान, अध्ययन, मैथिली संस्कृति कँ संरक्षण, गरीबक उत्थान हेतु काज आ पार्टी आ कैडर कँ निर्देशक पालन करैत रहला।

भोगेन्द्र जी लेल विधना किछु अलगे विधान लिखने छलथिन। चारिए मासमे तत्कालीन सांसद सफिकुल्लाह अंसारी कँ एकाएक निधन भ' गेलनि। फेर चुनाव भेलैक आ भोगेन्द्र जी एहि बेर ठोसगर मार्जिन सँ चुनाव जीतला आ अपन धोती, गमछा, कुरता आ बंडी संगे दिल्ली लेल बिदा भेला। मैथिली भाषा कँ भूत एखनो सवारे छलनि।

आब छल हुनकर लगातार विजय होबाक समय। 1980 सँ 1996 धरि मधुबनी लोकसभामे सबतरि ओ विद्यमान रहला। चुनाव लड़ैत रहला आ जीतैत रहला। मात्र 1984मे इंदिरा गांधी कँ नृशंसँ हत्या कँ कारण जनतामे कांग्रेस कँ प्रति जे भावनात्मक संवेदना कँ लहरि उठलै, ताहि लहरिमे भोगेन्द्र जी सेहो उधिया गेला आ 1984 कँ बाद बला चुनाव हारि गेला। एकबेर फेरो बिना जीत हार कँ चिंता केने भोगेन्द्र जी जन सरोकार अभियानमे लागि गेला। मूल मन्त्र एखनो एकै टा –

किये मस्तक को ऊंचा
रहे पराजय जयमे एक समान।
छीनते नही यहां कँ लोग कभी
उस बैरी का अभिमान।।

भोगेन्द्रजी लोक सँ तारतम्य बैसबैत रहला। लोकक बात सुनैत रहला। लोकक दुःख आ सुख कँ बुझैत रहला। पते नञ चललनि जे 5 बर्ष कोना बीत गेलैक। फेर 1989मे चुनाव कँ डंका बजलैक –

"सिंहासन खाली करो
कि जनता आती है।"

भोगेन्द्रजी चुनाव कँ तैयारीमे जुटि गेला। अपन भाषण कहियो मैथिली छोड़ि आन भाषामे नञ देलनि। लोक सबकँ नारा सेहो मैथिलीमे बनब' आ बाजय कँ निवेदन करथि, निर्देश करथि। एक नारा जे एखनो स्मरण आबि रहल अछि ओ ई छलैक:

"उपजल गहुमक सीस मनोहर
ताहि पर हंसुआक धार।
जय कहू अन्नदाता कँ
जय किसान बोनिहार।।"

हुनकर किसान, मजदूर, बोनिहार, अन्नदाता सब अपन प्रिय, निष्ठावान, ईमानदार नेताकँ चुनावमे मोहर लगा विजयी बनौलक। 1989 कँ चुनाव नीक जकां जीत गेला। दिल्ली आबि गेला। दिल्लीमे पानि लेल, नदी लेल, नहर लेल, बांध लेल, भारत आ नेपालक सहमति सँ मिथिला कँ कल्याण लेल आ मैथिली भाषा कँ अष्टम अनुसूचीमे स्थान दिएबाक लेल काज करैत रहला। गाड़ी-घोड़ा त' छलनि नहि, तें पैरे-पैरे चलैत रहला। मिथिलाक अलख जगबैत रहला। ओहि पैरे बटोही कँ तुलना कोनो महग कारमे बैसल लोक किन्नहु नञ क' सकैत छल! ओहि पैरमे मैथिली माय केर अदृश्य घुँघरू बान्हल रहैक आ कानमे विद्यापतिक माधव केर बांसुरीक टेर – घुँघरू कँ झनकार आ माधव केर

भोगेन्द्र जीक जीवन : एक नजरि

- जन्म: 1923 ई.
- पैतृक गांव: बरहा (मधुबनी)
- शिक्षा: सी. एम. कॉलेज, दरभंगा
- 1941-48: संगठन सचिव, एआईएसएफ, दरभंगा जिला
- 1954-57: संगठन सचिव, एआईएसएफ, दरभंगा जिला
- 1967: चारिम लोकसभामे सांसद
- 1971: पुन: सांसद निर्वाचित
- 1971-78: सदस्य, सार्वजनिक उपक्रम संबंधी लोकसभा समिति
- 1989: पुन: सांसद निर्वाचित
- 1990: सदस्य, संसदीय विशेषाधिकार समिति, राजभाषा समिति
- प्रकाशित पोथी:
  - भारतीय दर्शनक क, ख, ग (मैथिली)
  - बहुद्देश्यीय बांध परियोजना (मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजी)
  - भारत का स्वतंत्रता संग्राम (हिन्दी)
  - प्राचीन भारतीय परंपरा आ साम्यवाद (मैथिली आ अंग्रेजी)
  - राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, आइडियोलॉजी, एक्सरेड (अंग्रेजी)
  - रिवर मैनेजमेंट (अंग्रेजी)
- निधन: सन् 2010

बांसुरीक टेरमे मस्त भेल मिथिला पुत्र भोगेन्द्र जी चलैत रहैत छला।

फेर 1991मे मध्यावधि चुनाव भेलैक। भोगेन्द्र जी समरभूमिमे कूदि पड़ला। हुनकर USP छलनि ईमानदारी, मैथिली भाषा आ नदी कें जुड़ाव कें काज। जनता कखनो हुनका पर तामसँ करनि, कखनो हुनकर शिकायत करनि, कखनो हुनका नाम पर खौंझा अपन माथा कपार फोरै मुदा जखन वोट कें बात भेलैक त' सब पार्टी कें समीकरण कें तोड़ैत भोगेन्द्र जी कें वोट देलकनि। परिणाम ई भेल जे भोगेन्द्र जी 1991 कें लोकसभा चुनाव फेरो जीत गेला। दिल्ली कें 34 गुरुद्वारा रकाबगंज केर बंगला एहि मैथिल पुत्र कें अभिवादन लेल ठाढ़ छल। भोगेन्द्र जी मधुबनी लोकसभा कें सांसद बनि दिल्ली आबि गेला।

भोगेन्द्र जी कें कथा कें आदि अंत बुझब बड्ड असंभव! नव बात कहि लेब त' पुरान प्रसंग आगामे ठाढ़ भ' जायत। 1989 कें चुनाव जीतला बाद भोगेन्द्र जी निर्णय लेलनि जे ओ लोकसभा कें सांसद कें शपथ अपन मातृभाषा मैथिलीमे लेता। समस्या ई भेलैक जे मैथिली त' अष्टम अनुसूची कें भाषा नञ अछि फेर भोगेन्द्र जी एहि भाषामे कोना शपथ लेता? लेकिन भोगेन्द्र जी कें तर्क ई छलनि; "भले मैथिली राजनीति कें कारण अष्टम अनुसूची कें भाषा नञ अछि मुदा अछि त' ई भारत कें प्राचीनतम भाषा तैं हम अपन मातृभाषा मैथिलीमे शपथ लेब। ओहि समय विश्वनाथ प्रताप सिंह भारत कें प्रधानमंत्री छला। ओ भोगेन्द्र जी कें बहुत सम्मान करैत छलथिन। विश्वनाथ प्रताप सिंह तुरंत लोकसभा कें मातहत अधिकारी सँ बात केलनि। हिनक मातृभाषा मैथिली कें प्रति समर्पण देखि मातहत अधिकारी एहि बात लेल सहमति द' देलथिन जे ओ मैथिलीमे शपथ ल' सकैत छथि। आब एक समस्या आबि गेलनि। शपथ पत्र कें मैथिली अनुवाद कें करत? भोगेन्द्र जी कनि चिंतित भेला। फेर दृढ़ निर्णय लेलनि जे स्वयम अनुवाद करता। समय कम छलनि। राति भरि जगैत रहला आ अनुवाद करैत रहला। जखन अनुवाद भ गेलनि त' अतेक आनन्दित भेला जेना जीवनक सर्वस्व भेट गेल होनि! एहि तरहे मैथिल पुत्र भोगेन्द्र झा अपन लोकसभा सदस्य कें पद आ गोपनीयता कें शपथ भारतीय इतिहासमे पहिल बेर अपन देसिल बयना मैथिलीमे पढ़ि एक इतिहास बनौलनि। 1991 कें चुनाव जीतला बाद सेहो भोगेन्द्र जी शपथ मैथिलीमे लेलनि।

भोगेन्द्रजी ओना त' अपन पार्टी कें अनुशासित सिपाही छला मुदा किछु विशेष क्षणमे जखन लगलनि जे वोट कें राजनीति कें कुचक्रमे फंसि पार्टी गलत दिशा दिस जा रहल अछि जे अनैतिक आ मर्यादा कें विपरीत छैक त' अपन आत्मा कें अवाज़ सँ काज लेलनि। हार-जीत कें भाव सँ उपर उठि गेला। एकर दुष्परिणाम भोगय पड़लनि। उदाहरण बहुत अछि मुदा एक उदाहरण जे हुनकर लोकसभामे घुसबाक रस्ता हमेशा कें लेल बंद क' देलकनि तकर जिक्र करब अनिवार्य। अगर एहि बातक चर्च नञ भेल त' भोगेन्द्र जी कें व्यक्तित्व बुझब आ हुनका पर चर्च करब व्यर्थ। 1996 ईस्वीमे चारा घोटाला कें चर्च चहुंदिस रहैक। भोगेन्द्र जी कें ईमानदार हृदय जेना झकझोरि देलकनि। फेर की, ने आव देखला ने ताव आन ठाम कें की बात झट दनि सोझे संसद परिसरमे लालू प्रसाद यादव कें चारा घोटाला कांड कें विरोधमे अनसन पर बैस गेला। मुदा ई डेग भोगेन्द्र जी कें राजनीतिक यात्रा आ संसद भवनमे हुनकर प्रवेश लेल पटाक्षेप क' देलकनि। ईमानदारी सँ लेल गेल डेग कें एतेक पैघ सजा अपना आप कें जातिहीन, धर्महीन, वर्गहीन पार्टी कहय बला दल द' सकैत अछि तकर कल्पनो नञ कैल जा सकैत छल! मुदा सत्य त' सैह छल। बिहारमे राष्ट्रीय जनता दल (राजद) आ सीपीआई कें बीच

चुनावी गठबन्धन भेलैक। तामसे आमिल भेल लालू प्रसाद यादव अपन आ पार्टी कैँ प्रभुत्व देखबैत टिकट बँटबारा मे भोगेन्द्रजी कैँ नाम काटि देलथिन। आब मधुबनी लोकसभा सँ भोगेन्द्र जी कैँ राजनीतिक शिष्य कॉमरेड चतुरानन मिश्र कैँ सीपीआई दिस सँ टिकट भेटलनि। चतुरानन जी जनताक वोट सँ कम आ गठबन्धन कैँ वोट कैँ अधिक प्रभाव सँ जीत गेला। लालू प्रसादकैँ छत्रछाया बनल रहलै। लोक सब भोगेन्द्र जी कैँ कमी कैँ अनुभव करैत रहल। मजदूर, किसान, जनता सब नहु-नहु सीपीआई सँ विमुख होबय लागल। भोगेन्द्र जी सिद्ध ऋषि छला। चुप रहलनि। 1996 कैँ बाद कहियो सीपीआई मधुबनी सँ चुनाव नञ जीत सकल। अपन कैल गेल पाप कैँ पार्टी भोगैत रहल जेना भोगेन्द्र जी कैँ श्राप लागि गेल हो?

भोगेन्द्र जी पार्टी कैँ नीति, सत्ता कैँ प्रति एकाएक उमरल लोभ आदि सँ दुखी रहैत छला। आजुक आयाराम गयाराम नेता जकां नञ छला; तें एतेक भेलाक बादो पार्टी संगे अपन संबंध नञ विच्छेद केलनि। पार्टी कैँ समर्पित सिपाही बनल रहला। जीवनक अन्तिम सांस धरि।

कहल जाइत छैक जे जखन भोगेन्द्र जी स्कूलमे पढ़ैत छला ताहि समय धकजरीमे एक जमींदार ओतय एक गरीब मजदूर कैँ शोषण अपना आंखि सँ देखला। व्यवस्था कैँ प्रति हृदय चिचिया-चिचिया क' विरोध करय लगलनि। आ ओही दिन सँ भोगेन्द्र झा सँ कॉमरेड भोगेन्द्र झा भ' गेला। स्वतंत्रता सेनानी त' छलाहे।

दोसर प्रसंग फेरो हुनकर मैथिली भाषामे भाषण आ मैथिली भाषा सँ अगाध प्रेम सँ सम्बंधित अछि। एकर वर्णन ऐतिहासिक रूपे महत्वपूर्ण अछि। एक बेर भोगेन्द्र जी मधुबनी कैँ मुसलमान बहुल क्षेत्र भौआरामे भाषण दैत छला। भोगेन्द्र जी केर भाषण त' मैथिलीमे छल हैत। एकाएक भीड़मे सँ किछु युवक भाषण कैँ बीचमे बाजि उठल "भोगेन्द्र बाबू, मैथिली ना चलत। हिन्दीमे बोलू!"

भोगेन्द्र जी पूर्ण निरगुन कैँ लोक रहथि। हंसैत बजला: "वाह! अहां अपने मैथिलीमे बाजू आ हमरा कहैत छी हिन्दीमे बोलू? सँ कोना हैत? हम अहांक भाषामे बोलब।"

कहल जैत छैक जे जखन भोगेन्द्र जी स्कूलमे पढ़ैत छला ताहि समय धकजरीमे एक जमींदार ओतय एक गरीब मजदूर कैँ शोषण अपना आंखि सँ देखला। व्यवस्था कैँ प्रति हृदय चिचिया-चिचिया क' विरोध करय लगलनि। आ ओही दिन सँ भोगेन्द्र झा सँ कॉमरेड भोगेन्द्र झा भ' गेला। स्वतंत्रता सेनानी त' छलाहे।

युवक सब सेहो जेना अड़ि गेल। आब हिंदीमे बाजल "हिंदीमे भाषण दीजिये, हिंदीमे।"

मुदा भोगेन्द्र जी मैथिलीमे बजैत रहला। अंतमे तामस घोर होइत युवक सब भोगेन्द्र जी कैँ डर देखबैत बजलनि: "अगर हिंदीमे नही भाषण दीजिएगा तो एक भी मुसलमान का वोट नहीं मिलेगा। सोच लीजिए भोगेन्द्र बाबू क्या करना है?"

भोगेन्द्र जी बिना कोनो राग द्वेष कैँ बजला "हम त' मैथिली छोड़ि आन भाषामे अपन भाषण नञ देब। अगर अहां सब नञ वोट देमय चाहैत छी त' नञ देब मुदा हमर भाव अटल अछि"। दुर्भाग्य सँ भोगेन्द्र जी ओ चुनाव हारि गेला। मुदा एहि सँ भोगेन्द्र जी सन सधल सिद्धांतवादी कैँ कोनो फ़र्क पड़ैत छैक? भाषा कैँ नाम पर एम जी रामचन्द्रन, करूणानिधि, जयललिता, ठाकरे परिवारक लोक कत' सँ कत' चलि गेल मुदा हमरा लोकनि अपन विवेक भोगेन्द्र जी लेल कत' छोड़ि अयलहुं???

नश्वर शरीर कैँ त्यागि ई वसुधा ककरो कहां बनेलक अछि अमृतपुत्र?

भोगेन्द्र जी आत्मबल सँ जीबैत छला, दैहिक बले नहि। 87 बरखक अवस्थामे जीर्ण काया सँ निधोख भेल दरभंगा, मधुबनी, पटना, दिल्ली कैँ यात्रा करैत रहला। मधुमेह के कहैत रहलथिन "जतेक उत्पात मचेबाक छौ मचा ले। हमर यात्रा जीवनक अन्तिम सांसँ धरि चलैत रहतौ। जिद्दी तोरा सँ रे मधुमेह हम अधिक छी। तों की सकबैं हमरा सं?" आ, दैवक चमत्कार देखू, सैह भेलनि। 11 जनवरी 2009 कैँ दिन श्री विजय चन्द्र झा जे वर्तमानमे अखिल भारतीय मिथिला संघकैँ अध्यक्ष छथि केर जेठ पुत्र संजीव झा नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर अपन पत्नी संग कतौ यात्रा कैँ उद्देश्य सँ ठाढ़ छला। हुनकर दृष्टि एक असहाय बूढ़ पर गेलनि जे कदाचित सीढी चढ़बामे असमर्थ बुझेलनि। ओ झट दनि ओहि बुजुर्ग लग मदति करबाक भावना सँ पहुंच गेला।

संजीव पुछलथिन "बाबा! हम मदति क' दैत छी?"

बुढा: "हौ बौआ, पानि पियाबह? बड्ड जोर पियास लागल अछि।"

संजीव तुरंत एक बोतल पानि आनि

देलथिन। कृशकाय शरीरधारी केँ बोल एकाएक संजीव पहिचानि गेला। "हे भगवान! ई त भोगेन्द्र झा छथि!" संजीव सोचलनि। तुरत चरण स्पर्श केलथिन आ अपन परिचय दैत कहलथिन: "बाबा, हम विजय चन्द्र झा केँ जेठ बालक संजीव छी। चलू हमर डेरा पर। हम फोन सँ बाबूजी केँ बजा दैत छी?"

भोगेन्द्रजी: "नञ हमरा मधुबनी एक केसँ केँ मादे जएबाक अछि। हम चलि जाएब... हमर आरक्षण भेल अछि। हमरा भूख लागल अछि। किछु खेबाक इच्छा भ' रहल अछि।"

संजीव: "ठीक छै बाबा... की खैब?"

भोगेन्द्र जी: "दालि भात तरकारी खेबाक इच्छा अछि। आनि सकैत छह?'

"हां बाबा देखैत छी।" सँ कहैत संजीव अपन पत्नी केँ बजेलनि। कहलथिन "की बटखर्चा अछि?" संजीवक पत्नी कहलथिन, "पूरी तरकारी"। आब संजीव तमसा गेला। "ई की आनि लेलौं?" बाबा केँ त' भातक इच्छा छनि!"

भोगेन्द्र जी बीचहिमे बाजि उठला: "कोनो बात नहि। तोहर घरमे लक्ष्मी केँ वास छह। हिनक हाथक चीज़ अपूर्व हेतैक। लाबह पूरी तरकारी।"

संजीव पूरी तरकारी देमय ल' गेलथिन। भोगेन्द्र जी 6 पूरी आ तरकारी अपने हाथे ल' लेलथिन। 4 टा अपने लेला आ 2 टा पूरी आ तरकारी अपना संगे जे एक व्यक्ति छलथिन तकरा देलथिन। खूब हृदय सँ संजीव आ हुनक पत्नी केँ आशीर्वाद देलथिन। फोन सँ संजीव केर मां श्रीमती कृष्णा झा सँ सेहो गप्प केला। कहलथिन: "अहां बड्ड भाग्यशाली छी जे एहेन बेटा पुतोहू भेटल अछि जे राति दिन अहांक सेवा करैत अछि।" अपन जीवन मृत्यु सँ संघर्ष करैत डैलेसिसँ पर जीबैत कृष्णा जी केँ जीवन किछु दिन आरो जीबक जेना भोगेन्द्र जीक बात सुनि वरदान भेट गेलनि! विजयचन्द्र झा सँ सेहो गप्प केलथिन। सब कियोक हुनका निवेदन केलथिन जे दरभंगा नञ जा अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान दिल्लीमे भर्ती भ' जाथि। मुदा भोगेन्द्र जी ककरो सुनय बला थोड़े ने छला? चलि देला त' चलि देला– 'मैं तो रमता जोगी राम'। विजय चन्द्र झा केँ आत्मा जेना कानि उठलनि। तमसाति बाजि उठला: "जाऊ, अपटी खेतमे प्राण खतम करू। ई अहां आ हमरा सबहक बीच कहीं अन्तिम वार्ता ने भ' जाय!" मुदा ताहि सँ की? भोगेन्द्र जी बिदा भ' गेला दरभंगा। संजीव हुनकर घाव सँ बहैत शोणित केँ पोछि देलथिन। मुह पानि सँ धो देलथिन।

ट्रेन जखन उत्तर प्रदेश बलिया स्टेशन गेलैक त' हिनक स्थिति बहुत खराप भ' गेलनि। हुनका सांस लेबामे दिक्कत होनि आ देहक दहिना भागमे लकवा सेहो मारि देलकनि। संयोग सँ ओही ट्रेन सँ जनेश्वर मिश्र यात्रा करैत छला। हिनका तुरंत प्राथमिक उपचार कराओल गेल। मधुबनी केँ डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट केँ फोन कैल गेलैक। पार्टी ऑफिसमे सूचना गेलैक। हिनका दोसर ट्रेन सँ उतारि बलिया केँ स्थानीय अस्पतालमे भर्ती कराएल गेलनि। 13 जनवरी क' दरभंगा मेडिकल कॉलेजमे स्थानांतरित कैल गेलनि। तावत धरि बेहोश भ' गेल रहथि। दरभंगामे हालतमे कोनो सुधार नञ भेलनि। अंतमे दिल्ली अनबाक निर्णय भेलैक। बिहार भवन सँ गाड़ी रेलवे स्टेशन पर ठाढ़ रहैक। तुरत भोगेन्द्र जी केँ दिल्ली केँ अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थानमे आनि भरती कैल गेल। इलाज चालू भेलैक। एक त' अधिक उम्र, दोसर अतेक रुग्णता। फेरो आंखि नञ ताकि सकला। अंतत: 21 जनवरी 2009 ई. क' 87 वर्ष केर दीर्घ अवस्थामे मैथिल पुत्र अहि धरा केँ छोड़ि ओहि लोक केँ यात्रामे चलि गेला। हुनक मृत शरीर केँ मधुबनी ल' गेलनि लोक सब। समस्त इलाकामे गाड़ी घूमल। जनता केँ नेता केँ जनता कनैत नोर सँ निहारैत रहल। हिनक पैतृक गाम बरहामे अन्तिम संस्कार भेलनि। बरहा गामक माटिमे 9 अगस्त 1922 ईस्वी क' जन्मल बच्चा भोगेन्द्र आब महान भोगेन्द्र, मिथिला मैथिली केँ शान कॉमरेड भोगेन्द्रक नाम सँ विख्यात भेला केँ बाद पुन: अही गामक माटिमे अग्निमे विलीन होबाक हेतु पार्थिव शरीर संग उपस्थित छला। शांत भेल– बिना कोनो उचा–बच के! नश्वर शरीर अग्निमे विलीन भ' गेलनि। एक युगक अंत भ' गेल। जनता केँ बुझल रहैक 'लोक त' धरती पर अबैत अछि, जाइत अछि मुदा एहेन लोक कहां अबैत छैक?' ओ जीवित मानव धरोहर छला। ओ हम्मर, हिनक, अहांक, हुनकर, सबहक छला। भोगेन्द्र जी केँ ईमानदारी, हुनकर मैथिली केँ प्रति सिनेह, हुनकर पानि केँ समस्या केँ चिंता किछु एहन तथ्य अछि जकरा सब कियोक, सब पार्टी, सब विचारधारा केँ लोक पसिन करैत छल। आइओ हुनकर नाम लैत एक सहज, ईमानदार, कर्मठ आ निष्काम सेवक केँ छवि मोटका खद्दर केँ धोती, कुर्ता, गमछा, बंडी धारण केने उभरैत अछि। हमरा त' लगैत अछि जे जनक एहने छल हेता तैं ने विदेह भ' गेला!

पितृव्य भोगेन्द्र जी केँ हमर विनम्र नमन...

आर.पी. यादवः संक्षिप्त जीवनवृत्त

✍ सत्यप्रभा

लेखिका समाजसेवी छथि आ अखिल भारतीय मिथिला संघक अगुआ स्व. राजेन्द्र प्रसाद यादव जीक सुपुत्री छथि।

संपर्क :
डी-2/36, शाहजहाँ रोड,
दिल्ली-110059

सत्य, सुन्दर आ सौम्य व्यक्तित्वक स्वामी राजेंद्र प्रसाद (आर.पी.) यादवक जन्म पैतृक गाम तुनियाही (मधेपुरा)मे 29 जनवरी, 1937 केँ भेल छल। रघुनन्दन प्रसाद मंडल आ मनोहर देवीक तीन पुत्र आ एक पुत्रीमे अहाँ तेसर संतान छलहुं। अहाँक ननिहाल साहुगढ़ (मधेपुरा) गाम छल। अहाँ केर प्रारंभिक शिक्षा पैतृक गाम तुनियाहीमे भेल। तहियोका जेनरल हाई स्कूल (सम्प्रति शिवनंदन प्रसाद मंडल-2 विद्यालय) सँ 1952 ई. मे अहाँ मैट्रिक परीक्षा, 1956 ई. मे बी.एन. कॉलेज सँ स्नातक, 1958 ई. मे पटना लॉ कॉलेज सँ एलएलबी आ 1956मे पटना विश्वविद्यालय सँ दर्शन शास्त्रमे स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण केलहुं। तकर बाद 1960मे मधेपुरा कोर्टमे वकालत केर पेशा शुरू केलहुँ आ जीवन पर्यत सर्वोच्च न्यायालय, नई दिल्लीमे पंजीकृत अधिवक्ता रहलहुं। सन 1964 ई. मे उषा देवी (सुपुत्री उपेन्द्र प्रसाद यादव, फतेहपुर, मुरलीगंज, मधेपुरा) के संग परिणय सूत्रमे बधलहूं। दूटा पुत्र आ एकटा पुत्रीक पिताक रूपमे अहाँ अप्पन पारिवारिक जीवनक सफलतापूर्वक निर्वहन केलहुं।

वकालत पेशामे आबय केँ संग सार्वजनिक जीवनसँ अहाँक संबंध उत्तरोत्तर प्रगाढ़ होयत गेल। सन 1967 ई. मे मधेपुरा अनुमंडल कांग्रेस समितिक उपाध्यक्ष बनलहूं। एकर बाद 1971 मे पांचम लोक सभाक सदस्य हेबाक अवसर भेटल, जे अहाँक राजनीतिक जीवनक ऊँच उड़ान सिद्ध भेल। प्रान्तक कद्दावर राजनीतिक हस्ती केँ मात द' नव-निर्वाचित युवा सांसदक बीच अहाँ अपन अलग पहचान स्थापित केलहुं। अहि काल अहाँक जुड़ाव कतेक रास संगठन सँ सेहो भेल, जाहिमे ऑल इंडिया गार्ड काउंसिलक अध्यक्ष पद महत्वपूर्ण अछि। सत्ताधारी दलक सांसदक रूपमे (1971-1977) अहाँ अपना आपके एकटा जवाबदेही राजनेता प्रमाणित केलाह। कतिपय कारणसँ 1977 ई. मे हारय केँ बाद सातम लोक सभा (1980-1984)मे अहाँ केँ फेर सँ सदस्यता भेटल। अहि काल एकटा विपक्षी दलक सदस्यक रूपमे अहाँ अपन जिम्मेदारी केँ नीक जेकां निर्वहन केलिये। कतेक रास अखिल भारतीय स्तरक संगठन सँ अहाँक संबंध बढैत गेल। मालूम हुए जे सभटा जिम्मेदारी केँ अहाँ शत-प्रतिशत पालन केलिये। अखिल भारतीय पिछड़ा वर्गक राष्ट्रीय महासचिवक रूपमे आरक्षण आन्दोलनकेँ परिणिति धरि पहुंचाबैक सतत प्रयास अहाँ केलहुं। अनुसूचित जाति, जनजाति आ अल्पसंख्यक महासंघक बैनरक नीचां संघर्ष करैत अहाँ जेल यात्रा सेहो केने रहथि। राजनीतिक दलक राष्ट्रीय स्तरक संघठनमे अहाँक भागीदारी बनल रहल। सफल संघठनकर्ताक रूपमे

अहांक पहचान रहल। अपन कार्यकर्त्ता आ समर्थक सँ अहाँक राजनीतिक टा नै पारिवरिक संबंध सेहो रहल। हुनकर सभटा सुख-दु:खमे सदिक्खन अहाँक संग रहैत छल। जीवन पर्यंत सक्रिय राजनीतिसँ अहांक संबंध कायम रहल। जीवनक अंतिम क्षणमे जनता दल (यू) के नेताक रूपमे दलीय संघठन कें मजबूत करबामे अहाँक योगदान प्रेरणापूर्ण रहल।

जनतांत्रिक पद्धतिमे अटूट विश्वास राखहि बला अहाँक मान्यता छल जे राजनीति समाज सेवाक सर्वोत्तम माध्यम अछि। समाज सेवाक संग-संग शैक्षणिक उत्थानमे विशेष अभिरुचि अहाँ कें विरासतमे भेटल छल। अजीब संयोगे अछि जे अहाँ 1977 मे लोकसभामे पराजयक पश्चात् 1978 मे शिवनंदन प्रसाद मंडल विधि महाविद्यालय आ 1984मे पराजयक पश्चात् रघुनन्दन प्रसाद मंडल महाविद्यालयक स्थापना केने रहि। एहि तरहक हौसला राखब आ ओकरा कार्यरूप देब अहैंक बूताक गप छल। एकर अलावा, कतेक रास शैक्षणिक संस्थान कें पल्लव-पुष्पणमे अहाँक योगदान अविस्मरणीय अछि। जाहिमे भूपेंद्र नारायण मंडल वाणिज्य महाविद्यालय, साहुगढ़क स्थापना प्रमुख अछि। सार्वजनिक जीवनक सभटा पक्षमे अहाँक प्रत्यक्ष संबंध बनल रहल। सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधिमे सेहो अहाँक भागीदारी निश्चित रूपेण होयत छल।

मधेपुरामे दशहरा संगीत सभाक आयोजन हुए या भारतीय जननाट्य मंच (इप्टा)क कार्यक्रम हुए या साक्षरता अभियानमे अहाँक सार्थक सहयोग सर्वविदित अछि। अखिल भारतीय जाति विहीन समाज निर्माण समिति, मधेपुरा स्थापना आ कार्यान्वयनमे अहाँक निर्णायक भूमिका रहल। सन 1981मे मधेपुरा जिला स्थापना, 1992मे भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालयक स्थापनामे अहाँ कें भूमिका कें सदिक्खन याद करल जायत। सन 1986मे सम्पूर्ण संसदीय क्षेत्रक साईकिल यात्रा आ फेर पद यात्रा अहाँक जनसंपर्कक अभियानक अनुपम उदाहरण अछि। साहित्य, संगीत आ कलामे सेहो अहाँ कें गहन रुचि छल। नीक-नीक पोथीक अध्ययनक संग-संग ओकर संग्रहक सेहो अहाँ शौक़ीन छलहूँ। प्रतिभा-प्रोत्साहनक

प्रति सतत अहाँ प्रयत्नशील रहैत रहि। छोट-पैघ कोनो स्तरक कार्यक्रममे अहाँक भागीदारी सफलताक गारंटी भ' जायत छल। अहाँ सोवियत संघ, इंग्लैंड, जर्मनी, इटली, बुल्गारिया आ चेकोस्लोवाकिया आदि देशक यात्रा सेहो केलहुं। चारि दशकक राजनीति पड़ावमे अहाँ कतेक रास मंजिल तय केलहुं। जतय रहलहुं, जा धरि रहलहुं, अपन निष्ठा कायम रखलहूं। सदिक्खन राजनीति क्रिया-कलापमे एकटा व्यवस्था देबाक कोशिश केलहुं। जन-समस्याक प्रति जवाबदेहीक प्रति अहाँ मुस्तैदी सँ निर्वहन केलहुं। पोस्ट कार्ड पर भेजल समस्याक सेहो अहाँ सुलझाबैक भरसक प्रयास केलहुं। अहाँ मधेपुराक आन-बान आ शान कें कहियो झुकैलेल नञ देलहुं।

निहायत सरलतापूर्ण आ मर्यादित राज्नेतक रूपमे अहाँ समाजक सर्वोत्तम सेवा केलहुं। अहाँक लगन, निष्ठा, अनुशासनप्रियता, समय प्रबंधन, ईमानदार छवि, समर्पित जीवन शैली आ व्यवस्थित काज-धाज अहाँ कें विशिष्टता प्रदान करैत अछि। अहाँ जीवन पर्यंत राजनीति सुधार आ सहिष्णुताक पक्षधर रहलहुं। आजुक दूषित भेल जा रहल सार्वजनिक जीवनमे अहाँक कमी सदिक्खन रहत।

जुलाई 2008 मे अहाँ गंभीर रूप सँ अस्वस्थ भ' गेलहुं। इलाजक काल नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थानमे 29 मई 2010 के अहाँ अंतिम सांस लेलहुं। अस्वस्थ आ रुग्न भेलाक बादो अहाँ अपन मानसिक शक्तिकें कहियो कम नञ होम' देलहुं आ बीमारीक काल आपन विभिन्न तरहे कें सामाजिक, सांस्कृतिक आ आर्थिक कार्यक्रमकें विशेषक गरीबी रेखाक नीचां रहय बला परिवारक समेकित विकास लेल अंतिम साँस धरि कृतसंकल्प रहलाह। अश्रुपूरित समर्थकक जनसैलाबक बीच मधेपुरा-सुखासन मुख्य मार्गक बगलमे रघुनन्दन प्रसाद महाविद्यालय, तुनियाही, मधेपुराक लग राजकीय समारोहक संग अहाँक अंतिम संस्कार संपन्न भेल। मालूम हुए जे अहि ठामक चयन अहाँ अपने सँ केने छलहुं, जाहि कें आम-अवामक पाइरक माइट अहाँक समाधि कें स्पर्श करैत रहय। ई अछि अहाँक जन-सरोकारक पराकाष्ठा।

चौधरीजीक नामे पारलोकी पत्र

✍ लक्ष्मण झा 'सागर'

लेखक वरिष्ठ मैथिल अभियानी छथि। मिथिला-मैथिली अभियानक अगुआ बाबू साहेब चौधरीक अनन्य संगी रहलाह। हुनक संगे 1964 सँ 1983 धरि काज करति रहलाह। कोलकाता आ गुवाहाटी दुनू ठाम हिनक सक्रियता चर्चित अछि। मैथिलीमे हिनक अनेकानेक कथा, कविता, निबंध आ रिपोर्ताज प्रमुख पत्र-पत्रिका सभमे प्रकाशित छनि।

संपर्क :
3बी, तिस्ता अपार्टमेंट, 94 एवेन्यू साउथ, संतोषपुर कोलकत्ता-75,
मो. 09903879117

सेवामे,

स्व. बाबू साहेब चौधरी, 9/1, बैकुंठधाम लेन, मैथिलीलोक खासमहाल, ब्रह्मांड, पिन कोड-000

परमात्मा चौधरी जी,

जय मैथिली!

अहीं सँ सीखने छी जे अपन आत्मीयजन कें चिट्ठी लिखबा काल सादर-प्रणाम, नमस्कार, शुभाशीष शब्दक बदला 'जय मैथिली' लिखल करी आ सँ जहिया मैथिल समाजक सम्पूर्ण आबादी करय लागत तहिया मैथिलीक जय-जयकार हेबे करतै। हम जनैत छी जे फेर आहां उपराग देब जे पत्र देबामे हम देरी कैल मुदा, की कहू चौधरीजी, गृह कारज नाना जंलालामे बाझल छलहुं तें पत्र लिखबाक लेल ओफा नञ भेटैल छल। ओना हम सभ एतय देहे-समाङे कुशल छी। अहांक कुशल समाचार बुझबा लेल मोन व्यग्र भ' जाइए। आशेटा नहि, पूर्ण विश्वास अछि जे आब अहांकें दम्म नञ फुलैत होयत। उकासी सँ जे अहां हकमि जाइत रही, ताहू सँ फारकती भेट गेल होयत। बुतातक जे संकट छल एतय सँ ओतय गेने ताहू सँ निश्चिंत भ' गेल होयब। सुरेश बाबू (प्रेसक कम्पोजीटर) सेहो आब अपन दरमाहा लै तगेदा नञ करैत हेताह। 'मैथिली दर्शन' (मासिक) पत्रिकाक प्रकाशन लेल जे जुता सिलाइ सँ चंडी पाठ धरिक फिरीशानी छलय, ताहू सँ अहं आब मुक्त भ' गेल छी। एकटा बात छैक चौधरीजी जे खेलात घोष लेनक बंगाली भद्रलोक सभ एखनो अहांकें 'मिथिला बाबूक रूपें मोन रखने अछि।

हमरा बुझने ओहूठाम अहां कें मोन लगिते होयत, किएक तं अहांक मंडलीक सब गोटे तं बेरा-बेरी अहीं लग चल गेलाह। ओतय अहांक संगे देवनारायण बाबा, पीताम्बर पाठक, कुशेश्वर झा, चक्रधर झा, सुखदेव ठाकुर, महावीर झा, घुरन झा, गौरीशंकर झा तं छलाहे आ हालहिमे सत्यनारायण लाल सेहो चल गेलाह। शिवनाथ झा, सत्येन्द्र मिश्र आ बिन्देश्वर मंडल सेहो बेर-कुबेर अहां कें जरूर सम्हारैत हेताह।

मोन उबिया जाय तं ओहूठाम अहां मैथिली पर्व समारोहक आयोजन क' सकैत छी। ताहि लेल अहां कें एतय नञ आबय पड़त। अहां लग ललित नारायचण मिश्र, भोगेन्द्र झा, भागवत झा 'आजाद' रामेश्वर ठाकुर सन राजनेता सभ छथि जे अहांक एक्कें बोले जुमि जेताह। साहित्यकारमे राजकमल चौधरी, मणिपद्म, मधुपजी, मायानन्द मिश्र, उपेन्द्र दोषी, महेन्द्र (गायक) आ विश्वनाथ मिश्र (संगीतज्ञ) अपने समाङ जेकां लागल-भीरल रहताह। नाटक सेहो खेलाय सकैत छी। श्रीकांत मंडल, कमलनारायण कर्ण आ जनार्दन झा सबटा ओरिआय देताह।

हम बुझैत छी जे एतुक्का समाचार बुझबा लेल अहांकें मोन लागल होयत। सँ सुनू चौधरीजी, कोलकत्तामे मैथिलीक परिभाषा माने खास क' भनसीया,

चटकलक मजदूर, गंजी कारखानाक कारीगर, प्रेसक कम्पोजीटर, टैक्सी ड्राइवर, पंडिताइ केनिहार, ट्राम-बसक, ड्राइवर-कंडक्टर आ ट्यूशनियां गुरुजी होइत छल। मुदा, आब एतय मैथिलीक एकटा संभ्रांत समाज बनि गेल अछि जाहिमे डॉक्टर, ओकील, प्रोफेसर, इंजीनियर, बैंक अधिकारी, टेक्नोक्रेट आ व्यूरोक्रेट से, पुरूख-पात आ जनानी दुनू वर्गक लोक छथि। फर्क यैह भेलैक अछि जे पहिलुका मैथिल समाङ सभ प्रत्येक रवि कैँ गिरीश पार्कमे बेरूपहर जुमैत जाइत छलाह आ मैथिलीमे बतिआइत छलाह। मुदा, एखुनका मैथिल रवि कैँ निक्को पार्क, इको पार्क किंवा 'मॉलमे पधारैत छथि आ सपरिवार सगर्व हिंदीमे गप-शप करैत छथि। अपवादस्वरूप तारा सुंदरी पार्क एखनो बंचल अछि जतय पंडीतजी लोकनि मैथिलीक टेक रखने छथि जिनका देहाती बुझल जाइत अछि।

चौधरीजी, खराब नञ मानब। हम एकटा नितांत चाणकक बात कहय चाहैत छी। ग्राममे अहां तं कोनो जमींदार घरक संतान नञ छलहुं। अभावमे पलेलहुं। अभाव दुआरे आगु पढ़ि नञ सकलहुं। अभावक चलते कलकत्ता एलहुं पाइ कमाइलै। नोकरीयो पकड़लहुं। नोकरी करैत कतेको मैथिल भाइ कैँ नोकरीमे लगेलहुं। मैथिलीक भूत माथ पर सबार भ' गेल। नोकरी छाड़लहुं। जीवनक अंतिम सांसधरि 'मैथिली-मैथिली' चिचिअएलहुं। की देलक मैथिली? इहो तं सोचितियैक जे अहांक माथ पर भरल-पुरल परिवारक गुजर करबाक दायित्व छल। मानल जे मैथिलीक प्रति अहांक सेवा भाव सँ प्रभावित भ' किंबा अहांक लिखल नाटक 'कुहेस'क संदेश सँ प्रेरित भ' बेटी-भतीजीक कन्यादानमे वरागत अहांसँ दहेज नञ लेलनि। मुदा विद्यापति द' अहां की सोचलियैक? ओहो तं अहांक एकमात्र दुलरूआ पुत्र रहथि? अहांक वंश तं वैह बढ़ौलनि। बासडीह बेचि कैँ बेचारे अपन बेटी सभक कन्यादान केलनि। कोनो वरागत पर अहांक त्यागक प्रभाव कहां पड़लनि! विद्यापतिक जेठका बेटा चन्दन नोकरी लै रने-बने बौआइत अछि। बेचारा। छोटका बेटा कैँ कोन धरानियें विद्यापति पढ़ा रहल अछि सँ पुछनिहार कहां छैक कियो विद्यापति कैँ? की यैह प्राप्ति थीक अहांक 'मैथिलीक दधीचि' बनबाक? अहांक समकालीन, पूर्ववर्ती आ परवर्ती मिथिलाक सेनानी लोकनि तं सेहो मैथिलीक सेवा केलनि आ क' रहल छथि। ओ सभ मैथिली कैँ सेवि कैँ सुम्यस्त भ' गेलाह मुदा, अहांधरि बिलटि गेलहुं। सँ किएक चौधरीजी? की अहांकैँ तकर कचोट नहिअछि? हम जनैत छी, अहां अपशोच वा पश्चाताप कइए ने सकैत छी।

सचमे अहांक सङ बड्ड अन्याय भेल अछि चौधरीजी! साहित्य-अकादेमीमे मैथिलीक मान्यताक लेल अहां कोन-कोन ने पापड़ बेललहुं। मुदा ओ साहित्य अकादेमी अहांक 'चाणक्य' सन (बंगला सँ अनुदित) मैथिली पोथी कैँ अनुवाद पुरस्कार सँ वंचित रखलक। अहांक 'मोनोग्राफ' लिखेबाक तं चर्चो नञ होइत अछि।

पटनाक चेतना समिति कैँ अहां सावधान केने रहियैक जे विद्यापति पर्व समारोहक अवसर पर मंच सँ हिंदीमे भाषण नञ कैल जाय। कोन जुलुम केने रहियैक? चेतना समिति कैँ तकर घाव आइधरि नञ सुखेलैक अछि आ तें ओ संस्था एखनधरि अपन मुखपत्र वा चेतना कैलेंडरमे अहांक नाम शामिल नञ केलक अछि जे हमरा सभ कैँ बड्ड अखरैत अछि। की यैह उपलब्धि थीक अहां मैथिलीक सेवा करैत बिलटि जेबाक लेल? यौ चौधरीजी, लोक तं मैथिलीक नाम पर धन अरजलक, नाम-यश आ सोरहा बटोरलक, पुरस्कार पर पुरस्कारक पथार लगा लेलक आ अहां?

अहां कैँ तं सब बिसरियो गेल छल। धन्यवादक पात्र छथि श्री विजय चन्द्र झा (अध्यक्ष, अखिल भारतीय मिथिली संघ दिल्ली) जे अहां कैँ मोन रखने छथि। हुनक भांज पुरैत छथिन श्री महेन्द्र मलंगिया जे बेसीकाल आब अपन बालक ऋषि मलंगियाक सङ दिल्ली येमे रहैत छथि। ओ लोकनि अहाक नाम पर (बाबू साहेब चौधरी सम्मान) 2015 सँ करबाक घोषणा केलनि अछि। पहिल बेर ई पुरस्कार श्री अशोक झा (अध्यक्ष, मिथिला विकास परिषद्, कोलकत्ता) कैँ देल गेलनि। कोलकत्ता सँ बिजय बाबू कैँ फोन गेलनि जे अशोक झा तं चौधरीजी कैँ फज्झति करैत छलथिन। चौधरीजी बेचारे अशोक झाक डर सँ आतंकित रहैत छलाह। मुदा, बिजय बाबू फोन केनिहार कैँ बड्ड सहज ढंग सँ जबाब देलथिनजे चौधरीजी कहैत रहैत छलथिन जे- ''हमरा जं कियो गारियो पढ़य तं खराब नञ लागत वशर्ते कि गारि मैथिलीमे पढ़य'' तें अशोक झाक चयन सही संदर्भमे भेल अछि। हमरा विश्वास अछि जे अहूंकैँ ई खबरि बुझि नीकैँ लागत।

चौधरीजी, अहां कैँ ई जानि खुशी होयत जे अहांक नामक सम्मानक असरि 'मिथिला विकास परिषद्क' सब सदस्य पर तेना भ' कैँ पड़लैक जे ओ सभ कोलकत्तामे अहांक जन्मशती समारोह खूब धूमधाम सँ मनौलनि। ओहि

समारोहमे देहरादून सँ डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र, रांची सँ श्री सियाराम झा 'सरस' आ दरभंगा सँ श्री कमलेश झा प्रभृत्ति केँ बजौल गेलनि। अहां पर केन्द्रित आलेख सभक पाठ भेल। उपस्थित जन समूह रोमांचित होइत गेलाह। हमरो मोन जुराय गेल।

ओना परोक्षक बात थीक, साहित्य अकादेमी, दिल्ली सेहो रायपुरमे अहांक नामपर एकटा सेमिनार आयोजित केने छल। ओहूठाम अहां पर केन्द्रित आलेख सभक पाठ भेल। लोकसभ अहांक व्यक्तित्व आ कृतित्वक मादे सुनि कें दंग रहि गेल। सरिसब-पाहीमे सेहो मिथिलाक विभूति सभ कें परूकां साल स्मरण कैल गेलनि। अहूं कें विभूतिमे लेखा भेल। आब की चाही? धन अनजने कियो विभूति थोड़े भ' जाइत छथि। ओना मानी तं विभूतियोक अर्थ तं धने-सम्पदा होइछ।

अ.भा. मिथिला संघ, दिल्ली 2016मे अहांक नामक सम्मान श्री कमलेश झा कें देलथिन। सर्वत्र प्रशंसा भेलैक। श्री कमलेश झा दिल्लीमे सम्मान ग्रहण केलाक पश्चात् ठोकले अहांक गाम (दुलारपुर) गेलाह। हुनक ध्येय छलनि जे गाम कें नोंत नञ आ बेलाहि कें नोंत। ओ अहांक ग्रामीण सभ कें जगौलनि। अहांक मैथिलीक प्रति नि:स्वार्थ सेवा, त्याग-तपस्या आ संघर्ष-साधनाक गाथा अहांक ग्रामीण सभ कें सुनौलनि। सँ कहैत छी चौधरीजी जे अहांक ग्रामीण सभ ततेक ने भावोद्वेलित भेलाह जे अहांक नाम पर एकटा भव्य भरिदिना समारोहक आयोजन केलनि। पर्चा-पोस्टर छपौलनि। माइक सँ पंचकोसीक लोक कें हकार देलनि। पांच हजार लोक जुटल छलाह। दरभंगा, मधुबनी आ रहिका सँ उ. टा साहित्यकार

जुटल छलाह। श्री कुंजबिहारी मिश्रक टीम आयल छलाह। राति दू बजे धरि कार्यक्रम चललैक। विद्यापति (अहांक कर्त्ता) कें लगैत छलनि जे बाप हमरा लेल कुबेरक खजाना खोलि देलनि। आब की चाही? कलकत्तामे जं अहां आलीशान महले कीनि देने रहितियनि तं ई आनंद आ गौरव प्राप्त होइतनि?

चौधरीजी, एकटा बात पुछैत छी जे अहां एतेक शुद्धबौक किएक रही? अंय यौ, एकटा अपन पासपोर्टो फोटो नञ खिंचौने रही। कहू तं अहांक एकटा फोटो ले हमरा सभकें कतेक विथुत होइत अछि। विद्यापति स्मारक मंच, कोलकत्ता सेहो अहांक जन्मशती समारोह मनौलक। विचार भेलैक जे बैनर पर एक कात विद्यापतिक फोटो आ दोसर कात अहांक फोटो लगौल जाय। अहांक फाटोक तकाहेरी भेल। विद्यापति कें फोन कैल गेलनि। कतहु अहांक फोटो नञ उपलब्ध भेल। हारि कें 'कर्णामृत पत्रिकाक मुखपृष्ठ पर अहांक भाषण करैत कालक फोटोक प्रतिछवि सँ बनौल फोटो बैनर पर लगौल गेल।

चौधरीजी, अहांक सपना छल जे कलकत्तामे एकटा विद्यापति (कविकोकिलक नाम पर) भवन होइ। सँ अहांक अपना कें 'विद्यापति स्मारक मंच' साकार क' देलक आ कोलकत्ताक

बागुइहाटीक झीलबगानमे तीनतल्ला 'विद्यापति सदन' हमरा लोकनिक आँखिक समक्ष अछि। अहां अपना आँखि सँ देखितहुं तं कतेक गौरवान्वित होइतहुं? ओना बहुत रास काज सभ एहेन भेलए जे अहांक एजेंडामे छल, जेना-मैथिली केँ संविधानक आठम, अनुसूचीमे स्थान भेटि गेलैक। एकर विस्तृत खेरहा डॉ. जयकान्त मिश्र आ पं. ताराकान्त झा अहां केँ जरूर सुनौने हेताह। मुदा, दुःखक गज जे एखनध रि मैथिली प्राथमिक स्तरक विद्यालय सभमे पढ़ौनीक माध्यम नञ बनल अछि। सभक कहब छनि जे ई काज पृथक मिथिला राज्य नञ भेने संभव नहिअछि। मुदा पृथक मिथिला राज्य होयत कोना? सरसजीक एहि संदर्भमे एकटा बड्ड बढ़िया गीत छनि-'झाजी केँ राज्य चाही, ठाकुर केँ राज्य चाही, चौधरी केँ राज चाही; धरि प्रश्न ई उठइए?

चौधरीजी, आब हम एकटा निजी बात कहय चाहैत छी। ओना नञ कहितहुं मुदा, अहीं कहने रही जे जहन ओ दिन आओत तं अहांक बात मोन पाड़ि लेब। नवम्बर 74मे हमर सी.ए.क परीक्षा रहय। दू मासक छुट्टी भेटल रहय परीक्षाक तैयारी करबा लेल। हमर सब संगी-साथी परीक्षाक तैयारीमे लागल रहथि आ अहां हमरा मैथिली आंदोलन आ 'मैथिली दर्शन'क सम्पादनमे लागि जेबाक लेल प्रेरित केने रही। हमर नेनमति हमरा सी.ए.क कठिन पढ़ाइ सँ विमुख क' देने रहय। हमरा कविता-गीत लिखनाइ, मंच पर भाषण केनाइ, पत्रिकाक प्रूफ देखनाइ, अहांक संगे सभा-संस्थाक कार्यक्रममे गेनाइ बेसी नीक लागय। हमर मोन जखन कखनो छोट भ' जाए जे एलहुं की करय आ लागि गेलहुं कथीमे, तं अहां हमरा परबोधैत कहैत रही जे सी.ए. तं समाजमे जतय-ततय भेटि जाएत मुदा जे प्रतिष्ठा आ सम्मान एकटा साहित्यकार (जे गिनल-चुनल भेटैत अछि) केँ भेटैक छैक सँ सी.ए. केँ कत्तय भेटतनि?

सँ अहांक बात चौधरीजी हमरा मीलि गेल। मधुबनीक 'मैथिली साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समिति' 2017क साहित्यकार रूपें जहन हमरा सम्मान करैत छल तं हमरा आँखिक आगु अहीं ठाढ़ छलहुं, किएक तं ओहि समारोहमे एक सँ बढ़ि केँ एक विद्वान, डॉक्टर, ओकिल, प्रोफेसर आ नगरक गणमान्य लोकसभ, विधायक आ मंत्री सभ उपस्थित छलाह। हमरा लेल ओ परम हर्षक क्षण छल।

अन्तमे चौधरीजी अहींक भाषण केँ उद्धृत करैत ई पत्र समाप्त करय चाहब। अहां कएक ठाम अपना भाषणमे बजैत रही जे मैथिली हमरा लोकनिक मातृभाषा तं छीहे जे ओ साक्षात् जगत्जननी सीता सेहो छथि। जे कियो निःस्वार्थ भावें आ समर्पित रूपें मैथिलीक सेवा करत ओ यश आ सम्मानक सङ जीयत।

हं जाह! एकटा बात तं पुछबे ने केलहुं! अहांक चश्माक जे एकटा फ्रेम टुटि गेल छल जकरा अहां डोरी सँ बन्हैत रही सँ बदलल गेल कि ओहिना अछि?

हार्दिक शुभकामनाक संग

डॉ. ममता ठाकुर
एम.डी.
स्त्री रोग विशेषज्ञ
मो. 9717258787

MCI No. 12999
DMC Reg. No. 10440

ठाकुर मेडिकेयर सेंटर

आचार्य मंडन मिश्र: एकटा परिचय

✍ डॉ. तारानंद वियोगी

महिषी, सहरसामे जन्म। पहिल पोथी अपन युद्धक साक्ष्य (गजल संग्रह) 1991 मे प्रकाशित। अन्य पुस्तक हस्तक्षेप (कविता-संग्रह), अतिक्रमण (कथा-संग्रह), शिलालेख (लघुकथा संग्रह), कर्मधारय। राजकमल चौधरीक कथाकृति एकटा चंपाकली एकटा विषधर संकलन-संपादन। साहित्य अकादेमी मैथिली बाल साहित्य पुरस्कार 2010 पोथी "ई भेटल तँ की भेटल'' लेल। यात्री-चेतना पुरस्कार 2010 ई.

संपर्क :
प्रथम तल, शांति निकेतन,
डॉ. सी.पी. ठाकुर पथ,
शिवपुरी पूरब, पटना-800023

भारतीय स्वतंत्राता-आन्दोलनक दौरान जखन आन्दोलनकेँ भारतीय जनमानसक मूलतत्वसँ जोड़बाक मकसदस एकर आध्यात्मिक आधारशिला देबाक गप आयल त' लोकमान्य तिलक 'गीतारहस्य' केँ रचना केने छल। लोकमान्य एकरा लेल कर्मयोगक धारा पकड़लक आ एकर मूल प्रेरणा आ निष्पति धरि गेल। अहि पोथीमे लोकमान्य बड अफ़सोससँ बाजल जे मध्यकाल आबैत-आबैत अहि कर्मयोग/कर्मसंन्यासक परंपरा बिला गेल, जबकि एकरास पहिने एकर प्रखर परम्परा छल।

'गीतारहस्य' केँ लिखय धरि आचार्य मंडन मिश्रक कृति 'ब्रह्मसिद्धि' केँ खोज नञ भ' सकल छल। मंडन मिश्रक वास्तविक अवदानसँ दुनिया अपरिचित छल। मंडन मिश्र किम्बंदिती, दन्त कथाटामे जीवित छलाह। इतिवृतात्मक चरित कथा-ग्रन्थस जे सूचना भेटैत छल ओ मात्र मंडन मिश्रक ल' क' एकमात्र स्रोत छल। अहि कथास मंडन मिश्रक जे छवि उभरैत छल, ओकर वाचस्पति मिश्रक ओहि कथनसँ कोनो तालमेल नञ बैसैत छल, जेतय ओ अपना-आपकेँ नालाक पानि आ आचार्यक कृतिकेँ गंगाक धार बताबैत कहने छल जे हम जेहन लोक जखन आचार्यक कृतिक निषेवन करैत छी त' मानू नालाक पानि गंगाजल बनि जाइत अछि, जखनकि वाचस्पति मिश्रकेँ जानय बला लोक जानैत अछि जे ओ भारतीय दर्शनक परम रत्न अछि आ राहुल संस्कृत्यायन त' एतेक धरि कहने छल जे आय जे शंकराचार्य एतेक पैघ देखाह देत अछि, ओकर वजह यहि अछि जे वाचस्पति मिश्र हुनका कान्हा पर बैसेने अछि।

मद्रासक शिक्षाविद एस. कुप्पुस्वामी शास्त्री सन 1937 ईमे 'ब्रह्मसिद्धि' प्रकाशित करैलक। फेर क्रमानुसार ओकर छहटा प्रकरण ग्रन्थ प्रकाशमे आयल। अहि सबस ई तथ्य स्पष्ट भेल जे आचार्य मंडन मिश्र नञ केवल अपन काल केँ दुर्दधर्ष सिद्धांतकार छलाह मुदा भारतीय लोक धाराक नीक समझ राखैत छलाह आ भविष्यक लेल अत्यंत उपादेय छलाह।

पृष्ठभूमि

भारतीय परंपरामे हम धर्म-आध्यात्म-चिंतन केँ जे दू टा मुख्य धारा (आदिकाल सं) देखैत छी-प्रवृतिमार्गी धारा आ निवृतिमार्गी धारा। वेदमे निवृतिमार्गी (संन्यास) केँ समर्थन नञ भेटैत अछि। वेदमे ई गप भिन्न-भिन्न रूपकमे ग्रथित भेटैत अछि जे 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत शतं समा:' (मनुष्यक कर्मक संपादन करैत सौ बरखक जीबैक कामना करबाक चाही)। उत्तर वैदिक कालमे हम, संन्यासकेँ एकटा आपदधर्मक रूपमे मान्यता देत देखैत छी, मुदा ओतय गौतम, याज्ञवल्क्य आदि केँ मुखर रूपमे निवृतिमार्गक संयमन करैत पबैत छी। एकटा नीतिनिर्धारकक रूपमे याज्ञवल्क्य गृहस्थाश्रमक अंगी मानैत संस्थाबद्ध रूप देलक, जे आगु भारतीय समाजक

आधारशिला बनल।

प्रवृतिमार्गीक अति अपना सबकेँ मीमांसा-दर्शनमे भेटैत अछि, जेतय ओ वेदांतकेँ संदेहक दृष्टिसँ देखैत अछि। मुदा, देखय लायक परंपरा एक वैह अछि, जतय मीमांसक आ वेदान्तक समन्वय घटित भेल। कर्मक गुणवत्ता अहि हद धरि संशुद्ध घटित कैल गेल जे व्यक्ति कर्म निरंतर करैत रहय मुदा लिप्त कनियो टा नञ हुए। याज्ञवल्क्य अहि समन्वय धाराक प्रवर्तक कहल जायत अछि आ ईशावास्योपनिषद, वृहदारण्योपनिषद आ छान्दोग्योपनिषद एकर मूल सिद्धांतक पल्लवन करैत अछि। गीता अहि मार्गक मुखर रूपसँ पुष्टि करैत अछि। जनककेँ जीवन-दृष्टान्तमे हम एकर अनुप्रयोग पबैत छी। गीतामे जखन जनक ई कहि रहल होयत अछि जे 'प्रदीप्तायां मिथिलायां नमे दहति किंचन' (समूचा मिथिलाक जरि गेलाक बादो हमर किछु नञ जरैत अछि) त' वस्तुत: ओ कर्मक अहि उच्च गुणवत्ताक आख्यान क' रहल होयत छल।

गीताक बाद, मध्यकालमे आचार्य मंडन मिश्र अहि धाराक प्रबल सिद्धांतकार भेलाह। हुनक तेजक झलक हुनक समकालीन आ उत्तरवर्ती दार्शनिकक कथन-अनुकथनमे भेटैत अछि। एकर कतेक रास ऐतिहासिक कारण अछि जे आचार्य मंडन मिश्रक परंपरा चिंतनक मुख्यधारास परवर्ती किछु सौ बरख धरि ओझल रहल। मुदा, भक्ति- आन्दोलनक रूपमे एक बेर फेरस एकरा हम प्रधानता प्राप्त करैत पबैत छी, जे आगु कहियो पृष्ठभूमिमे नञ सरकैत अछि। समकालीन आध्यात्मिक चिंतन केँ त' खैर, एकर बिना कल्पना नञ केल जा सकैत अछि।

अहि तरहे, आचार्य मंडन मिश्र केँ हम अहि भारतीय चिंतनक एकटा मध्यकालीन कड़ीक रूपमे पबैत छी, जिनका ल' क' सम्यक, अध्ययन, हुनक ग्रन्थक कारण सेहो आ मुख्यधारा सँ हुनका दरकिनार राखय जाय केँ ऐतिहासिक भूलक कारण सेहो, आजुक धरि संभव नञ भ' सकल अछि। ओ गीताक प्रवक्ता कृष्णक मध्यकालीन प्रतिनिधि मात्र नञ थिकाह, अपितु सामाजिक अनुप्रयोगक एकटा महत्वपूर्ण सिद्धांतकार सेहो अछि, जेकर सूदूरवर्ती प्रभाव नञ केवल हुनक परवर्ती दार्शनिकक द्वारा अपितु भारतीय भाषामे निबद्ध भक्तिकालीन संत सभमे होयत अछि जे अप्पन समकालीन जीवन-दर्शनमे अनुगुंजित भेटैत अछि।

मंडन मिश्रक कृति

आजुक तिथिमे आचार्य मंडन मिश्रक छहटा कृति उपलब्ध अछि, जे विभिन्न टीकाकारक द्वारा व्याख्यायित ग्रन्थक रूपमे प्रकाशित अछि। ई कृति निम्नलिखित अछि- **1. ब्रह्मसिद्धि, 2. स्फोटसिद्धि, 3. विधि-विवेक, 4. भावना-विवेक, 5. विभ्रम-विवेक, 6. मीमांसानुक्रमणिका।**

'ब्रह्मसिद्धि' तथा 'स्फोटसिद्धि' अद्वैत वेदांतसँ संबंधित प्रकरण-ग्रन्थ अछि, जेखन कि विधि, भावना आ विभ्रमविवेक-ग्रन्थ मीमांसा-अद्वैतक अलग-अलग पक्ष आ मुद्दा क' ल' क' संभाव्यक तलाश करय बला पोथी अछि। अंतिम कृति मीमांसासूत्र पर मंडन मिश्रक टिप्पणी संकलित अछि।

आचार्य वाचस्पति मिश्र भामतीक रचना करहि सँ पहिने, 'ब्रह्मसिद्धि' केँ टीका 'ब्रह्मतत्व-समीक्षा' नामसँ केने छलाह। प्रसिद्ध अछि जे ओतय आचार्य वाचस्पतिक प्रतिभाक सत निदर्शन प्रकट होयत अछि। मुदा, ई कृति आय धरि उपलब्ध नञ भ' सकल अछि। वर्तमानमे एसँ कुप्पुवामी शास्त्रीक संपादनमे प्रकाशित जे पोथी उपलब्ध अछि, ओहिमे शंखपाणिक टीका शामिल अछि। ई कृति मंडन मिश्रक सबसें बेसी ख्यात कृति अछि। 'ब्रह्मसिद्धि' केँ अद्वैत वेदांत पर, ई निश्चित रुपे आचार्य शंकरक अद्वैत वेदांतसँ भिन्न अछि। अंगरेजी, संस्कृत, हिन्दी आ बंगलामे कतेक रास अध्ययन आ शोध भेल अछि। कतेक रास पोथी सेहो प्रकाशित भेल अछि।

आचार्य वाचस्पतिक टीका 'विधि-विवेक' केँ संग 'न्यायकणिका' नामसँ उपलब्ध अछि। मीमांसानुक्रमणिकाक टीका म.म. डॉ. गंगानाथ झा केने छथि। 'स्फोटसिद्धि' केँ टीक ऋषि

परमेश्वर कृत गोपालिका उपलब्ध अछि। 'भावनाविवेक' कें संग भट्ट उम्बेकक टीका भेटैत अछि।

एस. कुप्पुस्वामी शास्त्री, वी.ए. रामास्वामी शास्त्री, के.ए. शिवरामकृष्णा शास्त्री, टी.वी. रामचंद्र दीक्षित, राम शास्त्री तैलंग, महाप्रभुलाल गोस्वामी,मेरलिन व्यारडू जेहन सुप्रसिद्ध भारतविद्याविद मंडन मिश्रक कृतिक अधिकाधिक अध्ययन प्रस्तुत केने अछि।

मंडन मिश्रक किछु स्थापना

आचार्य मंडनक कृति पर बीसम शताब्दीमे जे भी अध्ययन प्रस्तुत केल गेल, सभमे ई गैप उभैरकें आगु आयल जे परंपरास हम ई मानित आयल छी जे आचार्य मंडन परवर्ती कालमे सुरेश्वराचार्य (श्रृंगेरी पीठक प्रथम शंकराचार्य) छलाह, ई गैप गलत अछि। ई कथा-परंपराक पाछां सामान्यत: ई मानिकें चलैत अछि जे मंडन मिश्र पूर्णत: एक मीमांसक छलाह आ आचार्य शंकरसँ शास्त्रार्थमे परास्त भेलाक बाद संन्यास ग्रहणक केलथि। आचार्य मंडन मिश्रक नामोल्लेखकें संग हुनक कृति कें जे पाण्डुलिपि भेटल अछि, ओकरास ई कथा-परंपरा पर विश्वास करहिमे संदेह उत्पन्न होयत अछि।

खांटी मीमांसकक मतकें बिलकुल प्रतिकूल आचार्य मंडन सदिक्खन ई मानित छथिं जे वेदांतवाक्यसँ ब्रह्मक सिद्धि होयत अछि जखन कि विजयग्रन्थमे हुनका वेदांतवाक्यक निषेध करैत उद्धृत केल गेल अछि।

मंडन मिश्र ज्ञान आ कर्मक समुच्चयक सिद्धांत प्रस्तुत केने छथि आ ई स्थापना देने छथि जे ई समुच्चय घटित भेला पर बेसी शीघ्रतापूर्वक (असगरे ज्ञानक तुलनामे) उद्देश्यक प्राप्ति होयत अछि। एतय ओ दृष्टान्त देने छथि जे पैदल चलिकें कियो गंतव्य धरि पहुंच सकैत अछि, मुदा जौ ओतुका उपयोग करय त' शीघ्रता आ सुविधा दूनूमे सेहो वृद्धि होयत। एकर संगे ओ अहि गप पर जोरदार वकालत केने छथि जे गृहस्थाश्रम ब्रह्मज्ञानक लेल अनाधिकार नञ अछि। कहब नञ होयत जे ई मान्यता अद्वैत वेदांतक प्रचलित धारास अलग हटि कें अछि आ गृहस्थाश्रम कें अंगी मानैक वैदिक परंपराक मुखर अनुमोदन करैत अछि।

आचार्य शंकरक मतक प्रतिकूल आचार्य मंडन ई निष्पति प्रस्तुत केने छथि जे ब्रह्मज्ञानसँ प्रारब्ध कर्म सेहो, कर्मक सहायतासे, निष्प्रभावीभ' जायत अछि। ओ बतौने छथि जे छोडल गेल बाण अप्पन लक्ष्यकें वेधईमे तखन अक्षम भ' जायत अछि, जखैन बीचमे कोनो दीवार आबि जायत अछि।

अहि तरहे, ध्यानक सर्वोच्चताक आख्यान करैत ओ स्थापना देने अछि जे ब्रह्मज्ञान जौ शब्द बनल रहय (जेना आचार्य शंकरक मत अछि) त' ऊ परोक्ष बनल रहैत अछि। ओकर प्रत्यक्षीकरण कें लेल या व्यक्तित्वमे प्रतिबिंबित ह्य लेल ब्रह्मज्ञानकें ध्यान हेब आवश्यक अछि।

परवर्ती अद्वैतवेदान्ताचार्य मधुसुदन सरस्वती आचार्य मंडनक अद्वैत वेदांत कें 'भावाद्वैत' कें संज्ञा देने अछि। ई आगु चलिकें वेदांत-चिंतनक विभिन्न आयाममे विकसित सेहो भेल अछि। एकर मूलमे आचार्य मंडनक ई निष्पति छल जे ब्रह्मक आनंदस्वरूपता नितांत भावात्मक अर्थमे होयत अछि, नञ जे भावाभाव-विवर्जित या निर्विशेष अर्थमे, जेहन आचार्य शंकर मानित छथि। कहब नञ होयत जे आचार्य मंडनक लोकमुखी चिंतनक फलस्वरूप ई स्थापना निबद्ध भेल। ब्रह्मकें ओ अज्ञेय आ असंवेद्य नञ अपितु ज्ञेय आ संवेद्य मानैत आ ई जोड़ैत जे मन आदि साधन सँ त' ओ अज्ञेय अवस्य अछि मुदा अपना सँ नैसर्गिक ज्ञान सँ ज्ञेय आ संवेद्य अछि। परिमाणस्वरूप, जीवन हुनका दृष्टिमे दु:ख नञ मुदा आनंद अछि, जे ब्रह्मज्ञानक एकटा अंश अछि।

अप्पन सिद्धांत-निरूपणमे ओ शुद्धतावादी मीमांसक पर बेर-बेर अआक्षेप केने छथिन, जे वेदांत वाक्य कें प्रमाण नञ मानित छथिन। ओ जोर द'क' कहने छथिन जे वेदांत-वाक्य नञ केवल प्रमाण अछि, अपितु मुख्यार्थ (अभिधेयार्थ)मे तात्पर्य-निरूपण करहि कें शक्ति राखैत अछि।

अद्वैत वेदांतक प्राय: सभटा केँद्र-विन्दु पर आचार्य मंडन मिश्रक मौलिक स्थापना हमरा हुनक सभटा कृतिमे लखाह पड़ैत अछि। ब्रह्म, अविद्या, जीव, मुक्ति, ज्ञान, सत्य आदि पर ओ अपन सर्वथा मौलिक अभिमत राखैत छथिन, जे नञ केवल पारंपरिक आ समकालीन विचारकध दार्शनिकसँ भिन्न अछि, अपितु जेकर स्पष्ट विकास हमरा परवर्ती भारतीय आध्यात्मिक चिंतनमे लाखाह देत अछि।

मंडन मिश्रक अभिज्ञान

आचार्य मंडन मिश्रक संबंधमे परिचयक सामान्य गप जानैक लेल हमरा लग कुल दूटा स्रोत उपलब्ध अछि–

1. आचार्य शंकरक विविध चरित-ग्रन्थ,

2. मिथिलाक लोक परंपरा आ किवदंती।

कहब आवश्यक नञ जे दुनू स्रोत शुद्ध आ निर्दुष्ट ऐतिहासिक विवरण दयमे असमर्थ अछि आ अक्सर तथ्य धरि पहुंचयमे आतंरिक स्रोत आ परवर्ती ग्रंथकारक उद्धरणक परीक्षण-विश्लेषणक

आधार पर सांगत सूचना तय करबाक जरूरत पड़ैत अछि।

शंकर-विजय-ग्रन्थक प्रमाणिकता पर सेहो गंभीर आपत्ति व्यक्त कयल गेल अछि आ शंकराचार्यक विभिन्न मठ सेहो एक-दोसराक द्वारा संरक्षित विजय-ग्रन्थकेँ अर्वाचीन आ अप्रमाणिक बताबैत अछि।

बावजूद एकरो, किछु सूचना जे विभिन्न स्रोतसँ प्राप्त विवरणस संपुष्ट होयत अछि, एकटा अनुसार, मंडन मिश्र आचार्य शंकरक समकालीन रहथि। हुनक पिताक नाम हिम मिश्र छल। ओ शुक्ल यजुर्वेदीय कण्वशाखीय ब्राह्मण छलाह। हुनक आदर्श गौतम आ याज्ञवल्क्य छलाह। ओ सुप्रसिद्ध मीमांसक कुमारिल भट्टक शिष्य छल। मंडन मिश्रक स्त्री भारती अप्रतिम विदुषी छलखिन, जेकर पांडित्य क' ल' क' कतेक रास कथा प्रसिद्ध अछि। किछु स्रोतक मुताबिक भारती केँ कुमारिल भट्टक भगिनी (बहिन) बताओल गेल अछि। मंडन मिश्रक एकटा पुत्रक सूचना भेटैत अछि, जिनकर नाम जय मिश्र बताओल गेल अछि।

मंडन मिश्रक संग हुनक सुप्रसिद्ध विद्यापीठक चर्चा सदिक्खन जुडल पाओल गेल अछि। लोक-परंपरामे एकरा अत्यंत महिमामंडित रूपमे प्रस्तुत कयल गेल अछि। आय ओहि ठाम एकटा ऊंच भराठक रूपमे विद्यमान आ पुरातत्व विभागक संरक्षणमे अछि, जेतय मंडन मिश्रक आवास आ विद्यापीठ हेबाक तथ्य मानल जायत अछि। अहि ठामकेँ देखय लेल आबय बला लोकमे ई आम प्रवृति पाओल जायत अछि जे अहि ठाम माटीकेँ ओ अप्पन माथस लगबैत अछि।

अहि विद्यापीठमे 'शिष्योपशिष्य-विधि' सँ अध्यापनक परंपरा प्रचलित छल। शिष्य आ उपशिष्यक कतेक रास कोटि छल आ ओ सभ अप्पन-अपन अध्ययनक संग अध्यापन काजसँ सेहो जुडल छल। मंडन मिश्र अहि विद्यापीठक कुलपति छलाह। एतय, तत्समय प्रचलित ज्ञानक सभ शाखाक सेहो अध्ययन होयत छल।

निरंतर शास्त्रचर्चासँ ई ठाम कोण तरहे भावाविष्ट भ' चुकल छल, एकर संबंधमे किंवदंती अछि जे एतौका सुग्गा आ मैना सेहो परस्पर शास्त्रक गप दुहराबैत छल। विजयग्रन्थ सेहो अहि तथ्यक बेर-बेर उल्लेख करैत अछि। विजयग्रन्थमे मंडन मिश्र सँ मिलैक लेल आयल आचार्य शंकर केँ पनभरनी (पानि भरै वाली दासी) सँ उच्चारित श्लोककें सुनैत आ हुनक शास्त्रज्ञानक आगु चकित होयत दर्शायल गेल अछि।

विजयग्रन्थ बेर-बेर मंडन मिश्र केँ मीमांसक रूपमे प्रस्तुत केने अछि, जखन कि मिथिला लोक परम्परामे ओ मूलतः अद्वैतवेदांती बताओल गेल अछि, आ ई कहल गेल अछि जे मीमांसक परंपरागत शिक्षा सेहो ओ प्राप्त केने छलाह, जेकरा आओर व्यापक बनाबैक काज ओ केने छलाह।

मंडन मिश्र आ शंकराचार्यक बीच भेल शास्त्रार्थक प्रसंग विश्वविश्रुत अछि। भारतीय शास्त्रचर्चाक अनूठी मिसालक जेना एकरा रखल जायत अछि। विजयग्रन्थमे एकर विशद वर्णन कयल गेल अछि। ई विवरण भेटैत अछि जे मंडनक स्त्री भारती निर्णायक तौर पर अहि शास्त्रार्थक मध्यस्थता केने छली। ओतय अठारह दिन धरि दोनोंक बीच मीमांसा बनाम अद्वैत वेदांतक मुद्दा पर अनवरत शास्त्रार्थ चलैत प्रतिपादित केल गेल अछि, जेकर उपरांत ई बताओल गेल अछि जे आचार्य शंकरक निष्पतिसँ अंततः मंडन मिश्र चुप भ' गेल आ भारती आचार्य शंकरक विजय केर घोषणा केने छली।

एक भिन्न प्रसंगमे भारतीकेँ द्वारा सेहो आचार्य शंकरस शास्त्रार्थ करय क' ल' क' अछि, जाहिमे बताओल गेल अछि जे भारती केँ द्वारा कामशास्त्र-विषयक प्रश्न पूछाबा सँ शंकर उत्तरकेँ लेल एक मासक समय मांगने छलाह आ अहि बीच रजा अमरुकक मृत शरीरमे योगबलसँ प्रवेश क' कामशास्त्रक व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त केने छल।

अहि विषयकेँ विश्लेषक गन यथा डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डेय आदि अहि प्रसंगकेँ शंकरक अनुयायियों द्वारा परवर्ती कालमे हुनक 'सर्वज्ञता' पर उठाय जाहि बला प्रश्नक समाधानक लेल कल्पित आख्यानक रूपमे देखैत अछि।

विजयग्रन्थमे, मंडन मिश्रकेँ द्वारा आचार्य शंकरक शिष्यत्व ग्रहण क' सर्व प्रधान शिष्य सुरेश्वराचार्य बनहिकेँ उल्लेख कयल गेल अछि। सुरेश्वर द्वारा लिखित ग्रन्थ 'नैषकरम्यसिद्धि' उपलब्ध अछि आ दोसर ठाम पर एकर उद्धरण प्राप्त अछि। मंडन आ सुरेश्वरक भिन्नता केँ ल' क' कतेक रास शोध-अध्ययन भेल अछि आ एहि विषय पर पोथी सेहो प्रकाशित अछि। आय, ई एक सुनिर्णित तथ्य अछि जे मंडन मिश्र आ सुरेश्वर दू भिन्न-भिन्न लोक छलाह, दुनू अद्वैत वेदांती छलाह मुदा भिन्न-भिन्न संप्रदाय सँ आबैत छलाह। सुरेश्वर अपन पोथीमे मंडन मिश्रक उल्लेख ई कहैत केने अछि जे हुनक अभिमत हुनक अपन संप्रदायक अनुरूप अछि।

मिथिलाक लोक परंपरामे आचार्य शंकर सँ मंडन मिश्रक पराजयक गप नञ मानल जायत अछि मुदा ई कहल जायत अछि जे मिथिलाक सुप्रसिद्ध

पंडित विश्वरूपक संग आचार्य शंकरक शास्त्रार्थ भेल छल, आ ओ (विश्वरूप) संन्यास ग्रहण क' सुरेश्वराचार्यक रूपमे प्रसिद्ध भेल। विजयग्रन्थ सेहो विश्वरूपक संग शंकरक शास्त्रार्थक कथा कहैत अछि मुदा ओतय ई बताओल गेल अछि जे अहि विश्वरूपक नाम मंडन मिश्र छल।

शोधकर्ता वर्तमानमे उपलब्ध विजयग्रन्थकेँ आधुनिक युगमे रचित आख्यान-कथा कहैत हुनका द्वारा उद्घाटित तथ्यमे पैघ-पैघ ऐतिहासिक भूल पानि अछि। एतय शंकरस कतेक रास शताब्दी पूर्व आ कतेक शताब्दी बाद भेल पंडित, आचार्यक संग हुनका शास्त्रार्थ करैत देखायल गेल अछि। ओना, ई बातक प्रबल प्रमाण पायल जायत अछि जे शंकरचरित-आख्यानक एकटा पुरना परंपरा अवश्य छल, मुदा अहि परंपराक आरम्भ सेहो शंकरक चारि-पाचम शताब्दी बाद भेल, एहनो मानल जायत अछि।

मंडन मिश्रक शताब्दी बाद धरि, हुनक ग्रन्थक अध्ययन-अध्यापनक समृद्ध परंपरा विद्यमान छल, एकर संकेत हमरा वाचस्पति मिश्र (नवम शताब्दी) आ मधुसुदन सरस्वती (सत्रहम शताब्दी) केर पोथीमे भेटैत अछि। स्वयं आचार्य शंकर 'ब्रह्मसूत्रभाष्य' केँ कतेक रास ठाम पर विभिन्न प्रसंगमे मंडन मिश्रक सिद्धांत उद्धृत केने अछि। मिथिलाक परंपरामे त' मंडन मिश्रकेँ 'ज्ञानक अलंघ्य प्राचीर' मानल जायत अछि। परवर्ती युगमे कहियो संतुष्टिक लेल त' कहियो खंडनक लेल मंडन मिश्रक सिद्धांते उद्धृत केल जायत रहल अछि- एतय धरि जे शान्तरक्षित जेहन बौद्ध दार्शनिकक द्वारा सेहो।

इतिहास साक्षी अछि जे ब्राह्मण-बौद्धक बीच मध्यकालीन वैचारिक, संघर्षक कारण मिथिलामे न्याय आ नव्यन्यायक महत्त्व बढैत गेल, क्याकि प्रतिपक्षी केँ ध्वस्त करैक दृष्टिसँ ई अनूकूल छल आ अद्वैत वेदांतक स्वाध्याय-परंपरास ओझल होयत गेल। निवृतिमर्गीय गठबंधन ज्ञान-कर्म-समुच्चयक अहि धारा केँ अप्रासंगिक करय केँ सभटा उपाय केलक। स्थिति ई भेल जे बादमे तिलक-जेहन महापुरुष केँ अफ़सोसँ करय पड़ल जे मध्यकालकेँ आबैत-आबैत ई धारा लुप्त भ' गेल।

जय गुरुदेव

मैथिली साहित्य

द्वारा

सुरेन्द्र राउत

(एलएनएमयू दरभंगा)

मो. 9015277823

सभी हिन्दी जानने वालों के लिए सरल, सुरक्षित व अंकदायी विषय

(लेखन- देवनागरी लिपि)

प्रबोधन आईएएस
206, तीसरी मंजिल, जैना हाऊस कॉम्पलेक्स, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

नवरत्न रक्षा पीएसयू

देश के रक्षा बलों को
सशक्त बनाते हुए

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS
गुणता. प्रौद्योगिकी. नवोन्मेष.

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लि. (बीईएल), भारत की अग्रणी रक्षा इलेक्ट्रॉनिकी कंपनी ने सैनिकों के निर्णायक मिशनों में उनकी सहायता करने वाले उत्पादों की व्यापक श्रृंखला तैयार करते हुए देश के सशस्त्र बलों को सक्षम बनाने का अपना लक्ष्य तय किया है। एक बहु-उत्पाद, बहु-यूनिट वाली कंपनी, बीईएल को अपने उच्च परिशुद्ध उत्पाद जिसकी सभी प्रक्रियाओं में विश्व-स्तरीय गुणता सुनिश्चित की जाती है, से आद्योपांत, आवश्यकता अनुकूल समाधान प्रस्तुत करने में विशेषज्ञता प्राप्त है।

टैंक उन्नयन
हथियार प्रणालियों
अंतरिक्ष इलेक्ट्रॉनिक्स
रेडार
नौसेना प्रणालियों
तटीय निगरानी प्रणाली
मैनपैक सैटकॉम टर्मिनल
डिजिटल मोबाइल रेडियो रिले के लिए सैटकॉम
वैमानिकी
सैन्य संचार
इलेक्ट्रो ऑप्टिक्स
असैनिक

अधिक जानकारी के लिए www.bel-india.com देखें

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
आउटर रिंग रोड, नागवारा, बेंगलूरु - 560045, भारत

टॉल फ्री - 1800 4250 433
सीआईएन : L32309KA1954GOI000787

षडदर्शन टीकाकार पं. वाचस्पति मिश्र

✍ प्रो. काशी नाथ झा

वाचस्पति यदि नञ लितथि
मिथिलामे अवतार।
तऽ षडदर्शनक,
कें होइत टीकाकार॥
शंकर भाष्य पर टीका,
भामतीक भेला रचनाकार।
भारतक दर्शनकें ओ
कएलनि उद्धार॥

विद्यावारिधि सर्वतंत्र स्वतंत्र षडदर्शन टीकाकार पं. वाचस्पति मिश्रजीक जन्म हुनक पुस्तक न्यायसूची निबंधक आधार पर नवम शताब्दीमे मानल जाईत अछि। हुनक जनम स्थान मिथिलाक (बिहार) मधुबनी जिलाक अंधराठाढ़ी प्रखंडक सुप्रसिद्ध गाम ठाढ़ी (सम्प्रति वाचस्पतिनगर)मे भेल छलन्हि। हुनक डीहक आगुमे एकटा भव्य पोखरि अछि, जे हुनक पत्नीक नामे 'मिश्राईन पोखरि' कें नामसँ प्रसिद्ध अछि।

गामक बच्चा सभकें अखनहुं हुनक डीहक माहिसँ भट्ठा धराएल जाइत अछि किएक तं हुनका बृहस्पतिक अवतार मानल जाइत अछि। ओ न्याय, वेदान्त, सांख्य, योग, वैशेषिक आओर मीमांसा दर्शन पर आठ टा टीकाक रचना कएलन्हि, जाहिमे 'न्यायकणिका' आओर 'तत्वबिन्दु' मीमांसा दर्शनमे, 'न्यायसूची निबंध' आओर 'न्यायवार्तिक तात्पर्यटीका' न्याय दर्शनमे, 'ब्रह्मतत्व समीक्षा' मंडन मिश्रक अद्वैत वेदान्त दर्शनमे, 'सांख्यतत्व-कौमदी' सांख्य दर्शनमे 'योगवैशारदी' योग दर्शनमे आओर 'भामती' शंकरक अद्वैत वेदान्त दर्शनमे हिनक अंतिम पुस्तक 'भामती' जे कि ब्रह्मसूत्र पर शंकर भाष्यक टीका अछि, अपन त्यागमयी पत्नी 'भामती'कें नाम पर रखलनि।

पं. मिश्रजीक आस्तिक दर्शन पर लिखल गेल 'टीका' सभतं उपलब्ध अछि, परंच नाशितक दर्शन जेना बौद्ध, जैन, चार्बाक, श्रौप्रान्तिक, वैभाषिक आओर योगाचार पर टीका लिखनाई आरंभ किएलनि। किमवदन्ति अछि जे जखन ओ नास्तिक दर्शन पर टीका लिखवाक लेल वैसेथि तं हुनक 'शालिग्राम भगवान' कष्ट भए हुनकेर

चित्र: क्राफ्टवाला

खुनाएल मिश्राईन पोखरिमे चलि जाइत छलखिन, तं ओ नास्तिक दर्शन पर टीका लिखनाई छोड़ि देलनि आ ओ पुस्तक उपलब्ध नञ भए सकलैक।

पं. मिश्रजीक ग्रंथक विषयमे दार्शनिक लोकनिक ईकथन जे- 'पं. वाचस्पति मिश्रक रचना सभकें, जैं भारतीय दर्शन सँ कात कए देल जाए तं भारतीय दर्शन ओहेन उपवन जकां लागत, जाहिमे सभ किछु ते रहतैक, मुदा कोइलीक कलरब नञ सुनाई पड़तेके।

मधुसूदर सरस्वतीक सिद्धान्त बिन्दु टीका 'गोड़ब्रह्मानन्दी'मे पं. मिश्रजीकें बृहस्पतिक अवतार मानल गेलनि अछि।

बृहस्पत्यवतारस्य गूढ़तत्वार्य दर्शिनः।
वाचस्पतेरभिप्रायं कोनु विश्रातुर्महति॥

अर्थात् दार्शनिककें गूढ़ रहस्य आओर बृहस्पति अवतार वाचस्पतिक अभिप्रायकें कोन विद्वान नीक जकां जानि सकैत छथि?

वाचस्पति रचित 'न्यायवर्तिका तात्पर्यटीका'क परिशुद्धि नाम क' व्याख्या लिखबाक काल उदयनाचार्य महोदय माता सरस्वतीसं प्रार्थना कएलनि अछि जे-

मातः सरस्वती पुनः पुनरेव नत्वा।
बद्धांजलि किमपिकिजयाभ्यवेहि॥
वाक्चेतसोर्मनि तथा भव सावधाना।
वाचस्पतेर्वचसि न स्खलतोयथैते॥

अर्थात् हे मां सरस्वती, अहां हमर वाणी आओर मोन पर एहि तरहें सावधान रहवाक कृपा करू जाहि सँ वाचस्पतिक

लेखक वाचस्पति मिश्र जीक गाम ठाढ़ि स्थित भामती-वाचस्पति स्मारक निर्माण समितिक सचिव छथि।

संपर्क :
भामती-वाचस्पति स्मारक निर्माण समिति,
वाचस्पतिनगर, ठाढ़ी, मधुबनी (बिहार)
मो. 9931218588

वचनक व्याख्या करवाक काल हमर वाणी आओर मोनमे कोनो प्रकारक त्रुटि नञ भए जाए।

अनन्तजी विभूषित जगद्गुरु जगन्नाथपुरीक शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती महाराज कहैत छथि जे - कियो एक-दू टा दर्शनक विद्वान भए सकैत अछि मुदा, जखन हम वाचस्पति महोदय कें देखैत छियैन तं चार्वाक दर्शन, जैन दर्शन, बौद्ध आगम, न्याय, योग, सांख्य, वैशेषिक, वेदान्त आओर पूर्वोत्तर मीमांसक अद्‌भुत पाण्डित्य हिनक ग्रंथ सभ मे परिलक्षित होइत अछि, एहिसं बुझाइत अछि जे, जिनकर मन समाहित नञ हेतनि ओ समाधि भाषामे नञ लिख सकैत छथि, ओ एहि प्रकारक ग्रंथ सभहक रचना नञ कए सकैत छथि।

पं. वाचस्पति जीक दर्शन

पं. मिश्रजी 'सांख्यतत्व कौमदी' आओर 'भामती' नामक दूनू ग्रंथमे नीक जकां साहित्यिक ढंगसँ दार्शनिक तथ्य सभकेँ सिद्ध कएने छथि, जेना-सत्य, रज आओर तम तीनू गुणक सम्यावस्याक नाम प्रकृति अछि। सत्वगुण 'प्रकाशात्मक' होईत अछि। रजो गुण 'उपब्टम्मात्मक' होईत अछि अर्थात् एकरा द्वारा दु:खक अभिव्यक्ति होइत अछि आओर तमो गुण 'अवबृम्मात्मक' होइत अछि अर्थात् एकरा द्वारा विषाद वा मोहक अभिव्यक्ति होईत अछि। एकटा उदाहरण द्वारा ओ एहि प्रकारें सिद्ध कएकेँ देखौने छथि:

जेना कि- कोनो स्त्री छथि ओ अपन पतिकेँ सुख देते छथिन तं ओ पतिक लेल 'सत्वगुण' भऽ कें स्फूरित होइत छथि, मुदा सौतीन हुनका देखि-देखिकेँ जरैत रहैत छथिन तं सौतीनिक लेल ओ स्त्री 'रजोगुण' भऽ कें स्फुरित होइत छथि, मुदा एकटा दोसर पुरुष चाहैत छथि जे ओ स्त्री हमरा दिशि आकर्षित होइछ, इनका पर ओ मोह उत्पन्न करैत छथिन, मुदा ओ हुनका नञ चाहैत छथिन किएक तं ओ पतिव्रता छथि। तं ओकरा लेल ओ 'तमोगुण' भऽ कें स्फुरित होइत छथिन। एहि तरहें देखल जाईत अछि जे ई प्रकृति, ई जगत जे ककरो, सुख, ककरो दुख आओर कमरो मोह उत्पन्न कए कें भ्रमित करैत अछि। ई सम चमत्कार पं. वाचस्पति मिश्रजी द्वारा देखाओल गेल अछि।

पं. मिश्रजी रचित 'भामती' नामक पुस्तकमे एकटा छोट-छीन उदाहरण प्रस्तुत कएल गेल अछि, जे-देहक भेदसँ आत्मामे भेद नञ होइत छैक आओर देहक नाशसँ

आत्माक नाश नञ होइत छैक। एकरा सिद्ध करबाक लेल वाचस्पति मिश्र जी स्वप्नावस्थाक एकटा दृष्टान्त देलनि अछि- जकरा सूनिकेँ कियो व्यक्ति एहि तथ्यकेँ हृदयंगम कए सकैत अछि, जेना कि कोनो व्यक्तिक नाम देवदत्त छन्हि, जागलमे ओ अनुभव करैत छथि जे, हम देवदत्त नामक मनुख छी आओर निन्द्रावस्थामे स्वप्नमे ओ अनुभव करैत छथि जे हम सिंह छी। जंगलमे एकटा स्फटिक शिला राखल छैक, सिंहक प्रतिबिम्ब ओहि पर पड़ैत छैक, मुदा ओ बुझैत अछि जे कोनो प्रतिद्वन्द्वी सिंह हमरा पर आक्रमण करवाक लेल उद्यत अछि, ई बुझि ओ स्फटिक शिलामे अपन शरीरक प्रतिबिम्ब वाला सिंह कें वास्तविक सिंह बुझि ओ नांगड़ि कें उठवैत अछि, ओकरा माथ कें स्पर्श करैत अछि आओर पूरा जोर-शोरसँ ओकरा पर धावा करबाक प्रयास करैत अछि, एतबहिमे देवदत्त कें नीन्न टूटि जाइत छैन्हि, हुनक चेतना वापस आबि जाइत छैन्हि। एहिसँ ई सिद्ध होइत अछि जे देवदत्त ई सोचेते छथि, पहिने हम मनुख छलहुं, आ स्वप्नमे सिंह बनि गेलहूं आ फेर मनुख छी। एहिठाम वाचस्पति मिश्रजी के कहबाक छैन्हि जे स्वप्न कें टूटि जएवाक काटणें सिंहक शरीर नष्ट भए गेलैक। यदि आत्माक नाश भए गेल रहितैक तं देवदत्त कें प्रतिभिज्ञा कोना होइतनि जे हम वैह छी। एहि प्रतिभिज्ञाकेँ बलसँ सिद्ध होइत अछि जे - देहक भेदसँ आत्मामे भेद नञ होइत अछि आओर देहक नाशसँ आत्मा कें नाश नञ होइत अछि। एहि तरहें पं. मिश्रजी अपन लेखनीक द्वारा अनेक तरहक दार्शनिक विषयक गुथि सभकेँ सुन्दर जकां साहित्यिक ढंगसँ सुलझौने छथि।

पं. वाचस्पति मिश्रजीक वैवाहिक जीवन : कहल जाईत अछि जे भामतीकार पं. वाचस्पति मिश्रजी ग्रंथलेखनमे एतेक तल्लीन रहैत छलाह जे ओ अपन पत्नी तककेँ बिसरि गेलाह। गुजराती कवि श्री रामचन्द्र डोंगरेजी महाराज अपन श्रीमद्‌भागवत रहस्य पुस्तककेँ 183वां पेज पर वाचस्पतिक कथा लिखने छथि, जे 'मिथिला प्रदेश'मे वाचस्पति मिश्र नामक एकटा एहेन ऋषि भेल छलाह, ओ षड्‌दर्शन पर अनेक टीका लिखने छथि, जे एखनहूं प्रख्यात अछि। ओ अपन समय पूजा-पाठ, तप आओर ग्रंथलेखनमे वितवैत छलाह। वियाहक 36 वर्ष बीत गेलनि, मुदा ओ नञ जनैत छलाइ जे हमर पत्नी कें छथि। पत्नीकेँ बिसरि गेल छलाह। एक दिन ओ 'ब्रह्मसूत्रक' शंकर भाष्य पर टीका लिख रहल छलाह। एक पांती ठीक सँ

नञ लिखा रहल छलनि, सूत्रमे उलझि गेल छलाह, सांझ सेहो भए गेल छलैक, डिवियामे मामरि परि गेल छलैक जाहि सँ नीक जकां देखि नञ रहल छलखिन। हुनक पत्नी आबि डिबियाक बाती पैघ कए देलखिन, एतवामे मिश्रजीक नजरि हुनका पर पड़लनि, तं ओ पूछलखिन्ह- देवी, अहां कें छी।

पत्नी कहलखिन्ह, *कहियो अहांक बियाह भेल छल, ओ मोन पड़ैत अछि?* वाचस्पति कहलखिन्ह- *हं, किछु-किछु मोन पड़ैत अछि।* पत्नी कहलखिन्ह- *हम, अहांक वैह दासी थिकहूं। आईसँ 36 साल पहिने अहांक संग हमर बियाह भेल छल।* पत्नी जखन बियाह मोन पारि देलखिन तखन वाचस्पति कें मोनमे पत्नीकें प्रति भाव जगलैन आओर कहलखिन्ह- *36 साल धरि अहां चुपचाप हमर सेवा करैत रहलहूं, अहांक उपकार अनन्त अछि? अहांकें की इच्छा अछि?* पत्नी कहलखिन्ह- *हम तं किछु इच्छा नञ अछि, अहां जगतक कल्याण हेतु शास्त्र सभहक टीकाक रचना करैत छी, हम अहांक सेवा कएकें अति प्रसन्न छी।* वाचस्पतिक मोनमे पत्नीके प्रति भाव बढ़ि गेलनि। पत्नीकें एक बेर फेर मंगवाक लेल आग्रह केलखिन्ह, मुदा ओ किछु नञ मगलखिन्ह। वाचस्पति पूछलखिन्ह- *देवी, अहांक नाम की अछि।* पत्नी- *एहि दासी कें सम 'भामती' कहैत छैक।*

वाचस्पति- हम शंकर भाष्य पर जे टीका लिख रहल छी ओकर नाम भामती' रखि दैत छी। आइयो पं. वाचस्पति मिश्रजीक ओ टीका 'भामतीक' नामसँ विश्व प्रसिद्ध अछि। एहेन छलाह पं. वाचस्पति मिश्र, एहेन छलि हुनक पत्नी 'भामती', एहेन छल हमर भारतवर्ष।

पं. मिश्रजीक जन्म स्थानक प्रमाणिकता : पं. वाचस्पति मिश्र जी अपन जन्म स्थान आओर जन्मकालक चर्चा कतौ नञ कएलनि अछि।

सर्वप्रथम, वृद्ध परम्पराक अनुसार पीढ़ी दर पीढ़ी, ठाढ़ी गामक अखनहूं सभसँ ऊंचगर 'टीला' कें पं. मिश्रजीक डीहक नामसँ संबोधित कएल जाइत अछि।

डीहक आगुमे एकटा भव्य पोखरि अखनहुँ विद्यमान अछि जे कि हुनक पत्नीक उपनाम 'मिश्राइन पोखरि' सँ संबोधित होइत अछि।

गुजराती कवि, प्रसिद्ध कथावाचक श्रीरामचन्द्र डोगरेजी महाराज अपन श्रीमद्भागवत रहस्य पुस्तकक 183वां पेज पर वाचस्पति कथामे हिनका मिथिला प्रदेश कें ऋषिक रूपमे स्वीकार कएने छथि।

13 अप्रैल 1994 ई. कें ठाढ़ी गाममे हुनक डीह पर आबि जगन्नाथपुरीक शंकराचार्य अनन्तजी विभूषित स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती महाराजक प्रवचन एवं लेखनमे हुनक गुरु स्वामी श्री 108 करपात्रीजी महाराजक सम्मतिक संग अंधराठाढ़ीमे पंच वाचस्पति मिश्रजीक डीहक प्रमाणिकता पर अपन स्वीकृति प्रदान कएलनि।

मैथिली महर्षि याज्ञवल्क्यक अनुसार पं. मिश्रजीक द्वारा भामतीमे मंगलाचरण कएल गेल अछि तं वाचस्पति मिश्र मैथिले छलाह, स्पष्ट होइत अछि।

आदित्यस्य सदा पूजाम तिल्क स्वामिनस्तथा।

महागणपतेश्चैव कुर्वन् सिद्धि मवाप्नुयात।। (याज्ञवल्क्य स्मृति)

पं. वाचस्पति मिश्रजी द्वारा अपन स्व. लिखित पुस्तक सभमे बहुतो मैथिली शब्द आ अंधराठाढ़ीक पंचकोसीक वर्णन सभसँ सिद्ध होइत अछि जे पं. मिश्रजी मैथिल छलाह आ ठाढ़ीक वासी छलाह।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयकें शिलान्यासक अवसर पर मंगलाचरण करवाक लेल मालवीयजी ओहि समय कें सर्वश्रेष्ठ पंडित शिवकुमार शास्त्री सँ आग्रह कयलनि, ओ मंगलाचरण वाचस्पति रचित 'भामती' पुस्तक सँ करैथि। जहि सँ विदित होइत अछि जे सभदर्शन मे वेदान्त दर्शन आओर वेदान्त दर्शन ओ 'भामती' कतेक महत्वपूर्ण अछि।

हुनकर गुरुक नाम त्रिलोचन आ एकटा शिष्यक नाम सनातन छलनि। जनश्रुति अछि जे देवगुरु बृहस्पतिक बालक 'कच' मनुखक रूप धारण कए हुनका सँ पढ़बाक लेल अबैत छलखिन, मुदा एकटा घटनाक्रममे भेद प्रकट भए गेलाक कारणें विद्यापतिक 'उगना' जकाँ ओ विलीन भऽ गेलखिन।

ठाढ़ी गाममे पं. मिश्रजीक नाम पर संस्था सभहक नामकरण

1. वर्तमानमे पं. वाचस्पति मिश्रजीक डीह पर बिहार सरकार पर्यटन विभाग द्वारा हुनक स्मृतिमे वाचस्पति स्मारक वनाओल गेल अछि।
2. हुनक डीहसँ 200 मीटर पश्चिम-दक्षिण दिशि भामती-वाचस्पति उद्यान परिसरमे हुनक प्रथम मूर्तिक अनावरण 16 मार्च 2016 ई. कें कएल गेल।
3. भामती वाचस्पति स्मारक निर्माण समिति नामक संस्थाक निर्माण 10 सितम्बर 2010 ई. कें कएल गेल जे बिहार सरकार द्वारा पंजीकृत अछि। समिति द्वारा प्रत्येक वर्ष 16 मार्च कें विद्वत द्वारा साहित्यिक गोष्ठी, कवि सम्मेलन एवं रात्रिमे मिथिलाक सुप्रसिद्ध गायक सभ द्वारा संगीत संध्याक आयोजन सेहो कएल जाइत अछि।
4. अंधराढाढ़ी रेलवे स्टेशनक नाम 'वाचस्पति नगर' हिनकें नाम पर राखल गेल अछि।
5. 'वाचस्पति संग्रहालय'क निर्माण हिनकें नाम पर कएल गेल अछि।
6. वाचस्पति पुस्तकालयक नाम हिनकें नाम पर राखल गेल अछि।
7. भामती वाचस्पति कन्या संस्कृत विद्यालयक नाम हिनकें नाम पर अछि।

अंधराढाढ़ीमे अवस्थिति बहुतो संस्थाक नामक आगुमे अंधराढाढ़ी वाचस्पति नगर लिखल जाइत अछि। अर्थात् अंधराढाढ़ी आब वाचस्पतिनगर भेल जाइत अछि।

स्मारक निर्माण समिति द्वारा 16 मार्च 2018 ई. कें वार्षिक समिति पर्व समारोहक अवसर पर स्मारिकाक विमोचन के लेल तैयारी शुरू भए गेल अछि।

रुडयार्ड किपलिंग ने
उन्हें अपनी कल्पनाओं
में बसाया और अब हम
उन्हें बसा रहे हैं,
एक नए परिवेश में।

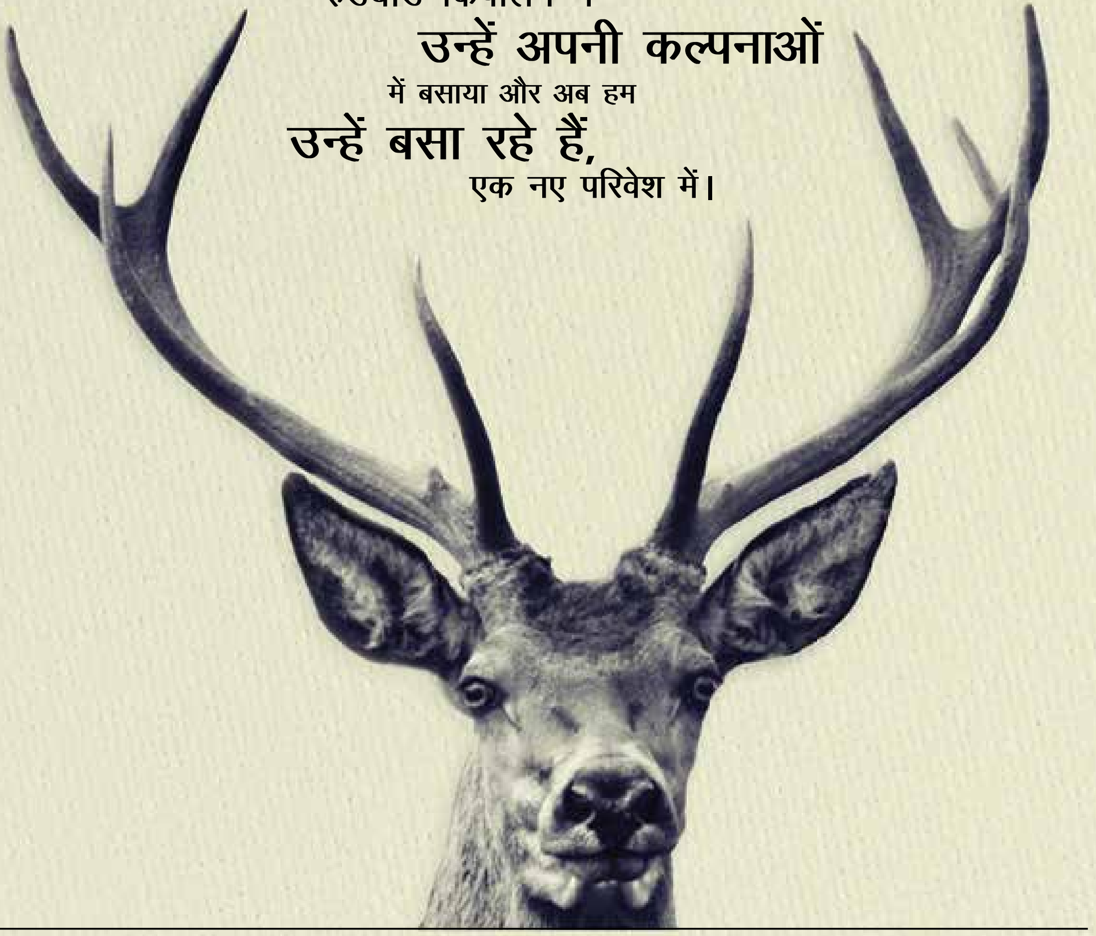

"ओएनजीसी बारासिंघा (ईस्टर्न स्वैम्प डीअर) संरक्षण परियोजना"

एक दुर्लभ प्रजाति को विलुप्त होने से बचाने के लिये ओएनजीसी की सीएसआर पहल।

असम में पाये जाने वाले बारासिंघा या ईस्टर्न स्वैम्प डीअर *(Rucervus duvaucelii ranjitsinhi)* आज विलुप्त होने की कगार पर है। प्रसिद्ध लेखक रुडयार्ड किपलिंग ने जिस से मंत्रमुग्ध हो कर उसकी सुन्दरता को अपनी दूसरी किताब 'द सेकंड जंगल बुक' में कैद किया हो, उस जीव के लिये यह काफी दुखद स्थिति है।

ओएनजीसी ने इस प्रजाति को विलुप्त होने से बचाने के लिये अपने कदम बढ़ाये, और वो भी बिल्कुल सही समय पर।

इसके पहले चरण के अन्तर्गत इनकी अनुमानित आबादी, अनुकूल पर्यावरण, पशु–चिकित्सा अंतःक्षेप एवं सामान्य अध्ययन और जागरूकता अभियान किया गया। इनके स्थानांतरण के लिये मानस राष्ट्रीय उद्यान को चुना गया, जो इनके रहने के लिये बिल्कुल उपयुक्त स्थान था।

काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान से 19 बारासिंघो को मानस में स्थानांतरित करना बहुत ही कठिन काम था। योजना के इस अत्यंत कठिन दूसरे चरण को दक्षिण अफ्रीका से बुलाये गये वन्यजीव विशेषज्ञों ने बहुत खास तरीके से अंजाम दिया। 19 बारासिंघो का स्थानांतरण खास तंबुओ में किया गया, जिनको अन्दर से उनके प्राकृतिक आवास जैसा ही बनाया गया था। कुछ ही महीनों में 6 नवजात बारासिंघो ने झुण्ड में जुड़कर, स्थानांतरण की खुशी को दुगना कर दिया।

इस योजना के विस्तार के तीसरे चरण के अन्तर्गत 20 अतिरिक्त बारासिंघो का स्थानांतरण किया जा रहा है।

यह परियोजना संतुलित पर्यावरण की ओर ओएनजीसी की एक शुरुआत है। लुप्तप्राय प्रजातियों का संरक्षण करने के लिये प्रेरित, हमारा संगठन प्रकृति की असली सुंदरता को बनाये रखने के लिये प्रतिबद्ध है।

ओएनजीसी
ONGC

ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन लिमिटेड

पंजीकृत कार्यालयः– पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऊर्जा भवन, 5, नैलसन मंण्डेला मार्ग, वंसत कुँज, नई दिल्ली-110070
दूरभाषः 011-26752021, 26122148, फैक्सः 011-26129091 www.ongcindia.com /ONGC Limited @ONGC_

मिथिला विभूति उदयनाचार्य

✍ डॉ. परमानन्द मिश्र

लेखक उदयनाचार्य रोसड़ा महाविद्यालय, रोसड़ामे हिन्दी विभागक विभागाध्यक्ष छथि। मिथिलाक साहित्यिक विभूति सब पर विशेषज्ञता रखैत छथि।

संपर्क :
बड़ी दुर्गा स्थान, रोसड़ा,
समस्तीपुर (बिहार)-848210
मो. 9771564263

त्रिगुणात्मिका महाशक्तिक जन्मभूमि मिथिला अनादिकाल सँ वैदुष्य पूर्ण सारस्वत साधकगणक साधना-सम्पन्न पुण्यभूमि रहल अछि। एहि सिद्ध परम्परा केर अनमोल विभूति छथि अचार्य उदयन।

रोसड़ा अनुमण्डल मुख्यालय सँ उत्तर करिवन सँ अप्रभंश भेल करियन नामक ग्राममे हिनक जन्म इस्वीसनक एगारहम शतकमे भेल छल। ई शाण्डिल्य गोत्री मैथिल ब्राह्मण छलाह।

श्रीवत्सँ नामक एकटा ब्राह्मण करियन गाम बाटे कतऊ जा रहल छलाह। ओ सड़कक कातमे क्रीड़ा-लीन किछु बालक केँ देखल थिन्ह। ओहिमे एकटा संस्कारी बालकक क्रीड़ा-कौतुक सँ प्रभावित भय ओकरा सँ पुछलथिन्ह- बच्चा! तोहर घर कतऽ छह? बालक उत्तर दैत कहल थिन्ह- स्वयंसिद्ध अछिकि जतय हम खेल रहल छी तकरे समीप हमर घर अछि। ई विलक्षण उत्तर सँ प्रभावित श्रीवत्सक प्रतिप्रश्न छल ई कोना स्वयं सिद्ध अछि? बालक उत्तर दैलैन्हि-संध्याकालमे कोनो बच्चा अपना घरक समीपे खेल सकैत अछि। बच्चाक तर्कसंगत उत्तर सँ श्रीवत्सँ अत्यन्त प्रसन्न आ प्रभावित भऽ हुनक माता पिता सँ पढ़ैवाक लेल हुनका मांगि लेल थिन्ह। सुयोग्य गुरुक मार्गदर्शन सँ उदयनक जन्मजात प्रतिभा चमकि उठल। उदयन न्याय एवं वैशेषिक आदि विभिन्न शास्त्रक विश्वविख्यात विद्वान भेलाह।

उदयनाचार्यक ग्रंथ मूलक न्यायशास्त्र सँ संबंधित अछि। हुनका द्वारा रचित ग्रंथ निम्नांकित अछि- न्याय परिशिष्ट, किरणावली, तात्पर्य परिशुद्धि, आत्मतत्व-विवेक, न्यायकुसुमांजलि, न्यायकुमांजलिकारिका, लक्षणमाला एवं लक्षणावली।

उदयनाचार्यक ग्रंथ रचनाक उद्देश्य स्वान्त:सुखाय वा पाण्डित्यप्रदर्शन मात्र नञ छल अपितु अनीश्वरवादी बौद्ध मतक खण्डन कय सनातन आईश्वरवादी मतक स्थापना छल। अनीश्वरवादी बौद्ध मतक खण्डन करवाक कारणे उदयनाचार्यक पाण्डित्य सदैव वैचारिक संघर्ष सँ ओतप्रोत रहल।

महर्षि गौतमक न्याय सूत्र पर वात्स्यायन भाष्य लिखने छलाह तकर खण्डन दिङनाग आदि बौद्धाचार्य द्वारा कायल गेल। उद्योतकर न्यायवार्तिकक रचना द्वारा गौतमक न्यायसूत्रक खण्डन कयलैन्हि। न्यायवर्तिका-तात्पर्यटीकाक रचना कय वाचस्पति मिश्र बौद्ध मतक खण्डन कयने छलाह। बौद्ध तार्किक द्वारा अहू ग्रंथक खण्डन कयल गेल। तखन वाचस्पति मिश्रक समर्थनमे उदयनाचार्य न्यायवर्तिका टीका परिशुद्धि नामक ग्रंथक रचना कयलैन्हि। एहि ग्रंथक रचनाक्रममे वाचस्पति मिश्रक प्रति अपन प्रवल आस्था एवं श्रद्धाक अभिव्यक्ति करैत उदयन माता सरस्वती सँ प्रार्थना कयल-

मातः सरस्वति पुनः पुनरेवनत्वा
बद्धांजलिः किमपि विज्ञापयाम्यवेहि।
वाक्चेतसोर्मम तथा भव सावधाना
वाचस्पतेर्वचसि न स्खलनो यथैते।।

हे माता सरस्वती बारम्बार प्रणतिपूवक हमर अहां सँ एह प्रार्थना अछि जे एहि ग्रंथक रचनाक्रममे अहां हमर वाणी तथा चेतनामे एहि तरहें सावधान रहू जाहिसँ चावस्पति मिश्रक वचनक हमरा द्वारा कतइ खण्डन नञ भऽ जाय।

उदयनाचार्य द्वारा बौद्ध लोकनि अनेको बेर पराजित भेलाह। एहि संदर्भमे भविष्य पुराणमे एक रूचिकर प्रसंग आवल अच्छि।

एक बौद्ध भिक्षु अनेक बेर उदयनाचार्य सँ पराजित भेलाक वादो हार मानऽलेल तैयार नञ भेला। तखन उदयनाचार्य ई प्रस्ताव राखलैन्हि जे एकटा ब्राह्मण वेदप्रामाण्य अछि ई कहि ताड़क गाछ पर सँ कुदथि आ एकटा बौद्ध भिक्षु बेढ़मे अप्रामाण्य कहिक कूदथि। एहिमे जे जीवित रहता जिनक बात सर्वमान्य होगत। एहि क्रियामे बौद्ध भिक्षुकक मृत्यु भऽ गेल। एहिमे किन्तु उदयनाचार्य हत्याक भागी भेला। एहि पानक कें विचारणार्थ उदयनाचार्य भगवानक दर्शन हेतु पुरी गेलाह। ओनय पहुंचला पर भगवान जगन्नाथक फाटक नन्द देखि से। अतिशय दुखी भेलाह। तखन भगवान जगन्नाथ कँे कहल थिन्ह–

ऐश्वर्य मदमत्तोऽसि मामवज्ञानवंतसे।
समाभातेषु बौद्धेषु मदधीना तत स्थिति।।

हे महाप्रभु अहां ऐश्वर्यमद सँ मातल छी एहि कारणे हमरा सबक भक्तक औता तखर अहांक अस्तित्व हमरे अधीन होयत। एहि श्लोकक उच्चारण सँ भगवान जगन्नाथक कपाट स्वतः उद्घाटित भऽ गेल। भगवान जगन्नाथक स्वप्न देला पर तत्रस्थ पुजशि द्वारा द्यौतवस्त्रादि सँ उदयनाचार्यक विदाई कयल गेल।

एहि तरहक अनेकों प्रसंग अछि जाहि सँ आचार्य द्वारा बौद्ध सभक पराजयक कथा ज्ञात होईत छैक।

उदयनाचार्यक तर्कसंगत बौद्धिक प्रहार सँ बौद्धधर्मक प्रभाव क्षीण होगय लागल। पुनः अनेक राजा आदि आचार्य श्रीक शिष्यत्व स्वीकार करहा लगलाह। एहि सँ उदयनक ख्याति देश भरमे फैल गेल। करियन ग्राममे अनेको छात्र आवि आचार्य सँ विभिन्न विषयक ज्ञान प्राप्त करय लगलाह। ई ग्राम एक विद्यापीठ रूपमे प्रतिष्ठित आप्रख्यात भेल। अध ावधि एहि इलाकाक लोग एहि डीहक माटि सँ अपन बाल बच्चा कें अक्षरारम्भ करवैत छथि।

भारत कें प्रथम राष्ट्रपति महामहिम डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सँ हो एहि पावन स्थल कें नमन कय ओहि माटिक चन्दन कयने छथि आ किछु माटि अपना संग सेहो ल गेल छथि।

अद्यावधि एहि इलाकाक विद्वद्जन आचार्यक गर्वोक्तिक उच्चारण कय हुनक चूड़ान्त ज्ञानक महत्ताक स्मरण करवामे अपना कें गर्वोन्नत बुझैत छथि जे एहिठाम उद्धृत अछि–

वयमिह पदविद्यां तर्क मान्विक्षिंकी वा।
यदि पथि विपथे वा वर्त्तयामो सँ पंथाः।।
उदयति दिशि यस्यां मानुमानसैव पूर्वा।
नञ तरणि रूदीते दिक् पराधीन वृत्तिः।।

युगप्रवर्तक चन्दा झा

✍ भीमनाथ झा

लेखक मैथिलीक सेवानिवृत्त प्राचार्य (ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय) छथि। शिक्षाक क्षेत्रमे अभूतपूर्व योगदानक अतिरिक्त ओ मैथिलीक पहिल पत्र मिथिला मिहिर केर उप-संपादक सेहो रहल छथि।
कविता संग्रह- त्रिधारा, वीणा, धूरी, की फुरैए की ने, नाम तँ थिक वैह, भावाञ्जलि, भनहि भीम कर जोड़ि, कविताधन केर अतिरिक्त आन साहित्यिक विधामे बहुत रास पोथी प्रकाशित छनि।

संपर्क :
छपकी पड़री (पंचायत भवनसँ दक्षिण), लक्ष्मीसागर, दरभंगा-846009
मो. 9430827936

चन्दा झा युगप्रवर्तक थिकाह, आधुनिक युगक निर्माता थिकाह, आदिपुरुष थिकाह, ताहिपर क्यो प्रश्न नञ ठाढ़ कयलनि अछि। मैथिलीक समालोचक, समीक्षक, विद्वान् एकमत सँ हिनका युगप्रवर्तक माननलि अछि, तकरा सम्पूर्ण समाज स्वीकार कर लेने अछि। केवल डॉ. काञ्चीनाथ झा किरण कने आपत्ति दर्ज कयले छथि। हुनक आपत्तिक मुख्य बिन्दु छनि जे चन्दा झा हिन्दीयोमे लिखैत छलाह, 'एकमात्र मैथिली भाषा कँे साहित्यिक माध्यम नञ मानैत रहथि।' हुनक दोसर आपत्ति छनि जे नञ मैथिलीक स्वतंत्र सत्ताक स्थापना लोक महाराजक ध्यान आकृष्ट कयलनि, नै बंग साहित्य परिषदक सदृश संस्थाक आयोजन कयलनि, नै सामयिक साहित्यिक रचना सँ असेदृताकें दूर करबाक यथाशक्ति प्रयास कयलनि।'

युगप्रवर्तकक रूप को चन्द्राझाक अस्वीकृतिक पाछां किरणजीक धारणा रहल होयतनि जे ओ राज्याश्रित छलाह।

राज्याश्रित लोकक अपन व्यक्तित्व गौण भए जाइत छैक, ओ राजाक इच्छा पर नचैत अछि। आ, जे राज्याश्रित रहय, अपन अस्मिताक प्रकाश नञ कऽ पाबय, ओकरा युग कँे बदलि देबाक शक्ति कतऽसँ अतैक? चन्दाझांक अधिकांश साहित्यक रचना राजाक आदेश सँ भेल छनि, राजाक प्रीत्यर्थ छवि; आ राजा जे होइत अछि सँ प्रजाक शोषक होइत अछि, एहनामे चन्दा झा प्रजाक कवि कोना भऽ सकैत छथि? जनताक कवि कोना भऽ सकैत छथि? आ, जे जनताक कवि नञ होयत, तकरा आजुक युगक प्रवर्तक कोना मानबैक? किरणजीक मुख्य आपत्ति यैह छनि।

किरणजीक प्रतिभा स्थापित मान्यताक खण्डनमे कने विशेषे भास्यर भेल देखैत छी। से आनो ठाम देखैत छी। जेना, किरणजी हास्यकें रस मानिते नहि छथि। ओ कहैत छथि- हास्य असलमे द्वेषरस थिक। लोक कँे हंसी लगैत छैक अनकम्पर, अपना परजखन विसा जाइत छैक त' सभ हंसी घोसड़ि जाइत छैक। आन खसैत अछि तं हंसैत छिऐक, अपने खसैत छी तं मुंह लटकि जाइए। आनक विकृत रूप देखैत ही तं हंसि दैत छी, अपन सन्तान जें ओहन भऽजाय तं हंसबैक? किरणजी स्वयं बुझैत छलाह जे ईसभ वाग्विलास थिक। एहिसँ स्थितिमे परिवर्तन भेनिहार नहि थिक। तहिना, ओ कहलनि जे वर्णरत्नाकर गद्य ग्रंथ नञ थिक, ओ काव्यग्रंथ थिक, महाकाव्य थिक, महराइ शैलीमे लिखल गेल महाकाव्य।

अपन कथनकँ अनेक तर्कसँ पुष्ट करबाक चेष्टा कयलनि। जं तर्क एकदम फोंक रहितनि तं ओही विषयक शोधप्रबंध पर 'डॉक्टरेट' उपधि सँ विभूषित कोना कयल जैतथि? आब तं ओ पुस्तकाकारो भऽ गेलनि अछि। मुदा स्थितिमे तहिसँ परिवर्तन नञ भेल। वर्णरत्नाकर आइयो

गद्येग्रंथ कहबैत अछि। यैह बात चन्दाझाक प्रसंग सेहो घटित होइत अछि।

चन्दाझा, किरणेजीक शब्दमे 'छिटफुट टूटल-फूटल हिन्दी भाषामे' लिखैत छलहि, ताहिसँ ई 'सिद्ध' अछि जे ओ एकमात्र मैथिली भाषाकेँ साहित्यिक माध्यम नञ मानैत रहथि। एकमात्र मैथिली भाषाकेँ साहित्यिक माध्यम माननिहारे हा श्रेष्ठ रचनकार भऽ सकैछ, युगप्रवर्तन कऽ सकैछ, किरणजीक एहि सिद्धान्तक आधार पर यात्री एवं राजकमलकेँ मैथिलीक ओहि सिंहासनपरसँ उतारि देबऽ पड़त जतऽ हुनका लोकनिकेँ बेसौने छियनि। ततबे नहि, आचार्य रमानाथ झाक मैथिली अवदानकेँ एकमात्र एहि कारण ें फूस मानए पड़त जे ओ अंग्रेजियोमे लिखलनि। आ, सर्वोपरि विद्यापतिकेँ की कहबनि, जे बेसी संस्कृतेमे लिखलानि? तें, कोनों लेखक द्वारा आनो भाषामे लिखब ओकर अपन मातृभाषाक प्रति अवहेलना मानि लेब तर्कसंगत नञ लगैत अछि।

तहिना, किरणजीक ई उक्ति 'चन्दाझा घरमे बैसल कोनहुना रामायण, किछु महेशवानी लिखिकऽ संतुष्ट भऽ गेलाह' किछु उत्तेजनामे लिखल बुझि पड़ैत अछि, कारण चन्दाझाक जे विराट योगदान मैथिली साहित्यमे छनि, तहिसँ किरणजी नीक जकां अवगत रहथि। चन्दाझाक अनुसंधान, अनुवाद, सम्पादन एवं देशदशासूचक पदक माध्यमे साहित्यकेँ दिशा देबाक असाधारण क्षमताकेँ सभहुँ जनैत छियनि।

मैथिलीक स्वतंत्र सत्ताक स्थापना लेल महाराजाक ध्यान ओ आकृष्ट नञ कयने होयताह, सँ कोना कहल जा सकैछ? हुनक जीवनकालमे दरभंगा राज 1880 धरि 'कोर्ट ऑफ बार्ड्स'क अधीने रहल। तकर बाद लक्ष्मीश्वर सिंह राजा भेलाह। चन्दाझा यावत अपन महत्व स्थापित करितभि ता राजाक देहान्ते भऽ गेलनि। रमेश्वर सिंहक राज्यकालमे मुख्य परामर्शीक आसन पर विराजमान भऽ अपन बात मनयबाक स्थितिमे अयबाएं पूर्वहि ओ अशक्त भऽ गेलाह, 1907मे निधने भऽ गेलनि। चन्दाझा मैथिलीक उत्थान लेल सर्वतोभावेन जीवन भरि लागल रहलाह, अपन समकालीन विद्वान लोकनिकेँ तथा मिथिलाक समाज केँ सदा प्रेरित करैत रहलाह, ई तं इतिहासतथ्य थिक।

चन्दाझा राज्याश्रित छलाह,ई सत्य थिक; हुनक अनेक रचना, रामायण सेहो, राजाक आज्ञास लिखल गेल, ईहो सत्य थिक; बेसी राजा प्रजाक शोषक होइत छथि, ईहो तथ्य छैक। तें, हिनक रचना जनताक हितक नञ अछि, नञ भऽ सकैत अछि—भनञ तर्कशास्त्रक सिद्धान्तपर अहां एकरा सिद्ध कऽ दियौक, मुदा साहित्य तर्कशास्त्र नञ थिक। साहित्य थिक रसशास्त्र। जं चन्दाझाक रचना सँ सकल साधारण लोक, आम जनता, रस ग्रहण करैत अछि, आनन्दित होइत अछि तं ओ जनताक कवि थिकाह; जं हुनक रचना सकल साधारण जनताक स्वर केँ मुखर करैत अछि, ओकर इच्छा-आकांक्षाकेँ वाणी दैत अछि तं ओ समाजक प्रतिनिधि कवि थिकाह; जं हुनक साहित्य पहिलुक लीकसँ हंटि नव लीक बनबैत अछि आ हुनक निर्मित लीक पर परवर्ती साहित्यकार अपने साहित्यक गाड़ी दौड़बैत अछि, अर्थात् ओ सुधीजने-स्वीकार्य भऽ जइत अछि, आ सर्वोपरि हुनक साहित्य समाज केँ ओहन सन्देश दैत अछि जे हुनकाएं पूर्वक कवि नञ देने रहथि तं स्वत: ओ युगप्रवर्तकक आसनपर विराजमान मानल जयताह। हुनक साहित्यकेँ बुझऽवला, हुनक साहित्यसँ अनुप्राणित होबऽवला, हुनक साहित्यसँ नव दिशाक सन्धान पाबऽवलाकेँ एहिसँ कोन सरोकार रहबाक चाही जे ओ व्यक्ति की छलाह, कोन

परिस्थितिमे रचना कायलनि? आब, जखन ओ नञ छथि, हुनक देहान्तोक एक सय वर्ष सँ ऊपर भऽ गेलनि अछि, तखन हुनक दैनन्दिन जीवनपर की विचार? विचार तँकर हो, जे एखन अछि। आ, एखन ओ नञ छथि, एखसब अछि हुनक साहित्य। हमरा लोकनि हुनक साहित्यपर विचार करैत छी। आ, ताही आधारपर ई मानैत छी जे हुनक साहित्य पहिनेसँ चल अबैत धाराकेँ मोड़लक, आहिमे वेग अनलक, अनेक छारनि बहार कयलक, तहिसँ काव्यक विशाल परिसर केँ सिचलक, पटौलक, फलत: मैथिली साहित्य परिसर पूर्णत: हरित-भरित भऽ उठल। अनेक परती टुटलैक, कतोक गाछी-कलम लगलैक, बहुतो नव चासवास बनलैक। युगप्रवर्तन एकरा नञ तंककरा कहबैक?

युग बदलैत छैक विचारधारामे परिवर्तन अयलासं। ओ परिवर्तन तेहन हो जे अबितहि अपन अस्तित्वक बोध करा देअय आ समाजसँ मनबा लेअय। ओ परिवर्तन एहनहो जे जबकल जलकेँ हिलोड़ि, पोखरिक मुंह खोलि देअय, सड़लाहा पानिकेँ बहा देअय आ नबका पानि जमा होअय देअय। एहि दृष्टिएं विचार करबैक तं चन्दाझाक महत्व स्वत: स्पष्ट होइत चलत।

आचार्य रमानाथ झा एहि दृष्टिसँ विचार कयलनि आ ओ चन्दाझाक रचना सभस एतेक प्रभावित भेलाह जे आधुनिक युग हिनकहि नाम पर राखि देलनि। आधुनिक युग केँ हिनका नामसँ मणुति कयलनि ततबे नहि, हिनका विद्यापतिक समकक्ष प्रतिष्ठा प्रदान कयलनि। ओ कहलनि जे मैथिली साहित्यमे दुइएय युग अछि-विद्यापति-युग, अर्थात् कृष्णकाव्य युग एवं चन्दाझा-युग, अर्थात् रामकाव्ययुग। आचार्यप्रवर एतबड़ आसन कवीश्वर केँ देलनि, सँ हुनका पर अनुग्रह कऽकऽ नञ देलनि, अपितु हुनक साहित्यकेँ विद्यापतिक पश्चात् समसँ अधिक समाजोन्मुखी होयबाक कारणेंदेलनि, हुनक साहित्यमे विराट समाजक स्पन्दन केँ पयबाक कारणें देलनि, हुनक रचनामे निहित ओहि शक्तिक कारणे देलनि जे आबऽवला अनेक वर्ष धरि साहित्यकार, साहित्य समीक्षक आ साहित्यरसिक केँ अनुप्रमाणित करैत रहत, नव बाट देखबैत रहत। ओहिना बाट देखाओत जेना पूर्वमे विद्यापति देखौने छलाह। विद्यापतिक पश्चात् ओतबे दक्षतापूर्वक चन्दाझा देखा रहलाह अछि आ चन्देझा देखा रहलाह अछि।

चन्दाझा अनेक स्फुट पदमे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष अंग्रेजी राजक प्रति आक्रोश व्यक्त कयने छथि। रामायण लिखबाक पाछां हुनका ईहो प्रबल प्रेरणा रहल होइनि जे दुष्ट छली प्रपंची कामिनी कांचन हरण कयनिहार विस्तारवादी सम्राटक नाश हो, रामराज्यक स्थापना हो, सँ संभव थिक। रामकथा, जकरा पहिल बेर मैथिलीमे प्रबंध काव्यक आधार बनौलानि चन्दाझा, सँ सुविचारित रहल होयत। अंग्रेज भारतीय मूलक कंसँ अथवा दुर्योधन नञ छल, जकर विरुद्ध ओकरे परिवारक कृष्ण अथवा युधिष्ठिर ठाढ़ होइताथि। ओ तं रावण छल, समुद्रपारक पराक्रमी असुर, तकर पराभव लेल रामेक प्रयोजन छल। चन्दाझाक रामायण, भनञ ओ जकर दरबारमे आ जकर आदेशएं लिखल गेल हो, एहि महत् उद्देश्य दिसजे संकेत करैत अछि सेहो कविकेँ युगप्रवर्तक बना दैत अछि।

चन्दाझा केवल कविते लिखिकऽ युगप्रवर्तक कवि भऽ सकैत छलाह। मुदा साहित्य केवल कवितेटा तं नञ थिकैक। चन्दाझाक दृष्टि एहू दिस गेलनि। दृष्टि गेलनि तं ताहू दिस अपन युग केँ बाट धरोलनि, आगां बढ़बा लेल आँखि देलथिन। सभ जनैत छी जे ओ इतिहास लिखबाक प्रेरणा देलनि, सामग्री संचित कयलनि, प्राचीन कवि पण्डितक खोज कयलनि आ हुनका लोकनिसँ परिचय करौलनि। विद्यापतियो केँ विशुद्ध मैथिलीक कवि सिद्ध कयनिहार प्रथम पुरुष वैह रहथि। सभ ईहो जनैत छी जे म.म. परमेश्वर झा जे 'मिथिलातत्वविमर्श'क रचना कयलनि तकरो लेल बेसी सरंजाम चन्देझा जुटौने रहथिन। ओ पत्रपत्रिकाक आवश्यकताक अनुभव कयलनि तथा 'मैथिल हितसाध न'क प्रकाशनमे उपयोगी सुझाव देलनि। अनुवाद कार्य केँ साहित्यिक विकासमे महत्वपूर्ण कड़ी माननिहारो पहिल व्यक्ति वैह रहथि। अनुवादे ओ माध्यम थिक जे विश्वसाहित्यसँ परिचय करबैत अछि, अपनो परिचय बढ़बैत अछि। ओ सम्पादनक गुर सेहो सिखौलनि। साहित्यक विकास केवल आत्मनेपदस नञ भऽ सकैछ। आनो ठामकेँ साहित्यकेँ संकलित करब आ ओकरा सुबु रूपमे प्रस्तुत करब- ई कोनो भविष्यद्रष्टेक बुद्धिमे प्रथमत: आबि सकैछ। चन्दाझा वृहत्तर जनताकेँ चिन्हलानि, ओकर बोलकेँ साहित्यक मर्यादा देलनि, लोककेँ काव्यएं जोड़लनि, सुधीजनक बुद्धिकेँ स्फीत कयलनि, ओकरा व्यापक बनौलनि, समाजमे आबऽवला परिवर्तनकेँ देखलनि, समाजकेँ बुझौलनि जे युग बदलि रहल छैक, अहूं बदलू, तखनञ संसारमे मोजर होयत, ने तं गोबरक चिपड़ी भेल कोनो देबाल पर पाथल रहब।

चन्दाझा अपन साहित्यमे यैह कहने छथि। ई कोनो युगप्रवर्तक केँ कहि सकैत अछि।

मुख्यमंत्री से जुड़ने का उनसे सीधे संवाद
एक और सशक्त डिजिटल माध्यम
शिवराज सिंह चौहान
एप्प
Google Play
से डाउनलोड करें
जल्द ही...
आइओएस पर भी उपलब्ध
Follow Chief Minister Shivraj Singh Chouhan
/ChouhanShivraj /ChouhanShivraj /ChouhanShivrajSingh

परमहंस गोस्वामी लक्ष्मीनाथः एक परिचय

✍ प्रो. अरविन्द कुमार मिश्र 'नीरज'

अरविंद कुमार मिश्र 'नीरज' आर.एम. कॉलेज, सहरसाक मैथिली विभागमे कार्यरत व्याख्यता छथि। विविध साहित्यिक सांस्कृतिक मंच सँ जुरल साहित्य जगतमे अरविंद नीरज केँ नाम सँ ख्यात विविध पत्र-पत्रिकामे छपैत मैथिली मंचक जानल-मानल कवि छथि। हिनका द्वारा प्रणीत अनेको प्रकाशित आ प्रकाशनार्थ छन्हि।

संपर्क :
हटिया गाछी, मानस नगर,
वार्ड नं.-32, सहरसा-852201
मो. 9771006810

जिनकर रचना गाबि-गाबि क'
जग मझधारस पार करी।
एखनहु राखल कुटी सुशोभित
खड़ाम-खाट ओ हाथ छड़ी।।
जनकल्याण समाजक हितमे,
जिनक साधना योग सफल।
एहन महात्मन लक्ष्मीनाथ के
सुनहु चरित शुभ अछि निर्मल।।

मिथिलाक ख्यात प्रख्यात विद्वान साधक परमयोगी परमहंस गोस्वामी लक्ष्मीनाथक जन्म वर्तमान सुपौल जिलान्तर्गत परसरमा ग्राममे 1793 ई.मे भेल छल। भारतीय वार्षिक गणना विक्रम संवत् 1850 ई. मे अगहन शुक्ल पंचमी (विवाह पंचमी) दिन बृहस्पति केँ भेल छल। पिता बच्चा झा एक निमिष्ट गेल सामाजिक व्यक्तित्व छलाह। दू भाईमे ई छोट छलाह। हिनका सँ पैघ भ्राताक नाम विश्वनाथ छलन्हि कतहु-कतहु रघुनाथ नामसँ सेहो कहल गेल छन्हि। बाल्य काल्हिसँ हिनक विलक्षणतास लोक प्रभाविते टा नहि, चकित सेहो होइत छलाह। हिनक संस्कारमे पूर्वजन्मक साधनाक अथाव लोककेँ होइत छल। बालोचित खेलमे आहार-व्यवहारमे सामान्य बालक सभस अलग हेबाक कारण ई आकर्षणक कारण बनि जाइत छलाह। मध्यमवर्गीय परिवारमे जन्म लेलाक कारणे घर गृहस्थीमे हाथ बटायब हिनक स्वभाव छल, ताहिमे गौ माताक सेवा हिनक कार्यमे नित्य नैमित्य रूपसँ प्रमुख छल मुदा पिताकेँ हिनक पढ़वाक चिन्ता छलन्हि।

प्रारंभिक पढ़ाई केँ बाद हिनका ज्योतिष शास्त्रकेँ ज्ञाता बनबाक लेल महिनाथपुरक महान ज्योतिष शास्त्रीय लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान रत्ते झा सँ पढ़बाक लेल पठा देल गेल। तंत्र शास्त्र केर प्रति हिनक विशेष अभिरुचि रहलाक कारणे ज्योतिषक पढ़ाई केर संग तन्त्रक साधनामे गुरुक कृपास रत सेहो भऽ गेलाह। किछुए दिनमे ज्योतिष शास्त्रक गणित फलित केर अध्ययन केर संग तंत्र साधनामे प्रख्यात भऽ गेलाह।

पुनः गुरुसँ आदेश पाबि अपन गाम आबि गेलाह। सामाजिक उपकारी युवाक रूपमे ख्यात हिनका साधु महात्माक संग सतसंगमे रुचि जागि आ सांसारिकताक अभावक संगहि अलौकिकता प्रभावक परिलक्षण हिनकामे प्रगाढ़ हुए लाग। पुत्रक एहि तरहक आचरणस पिताकेँ चिन्ता होयब स्वभाविके छल आ तें शीघ्रतास हिनक स्वभावक विरुद्ध परिबंधनमे बन्हाजेबाक उद्देश्य सँ हिनक विवाह दरभंगा जिलान्तर्गत कहुआ गामक शोखादत्त झाक पुत्री हंसाबतीसँ करा देल गेल। मुदा हिनका पर प्रौढ़ा पत्नीक प्रति सांसारिक कोनो भाव नहि आयल आ एक दिन सोचैत विचारैत संन्यासी बनबाक उद्देश्य लऽ पत्नी लग रातिमे पहुंचि आग्रह केलनि जे हमरा सांसारिकता सँ मुक्ति चाही। जाहि मुक्ति लेल साधु गुरुक सान्निध्य

आवश्यक अछि आ पत्नीसँ आग्रहपूर्ण याचना केलनि। भारतीय मैथिलानिकेँ पतिक कुशलतामे स्वयंकेँ समर्पित रहि जीवन भरिक सुखक त्यागमे अपना केँ सौभाग्य बुझैत छथि आ संतोष कऽ लैत छथि, ई कहैत–

कतहु बसथु रहथु लाख कोश।
हमर अभाग हुनक नञ दोष।।

प्रतिकारक ध्वनि मुखरित नहि भेलन्हि। मौन जान्हि लक्ष्मीनाथ तत्क्षण विदा भऽ गेलनि हुनका साधु महात्माक संग भेटि जाइत छन्हि आ, पहुंच जाइत छथि नेपाल देशक राजधानी काठमाण्डु। ओतय शास्त्र प्रसिद्ध ऐतिहासिक तीर्थस्थल पशुपति नाथक मन्दिर दर्शन पूजनसँ निजकेँ धन्य जानि कृत-कृत भऽ रहल छथि साधु-संन्यासी, योगी अकामी महात्माक बीच बीतराग व्यक्तित्व लक्ष्मीनाथ ब्रह्मानन्द सोदर परमानन्दमे डूबल छलाह।

ताहि समय सम्पूर्ण भारत अंग्रेजक राज्याधीन संक्रमण कालसँ गुजरि रहल छल चतुर्दिक अंग्रेजक साम्राज्यमे व्यक्ति अभिव्यक्तक गुलाम छल। भारतमे खास कऽ मिथिलाक विद्वान अपन-अपन प्रणीत पुस्तक केर संगहि पुराक प्रतिष्ठित पोथी रक्षा हेतु नेपालक शरणापन्न भऽ गेल छलाह। एकाएक एक दिन आक्रमणकारी अंग्रेजक दृष्टि हिमालय केर कोरमे शिशु सदृश खेलाइत देश नेपाल पर पड़ैत अछि आ आक्रमण करैत अछि। अपन सैन्यबलक संग एहि शिशु देश नेपाल पर 'लॉर्ड हेस्टिंग्स' केर सेनापति 'लोनीक' संग तत्काल एहि तरहक अचानक आक्रमणस नेपालक तत्कालीन राजा किंकर्तव्यविमूढ़ भऽ गेल छलाह। लम्हर साधू महात्मा संन्यासी तीर्थ यात्री यत्र-तत्र स्वयं केर रक्षार्थ पराबय लगलाह। बाबा लक्ष्मीनाथक सेहो भागलाहा, मुदा दिशाक ज्ञान कतहुं नहि हिमालय केर दुर्गम क्षेत्रमे बौआ गेलाह। तीन दिन-तीन राति एहि तरह सँ भूखल-प्यासल छलाह। एम्हर अपन देशक अपन गाम घरक लोककेँ अलगे चिन्ता जे आखिर कतऽ कोन दशामे हेताह। लछन नवविाहिता पत्नी हंसवतीक हालक कल्पनेटा कऽ सकैत छी। एम्हर लक्ष्मीनाथ बाबाकेँ अनायास दण्डधारी एक साधु भेंट जाइत छन्हि। ओ हिनका देखि क्रोधित होइत कहलनि कतऽ जा रहल छी। एहि कठोर बन पर्वत दिशि हिंसक जीवघात लगौने अछि। आगू, किय प्राण हताबऽ लय डेग बढ़ौने जा

रहल छी आ जोर सँ भय दाई स्वरमे बाट रोकि लैत छन्हि। मुदा साधुक स्वभाव यथार्थे कहलनि कवि तुलसी दास मानसमे 'नीरस विषद गुणमय फल जासू' आ ओ साधु हिनका अपन हाथक अभय दण्ड दऽ हिनका निर्भय करैत लुप्त भऽ जाइत छथि। बाबा आगु बढ़ैत छथि एक सुंदर खोहमे सरोवर देखैत छथि जाहि ठाम अनेको विरक्त साधु जे युग-युग सँ साधनारत छथि आगु बढ़ैत अनायास ठमकि जाइत छथि ई स्थान हिनका आकर्षित कऽ रहल छन्हि भवितव्यक किछु आभास हुअ लगैत छन्हि ता एक दैदीप्यमान साधु सँ हिनका दर्शन होइत छन्हि पारस्परिक परिचय सँ जिज्ञासा शान्त भेलाक बाद बाबा एहि महान केँ अपन गुरूक रूपमे स्वीकार कऽ साधनामे लागि जाइत छथि इएह लम्बानाथ नामक गुरू सँ अष्ट सिद्धि प्राप्त कऽ लेलयि यथा-अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिम प्राप्ति, प्राकम्य वशीत्व आ ईशीत्व आदि। एहि सिद्धिक अन्तर्गत परमाणु ज्ञान अगम्य शक्तिक प्राप्ति अति हल्लुक बनबाक साधना, इन्द्रिय निग्रह, सर्वज्ञात सिद्धि पंचभूतादि।

किछुए दिनमे एहि समग्र सिद्धिक प्राप्तक बाद गुरू लम्बानाथ हिनका एहि साधना सँ समाज केँ कल्याणक हेतु आज्ञा दैत छन्हि-जाऊ अपन समाज अपन परिवार अपन देशमे ओहिना रहि जेना पुरैनिक पात पर जल बून्द रहैत अछि अर्थात् संसारक प्रवृत्ति मार्गक कल्याण मे अपन योग सँ सहयोग दय स्वयं केँ संन्यासी अर्थात् निवृत्तिमार्गमे रहब। गुरूक आदेश शिरोधार्य केय स्वामी जी गुरूक योग बल सँ दरभंगा जिलान्तर्गत रहुआ गाम आबि जाइत छथि जाहि ठाम एखनहु हिनक कुटी अपन अतीतक स्मरण करा रहल अछि। जतय कतहुं जाहि कोनो ठाम गेलाह समाजोपकारी बनि तत्काल सामाजिक कल्याणार्थ आवश्यक योजना केँ सफलतापूर्वक सम्पादित कऽ ख्यात भेलाह। निर्विकार निर्लिप्त एहि संन्यासी केँ समाजक सभ वर्गक लोक अपन बुझैत छलन्हि आतें ने जतऽ-जतऽ अपन कुटी बनौलैथ ततऽ-ततऽ केर भक्तक हेतु भगवान बनल रहलाह हिनक सान्निध्यमे हिन्दू, मुसलमान, क्रिश्चियन सभ अबैत रहलाह। हिनक खुन्हाओल अनेको गाममे पोखैर आ इनार एखनहु विद्यमान अछि। खेल

हिनक प्रिय छलन्हि हिनका द्वारा बनाओल कुस्तीक अखारा एखनहु अपन कहानी कहि रहल अछि। गामे-गामे विद्यालय, देवालय, सड़क गाछ बिरछी एखनहुं हिनक कीर्तिक गान कऽ रहल अछि। लोक संस्कृति कोना बचत ताहि लेल तिथि विशेष पर पर्व-त्योहार मनेबाक प्रेरणाक संग एक गामसँ दोसर गामक मिलन हेतुमेलाक आयोजन आ ताहि मेलामे स्वदेशी कलाक रक्षार्थ अभिनय आदि करायब हिनक सामाजिक चरित्रक प्रमाण भेटैत अछि। रोगक निदान हेतु योगक अनेको आयामक परिचय करा ओहि समाजक लोककेँ योगाभ्यासी बनबैत छलाह।

सारस्वत साधनाक फलस्वरूप हिनका द्वारा प्रणीत अनेको पुस्तक प्रकाशित अछि यथा गीताबली भजनाबली जकर विविध राग आ छन्द सँ हिनक काव्य प्रतिभाक परिचय भेटैत अछि। सएहटा नहि अनेको संस्कृतक पोथीक काव्यानुवाद कऽ कवि शिरोमणि गोसाईं जी अपन विद्वत पूर्ण प्रवृत्तिक-परिचय देने छथि, जाहिमे श्रीमद्‌भगवद्‌गीताक संग शंकर रचित तत्व बोध आदिक पद्यानुवाद केऽलथि। तकरा बाद राम-कृष्ण गीतावली, प्रश्नोत्तरी गुरु पचीसी, राम रत्नावली, अक्षर चौतीसा आदि ग्रंथ हिनक विदित अछि। एकर बादहु अनेको पुस्तक एखनो अप्रकाशित अवस्थामे अव्यक्त अछि। ज्योतिष योग तंत्र साधना आदि पुस्तक हिनक नहि जानि कतऽ केँ गर्तमे गारिकेँ रखने अछि। ओना अन्वेषीलोकैन सतत् अन्वेषणमे लागल छथि।

हिनका विषयमे कहल जाइत अछि जे हिनक जन्म आ मृत्युक दिन, मास, तिथि एकहि छल जेना तुलसीदासक विषयमे कहल जाइत अछि। हिनकर जीवनक अधिकांश समय वर्तमान सहरसा जिलाक बनगाममे बीतल। एहि गामक लोक एखनहु हिनका जीवन्त बुझैत छन्हि। एहि गामक ख्यात नाम भजनी 'पाउ पौद्दार' छलाह जिनका ओतयसँ एक ज्योतिषी द्वारा लिखित कविता सवैयामे भेटल छलन्हि; जाहिमे हिनक मृत्युक तिथि निश्चित होइत अछि। यथा–

> सम्वत् द्वादश साल असी ऋतु
> नीक हेमन्त महा सुखकारी।
> मार्ग सुदी श्रवणा गुरु पंचमी,
> लग्न तथा ध्रुव योग सुधारी।।
> तेहि ठौर निशान बलान नदी
> तट ग्राम करा रहि जो धारी।
> 'लक्ष्मीपति' योग प्रवीण गुरू
> तन तेजि गये सुर धामसिधारी।।

अर्थात् एहि तथ्यक आधार पर हेमन्त ऋतु अगहन शुक्ल पंचमी, श्रवण नक्षत्र वृहस्पति दिन तद्नुसार आंग्लतिथि 1873 निश्चित होइत अछि। कवि शिरोमणि साहित्य साधक योग निश्नात, विद्वान, समाजोपकारी, अन्तः सँ निवृत्ति मार्गी किन्तु बाह्य जगत् सँ प्रवृत्ति मार्गी संन्यासीक व्यक्तित्व आ कृतित्व केँ चित्रित करब सभक बस केर बात नहि। अन्ततः हम इएह कहि सकैत छी जे हिनक विशाल कृतित्व ख्यात व्यक्तित्वकेँ अंकित करब सूर्य केँ दीप देखायब सन होयत।

अखिल भारतीय मिथिला संघक प्रमुख उपलब्धि

अखिल भारतीय मिथिला संघक शुरुआत बाबू साहेब चौधरी आ देवनारायण झाक नेतृत्वमे 1950मे कोलकातामे भेल छल। एकर बाद दिल्ली मे 1967 मे एकर औपचारिक स्थापना दिल्लीमे भेल। अएहि पचास वर्षक अवधिमे संघ द्वारा मिथिला-मैथिली सं संबंधित कतेक रास काजक संपादन केल गेल। प्रमुख महत्वपूर्ण उपलब्धि निम्नलिखित अछि–

- आठम अनुसूचीमे मैथिलीके स्थान दियाबैक लेल सड़कसं संसद धरि संघर्ष केल गेल, जाहि मे अंततः सफलता भेटल।
- राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्लीमे मैथिली अकादेमीक स्थापनाक लेल सफल प्रयास केल गेल।
- मिथिलाक विभिन्न क्षेत्रमे बड़ी लाइनक निर्माणक लेल जनसंघर्ष केलक।
- निर्मली-भपटियाही पुलक निर्माण लेल संघर्ष केलक।
- दिल्लीमे पहिल अंतरराष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सवक आयोजन केने अछि।
- मिथिलासं दिल्लीक लेल पहिलुक सुपर फ़ास्ट ट्रेन जयंती-जनता एक्सप्रेस, जे आब वैशाली एक्सप्रेसक नाम सं जानल जायत अछि, के परिचालनक श्रेय अखिल भारतीय मिथिला संघके अछि।
- मिथिलामे बड काल धरि दहेज़ विरोधी अभियानक अगुवाई सेहो केने अछि।

Digital India
Power To Empower

डिजिटल इंडिया
डिजिटल मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश में डिजिटल इंडिया की पहल

सहूलियतें आपके लिए :

- डिजिटल लॉकर
- एम.पी. मोबाइल एप के जरिये 120 सेवाएँ
- सरकारी काम-काज में तेजी के लिये एम.पी. ई-मेल सेवा
- 400 से अधिक वर्चुअल क्लास रूम की सुविधा
- 60 लाख, 40 हजार से ज्यादा डिजिटल जाति प्रमाण-पत्र जारी
- लोक सेवा गारंटी अधिनियम में 22 विभाग की 135 सेवाएँ
- एस.एम.एस. गेटवे के जरिये 9 करोड़ से अधिक एस.एम.एस.
- जी.आई.एस. लैब स्थापित।

और अब नई पहल

- कम्प्यूटर दक्षता प्रमाणीकरण परीक्षा (CPCT) की शुरुआत
- ई-शक्ति अभियान के द्वितीय चरण की शुरुआत
- लगभग 1 करोड़ महिलाओं को मिलेगा लाभ
- ई-दक्ष
- ई-ऑफिस
- एक क्लिक पर संपत्ति का पंजीयन
- ई-ऑक्शन से रेत की नीलामी।

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2015

मणिपद्मः स्मृतिक किछु कण

✍ डॉ. शेफालिका वर्मा

शेफालिका जी मैथिलीक महादेवी वर्मा नामसँ प्रसिद्ध छथि। साहित्य अकादेमी सम्मान, फर्स्ट वर्ल्ड वीमेन अवार्ड, लाइफटाइम वीमेन एक्सीलेंस अवार्ड, इन्डो यूरोपियन चैम्बर, भारत सरकार, यात्री चेतना सम्मान, मिथिला विभूति, स्वजन सम्मान, मिथिला रत्न, अटल मिथिला सम्मान, मैथिली की महादेवी, काव्य विनोदिनी, मुरलीधर शेखर सम्मान, मैथिली कि मीरा आदि अनेको सम्मानसँ सम्मानित। हिन्दी आ मैथिलीमे दर्जनों पोथी प्रकाशित। साहित्य अकादेमी, मैथिली भोजपुरी अकादेमी, दिल्ली सरकार आओर बहुत रास संस्थामे से रहलीह।

संपर्क : ए-103, सिग्नेचर व्यू अपार्टमेंट्सँ, डीडीए, एचआईजी फ्लैट्सँ, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

अविस्मरणीय कथाकार, उपन्यासकार आ कवि मणिपद्म जी मैथिली साहित्य गगन केर ध्रुवतारा छथि एहिमे कोनो दुइ राय नञ। हुनका सँ मैथिली साहित्य एकटा नव मोड़ लेलक। मणिपद्मकेँ साहित्यमे लोक संस्कृति, लोक कथा बेसी उजागर भेल अछि, अतीतक गह्वर सँ फूटैत निर्झरणी जकां।

भारतीय संस्कृति कतेको तत्व केँ उजागर करय बला, जीवनक विभिन्न प्रवृत्ति सँ नि:सृत ब्रह्म जकां अवर्णनीय अछि। मानव-मनक बाह्य प्रवृत्ति मूलक प्रेरणा सँ जे विकास भेल ओ सभ्यता बनि गेल, आ अन्तर्मुखी प्रवृत्ति सँ जे निर्मित भेल ओ संस्कृति बनि गेल। आ लोक संस्कृति जकरा समाजमे मोजर नञ देल जायत अछि, ओहि जनजाति पर, ओकर जीवन ताहि विषय वस्तु पर हुनक कतेको उपन्यास छैक। लोरिक विजय, नैका बनजारा, लवहरि-कुशहरि आदि कतेको उपन्यास एहि जनजाति सबमे जान आनि देलक, मैथिली साहित्यमे नव पृष्ठ खुजि गेल जेना।

साधारणत: मानव बाहर सँ किछु होइत अछि, भीतर सँ किछु आओर। मुदा मणिपद्म जीक व्यक्तित्व क्रिस्टल सन निरभ्र आ पारदर्शी छल।

साहित्यकार मणिपद्म स्वयं अपन आलोक लोक सँ दीप्त छलाह, मुदा हुनक व्यक्तिगत सादगी, उदारता निरंहकारिता अद्‌भुद छल ओ एहि युगक अत्यंत चिन्तनशील एवं इतिहास चेतना सँ सम्पन्न लेखक छलाह। प्राचीन इतिहासक गर्भमे सँ इतिहासक रचना नञ केलन्हि वरन साधारण जीवन, लोक संस्कृतिक मध्य सँ ऐतिहासिक रसक उद्रेक अपन लेखनमे प्रवाहित केलनि।

हुनक कृतित्व, व्यक्तित्वमे झलकैत अछि आ व्यक्तित्व, कृतित्वमे। एकटा पारदर्शी व्यक्तित्व शारदीय गरिमा सन निर्मल निश्छल

'...सत्यक पाछु दौड़ल
जाइत छी सत्य ताकैले
सत्य हमरा सँ रुसल जाइत अछि...
स्वप्न बनवा लेल धरती छोड़ि
मेघ पर अयलौं अंबर छुवा लेल
बुन्न बुन्नमेघ बरसि रहल
धरती चुमवा लेल..........'

यानि हुनक मोन भावनाक संसारमे उड़ैत रहैत अछि मुदा, वास्तविकताक संसारमे हुनका धरती पर आवय पड़ैत अछि।

हुनका सँ प्रथम परिचय भेल हुनकर हिंदी उपन्यास त्रिधारा सँ। तखन हमरा मोनमे आयल छल एतेक सुन्दर उपन्यास लिखय बला लेखक स्वयं कतेक सुन्दर हेताह। सुंदरता मोन केर तन केर नै। वाह्य सुन्दरता त' क्षण भरि लेल होइत अछि, आतंरिक सुंदरता मोने हिलकोर मचा दैत अछि। लोरिक विजय, नैका बनजारा, अर्धनारीश्वर आदि पुस्तकक प्रणेता मणिपद्म केँ जखन देखलौं त'

हमर प्रथम कविता संग्रह *विप्रलब्धा* मे मणिपद्म जीक मंगलकामना हमर जीवनक मंगल बनि गेल

मंगलकामना

मणिपद्म

श्रीमती शेफालिका वर्मा स्वयं साकार 'विप्रलब्धा' छथि। भावनाक एकटा सहज सिहकीमे हिनक अश्रु विन्दु जे झहरी जायत छैन्ह ताहि मुक्ता सँ सज्जित आखरमे ई कविताक फूल अंकित करैत छथि। एकटा कलामयी मैथलानी, एकटा सिस्कैत कवियत्री आ एकटा भावभिजल व्यक्तित्व हमरा बंगलाक सुप्रसिद्ध कवियत्री अरुदत्त आ तरुदत्त केँ झांकी भेटे लागैत अछि हिनक पाती सबमे।

आर अधिक सफलता, आर अधिक मंगल कामनाक संगे।

बेहड़ा, 14-7-1977

लागल जेना हुनकर कृतित्व साकार भ' उठल होइ। तन आ मन सँ एतेक सुन्दर, एतेक महीन आ मीठ बोली जेना साकार सरस्वती हुनक वाणीमे बैसल होइत। स्मरणमे आबैत अछि बनगाममे लक्ष्मीनाथ गोसाईं पावन भूमि पर कवि सम्मेलन छल, मणिपद्मजी केँ अध्यक्षता। 'हे शेफाली, अहां मंच पर आउ झहरि जाऊ, झहरि जाउ, झहरि जाउ शेफाली अहां।' ...ओ ततेक पोज मारि हाथ लहराय, मुड़ी झुकाय स्वरबद्ध बाजि रहल छलाह, हम मंत्रमुग्ध छलौं बैसल, अचक्कें सब केओ बाज लगला... 'शेफालिका जी, मंच पर जाउ ने, अहींक बजा रहल छैथ।' तखन हमर तंद्रा टूटल ... हम बुझलौं ओ कविता पाठ कऽ रहल छथि ...एतेक पैघ साहित्यकार, हम मैथिली साहित्यक देहरि पर ठाढ़... एतेक विनम्रता सँ बजेनाय।

कतेक बात हुनक सुनैत रहलौं, कतेक मंत्रक गप्प ओ सेहो कहलनि एकटा विस्मय विमुग्ध मृगी जकां विमोहित सम्मोहित छलौं। कोनो व्यक्तित्व स्वयंमे एकटा वातावरण

होइत छैक जे अपन आवेष्टन, अपन परिवेशमे आयल सभ केँ समाविष्ट क' लेत अछि।

विद्या ददाति विनयम केँ साकार करैत छलाह, हम सब पढ़ल लिखल छी तैयो एहि गप केँ मोजर नञ दैत छी।

स्मृति केँ वातायनमे आइयो मोनक वृन्दावन जगजगार भ' जायत अछि आ कतेक चित्र मणिपद्मजीक निरहंकारिता केँ आबैत रहैत अछि, मुदा की सागर केँ समटब आसान थीक!!! हुनक आंगन बहेड़ा हम गेल छलौं, हम आ वर्मा जी दुनू बेकती। किछु गाम घरक समस्याक निराकरण लेल। हुनका नञ कहने छलौं, मुदा आश्चर्यित क' देलाह '...आउ आउ हम अहिं दुनू गोटा केँ प्रतीक्षा करैत छलौं।' तखन विश्वास भेल जे सांचे मणिपद्मजी तांत्रिक सेहो छथि। ओ समस्या पुछबाक कोनो प्रयोजन नञ बुझलनि। हमर सभक आदर सत्कारमे लागि गेलाह, हाथ पइर धुवाय, गोसाईं घर ल' गेलाह। कारी पाथर सँ बनल भगवती जेना हमरा सबकेँ मोहाविष्ट कऽ लेलीह। कामख्या माय केँ पुनः दर्शन भ' गेल जेना।

कनि काल सुस्ता केँ ओ कहय लगलाह हमर सभक समस्याक निदान सब। हम सब चौंकि गेल रही। '...ओ बेहड़ामे बैसल कोना बुझलीह जे हमर गाममे, परिवारमे की-की भ' रहल अछि। आरो बहुत रास बात बजलाह जाहि सँ हम सब अनजान छलौं। हमर गाम यानि डुमरा केँ कियो लोक नञ त' मणिपद्मजीक नाम सँ परिचित छल आ नञ त' बहेड़ा गाम से।

वर्माजी केँ चिंतित देखि ओ कहलनि '...अहां जुनि चिंता करू, शेफालिका ठूंठ गाछ तर ठाढ़ हेती त' ओ गाछ हरियर भय जायत।'

हम लगले बाजलों- 'नञ हमरा अपना टा सँ मतलब नै, हमर पूरा परिवार सुखी, सँ उपाय बताबु।' तखन ओ एकटा मंत्र देलनि - 'एकर जाप सब कियो परिवारक सदस्य लोकनि करैत, नीक होयत।

हमर प्रथम कविता संग्रह विप्रलब्धामे हुनक मंगलकामना हमर जीवनक मंगल बनि गेल।

मैथिली साहित्य आकि राष्ट्रीय साहित्यक अकासमे मणिपद्म जी एकटा जाज्वलयमान नक्षत्र जकां जगमगा रहल छथि।

अशेष नमन मणिपद्म।

सब बंधन सँ मुक्त छलाह यात्री

✍ हेमेन्द्र मिश्र

लेखक पत्रकार छथि। संप्रति हिन्दी दैनिक हिन्दुस्तानमे कार्यरत छथि। ओ बाबा नागार्जुन अर्थात् वैद्यनाथ मिश्र यात्रीक पौत्र छथि।

संपर्क : 521-बी, न्यायखंड-3, इंदिरापुरम, गाजियाबाद (उ.प्र.)
मो. 9312288101

पतन-अभ्युदय-बंधुर पंथा
युग-युग- धावित यात्री।
हे चिरसारथि! तव रथ-चक्रे
मुखरित पथ दिन-रात्री॥

कविगुरु रवींद्रनाथ ठाकुरक एहि पंक्ति केर बाबाक जीवनमे बड्ड महत्व छल। 'यात्री' उपनाम रखबाक प्रेरणा हुनका एहि सँ भेटल, आ पंडित वैद्यनाथ मिश्र मैथिलीक 'यात्री' भऽ गेलाह। मुदा जहां धरि नागार्जुन उपनामक बात अछि, तँ ई नाम बौद्ध संस्कृतिक देन छल। जखन ओ केलानिया (कोलंबो सँ आठ-दस किलोमीटर दूर) गेल छलाह अध्ययनक लेल, त ओतय ई नाम राखल गेल। आखिर नागार्जुन कियैक? बाबा कहने छलाह, 'भारतीय इतिहासमे तीनटा नागार्जुन भेल छथि- एगो तांत्रिक, एगो सिद्ध आ एगो दार्शनिक। तखन हमरा दार्शनिकक नाम पसंद आयल, कियाक हुनक बड्ड ग्रंथ पूरा नञ भ' सकल छलन्हि। ठीक करबाक मंशा छल।' अपन एहि प्रयोजनमे नागार्जुन कतेक सफल भेलाह, ई त अलग गप्पक विषय अछि। मुदा हिंदी केर जनकवि मैथिलीमे निर्विवाद रूप सँ एगो महाकवि भेलाह, छथि आ रहता।

बाबाक नजर सँ छोट सँ छोट आ पैघ सँ पैघ, कोनो घटना नञ छूटल। ओ देशक सबस ओहदेदार व्यक्ति प्रधानमंत्री पर टिप्पणी करबाक ताकत राखैत छलाह, त गरीब-गुरबाक जीवन कँे सेहो ओ अपन शब्द देलनि। 'बांसक/ ओधि/ उपाड़ि/करइ छी जारनि.../ हमर/ दिन/नहि/घूरत की जगतारिन?' हमरा मोन पड़ैत अछि, बाबाक संग गाममे बितायल ओ दिन। दलान पर मंडली तें जमैत छल, मुदा बाबाक एगो आदत इहो छलैन्ह जे ओ एक बेर जरूर गामक परिक्रमा करताह। एहि भ्रमणमे हुनक पड़ाव महादेव कक्का, कुंवर कक्काक दलान सेहो होइत छल, आ 'भकड़ार मोछवला' सुन्दर राउत, सूबध, बकेल सन खबासक आंगन सेहो। कक्का सभ सँ त' देश-दुनियाक गप होयत छल, मुदा खबासक संग खेती-किसानी कँे एहि बेर की उपजयलें? कतैक धान निकललोह? जरूरत पूरा होयत छौ कि नहि? एहि तरहक सवालक जवाब जखन उनका परेशान क' दैत छलैन्हि, त ओ गुनगुनाबय लागैत छलाह- 'उठह भाय किसान!/अपना दुक्ख अपने नञ बुझबह तँ कँे बुझतह आन...'।

बाबा कँे हम ओ डायरी सँ सेहो बेसँ चिन्हलयैन्ह, जे ओ हमर नाम सँ लिखलाह। ओहिमे दिनक वा सप्ताहक खास-खास घटना पर बाबा अपन सोच कँे उकेरैत रहलाह। बाबा कियैक फक्कड़ीमे खुश छलाह आ पाई-कौड़ी कँे कोनो महत्व नञ देलथिन, ई ओ डायरी पढ़ि कँे बुझल जा सकैत अछि। वो कहैत छलथिन, 'पाय जादा भेला पर आसमानमे नञ उड़ि, अपना सँ जादा पैसावला कँे देखिक सोचि कि ओ केना अपन अमीरीमे रहि रहल अछि। आ जखन तंगहाली भ' जाय, तें रिक्शा वा ठेलावला कँे जरूर देखि कि ओ केना अपन कष्टक जीवनमे खुश अछि।' एतय विषयांतर करबाक अनुमति मांगैत हम ई कहऽ चाहब जे ओहि डायरीमे बाबा हमरा कविता लिखनाइ सिखौलन्हिं,

त' फूसि बाजनाय सेहो। बाबा कहैत छलथिन- 'फूसि बजलाह सँ गप्प रोचक भ' जाइत छइ। मुदा हां, ई छौंक भरि होयबाक चाही। ई नञ कि पूराक पूरा गप्प फूसि रहय। एकाध परसेंट मिला दैबाक चाही।'

अपन नाम जकां बाबा जीवन भरि यायावरी करैत रहलाह। अंतिम वर्षक दरभंगा प्रवास छोड़िक ओ कहियो कतहु बहुत काल धरि एक ठाम नञ रहलाह। पटना, इलाहाबाद, बनारस, कलकत्ता, दिल्ली, तिब्बत, श्रीलंका करैत रहलाह। हुनक हर शहर, हर नगरमे कोनो-न-कोनो ठिकाना छल। ई हमर बालमन लेल एगो पहेली छल कि आखिर कोना हर जगह हुनका स्नेह आ सम्मान दइ बला लोग भेंटि जायत छन्हि? पैघ होयबा पर बुझाई पड़ल कि ओ अपनापन अहि सँ बनि सकल कि बाबा आम जनजीवनक समस्या कैँ अपन कवितामे जगह देलथिन। हिंदीमे हुनक एगो पंक्ति छनि- 'जनता मुझसे पूछ रही है, क्या बतलाऊं जनकवि हूंमै साफ कहूंगा, क्यों हकलाऊं'। एकर भावार्थ अछि कि भले ही टकरावक सामना करऽ पड़य, मुदा साफ आ स्पष्ट कहबामे हम पाछू नञ रहब। ई सोच कैँ ओ ताउम्र जीबैत रहलाह। हुनक पैघ रचना संसारमे एकरा अहां जतऽ-ततऽ महसूस क' सकैत छी। ओ लेखन कैँ एगो सामाजिक दायित्व मानैत छलाह। एगो साक्षात्कारमे बाबा कहनञ छथिन, सामाजिक दायित्व त' साधनाक पथ अछि। संघर्षक रस्ता। जे अहि पर चलबाक हिम्मत राखैत छथि, हुनका कबीर जहां कह पड़तैन- जो घर फूंकेँ आपना-चले हमारे साथ। बाबा कहैत छलथिन, 'मजदूर आ किसान सब पर जरूर लिखबाक चाहि। मुदा जै लिखैत छथि, हुनका ई सेहो पता होयबाक चाहि कि झुग्गी-झोंपड़ीमे रहिबला मजदूरक जीवन केहन होइत छैक? ठंड, बरखा आ लूऽक बीच काज करऽ वला किसानक संघर्ष कतैक मुश्किल छइ? जखन धरि ई सब नञ महसूस करब, मजदूर आ किसान पर लिखनाइ व्यर्थ रहत। जखन धरि पेट भूखल नञ रहत, हड़ताल आ संघर्ष कैँ अपन उचित अर्थमे नञ बूझि सकब।'

बाबा पर राजनीतिक पक्षधरताक आरोप सेहो लागैत रहल। हुनका एगो खास चश्मा सँ देखबाक कोशिश कयल गेल। मुदा बाबा कहियो वैचारिक प्रतिबद्धता कैँ कोनो पार्टी वा दलक परिधिमे नञ देखलखिन। हुनक नजरमे ई प्रतिबद्धता धरती जकां विराट आ समुद्र जकां गहींर छलन्हि। ओ सर्वहाराक साथ रहलाह। गरीब किसान-हरिजनक साथ। ओ सीपीआई कैँ सदस्य जरूर भेलाह, मुदा 1962मे चीनक आक्रामणक विरोध करैत पार्टी सेहो छोड़ि देलखिन। ओ जयप्रकाशक संग सेहो रहलाह, मुदा जखन महसूस भेलन्हि जे जेपीक आंदोलन भटकि गेल अछि, तें ओ विरोध करैमे सेहो आगु रहलाह। बाबा बहुतो बेर कहने छथिन कि 1917 कैँ रूसी क्रांतिमे लेनिन आ गोर्कीमे विरोध छलैन्ह, मुदा लेनिन हरदम गोर्की सँ मिलबाक लेल जायत रहैत छलाह। एहन माहौल अपन देशमे कियैक नञ बनि सकैत अछि? रचनाकार कैँ राजनीतिक चश्मा सँ कियैक देखल आ हांकल जाइत अछि?

सियासते नहि, बाबा कैँ समाजक हर छोट सँ छोट बदलाव पर टकटकी नजर रहैत छलन्हि। एगो कविता राखऽ चाहब। 'तरुआ तिलकोड़क पात / भूजल तिसिअउड़ी-दनौड़ी / रऽहूक तरल-झोराओल पेटी / कुतुरुमक चटनी / मखानक खीर / हमारा दिल्लिओमे सुलभ भऽ जाइए / झाजीक प्रतापें.../ सुलभ भ' जाइ छथि / 'मीनी मिथिला' दिल्लिओमे... / झाजीक प्रतापें.../ मुदा, अइ, बेर, भेट भेला उत्तर / बाजल रहथि झाजी /... छोट छीन बगीची लगा देने छिअइक / हं, तखन, अपशोचक बात इएह जे / धिया-पूता पंजाबी भेल जाइएऽऽऽ...' (मिनी मिथिला, अप्रैल-1981)। की आइयो ई सच नञ लागैत अछि? दिल्ली-मुंबई सब जगह प्रवासी मैथिल छी, मुदा कि हमर बच्चा आ नौजवान पीढ़ी अपन जड़ि सँ जुड़ल छथि? की आइ ई अपशोचक बात नञ अछि? कि आइ अपन मिट्टी सँ जुड़बाक जरूरत नञ अछि? मिथिलांचलमे जे पलायनवादी प्रवृत्ति पनपल अछि, भले ई अग्रजक देन अछि, मुदा की एकर समाधान नञ होयबाक चाही? ई सवाल हमरा लोकनि कैँ अपना सँ पूछैक जरूरत अछि। ई कोशिश होयबाक चाहि जे हम सब अपन-अपन जड़ि सँ मजबूती सँ गुथल रहि सकी।

बेस, बाबाक संदर्भमे बड्ड कथा, उपकथा आ दंतकथा प्रचलित अछि। हुनक रचना संसार जतय-ततय पसरल अछि। एहन लोक पर लिखनाइ कखनो आसान नञ होयत छइ। बाबा हिंदीमे कहने छथिन- 'दमा का सनातन मरीज / रात को थोड़ा सोनेवाला / घुमक्कड़ी का शौकीन / मैं, यानी / अर्जुन नागा... / उर्फ बैजनाथ मिसिर / उर्फ यात्री जी / साकिन मौजे तरौनी बड़की / थाना बहेड़ा / जिला दरभंगा / बिहार राज्य / होशा-हवास / अपनी धर्मपत्नी / आदरणीया श्रीमती / अपराजिता देवी कैँ / चंद लफ्जों कैँ मुताबिक / 'हम तो आज तक / इन्हें समझ नहीं पाए'...'। ई पंक्ति 1983मे लिखल गेल, जखन बाबा 72 वर्षक छलाह आ दादी 66 वर्षक। हुनक ब्याह 1931मे भेल छलन्हि। जखन 52 वर्षक दांपत्य जीवनमे दादी, बाबा कैँ नञ बूझि सकलखिन, त हम अकिंचन उनका बूझय कैँ दावा कोना क' सकैत छी? हम त' बस एहि बहाने ओ दिन फेर सँ जीबय चाहे छी, जखन ओ सशरीर हमर सबहक संग छलाह।

प्रचण्ड स्वाभिमानी कवि: आरसी प्रसाद सिंह

✍ डॉ. परमानन्द मिश्र

लेखक उदयनाचार्य रोसड़ा महाविद्यालय, रोसड़ामे हिन्दी विभागक विभागाध्यक्ष छथि। मिथिलाक साहित्यिक विभूति सब पर विशेषज्ञता रखैत छथि।

संपर्क :
बड़ी दुर्गा स्थान, रोसड़ा,
समस्तीपुर (बिहार)-848210
मो. 9771564263

आरसी ई विलक्षण नाम कोनो दोसरो व्यक्ति कें छैक सँ हमरा श्रवण गोचर नञ भेल अछि। जेहने नाम तहने रूप-रंग, वेश-भूषा। दुनू पइरमे दूरंगक चप्पल, पैबन्द लागल मलिन पायजामा कें ऊपर शुभ्र धवल मलमलकेर कुर्ता, झलमलाइत सतेज तीक्ष्ण दृष्टि, हवामे फरफराइत शुष्क प्रलम्ब केशपाश, जेना बुल-बुल एखने खोंता सँ उड़िगेल हो, आजानु भुज, मस्ती भरल चालि - अपरिचित लेल अजनबी आ परिचित लेल समादरणीय, सभामंच पर दूरे सँ अपन बेछप छवि सँ आकर्षणक केन्द्र बनल, एहन अक्खड़ आ फक्कर कवि निराला आ यात्रीजीक पश्चात् क्यो नञ भेलाह। आरसी बाबूक मानवाकृतिक अणिमामे काव्यपुरुषक गरिमाक दर्शन होइत छल।

'आम का पेड़' हिनक प्रथम कविता थिक। हिनक बाल साहित्य बच्चा सभक मनोरंजन आ हुनक विकास हेतु अतिशय महत्वपूर्ण अछि। कविक महत्वपूर्ण बाल रचना ओनामासी, कलम आओर बन्दूक, जगमग, हीरा-मोती, कागज की नाव, कथामाला आदि अछि। हिन्दीमे बाल साहित्यक मूर्धन्य कवि सूरदास जँ बालकक सौन्दर्य आ गुणक वर्णन कयलैन्हि त' आरसी बालक केर उत्थान हेतु लिखलैन्हि।

छायावादोत्तर काव्य-परम्पराक मूर्धन्य कवि आरसी मूलत: जीवन आ यौवनक कवि छथि। रस सिद्ध कवि जयदेव आ महाकवि विद्यापतिक श्रृंगार साधनाक प्रत्यक्ष प्रभाव आरसीक काव्य पर द्रष्टव्य अछि। नवयौवनक उद्दाम आवेग सँ अनुप्राणित, रसानुभूतिक दिव्यता सँ सन्निविष्ट, सुचारु चारुता सँ चमत्कृत आरसी बाबूक सरस काव्य-कृति हुनका जीवन औ' यौवनक कवि सिद्ध कऽ दैत छैन्हि।

प्रेम की दुनिया निराली रंग क्या रे रूप क्या? डूबने वाले चले फिर सिन्धुनद क्या कूप क्या? चांद को देखो चकोरी के नयन से।

कवि स्वयं कहैत छथि-

मेरा जीवन
इन्द्रधनुष का कानन
सातों रंग घुले प्राणोंमे
उन्मन उन्मन।

महाकविक श्रृंगारपरक असंख्य दृश्यक अवलोकन हुनक काव्यमे द्रष्टव्य अछि। कलापी, वृहदाकार ग्रंथ-आरसी, प्रेमगीत आदि हुनक श्रृंगारपरक रचना अछि। आरसी बाबूक सौंदर्य दर्शनक संदर्भमे आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कहने छथि- *'सचमुच यह कवि मस्त है। सौंदर्य को देख लेने पर यह कहे बिना रह नहीं सकता। भाषा पर सवारी करता है।'* इलाचन्द्र जोशी लिखने छथि- *वास्तवमे मदोन्मत्त यौवन का उच्छलगान जिसे तन्मय भाव से आरसी के कवि ने गाया है, वैसा वर्तमान हिन्दी जगत के बहुत कम कवि गा पाए हैं।*

रंजित अनुराग, मादक प्रणय, उद्दाम यौवनक अप्रतिम ऊष्मा सँ अभिमण्डित आरसीक प्रणय काव्य साहित्यनुरागी रसज्ञ

जन केँ आनन्दक अभियमय उदधिमे निमग्न कऽ दैत अछि।

सरस श्रृंगारक पश्चात् महाकविक उद्दाम यौवनक आवेग जखन लोकमंगल दिस मुड़इत अछि तखन मातृभक्तिक दिव्यभाव राष्ट्रभक्तिक प्रखर स्वरमे फूटि पड़ैत अछि–

न सोना दो न चांदी दो,
यही वरदान तुम दे दो।
हमारे देश की माटी हमे,
भगवान तुम दे दो।।
एक निमिष की पदाधीनता से
बढ़कर है मृत्यु भली।
आओर दासता के हलमे से भली
मुक्ति की मूंगफली।।

महाकविक राष्ट्रवादी रचनामे संजीवनी, उदयवीर कुंवर सिंह (महाकाव्य) भक्तिपरक काव्यमे नन्ददास, आरण्यक पातीराम केँ नाम आदि रचना प्रमुख अछि। चाणक्य शिखा, युद्ध अश्यम्भावी है, भारत-सावित्री आदि काव्यग्रंथमे कविक राष्ट्रभक्ति, मातृभक्ति, ईश भक्तिक सुष्ठु अभिव्यंजना भेल अछि।

मातृभाषाक उपासनामे रचित-समर्पित पूजाक फूल, माटिक दीप आ सूर्यमुखी हिनक प्रमुख ग्रंथ थिक। ई ग्रंथ मैथिली साहित्य पर हुनक असाधारण अधिकारक द्योतक अछि। ई सभ रचना सँ आरसी मैथिली साहित्य केँ गोसाइनिक गहवर आ आम्रकुंजक झुरमुट सँ बाहर कय नवीन युगमे प्रवेश करौलैन्हि। एकर उत्थानक प्रति सचेष्ट कविक प्रखर स्वर अछि–

मांगि रहल की प्रथम आइ
हम अपना मातृ-जन-वाणी
मांगि रहल छी हम विदेह
भू-भाषाधिर कल्याणी।।
धन्य धन्य ई मिथिला देश।

आरसी बाबूक मेघदूत महाकाव्यक मैथिली अनुवाद हिनक अनुवाद कलाक निपुणताक द्योतक अछि। हिनक मैथिली साहित्यक अभिव्यंजना कौशल हिन्दी समय समर्थ एवं प्रौढ़ अछि।

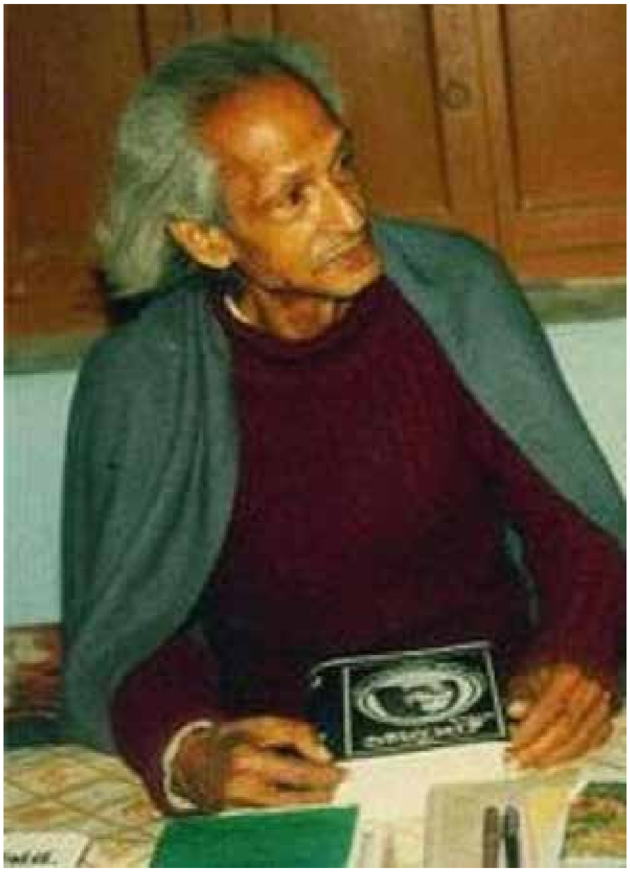

आरसी बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न महाकवि छथि। साहित्यक समस्त विधा केँ ई अपन सक्षम लेखनी सँ प्रोदभाषित कयने छथि। कविता, कहानी, आलोचना, नाटक, रेडियो रूपक, अनुवाद, शोध-प्रबंध, बाल साहित्य आदि साहित्यक कोनो विधा हिनक समर्थ कलम सँ छूटल नञ अछि। महाकवि जानकी वल्लभ शास्त्रीक उक्ति अछि–

'आरसी ने क्या-क्या न लिखा कितना न लिखा, पर सुगन्ध का संधान अब भी चल रहा है।'

'आरसी बाबू रूप यौवन आओर प्रेम केँ कवि हैं, भाषा आओर छन्द पर अच्छा अधिकार है।'

आरसी आजीवन लिखैत रहलाह। 'जीवन का झरना'मे लिखलैन्हि–

'चलना है केवल चलना है'

आ कयलैन्हि–

'लिखना है केवल लिखना है।'

महाकवि आरसी बाबूक विशाल कृतित्वक अंतरंगमे छिपल हुनक प्रचण्ड स्वाभिमान हुनक गौरवपूर्ण विराट व्यक्तित्वक परिचायक थिक। लखनऊ रेडियो स्टेशन सँ त्यागपत्र दैत काल ओ लिखने छथि–

किसी बुद्धिजीवी कलम पर नियंत्रण
सरीखा नहीं है कहीं पाप कोई
उदर केँ लिए स्वाभिमानी हृदय के
दमन सा नहीं अन्य संताप कोई
न वनराज को पिंजरा है सुहाता
न गजराज को मत्त अंकुश गंवारा।

भाषा, भाव, शब्द विन्यास सँ प्रेषणशक्ति आदि काव्यक समस्त गुण सँ सम्पन्न हिनक साधना सिद्धिक सहस्रार पर समारूढ़ भ' गेल अछि। कृष्णाष्टमी दिन जन्म भेलाक कारणें ई कृष्णभक्त भेलाह। हिनक समस्त काव्य ग्रंथक समापन श्रीकृष्णार्पणमस्तु सँ भेल अछि।

आरसी बाबूक गुरु तोगरीयान व्यक्तित्व आ अपरिमेय विशाल साहित्य केँ अनेकों शोध-प्रबंधक सीमामे समाहित नञ कयल जा सकैत अछि–

कविर्मनीषी परिभू स्वयंभू।

मैथिलीक ध्वजवाहक: प्रबोध नारायण सिंह

✍ विनीत उत्पल

दस बरखसँ बेसी काल धरि दैनिक भास्कर, राष्ट्रीय सहारा, दैनिक हिंदुस्तानमे वरिष्ठ पद पर काज केला केँ बाद शारदा यूनिवर्सिटीमे असिस्टेंट प्रोफेसर भेलाह। हिनक कुल पांच गोट कृति प्रकाशित छनि। जाहिमे एकटा मैथिली कविता संग्रह आ दूटा अनुवाद, हिन्दीमे एकटा संपादित कविता संग्रह आ मीडिया पर एकटा संपादित पोथी प्रकाशित अछि। आय काल्हि एजेकेएमसीआरसी, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्लीमे विजिटिंग फैकल्टी।

संपर्क :
सी-32, द्वितीय तल, मंडावली ऊँचे पर, आई.पी. एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110092
मो. 9911364616

आय जखन भारतक राजधानी दिल्ली जेहन महानगर 'स्माग' सँ जूझि रहल अछि। एक हफ्तास बेसी काल बीतलाक बादो केंद्र सरकार सँ ल' क' राज्य सरकार कोनो डेग नञ बढ़ैने अछि। लोक सभ धूरा, पीएम-10 जेहन कण सँ जूझि रहल अछि।

अहि काल एकटा पत्रकार अतुल चौरसिया तेरह नवंबर, 2017 केँ अप्पन फेसबुकक टाइमलाइन पर हिन्दीमे लिखैत छैथ, जेकर मैथिली अनुवाद अछि, 'ई सेहो कतेक खूबसूरत गैप अछि जे केजरीवाल, मनोहरलाल खट्टर, कैप्टन अमरिंदर आ पर्यावरण मंत्री हर्षवर्धन, सब राजनीति सँ ऊपर उठय केँ गप क' रहल अछि। जँ समय रहैत ई उठि गेल त' दिल्लीक जनता उठय सें बचि जायत। हिनक खूबसूरती बनल रहय।'

अहि गप पर कमेंटमे एकटा पैघ पत्रकार हर्षवर्धन त्रिपाठी कहैत छथिन जे 'कियो नञ उठय बला अछि। सब हरामखोरी क' रहल अछि। काल्हि पइन परत त' सभ कियो खुश भ' जायत आ अपन चमचा सँ पूछत जे केँ अप्पन छवि चमकेलक। काज करबाक हेतिये त' पिछला बरख केँ बादे किछु करने हेतिये।'

हर्षवर्धन त्रिपाठीक ई टिप्पणी पढि केँ प्रबोध नारायण सिंहक एकटा कविता 'आत्म विश्लेषण' केँ एक-एक पंक्ति ख्याल आबैत अछि। ओ ई कविता 1976मे लिखने रहथिन आ कहैत छलथिन जे,

'यदि उपदेश देनाइ छोड़िकए
केवल अपनञ सुधार करि लेतिहै
तं ई सांत्वना तं होइत
जे संसार सँ एकटा मूर्खक संख्या कम भ' गेल।'

आब सोचल जा सकैत अछि जे चालीसँ बरख पहिने जे गप ओ देशक वर्तमान स्थितिक चित्रण करैत, मंत्री, सत्ताधारी लोकनिसँ आत्मविश्लेषण करबाक आग्रह केने रहैत सँ आय प्रासंगिक अछि या नै। ओ कहैत छथिन जे लोकनि जनता द्वारा निर्वाचित भइयो क' राष्ट्रक हितमे अथवा जनहितमे कतेक की क' रहल अछि। ओ लोकनि अपन चरित्र आ आचरणसँ जनताक हेतु आदर्श उपस्थित करथि। अपन-भाषणमे दशक गौरव-गरिमाक उल्लेख करैत नञ अघाइत छथि, जनता केँ राष्ट्रप्रेमक उपदेशक दैत छथि। ओ ई बिसरि जाइत छथि जे देशक भावी पीढीक हेतु ओ की क' रहल छथि, अप्पन कर्तव्यक निर्वाह करैत छथि कि नहि। आय देखियो जे दस दिन सँ बेसी भेलाक बादो नेता सभ 'स्माग' दूर करबाक लेल कोन-कोन डेग बढ़ौने अछि आ कोर्ट-कचहरी आ नेशनल ग्रीन ट्रेबुनलक चक्कर काटि रहल अछि आ दिल्लीक लोकक आ नेना सभहक दम फूलि रहल अछि।

प्रबोध नारायण सिंह एत्तबय टा गप कहि केँ चुप नञ रहैत छथिन। ओ इहो कहैत छथिन जे,

'प्रति चोर
स्वयंकेँ साधु कहत,

अन्तर एतबहि रहतैक कि
जे पकड़ायत सँ चोर
आर जे नञ पकड़ायत
सँ साधु मानल जायत।'

अहिसँ एक बेर सोचल जा सकैत अछि जे प्रबोध नारायण सिंहक एक-एकटा शब्दमे केहन दम छल आ ओ अप्पन कालमे केहन रुतबा राखैत छल। अहि सँ एकटा प्रश्न उठैत अछि जे हुनक रग-रगमे कोन शोणित बहैत छल, जे ओ मिथिला जगतमे एक ब्रह्मतत्व भेल।

अहि गैप केकरोसँ छुपल नञ अछि जे सबटा मैथिल एक। प्लेटफार्म पर नञ त' कहियो ठाड़ भेल अछि आ नञ भविष्यमे कहियो होयत। मुदा किछु लोक अहि मिथिला संसारमे अवश्य भेल अछि जिनका आगु सबटा मैथिल लोक शीश झुकाबय अछि। हुनकर योग्यताक ल' क' कोनो प्रश्नचिन्ह या मैथिली भाषामे हुनक योगदान केँ कहियो बिसरि नञ सकैत अछि। अहि तरहक आंगुर पर गिनय बला लोकमे प्रबोध नारायण सिंह छथि। आय जौ कोनो मैथिली साहित्यमे रुचि राखय बला लोकसँ अहां पुछि जे मैथिली साहित्यमे सबसँ पैघ सम्मान कोन अछि जे ओ साहित्य अकादेमी सम्मान केँ नाम लेताह, मुदा ओ एक लाख टाका बला प्रबोध सम्मान केँ नकारि नञ सकैत अछि। मैथिली भाषामे साहित्य अकादेमी सम्मान पर लगातार जातिवादक आक्षेप लागैत रहैत अछि मुदा प्रबोध सम्मान एकटा एहन सम्मान अछि जाहि पर आजुक धरि कोनो विवाद नञ भेल अछि। जेना कि बुझल अछि जे ई सम्मान मैथिली भाषाक प्रति समर्पित आ लेखकक योगदान लेल सब बरख देल जाइत अछि। एखैन धरि कतेक बरख अहिनो भेल अछि जे पहिने कोनो लेखकक मूल्यांकन प्रबोध सम्मान सँ जुडल ज्यूरी केलक आ तकर बाद साहित्य अकादेमी या फेर प्रबोध सम्मान भेटलाह केँ बादो साहित्य अकादेमी सम्मान कोनो साहित्यकार केँ नञ भेटल।

ऐनामे एकटा सवाल मनमे उठैत अछि जे ई सहरसा जिलाक सोनबरसा प्रखंडक गाम शाहमौरा (सहमौरा) केँ प्रबोध नारायण सिंहमे मैथिली केँ ल' क' की आत्मीयता छल जे हुनकर परिवार वा समाज स्वाति फाउंडेशनक तहत एतेक पैघ पुरस्कार सभ बरख देत अछि। 'मिथिला दर्शन' जेहन मैथिलीमे पत्रिका निकलि रहल अछि। भले ही आजुक मिथिलाक लोक मधेपुरा जिलाकेँ बारि दिए मुदा अहि कहयमे कोनो संकोच नञ जे प्रबोध बाबूक देहमे जे शोणित छल, ओ अहि मधेपुराक पइन सँ सींचल गेल छल आ हुनक बाल्यकाल अहि जिलामे बीतल छल, एकरा लेल मधेपुरा सदैव ऋणी रहत।

साहित्य अकादेमी सँ प्रकाशित प्रबोध नारायण सिंह पर लिखल मोनोग्राफमे राजनन्दन लाल दास लिखैत छथिन जे हुनक बहिन वैदेही देवीक विवाह गमैल गाममे भेल छलनि। प्राथमिक शिक्षा गाममे भेलाक बाद हुनक नामांकन शाहपुर स्कूलमे कराओल गेल। ओ आलमनगर सँ 1938 ई मे मिडिल पास केलनि। हाईस्कूली शिक्षाक हेतु मधेपुरा हाईस्कूलमे नामांकन कराओल गेलनि। किछु काल धरि ओ मधेपुराक प्रतिष्ठित साहित्यकार हरिशंकर श्रीवास्तवक घर पर सेहो रहि केँ अध्ययन केने छलाह। बादक पढाई-लिखाई भागलपुर, पटना, देवघर, प्रयाग, कोलकाता सँ भेलनि।

प्रबोध नारायण सिंहक पहिलुक विवाह बराही गामक प्रतिष्ठित जमींदारक परिवारक गिरजा प्रसाद सिंहक बहिन सुश्री बिन्दा देवीक संग भेल छलनि जाहि सँ एक मात्र पुत्री इलाक जन्म भेलनि। बिन्दा देवीक अकस्मात निधनक बाद ओ दोसर ब्याह बंगाली कन्या अणिमा धरसँ केलेन जे बादमे अणिमा सिंहक नामसँ विख्यात भेलनि। मैथिली लोक गीतक प्राय: सबस पैघ संकलन अणिमा सिंहकेँ छनि, जो अपन शोधक क्रममे संकलित केने छल। हुनक 'सोहर आओर खेलौना', 'कोहबर', 'समदाउन आओर उदासी' आ 'शिशु गीत आओर खेल' बड्ड प्रसिद्ध पोथी अछि। राजनन्दन दास लिखैत छथिन जे प्रबोध नारायण सिंहक तीनू संतान, इला, उदय आ अजय केँ प्रतिभाक दृष्टियें 'सुयोग्य माता-पिताक सुयोग्य संतान' कहबामे कोनो अतिश्योक्ति नञ हैत।

हरिशंकर श्रीवास्तव 'शलभ' अप्पन पोथी 'कोशी अंचल की अनमोल धरोहरें'मे लिखैत छथिन जे हुनका (शलभजी कें) ई बुझयमे बड देरी भेल जे प्रबोध भैया कविता लिखित छथिन या कोनो विचारोत्तेजक निबंध। ओ किछु लिखैत, गुनगुनाबैत आ ओंगरी पर मात्रा सेहो पंडित युगलशास्त्री 'प्रेम' जेना गिनैत छल। आगु लिखय छथिन जे आब हमरा लागय लागल अछि जे हमरा मोनमे जे पहिलुक कविता उपजल होयत, ओहिमे सबसें बेसी प्रेरणा प्रबोध भैया कें रहल होयत।

प्रबोध नारायण सिंह स्वतंत्रता आन्दोलनमे सेहो भाग लेने छलाह आ मधेपुरा जिलामे विद्रोहक बिगुल फूंकने छल। अप्पन पोथीमे शलभजी अरविन्द कुमार श्रीवास्तवक शोध प्रबंधक एकटा परिशिष्टक उद्धरण देने अछि जाहिमे प्रबोध नारायण सिंह कहैत छथिन,'राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन सँ हम युवाकाल सँ जुड़ल रहलहुं। देशकेँ ब्रिटिश हुकूमत सँ मुक्त कराबैक लेल हम आ हमर मित्र नियमित विचार-विमर्श करैत छलहूं। हमर सबहक बैसकी रातिमे होयत छल। अप्पन बैसकीमे हम सब आगूक योजना बनाबैत छलहूं आ ओकरा कार्यरूप देबाक लेल काजक विभाजन करैत छलहूं। जखन सन 1942 ई. मे ब्रिटिश आ बलूची फ़ौज सहरसा पहुंचल त' हम सब एकटा आपात बैसकी आलमनगरक नंदकिशोर माधवानंद विद्यालय परिसरमे केने छलहूं आ एकर नीक सँ विरोध करहि कें निर्णय लेल गेल'।

जतय धरि साहित्यक गप अछि त' साहित्य जगतमे प्रबोध नारायण सिंह काव्य माध्यमे प्रवेश केलनि। हुनक पहिलुक काव्य कृति 'लासिका' कें रचना छात्रजीवनमे केने रहथिन। अहि पोथी कें ल' क' राजनन्दन दास लिखैत छथिन जे प्रत्येक साहित्यकारक कृतिमे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूपें ओकर जीवनक अनुभूतिक छाप रहितहि अछि। प्रबोध नारायण सिंहक बाल्यकाल अत्यंत संघर्षमय रहलनि। हुनका कोशीक विध्वंसकारी विभीषिका सँ आक्रांत

आय जौ कोनो मैथिली साहित्यमे रुचि राखय बला लोकसँ अहां पुछि जे मैथिली साहित्यमे सबसँ पैघ सम्मान कोन अछि जे ओ साहित्य अकादेमी सम्मान कें नाम लेताह, मुदा ओ एक लाख टाका बला प्रबोध सम्मान कें नकारि नञ सकैत अछि। मैथिली भाषामे साहित्य अकादेमी सम्मान पर लगातार जातिवादक आक्षेप लागैत रहैत अछि मुदा प्रबोध सम्मान एकटा एहन सम्मान अछि जाहि पर आजुक धरि कोनो विवाद नञ भेल अछि। जेना कि बुझल अछि जे ई सम्मान मैथिली भाषाक प्रति समर्पित आ लेखकक योगदान लेल सब बरख देल जाइत अछि।

मानव जीवन कें लग सँ देखबाक अवसर भेटलनि। एहने संकटक समयमे मनुष्य अपनाकेँ असहाय आ पौरुषहीन पावैत अछि। एहि सँ त्राण पयबाक हेतु ओकर प्राण औनाइत रहैत छैक। लासिकामे कवि उक्त भावनाकेँ चित्रित करबाक हेतु कल्पनाक आश्रय लेलनि अछि। किछु कवितामे कविक विरह वेदनाक भाव, दमित वासना सँ आकान्त जीवनमे आकांश आ किछु कवितामे प्रकृति नारीक प्रति समर्पणक भाव सेहो भेटैत अछि। किछु कवितामे युवावस्थाक रंगीन कल्पनाक आभास भेटैत अछि। त' सोंचल जा सकैत अछि जे ओ अप्पन युवा कालमे कोन तरहक कविता लिखने छल आ हुनक तेवर, अनुभूति आ अनुभव केहन होयत।

मैथिलीक हुनक कविता एकटा नव जागरणक गप कहैत अछि। हुनक एकटा कविता अछि 'बढैत चलू', जाहिमे ओ कहैत छथिन,

'नव सन्धानक लेल बढ़ू-चलू,
नव उत्थानक लेल बढ़ू-चलू,
नव निर्माणक लेल बढ़ू-चलू,
नव विहानक लेल बढ़ू-चलूए

एनामे सोचल जा सकैत अछि जे प्रबोध बाबू जीवनकेँ कोना देखैत छैथ आ युवा सँ ओ की चाहैत रहथिन।

प्रबोध नारायण सिंहक मिथिला आन्दोलनमे सहभागिता कें बिसरल नञ जा सकैत अछि। 'मिथिला दर्शन' कें माध्यम सँ ओ मैथिली भाषामे अपन भाषा आ संस्कृतिक अस्मिताक रक्षाक जागरण केलनि। कालांतरमे ओ मैथिलीकेँ साहित्य अकादेमीमे एक भाषाक रूपमे शामिल करबाक लेल सेहो लड़लखिन। 'मिथिला दर्शन' पत्रिकाक ई सन् 1958क अंक सँ कविवर सीताराम झाक उद्‌बोधन वाक्य शीर्षक नीचा लिखल जाय लागल, जे आजुक धरि छपैत अछि-

अछि सलाइमे आगि बरत की बिना रगड़ने।

पायब निज अधिकार कतहु की बिना झगड़ने।

मंजूषा कलाक शान चक्रवर्ती देवी

✍ प्रसून लतांत

लेखक वरिष्ठ गांधीवादिक विचारक पत्रकार छथि। दैनिक जनसत्ता सँ लगभग तीन दशकक सेवा उपरान्त सेवानिवृत्त भेलाह। सामाजिक सांस्कृतिक विषय सब पर हिनक तथ्यात्मक रिपोर्टिंग आ लेखन खूब चर्चित रहल। विष्णु प्रभाकर प्रतिष्ठानक अध्यक्ष सेहो छथि। फिलहाल रचनात्मक सामाजिक कार्य सबमे विशेष संलग्न छथि।

संपर्क :
तेसर मंजिल, ए-99, नव अशोक नगर, दिल्ली-110096
मो. 9958103129
ईमेल: prasunlatant@gmail.com

बिहार राज्यमे अलग-अलग कलामे आब मंजूषा चित्रकला सेहो अप्पन ठाम बनाबयमे कामयाब भ' रहल अछि। मंजूषा कलाक उद्भव काफी पहिने भ' चुकल छल मुदा ओ केवल धार्मिक काज धरि सीमित छल। कलाक रूपमे एकर पहचान एखन हालक बरखमे कायम भेल अछि। आब मंजूषा कलाक सँ अंग प्रदेशक संस्कृति आगु आयल अछि आ अहिकेँ संग बिहुला-विषहरीक लोकगाथाक चिन्हयकेँ दायरा सेहो बढ़ल अछि, जेकर बड महत्वपूर्ण हिस्सा मंजूषा कलाकेँ अछि। कालि्ह धरि मंजूषा कलाक कलाकारक संख्या आंगुर पर गिनल जा सकैत छल, मुदा सरकारी प्रोत्साहनक कारण मंजूषा कला उकेरय बलाक संख्या बढ़ि रहल अछि।

तीन रंग गुलाबी, हरियर आ पीयर रंग सँ बनऽ बला मंजूषाक शुरुआत बिहुला कथा सँ मानल जायत अछि। अहिमे बॉर्डरक प्रमुखता अछि आ सांप, चंपा फूल, सूर्य, कमल, हाथी, घोडा, मोर, मैना, कछुआ, माछ, गाछ, कलश, तीर-फट्टा आ शिवलिंग एकर प्रमुख चिन्ह अछि। सभ बरख विषहरी पूजाक मौकेँ पर अहि तीनू रंगएं सज्जित मंजूषा विषहरी माताकेँ अर्पित करहिकेँ परंपरा रहल अछि। अहि मंजुषाक निर्माण खासकेँ 'मालाकार' समुदायक लोक सदिक्खन करैत आयल अछि। चित्रकलाक क्षेत्रमे मंजूषा कलाकेँ आब एकटा नव पहचान भेटल त' आब ई कला पूजाक लेल बनाबय बला मंजुषा धरि नञ रहि गेल अछि। आब ई कला भीत आ कैनवासक अलावा बड रस ठाम पर सेहो बनय लागल अछि।

जखन बिहुला-विषहरी पूजाक परंपरा पर शोध आ अनुसंधान शुरू भेल त' मंजूषा चित्रकलाक वजूद बुझयमे आयल। एकर बाद अहि कलाक सर्जककेँ ताकब शुरू भेल आ अहि खोजक फल ई भेल जे अहि कलाक क्षेत्रमे पारंपरिक ढंगसँ मंजूषा चित्रकारक रूपमे चक्रवर्ती देवीक नाम आगु आयल। हजार बरख पुरना बिहुला-विषहरीक लोककथा पर आधारित आउर लुत्पप्राय मंजूषा चित्रकलाक परंपराकेँ आगु बढ़यबालीक रूपमे हुनक नाम अमर भ' गेल। ई गप सत अछि जे चक्रवर्ती देवीकेँ जीते-जी सरकार आओर कला संस्थानक दिस सँ एहन कोनो प्रयास नञ भेल, जाहिसँ दुनियास विदा लेत चक्रवर्ती देवीकेँ कोनो तसल्ली हेतिये। मरलाहकेँ बाद उपेन्द्र महारथी शिल्प अनुसंधान संस्थान 2012मे हुनका सीता देवी अवार्ड सँ सम्मानित कयल गेल।

चक्रवर्ती देवीकेँ मरल करीब दस बरख भ' चुकल अछि। अहि बीच मंजूषा कलाक विकासक लेल एखन धरि कोनो खास प्रयास नञ केल गेल अछि। नौ दिसंबर, 2008 केँ चक्रवर्ती देवीक निधन भेल आ अहि काल केवल हुनक नातिन अन्नपूर्णा देवी टा हुनका लग छली, जिनका मंजूषा कलाक क्षेत्रमे अप्पन उत्तराधिकारी बनाकेँ गेली। नातिनकेँ देबाक लेल हुनका लग जीवनक अंतिम घड़ीमे लरजइत आंगुरस बनल किछु कृति छल। मंजूषा कलाक

नाम पर वएह मौलिक कृति बचल अछि। जँ एकरा सभ केँ जोगा क' नञ राखल गेल त' बादक कलाकारक मार्ग दर्शनक लेल किछु नञ बचत। ओ जाइत-जाइत अप्पन नातिनकेँ मंजूषा चित्र कृति केँ बेच-बेच केँ जोगारल कनि टा पाय दैत ईहो कहने गेल जे अहि पाय सँ हमर अंतिम संस्कार क' दिहैं। एकरा लेल केकरो सँ पाय नञ मंगीयें। चक्रवर्ती देवीकेँ जीते-जी ई सवाल मथैत रहल जे अंग क्षेत्रक महत्वपूर्ण मंजूषा चित्रकलाकेँ देशक बांकी चित्रकला जेना कहिया सरकारी महत्त्व भेटत। ओ अप्पन अंतिम कालमे सभ गोटाकेँ अहि कलाक उत्थान देबाक आग्रह करैत रहल छली। अंतिम काल धरि चक्रवर्ती देवी एकदम निराश भ' गेल छली।

मंजूषा चित्रकलाक अमर कलाकार चक्रवर्ती देवी एकटा छोट सनकोठलीमे आम स्त्रीगन जेना रहैत मंजूषा चित्रकला सँ अप्पन जीवनक निर्वाह करैत रहथिन। हुनका जीबैत कोनो सम्मान नञ भेटल। सरकारस इमदादक रूपमे सभ मास दू सौ टाका भेटैत रहैथ। मुदा ई मदद एकटा महान प्राचीन चित्रकलाक चितेरीक रूपमे नहि, बल्कि वृद्धावस्था पेंशनक रूपमे भेटैत छल। सरकार आ ओकर सांस्कृतिक विभागक अधिकारी मंजूषा कलाक अंतिम जीवैत चितेरीक लेल किछु नञ केलक।

बिहार राज्यक कटिहार जिलाक अदावा गामक एकटा निर्धन माली परिवारमे जनमल चक्रवर्ती देवी अहि कला सँ होश संभारैत धरि जुटि गेल रहथिन। मंजूषा चित्रकारी हुनक माय-बाबूजीक परंपरागत पेशा छल। जखन ओ ब्याहक बाद अप्पन सासुर चम्पानगर एलीह त' एतय सेहो हुनक संबंधी अहि कला सँ जुटल छल। बिहार आ बंगालक माली साल भरिते फूलक कारोबार सँ जुड़ल रहैत छल मुदा जुलाई-अगस्तमे मंजूषा बनाबयकेँ काजमे रहैत अछि। अहि मासमे माली पहिने कागज आ सोनाठी सँ मंदिरनुमा मंजूषा बनाबैत अछि। अहि मंदिरनुमा मंजूषाकेँ ठामक भाषामे 'झांप' सेहो कहल जायत अछि। फेर ओकरा पर बिहुला-विषहरी लोककथा सँ जुड़ल चित्र बनाबैत अछि। अहि कलाक एकटा शर्त ईहो अछि जे एकरा लेल हरियर, लाल आ पीयर रंगक इस्तेमाल होयत अछि। चक्रवर्ती देवी कतेक रास बरख सँ अहि रंगसँ पहिने मंजूषा पर चित्र बनाबैत छली, मुदा बादमे ओ पैघ-पैघ कागज पर अहि कलाकेँ आकार देलक।

अहि मंजूषामे कोनो चित्रकलाक

वजूद हेबाक इतिहासक पता सबस पहिने इतिहास अध्येता ज्योतिष चन्द्र शर्मा केँ लागल। ओ चक्रवर्ती देवीकेँ ताकलखिन आ हुनक बनायल चित्रमे हुनका उत्कृष्टता लखाह देलक। एकर बाद युवा चित्रकार शेखर अहि चित्रक अहि शैलीक खूब प्रचार-प्रसार केलक। मंजूषा चित्रकलाक पहिने प्रसार बिहार सँ बंगाल धरि तक छल मुदा एकर उद्गम अंग क्षेत्र अछि आ वास्तवमे ई अंगक धरोहर अछि।

लोकगाथा अछि जे विषहरी सांपक देवी अछि। ओ अंग प्रदेशक एकटा पैघ व्यापारी चांदो सौदागर सँ पूजा मांगलक त' ओ मना क' देलक। अहि सँ विषहरी नाराज भ' गेलखिन आ ओ चांदोक सभटा सातो बेटाक प्राण लैत रहल। जेखन आठम पुत्र बाला भेल त' ओकरा ओकर ब्याहक राति नागसँ डसवें देलक। तखन बालाक स्त्री बिहुला एकटा मंजूषा बनबैलक आ एहि मंजूषाकेँ लहसन नामक माली तैयार केने छल। अहि तरहेँ लहसन पहुलक बेर अप्पन चित्रस मंजूषा कलाकेँ जन्म देलक। चित्र सँ सजल अहि मंजूषामे अपन पतिक लाश ल' क' बिहुला स्वर्ग लोकमे इंसाफ मांगय लेल गेली। बिहुलाक जीत भेल। विषहरी हुनक पतिकेँ फेर सँ जीवित क' देलक आ उम्हर बिहुला सेहो अप्पन ससुर केँ विषहरीक पूजाक लेल मना लेलक। शुरू सँ अहि दुनू देविक संघर्ष आ संधिक कथाकेँ मंजूषा चित्रकलामे उकेरल जाइत अछि, मुदा आब ई चित्रकला अहि दुनू देवि धरि नहि रहल। आब एकर सीमान बढ़ि गेल अछि आ अहि चित्रकलामे आधुनिक कालक विषय सँ संबंधित चित्र सेहो पारल जा लागल अछि। आधुनिक कालमे चक्रवर्ती देवी अहि कलाक प्रतीक बनि गेल छथिन आ हुनक बनायल कृति अहि कलाक उत्कृष्टताक कसौटी बनि गेल अछि। हुनका जीते-जी केकरोसँ सहयोग त' नञ भेटल आ जँ भेटय त' ओ अहि कलाक नव आयामक सृजन-उद्घाटन क' सकैत छली। चक्रवर्ती देवीक नञ रहबास मंजूषा चित्रकला जगतमे एकटा शून्य पैदा भ' गेल अछि। हालांकि नव कलाकारक एक पौध तैयार भेल अछि, मुदा अहि कलाक संरक्षण जा धरि नञ भेटत ता धरि ओ सभ कलाकार हताश भ' जायत जे चक्रवर्ती देवीक परंपराकेँ आगु बढ़ेबाक काजमे लागल अछि।

डिजिटल होता मध्यप्रदेश

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर आरंभ डिजिटल इंडिया कार्यक्रम का प्रदेश में त्वरित क्रियान्वयन

सूचना एवं संचार की आधुनिक तकनीकों की मदद से मध्यप्रदेश शासन की विभिन्न सेवाओं का लाभ अब नागरिकों को ज्यादा सरलता और पारदर्शिता के साथ सुनिश्चित हो रहा है।

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

डिजिटल अधोसंरचना

- विभागों के डाटा संधारण हेतु स्टेट डाटा सेंटर कार्यशील; क्लाउड आधारित सेवाएं उपलब्ध।
- विकासखंड मुख्यालय तक उच्च गति के स्वान नेटवर्क क्रियाशील।
- स्टेट रेजिडेंट डाटा हब परियोजना के तहत विभिन्न विभागों के डेटाबेस का एकीकरण।
- 2 लाख से अधिक राशि के समस्त क्रय केंद्रीयकृत ई-प्रोक्योरमेंट पोर्टल के माध्यम से।
- समस्त जिलों में स्टेट ऑफ आर्ट आईटी ट्रेनिंग सेंटर क्रियाशील।
- निवेश को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आईटी, आईटी समर्थित सेवाएं एवं ईएसडीएम निवेश नीति 2016 लागू।
- जीआईएस आधारित निर्णय प्रणाली हेतु म.प्र. स्टेट स्पेसियल डाटा इंफ्रास्ट्रक्चर नीति निर्माण एवं परियोजना का संचालन
- 4 शहरों में आईटी पार्क एवं 2 स्थानों पर इलेक्ट्रॉनिक्स मेन्युफैक्चरिंग क्लस्टर स्थापित।

नागरिकों का डिजिटल सशक्तीकरण

- नागरिक सुविधा केन्द्र के रूप में एमपी ऑनलाइन कियोस्क, सीएससी एवं लोक सेवा केन्द्रों का संचालन
- जिलों में संचालित ई-दक्ष केन्द्रों से 80,000 से अधिक कर्मचारियों को आईटी प्रशिक्षण।
- ई-शक्ति परियोजना से 3.12 लाख महिलाओं को इन्टरनेट का प्रशिक्षण।
- नेशनल डिजिटल लिटरेसी मिशन के तहत अब तक 5.5 लाख युवाओं को कम्प्यूटर प्रशिक्षण।
- वर्चुअल आईटी संवर्ग का गठन।
- आईटी में हिन्दी के उपयोग को प्रोत्साहन देने हेतु सभी एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर की हिन्दी में भी उपलब्धता।

सुशासन एवं डिजिटल सेवाएं

- ई-ऑफिस के माध्यम से पेपर लेस कार्यालय की ओर तेजी से अग्रसर।
- समस्त प्रतियोगी परीक्षाओं का ऑनलाइन संचालन।
- कम्प्यूटर दक्षता प्रमाणीकरण परीक्षा (CPCT) का सफलतापूर्वक संचालन।
- ई-गवर्नेंस एवं अधोसंरचना परियोजनाओं के सफल क्रियान्वयन सुनिश्चित करने हेतु परियोजना प्रबंधन इकाई (PMU) का गठन।
- देश में पहली तथा दुनिया की सबसे बड़ी डायल-100 पुलिस सहायता प्रणाली, डायल 1099 के जरिये तत्काल चिकित्सा सहायता एवं ट्रैफिक सूचना उपलब्ध।
- समग्र पोर्टल के माध्यम से हितग्राहियों के बैंक खाते में सीधे भुगतान; समस्त स्कॉलरशिप की ऑनलाइन प्रणाली : 1.3 करोड़ से अधिक बच्चे लाभान्वित।
- महाविद्यालयों में प्रवेश की ऑनलाइन प्रणाली-ई-प्रवेश; शैक्षिक गुणवत्ता हेतु 400 से अधिक वर्चुअल क्लासरूम संचालित।
- एमपी मोबाइल द्वारा 150 से अधिक नागरिक सेवाओं का प्रदाय।
- IFMIS एप्लीकेशन के माध्यम से कोषालयों द्वारा समस्त भुगतान ऑनलाइन।
- ई-संपदा : एक क्लिक पर संपत्ति का पंजीयन।
- खदानों की नीलामी की ऑनलाइन प्रणाली ई-ऑक्शन द्वारा।
- नागरिक शिकायत निवारण हेतु सीएम हेल्पलाइन का क्रियान्वयन।
- ई-मेल नीति जारी करने वाला प्रथम राज्य; ऑफिशियल ई-मेल पर किये गए संवाद वैधानिक।
- राज्य की ओपन डाटा नीति प्रभावशील, राष्ट्रीय स्तर पर अग्रणी स्थान।
- राष्ट्रीय स्तर पर ई-ट्रांजेक्शन की गणना में अग्रणी।
- ई-उपार्जन के माध्यम से कृषकों के उत्पाद विक्रय की सुगम प्रणाली।

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2016

मिथिलाक सर्वांगीण विकास: दशा आओर दिशा

✍ राम कुमार झा

सदा, सर्वदा, हिमाच्छादित रहए बला पर्वत शृंखला हिमालय सँ नि:सरित होमए वाली सदा सलिला कोशी, कमला आ बागमती नदी सभहक धारा समूह सँ आनल गेल कादो, गाद, बालू आ अन्य मिश्रित पदार्थ सँ निर्मित दुनियांक प्राय: नवीनतम भूभागक नाम मिथिला थीक। प्राचीन कालमे ई भूभाग मिथिला गणराज्य छल, जकर ऐतिहासिकता जगत प्रसिद्ध अछि आ प्राचीन कालहि सँ प्रसिद्ध दार्शनिक, तपस्वी, ऋषि-मुनि लोकनिक तपो भूमिक रूपमे विख्यात रहल। कालक्रमे मिथिला गणराज्य आ वैशाली गणराज्य केँ आत्मसात् करैत मगध साम्राज्य बड्ड विशाल भ' गेल। ब्रिटिश साम्राज्यक प्रभावमे भारत सरकार आ नेपाल सरकारक बीच 'सुगौलीमे' एकटा समझौतामे मिथिलाक सात टा जिला नेपाल केँ द' देल गेलै आ मिथिला खण्डित भ' गेल। मातृभाषा मैथिली भाषी क्षेत्रक विखण्डन सँ मिथिलाक अस्मिता पर बड्ड रास दुष्प्रभाव पड़ल आ मिथिला क्षेत्र उपेक्षित होइत गेल। ऐतिहासिक मिथिला गणराज्यक नाम सँ जानल जाइत ई भूभाग आजाद भारतमे मिथिलांचलक नाम सँ जानल जाए लागल। आजादीक बाद केँ दशकमे मिथिलांचल अत्यंत उपेक्षित भ' गेल। एहि भूभागक कृषि, व्यवसाय, उद्योग एवं अन्य आधुनिक विकासक गति अत्यंत मद्धिम पड़ि गेल।

बाढ़ि-सूखाड़ आ बिजलीक संकट:

मिथिलांचलक माटि खेतीक लेल दुनियां भरिक माटिक अपेक्षा बेसीक उपजाऊ छैक। मुदा हिमालय सँ निकलय वाली कोशी, कमला आ बागमती नदी सभहक विभिन्न धारा सँ आनल गेल विध्वंसकारी-विनाशकारी बाढ़िक विभीषिका सँ प्रति वर्ष अपार धन राशिक बर्बादी, जान-मालक क्षति, खेतीमे विभिन्न फसलक भयंकर विनाश आ बाढ़िक बाद भयंकर सूखाड़ आ तकर प्रतिफलमे भयंकर अकाल पर अकाल, मिथिलांचलक कृषि क्षेत्र केँ चौपट क' केँ राखि देलक। जीवनदायिनी विशाल जल राशि बाढ़िक रूपमे विनाश करैत समुद्रमे विलीन होइत अछि। जल प्रबंधनक अभावमे बाढ़िक बाद सुखाड़ होइत अछि। आजाद भारतमे बिहारमे सरकार पर सरकार बदलैत रहल आ अधिकांशत: मिथिलांचलक निवासी मैथिलीभाषी - मुख्यमंत्रियो भेलाह मुदा भारत सरकार आ बिहार सरकार दुनूक मिलीभगत सँ मिथिलांचलक उपेक्षा होइत रहलै। सबसँ पैघ समस्याक रूपमे व्याप्त बाढ़ि - सूखाड़क समाधान नञ भ' सकल आ नञ सिंचाईक समुचित प्रबंध भ' सकल। तथापि संकटग्रस्त रहितो कृषि क्षेत्रमे प्रति एकड़ उपजक हालत अछि जाहि सँ जन साधारणक जीवन जापन सम्भव होइत अछि, जलवायु, पानि एवं अन्य शान्तिप्रिय स्वभावक मानवीय व्यवहार, सहिष्णुता, मधुर मातृभाषा-मैथिली आदिक करणें संसारमे सबस बेसी घनत्वक दृष्टि सँ जनसंख्यामे मिथिलांचल एक नंबर पर छैक।

बाढ़ि-सूखाड़ आ बिजली संकटक स्थायी समाधानक वास्ते कोशी, कमला आ बागमती नदी सभहक उद्‌गम स्थान पर अर्थात् कोशी नदी पर वाराहक्षेत्रमे, कमला नदी पर शीशा पानीमे आ बागमती नदी पर नूनघरमे बहुउद्देशीय हाईडैम बनाकेँ सम्पूर्ण जल राशि केँ जलाशयमे रोकि केँ बाढ़ि सँ निवारण कयल जा सकैत अछि तथा सुखाड़ स्थितिमे डैममे एकत्रित जलराशिकेँ नियंत्रित रूपमे सिंचाईक कार्य नहरि द्वारा भ' सकैत अछि। संगहि जल विद्युत संयंत्र लगाकेँ ततेक पानि बिजलीक उत्पादन हेतैक जे भारतक संगसंग नेपालक विकासमे सेहो सहायक हेतै। ई स्वीकृत परियोजना भारत सरकार आ नेपाल सरकारक संयुक्त कमिटीमे अछि जकर अनेको बैसार भ' चुकल मुदा बड्ड मन्थर गति सँ काज चलैत अछि। चूंकि स्थायी समाधानक उपरोक्त परियोजनाक निर्माण स्थल नेपालक सीमामे अछि तेँ दुनू देशक सहमति आ सहयोग आवश्यक अछि। जावत कम्युनिस्ट नेता भोगेन्द्र झा सांसद छलाह, सरकारी-गैर सरकारी दुनू

रूपें नेपालक लोक आ भारतक संसदक माध्यम सँ एहि परियोजना सभहक कार्यान्वयनक प्रयास करैत छलाह। मुदा हुनक देहावसानक बाद एकर खोज खबरि नञ होइत छैक। जखन-जखन बाढ़ि अबैत छैक तें बिहारक मुख्यमंत्री आ भारतक प्रधानमंत्रीक एहि परियोजना पर बयान अवश्य अबैत छन्हि। एहि तरहें मिथिलांचलक बाढ़ि-सूखाड़ आ बिजली संकटक स्थायी समाधान ई बहुउद्देशीय हाईडैम परियोजना भारत-नेपालक बीच सचेत प्रयासक अभावमे लटकल अछि। मिथिलांचलमे यदा कदा एहि स्थायी समाधानक सवाल पर जन आंदोलन तं होइत अछि मुदा प्रभावोत्पादक नञ भ' पाबि रहल अछि।

''पग-पग पोखरि माछ-मखान'' आ 'नदी मातृक देश मिथिला' सन् प्रसिद्ध लोकोक्ति कें चरितार्थ करेयबला मिथिलांचलमे मत्स्य पालन उद्योग नञ विकसित भेल, ताहि सँ एखन आंध्र प्रदेश सँ आयातित माछक आपूर्त्ति सँ बाजारमे उपभोक्ताक आवश्यकताक पूर्त्ति होइत छै, जखन कि माछक स्वादमे अपन पोखरि आ नदीक माछ कतेको गुणा अधिक स्वादिष्ट मानल जाइत छै। तहिना विश्वभरिमे मात्र मिथिलाक माटि-पानिमे ऊपजयवला मखान सन अनुपम 'जल-फल' जे भोजन तत्त्वमे अत्यधिक प्रोटीन सँ युक्त आ स्वाद आ पवित्र फलक रूपमे सर्वाधिक प्रयोगमे आबय वला देश-विदेशमे प्रसिद्ध अछि, ओकर उत्पादन, संवर्द्धन आ प्रसंस्करण हेतु उद्योगक सर्वथा अभाव छै। तैं मखानक उत्पादनमे वृद्धिक संग-संग उत्पादित पदार्थक प्रोसेसिंग कय कें खाद्य सामग्रिक रूपमे विदेश धरि निर्यातक व्यवस्था कैल जाय तं मिथिलांचलक माटिक एकटा विशिष्ट पदार्थ विश्वविख्यात भ' सकत आओर मिथिलांचलक आर्थिक उन्नयन पर एकर जबर्दस्त असर हेतैक। एहि संदर्भमे एकटा पैघ प्रयास भेल रहै जखन स्वर्गीय चतुरानन मिश्र केन्द्रीय कृषि मंत्री रहथि। हम आई.सी.ए.आर., नई दिल्ली भारत सरकारक शासीनिकायमे किसान प्रतिनिधि कें रूपमे रही आ 1997 ई. मे एकटा बैसारमे काफी जोरदार शब्दमे मखाना अनुसंधान केन्द्रक आवश्यकता आ कृषि अनुसंधानक क्षेत्रमे मिथिलांचलक उपेक्षाक सवाल उठेने रही। संगहि सम्पूर्ण नॉर्थ-ईस्ट स्टेट्सक उपेक्षाक प्रश्न उठेने रही। तत्क्षण भारत सरकारक तत्कालीन कृषि मंत्री स्वर्गीय चतुरानन मिश्र जी दरभंगामे मखाना रिसर्च इन्स्टीट्यूट आ मुजफ्फरपुरमे लीची अनुसंधान केन्द्रक स्वीकृति देलन्हि। ओकर उद्घाटन दरभंगामे कृषि मंत्रीक रूपमे नीतिश कुमार जी केलन्हि। किछु काज आगां बढ़लैक मुदा अपेक्षित विकास नञ भ' सकल। तहिना आम, माछ आ दुग्ध उत्पादन पर उद्योग विकसित करबाक आवश्यकता छैक। कृषि उत्पादित विभिन्न पदार्थ पर आधारित छोट पैघ उद्योगक विकास सँ उत्पादन प्रसंस्करण आदि बढ़ोत्तरीक संग-संग रोजगारक सृजन बड्ड बेसी हेतै।

मिथिलांचल सँ पलायनक समस्या:

संकटग्रस्त आ अलाभकर खेती, चौपट उद्योग धंधा, बंद पड़ल सभ चीनी मील, सभ जूट मील, अशोक पेपर मील, जर्जर उद्योग व्यवस्था, बंद पड़ल पण्डौल सूत मिल आ अन्य औद्योगिक प्रतिष्ठान, बेरोजगारीक विकराल समस्या सँ ग्रसित आ त्रसित मिथिलांचलक शिक्षित आ अशिक्षित

बेरोजगार नौजवान वर्ग भयंकर रूप सँ पलायन क' रहल छथि। गाम-घर छोड़ि शहरक तरफ पलायन क' रहल छथि। दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, बंगलौर, हरियाणा, पंजाब, चेन्नई सन पैघ-पैघ शहरमे जाकेँ जीवन बसर क' केँ अपन-अपन परिवारक विकासमे लागल छथि। वीरान होइत गाम घरमे बाहरक कमाई पर किछु आर्थिक समुन्नति तं अवश्य देखल जा रहल छै, मुदा अपन धरती पर विकासक रूप रेखा नञ तैयार भ' रहल छै। तें भविष्यक प्रति चिन्ता हेब आवश्यक। यातायात, रेल मार्ग आ हवाई मार्गक उपेक्षा सँ सेहो मिथिलांचल अत्यंत पछुआयल अछि। अंग्रेजी राजमे जे निर्मली-भवटियाही रेलमार्ग कोशी नदीक विकराल बाढ़ि सँ ध्वस्त भेल ओकर आई धरि पुनर्निर्माण नञ भ' सकल। फलत: मिथिलांचलक पुवरिया आ पछुवरिया दुनू इलाका रेलमार्ग सँ नञ जूटि रहल छै। यद्यपि आब सड़क मार्ग सँ जुटि गेल अछि। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयीजीक स्वर्णिम-चतुर्भुज योजना अंतर्गत सिलचर सँ पोरबंदर (पूरब सँ पश्चिम) जुड़ि गेल अछि आ ई सड़क मिथिलांचल सड़क यातायात केँ विकसित केलक। समस्तीपुर सँ दरभंगा धरि बड़ी रेल लाइनक लड़ाई बड्ड संघर्षमय रहल। बड़ी रेल लाइनक वास्ते करीब 20 वर्ष लगातार जन आंदोलन चलल। अंतत: सर्वदलीय संघर्ष समितिक नेतृत्वमे 1995 ई. मे जे संघर्ष शुरू भेल ओकर संयोजक हम स्वयं रही। लगातार एक मास धरि दरभंगा रेलवे जंक्शन पर संघर्ष होइत रहल। लोकसभामे स्वर्गीय भोगेन्द्र झा सदन केँ अंदर 12 बजे राति धरि भूख हड़ताल क' देलनि तखन भारत सरकार लिखित आश्वासन देलकैन्ह आ ससमय दू फरवरी, 1996 ई.मे समस्तीपुर सँ दरभंगा धरि बड़ी रेल लाइनक परिचालन शुरू भ' गेल। काफी संघर्षक बाद सीतामढ़ी आ जयनगर धरि बड़ी रेल लाइनक परिचालन भेल। मुदा सकरी सँ निर्मली-भवटियाही आ झंझारपुर लौकही बड़ी रेल लाइन नञ बनल। नव रेल लाइन सकरी सँ हसनपुर एखन धरि पूरा नञ भेल। मात्र सकरी सँ बिरौल किछु गाड़ी चलैत अछि। एखनो मिथिलांचलक पुबरिया इलाका भाया निर्मली भवटियाही आओर भाया हसनपुर-सहरसा नञ जुड़ सकल। एखनो दरभंगा सँ मुजफ्फरपुर, झंझारपुर सँ मुक्तापुर भाया बिरौल आदि स्वीकृत रेल परियोजना उपेक्षित पड़ल अछि।

हवाई मार्गक क्षेत्रमे मिथिलांचल देशक अन्य भाग सँ नञ जुटल अछि। देशक महानगर सभक वास्ते हवाई यात्राक लाभ उठाबैक लेल दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, बेगूसराय, सहरसा, पूर्णिया सहित समस्त मिथिलांचलक यात्री लोकनि केँ बिना पटना गेने हवाई मार्गक लाभ नञ भेट सकैत छैन्ह। 1962 ई.मे चीनी आक्रमणक बाद बड्ड तेजी सँ दरभंगामे सामरिक दृष्टि सँ हवाई अड्डाक निर्माण भेलैक। यात्री हवाई जहाजक नियमित उड़ानक वास्ते सभ तरहें उपयुक्त रहलाक बावजूदो एहि हवाई अड्डा केँ मात्र किछु टेक्निकल कारणें चालू नञ कैल जा रहलैक अछि। कतेको बेर सरकारी आश्वासनक बावजूद दरभंगा हवाई अड्डा सँ नियमित यात्री विमानक उड़ानक व्यवस्था नञ भ' रहल छैक। शिक्षाक क्षेत्रमे प्राचीन समय सँ अग्रणी रहल मिथिलांचल अपन प्रतिभा आ संस्कारक बदौलत देश-दुनियांमे प्रसिद्धि प्राप्त केने अछि। प्राचीन भारतीय दर्शन, वेद-उपनिषद, पौराणिक ग्रन्थ आ कर्मकाण्ड, ज्योतिष आ ज्ञान-विज्ञानक क्षेत्रमे गौरवपूर्ण प्रसिद्धि प्राप्त केने मिथिलांचल आधुनिक शिक्षा पद्धति केँ अपनाबयमे सेहो पांछा नञ रहल। विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालयमे बड्ड संख्या रहितौ छात्र-छात्रा लोकनिकमेधा आ संस्कार काफी तीव्र रहितौ गुणवत्तापूर्ण शिक्षाक अभाव देखल जा रहल अछि। मिथिला विश्वविद्यालयकेँ केन्द्रीय विश्वविद्यालयक दर्जा नञ भेटल। तकनीकी शिक्षण संस्थानक अत्यंत अभाव रहलाक कारणेमेधावी छात्र-छात्रा लोकनिक केँ अन्य राज्यक तरफ मुखातिब होमए पड़ैत छन्हि, जकरा चलते आर्थिक अभावमे कतिपयमेधावी छात्र-छात्रालोकनि तकनीकी शिक्षा सँ वंचित भ' जाइत छथि। तकनीकी शिक्षण संस्थानक संग-संग दरभंगामेडिकल कॉलेज अस्पताल केँ अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थानक दर्जा द' केँ स्वास्थ्य सेवा आ स्वास्थ्य शिक्षाक क्षेत्रमे मिथिलांचलक विकासक मांग काफी जोर-सोर सँ कैल जा रहल अछि। न्याय केँ क्षेत्रमे सस्ता-सुलभ न्याय उपलब्ध करवाक वास्ते पटना हाईकोर्टक बेंच मिथिलांचलक हृदयस्थली दरभंगामे स्थापित करवाक मांग बड्ड जोड़ पकड़ने अछि। दरभंगामे आकाशवाणी केन्द्रक क्षमता विस्तार आ प्रसारणक माध्यम मातृभाषा मैथिली केँ विकसित करवाक मांग सेहो बड्ड काल सँ कैल जा रहल अछि।

मिथिलांचलक चारि करोड़ लोकक मातृभाषा मैथिली केँ भारतीय संविधानक अष्टम् अनुसूचीमे शामिल करबाक लेल करीब 40 वर्ष सँ संघर्ष चलैत रहै। सम्पूर्ण देशक विभिन्न भागमे निवास केनिहार मैथिली भाषी लोकक अनेको संगठनक निरंतर संघर्ष भेल। अन्तत:

2002 ई.मे 22-23 दिसम्बर केँ भारतीय संसदक दुनू सदनमे सर्वसम्मति सँ मैथिली भाषा केँ संविधानक अष्टम् अनुसूचीमे शामिल कयल गेलै, जाहि लेल मिथिलांचलक चारि करोड़ मैथिली भाषी तत्कालीन प्रधानमंत्री वाजपेयी जी आ उप-प्रधानमंत्री आडवाणीजीक प्रति सदैव कृतज्ञ रहत। अपना संसदीय जीवनकालमे काम्युनिस्ट भोगेन्द्र झा कतेको बेर संसदमे प्रस्ताव पेश कऽ केँ मैथिली भाषाकेँ सविधानक अष्टम अनुसूचीमे शामिल करयबाक प्रयास कयलनि। संसदक अन्दर आओर बाहर लोककेँ संगठित करैत संघर्ष करैत रहलाह। संघर्षक अंतिम कड़ीमे 10 दिसम्बर 2002 ई. केँ विद्यापति सेवा संस्थान दरभंगाक महासचिव डॉ. बैद्यनाथ चौधरी, अखिल भारतीय मिथिला संघ दिल्लीक विजयचन्द्र झा, मिथिला विकास संघ, कलकत्ताक अशोक झा सहित सम्पूर्ण देशक करीब दू दर्जन मैथिली सेवी संगठनक सैकड़ों प्रतिनिधिगण भारत सरकारक तत्कालीन उद्योग मंत्री डॉ. सी.पी. ठाकुर आ सांसद रामचन्द्र पासवानक नेतृत्वमे जंतर मंतर पर धरना देलक। प्रदर्शन आ लाठी चार्ज भेल, जाहिमे, हम सेहो शामिल रही, संघर्ष अति आक्रोशित रूपमे पहुंचल। 15 दिसम्बर केँ रामचन्द्र पासवानक लोकसभामे ध्यानाकर्षण प्रस्ताव केँ 22 सांसद'क समर्थन भेल। 17 दिसम्बर केँ प्रधानमंत्री आओर उप प्रधानमंत्री सँ प्रतिनिधि मंडलक वार्त्ता भेल जाहिमे डॉ. सी.पी. ठाकुरक संग रामचन्द्र पासवान, सांसद डॉ. बैद्यनाथ चौधरी, शुभचन्द्र झा सहित 11 सदस्यमे हमहूं शामिल रही। वार्ताक्रममे प्रधानमंत्री जी पूर्णरूपेण आश्वस्त केलन्हि जे एहि बेर 'बोडो'क संग मैथिली सेहो लाइनमे लागल अछि। मुदा हमरा लोकनि केँ तैयों संशय रहै। हम एहि संघर्षक सभ कहानी स्वर्गीय भोगेन्द्र झा जी केँ विस्तार सँ कहि देलयन्हि, लोक सभामे जखन बिल पेश भेलै तं मात्र बोडो'क लेल पेश कैल गेलैक। काम्युनिस्ट भोगेन्द्रजी संसदक केन्द्रीय कक्षमे जाकेँ बैसँ गेलाह आ प्रधानमंत्री एवं उप प्रधानमंत्री सँ भेंट क' केँ हुनका लोकनिक द्वारा देल गेल आश्वासनक स्मरण करेलखिन्ह। पुन: कानूनी विचार विमर्शक बाद दोसर दिन तत्कालीन गृहमंत्री आ उप प्रधानमंत्री आडवाणी जी एकटा संशोधन लोकसभा सदस्यक रूपमे स्वयं पेश केलन्हि, जाहिमे बोरोक संग-संग संथाली, मैथिली आ डोगरी अर्थात् चारु भाषा केँ सर्वसम्मति सँ संविधानक अष्टम् अनुसूचीमे शामिल कयल गेल। मिथिलांचलक चारि करोड़ लोकक चिर प्रतिक्षित मांग पूरा भेलै आ लगातार संघर्षक जीत भेलै। मातृभाषा मैथिली विभिन्न रूपमे अधिकृत आ प्रतिष्ठित तं अवश्य भ' रहल छथि, मुदा जाहि रूपमे तीव्रगति सँ भाषा आ साहित्यक विकास ज्ञान-विज्ञान-अर्थ उपार्जनक क्षेत्रमे अपेक्षित अछि से नञ भ' रहल अछि। प्राथमिक शिक्षा सँ ल' केँ माध्यमिक आ उच्च शिक्षा स्तर धरि मातृभाषाक माध्यमे पढ़ाई-लिखाई, ज्ञान-विज्ञान विस्तारक आवश्यकता छै जाहि लेल अनेक रास स्तर पर प्रयासक आवश्यकता छै, संगहि जन जागृतिक आवश्यकता छै।

मिथिलांचलक सर्वांगीण विकासक समस्या आ ओकर समाधानक लेल गांव सँ शहर धरि, सभ जाति-सम्प्रदायक, जे मिथिलावासी छथि देशक विभिन्न हिस्सामे बसल प्रवासी मैथिल लोकनि सँ ल' केँ विदेशमे रहए बला मैथिली भाषीक मन-मस्तिष्कमे जे मातृभाषा आ मातृभूमिक प्रति भावना अनुराग-छन्हि तकरा जागृत करबाक आ ओकरा संघर्षोन्मुखी बनाबैक आवश्यकता छै। कार्य कठिन छै मुदा समयक पुकार छै।

एहि दिशामे एकटा प्रयास 1997 ई.मे दरभंगामे मिथिलांचल सर्वांगीण विकास संघर्ष समितिक संयोजकक रूपमे हम केने रही। दरभंगा राज मैदानमे एकटा सर्वदलीय सम्मेलन आयोजन कैल गेल रहय, जकर स्वागताध्यक्ष तत्कालीन जनतादलक अध्यक्ष प्रो. देवी दत्त पोद्दार आ कार्यकारी स्वागताध्यक्ष कांग्रेस पार्टीक जिला अध्यक्ष स्वर्गीय ताराकान्त झा रहथि, हम स्वागत महामंत्रीक रूपमे रही। कोषाध्यक्ष रूपमे विमल कान्त चौधरी रहथि। सम्मेलनमे मिथिलांचलक 18 जिलाक प्रतिनिधि लोकनि आयल रहथि। सम्मेलनक खुला अधिवेशनक उद्घाटन तत्कालीन केन्द्रीय कृषि मंत्री स्वर्गीय चतुरान्न मिश्र कयने रहथि। बिहार सरकार मंत्री डॉ. नागेन्द्र झा मुख्य अतिथि रहथि। मुख्यवक्ताक रूपमे हुकुमदेव नारायण यादवजी, स्वर्गीय तेजनारायण झा, स्वर्गीय राज कुमार पूर्वे संगहि अन्य दल, संगठनक प्रतिनिधिगण उपस्थित रहथि। कुसंजोगवस जिनका परामर्श सँ ई सम्मेलन कैल गेल ओ स्वर्गीय भोगेन्द्र झा जी नञ आबि सकलाह। बिहार सरकारक मंत्री स्वर्गीय डॉ. महावीर प्रसाद सेहो उपस्थित नञ भेलाह। संघर्षक जे रूप रेखा सम्मेलनमे तैयार केलक ओ आगां नञ बढ़ि सकल।

आशा अछि, अखिल भारतीय मिथिला संघ, दिल्ली आ दरभंगा एहि कठिन कार्य केँ अपना स्वर्ण जयंती समारोहक अवसर पर संकल्पमे शामिल क' केँ देश भरिक मैथिल संगठन केँ एकत्रित क' केँ एहि सर्वोत्तम कर्त्तव्य केँ निर्वहन करवामे सफल होयत।

इति शुभम्।

मिथिलाक विकास: शिक्षा आ शिक्षार्थीक भूमिका

✍ भास्कर ज्योति

लेखक दिल्ली स्थित जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालयक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन केंद्रमे रिसर्च स्कॉलर छथि। ओ जेएनयू मिथिला मंचक अध्यक्ष सेहो छथि। विविध पत्र-पत्रिका आ टीवी चैनल सबमे समसामयिक विषय सब पर निरंतर गंभीर प्रस्तुति करैत रहैत छथि।

संपर्क :
कृष्णा नगर, वार्ड नं.-23,
बटराहा, सहरसा
मो. 9015753660

प्राचीन काल सँ एखन धरि मिथिलाक पावन ओ प्रतापी भूमि ज्ञान एवं दर्शन केर उद्भव ओ प्रसारक केंद्र रहल। लालदास कृत मिथिला रामायणमे एहि तथ्यक विस्तृत वर्णन भेटैत अछि जे कुना मिथिलाक भूमि एहि भुवनक स्वर्ग थिक। चारि टा प्रमुख भारतीय दर्शनक सृजन मिथिलाक माटि-पानि सँ भेल अछि। एहि मिथिलाक भूमि पर विद्यार्जन कें सदैव सर्वोपरि स्थान प्राप्त रहल। सुरेन्द्र झा सुमन जीक महाकाव्य दत्तवतीमे मिथिलाक गुरुकुल परंपरा केर व्यापक वर्णन कयल गेल अछि, ओहि महाकाव्यमे देखाओल गेल अछि जे मिथिलाक छात्र नियमित तौर पर उज्जैन आ काशी गुरुकुलमे सेहो शिक्षार्थ जायत छलाह आ उज्जैन ओ काशी केर छात्र सभ मिथिला केर गुरुकुलमे अप्पन शिक्षा पूर्ण करबा लेल आबेत छलाह। एहि प्रसंगक उल्लेख केर तात्पर्य ई थिक जे मिथिला शिक्षा-दीक्षा केर मामलामे शुरू सँ देश केर अन्य शिक्षाक केंद्र सँ जुडल छल आ छात्रक नियमित आगमन-प्रस्थान, आदान-प्रदान मिथिला लेल सामान्य गप्प छल। एहेन तरहक स्वर्णिम इतिहास केर उत्तराधिकारी रहबाक बावजूदो आय माँ मिथिला अप्पन दुर्दशा पर नोर बहा रहल छथि कियाकि आय शिक्षा केर केंद्र सभक हाल जर्जर अछि, लालटेन लऽ कऽ तकबाक उपरान्तो नञ तऽ पुस्तकालय भेटैत अछि नाहि विश्वविद्यालयमे शिक्षक। छात्र सभ अप्पन दुर्भाग्य पर नोर चुआ रहल छथि, जिनका सामर्थ्य छनि ओ दिल्ली-मुंबई ज्ञानार्जन लेल जा रहल छथि आ भद्र जन सभकें घूरि कें फेर मिथिला दिशी तकबाक मोन नञ होयत छनि।

मिथिलामे शिक्षाक वर्तमान स्थिति केर लघु अवलोकन

भारत सरकार द्वारा त्रि-भाषायी फार्मूला कें स्वीकृति देबाक उपरान्तो आय धरि मिथिलाक प्राथमिक विद्यालय सभमे मैथिली भाषामे प्राथमिक शिक्षा देबाक प्रावधान नञ भऽ सकल। अनगिनत शिक्षाविद सभक रिपोर्ट कहैत छनि जे अप्पन भाषामे शिक्षा देबा सँ बच्चा सभक सिखबाक प्रवृत्तिमे वृद्धि होयत छनि मुदा सरकार आ जनमानसँ केर उदासीनता सँ आय धरि मिथिलामे ई संभव नञ भऽ सकल जखन कि भारत केर दक्षिणवर्ती राज्य सभमे एकर व्यवस्था कयल गेल आ नतीजतन ओतुका बच्चा सभक नीव सुदृढ़ भऽ रहल अछि जाहिपर मजबूत उच्च शिक्षाक निर्माण भे रहल अछि।

मिथिलाक अप्पन लिपि "मिथिलाक्षर" विलुप्तता केर तट पर ठाढ़ि अछि, नीक-नीक साहित्यविद, पढ़ल-लिखल मैथिल-मैथिलानी सभ अप्पन लिपिमे रचना नञ केऽ सकताह कियाकि राज्यक नियोजित नीति आ अप्पन सभक उदासीनता केर कारणें पहिने कैथी आ बादमे देवनागरी लिपि कें मिथिलाक्षर केर ऊपर प्रधानता प्रदान कयल गेल

जाहि सँ मिथिलाक्षर केर ज्ञान लुप्त भऽ गेल। कोनो लिपि आ साहित्यक विकास तखन धरि संभव नञ अछि जखन धरि ओहि लिपिमे साहित्य सृजन नञ होयत। पश्चिम बंगालमे सरकार आय धरि प्राथमिक आ माध्यमिक विद्यालय धरि बंग्लाक्षरमे बँगला भाषा केर पढाय कें अनिवार्य कयने छथि जकर फलस्वरूप बंगाल कें बच्चा-बच्चा बंग्लाक्षर सँ परिचित छैक आ भाषा नित्य रूपेण समृद्ध भऽ रहल छैक।

मिथिला केर वितान कें जँ पूर्वमे महानंदा, पश्चिममे गंडक, उत्तरमे हिमालय कें तराई सँ दक्षिणमे गंगा धरि मानल जाय तऽ 2011 केर जनगणना आंकड़ा सभक अनुसारें मिथिला क्षेत्र देश केर सब सँ पैघ अशिक्षित क्षेत्रमे सँ एक अछि। प्राथमिक शिक्षा सँ ल' के' उच्च शिक्षा धरि शिक्षाक हालत बद सँ बदतर अछि। एक गोट टीवी रिपोर्ट कें अनुसारें मिथिला क्षेत्रक तमाम प्रमुख विश्वविद्यालय यथा ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्विद्यालय, तिलका मांझी विश्वविद्यालय आदि बिना शिक्षकक उपस्थिति कें चलि रहल अछि। एलएनएमयू केर अंतर्गत 70 टा महाविद्यालय अबैत अछि जाहिमे आर कें कॉलेज मधुबनी एकटा प्रमुख महाविद्यालय अछि, एहि कॉलेजमे स्वीकृत 127 प्रोफ़ेसर केर सीटमे मात्रे 30 टा प्रोफ़ेसर कार्यरत छथि आ 97 गोट सीट रिक्त अछि, एहने हाल मारवारी कॉलेज दरभंगा कें अछि जाहिमे 57 प्रोफ़ेसर कें स्वीकृत सीटमे मात्रे 14 गोट प्रोफ़ेसर कार्यरत छथि। सम्पूर्ण विश्वविद्यालय केर गप्प कयल जाय तऽ एलएनएमयूमे 1918 प्रोफ़ेसर पद स्वीकृत अछि जाहिमे 1430 पद पर वर्तमानमे रिक्ति अछि। एलएनएमयू केर प्रत्येक कॉलेजमे लगभग 1000-5000 छात्र धरि प्रति वर्ष नामांकन लैत छैक मुदा प्रोफ़ेसर आ विश्वविद्यालय केर भवनक अभावमे कोनो कक्षा केर आयोजन नञ होयत छैक। ई सभ आंकड़ा विश्वविद्यालय द्वारा राज्य सरकार कें भेजल गेल बजट पत्र सँ लेल गेल अछि।

एहने हाल मिथिला क्षेत्रक एक गोट अन्य विश्वविद्यालय भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय केर अछि जकरा अंतर्गत 2 लाख सँ बेसी छात्र नामांकित छैक। एहि विश्वविद्यालयमे 3 वर्षक स्नातक केर डिग्री 5 सँ 7 वर्ष धरि प्राप्त होयत छैक। एम.ए. केर डिग्री सेहो 4 वर्ष सँ पहिने प्राप्त करब असंभव तुल्य अछि। मधेपुरा-पूर्णिया आदिमे शिक्षा माफिया सभ कैंचा लऽ कऽ फर्जी डिग्री बनबा रहल छैक। पूर्णिया केर रामकिशुन कॉलेजमे 800 स्वीकृत बी.ए. सीटमे माफिया सभ 3600 नामांकन करबा देने छले, जकर जांच केर बाद सभक नामांकन निरस्त कऽ देल गेल, पिसल गेल आम आ गरीब छात्र। मधेपुरा शुरू सँ राजनीति केर गढ़ रहल जतऽ सँ राष्ट्र स्तर कें नेता यथा लालू यादव, शरद यादव, पप्पू यादव आदि चुनल गेल छलथिन्ह एकर बावजूदो मधेपुरामे अवस्थित एहि विश्वविद्यालय केर एहेन हाल कियाक छैक सँ महत्वपूर्ण प्रश्न अछि?

एहि प्रश्नक उत्तर भेटैत छैक ई कहबी सँ कि "घऽरमे आगि लागल घरक चिराग सं"। कोनो राज्यक निर्माण ामे ओत्तुका युवा वर्गक अभूतपूर्व योगदान होयत छैक मुदा मिथिलामे छात्र आन्दोलनक व्यापक अनुपस्थिति केर कारणें मिथिला केर दुर्दशा पर कोनो आवाज नञ उठि सकल। राजनेता सभक भरोसँ हम सभ बैसल रहि गेलौं आ मिथिला पाषाण युगमे भसियाएत चल गेल। हरिमोहन झा जी खट्टर ककाक मादे बेजाय नञ मिथिलाक अकर्मण्यता पर व्यंग बाण चलौने छलाह।

मिथिला केर सर्वांगीण विकासमे छात्रक योगदान

इतिहास साक्षी अछि जे विश्व भरिमे क्रांति केर सूत्रपात करबामे छात्रक योगदान विशिष्ट रहल अछि चाहे ओ हालमे पश्चिम एशियाई देशमे आयल "अरब क्रान्ति" हो, भारत केर स्वतंत्रता आंदोलनक क्रान्ति हो वा जय प्रकाश नारायण केर सम्पूर्ण क्रान्ति, छात्रक हुंकार केर बिना सभ अपूर्ण होयतन्हि। विश्वविद्यालय मात्र पठन-पाठन केर स्थल नञ भऽ कऽ समाजक दशा-दिशा तय करबाक माध्यम सेहो होयत अछि मुदा मिथिला केर बंद पड़ल विश्वविद्यालय सभ नञ पठन-पाठन केर कार्य सम्पादित कें रहल अछि नाहि समाज परिवर्तनक कार्य। मिथिला केर ई दशा लेल बिहार सरकार बड्ड दोषी छैक।

1980मे बिहारमे राष्ट्रपति साशन केर पश्चात मुख्यमंत्री डॉक्टर जगन्नाथ मिश्र द्वारा श्री वी.एस. झा केर नेतृत्वमे एकटा यूनिवर्सिटी इनक्वाइरी आयोग केर गठन कयल गेल। डॉ. वी.एस. झा स्वयं बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय केर कुलपति छलाह, हुनकर रिपोर्ट नञ खाली मिथिला अपितु सम्पूर्ण बिहारक छात्र राजनीतिक दशा-दिशा परिवर्तित कऽ देलकैक। रिपोर्टमे ई अनुशंषा कयल गेल छल जे विश्वविद्यालयमे हर तरहक हड़ताल पर प्रतिबन्ध लगाओल जाय आ छात्र चुनाव कें तत्काल प्रभाव सँ रोकि देल जाय। 1983 सँ एवंक्रमेण छात्रक हर गतिविधि पर रोक लगा देल गेलनि आ मिथिला सुसुप्तावस्थामे चलि गेल।

चूँकि, राजनेता वा राजनैतिक दल सभक प्रतिनिधि केर मंशा खाली वोट प्राप्त करबाक रहैत अछि अहि दुवारे मिथिला समाज कें जड़मे व्याप्त समस्या सभ पर ओकर सभक ध्यान कम रहैत छैक वएह ठाम छात्र चूँकि अपने समाजक समस्या सभ सँ ग्रसित रहैत छैक ओहि समस्या सभमे ओझरा-ओझरा कें किकियाबैत रहैत छैक तैं जँ ओ सभ जागि जाय तऽ समाज जागि जेतैक। मिथिलाक सर्वांगीण विकासक लेल जरुरी अछि जे मिथिलामे नव-रोजगार केर सृजन होय, नव-आर्थिक गतिविधि होय, अपन माटि-पानि केर प्रति प्रेम विकसित होय आ ओकर उद्धार लेल कदम उठाओल जाय। मिथिला केर एक-एक टा सरकारी कार्यालयमे भ्रष्टाचार कूटि-कूटि कें भरल अछि, छोट-मोट काज करबाब' लेल घूसँ देबऽ पड़े छैक, लोक सभ जते अन्न-अन्न लेल तरसैत छथि ओत्ता जँ घूसमे पाय दिये पड़े तऽ मानवता शर्मसार नञ होयत तऽ की हेतैक? ई दानवाकार भ्रष्टाचार, भूखमरी, कौसकिक बाढ़ि सँ कें लडतैक? छात्र आ मिथिला केर युवा सभकें लड़े पड़तैक, एकजुट होमऽ पड़तैक।

मिथिलाक अलग-अलग विश्वविद्यालयमे अओर महाविद्यालय सभमे पिछला किछु वर्ष सँ विद्यार्थी संगठन सभ नीक काज कऽ रहल छैक। चूँकि बिहारक राज्यपाल द्वारा ई घोषित कऽ देल गेल अछि जे 2018मे सभ महाविद्यालय आ विश्वविद्यालयमे छात्र संघक चुनाव हेतैक, अहि दुवारे वामपंथ सँ लऽ कऽ दक्षिणपंथ तक हरेक छात्र संगठन सभ महाविद्यालयमे सक्रिय रूप सँ छात्र हितक मुद्दा लेल छात्रक संग विश्वविद्यालयी प्रशासन केर खिलाफ ठाढ़ि भ' रहल छैक। एहेन तरहक गतिविधि बढ़ला सँ विद्यार्थी सभकें लाभ भ' रहल अछि, बीएनएमयू केर परीक्षा जे दू-दू वर्ष देर सँ चलैत छल सँ सनेह-सनेह पटरी पर अबैत देखार पड़ैत अछि। एतबे नञ विश्वविद्यालय परिसर सँ इतर सेहो अनेक विद्यार्थी संगठन यथा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् छात्र सभक मध्य दैनिक छात्र जीवन सँ जुडल समस्या सभक उन्मूलनक प्रयास सेहो क' रहल छैक। शहरक ट्रैफिक नियंत्रणमे पुलिसक सहयोग करब, अपराध केर खिलाफ जागरूकता पसारब, नशा आदि केर खिलाफ उन्मूलन रैली केर आयोजन करब विद्यार्थी संगठन सभ द्वारा कयल गेल प्रमुख कार्यमे सँ किछु उदाहरण अछि। पढाय केर संग एहेन तरहक कार्य करब मिथिलाक सर्वांगीण विकासमे मददगार सिद्ध होयत।

हालांकि एहेन तरहक विद्यार्थी संगठनक किछु समस्या सेहो अछि। बेसी संगठन कोनो नञ कोनो राजनैतिक दलक छात्र इकाई थिकैक जाहि कारणें एकरो सभक ध्यान मूल समस्यां सँ बेसी एहेन समस्या सभ पर बेसी रहैत अछि जाहि सँ समाजमे विभाजन उत्पन्न होय, जातीय आधार पर विद्यार्थी गुटमे विभाजित भ' जाय, ताकि ओ सभ कोनो ख़ास पार्टी कें वोट-बैंक बनि सकें हालाँकि, ई कहब उचित नञ होयत जे राजनैतिक चेतना केर विकास सर्वथा विभाजनकारी

होयत छैक, कियाकि अप्पन राजनैतिक मूल्य केँ चिन्हब सामाजिक सुदृढीकरण केँ परिचायक होयत छैक, अरस्तु एहेन राजनीति वैज्ञानिक केर मानब छल जे राजनैतिक चेतना सँ विकासक मार्ग प्रशस्त होयत अछि। मुदा, कम पढ़ल-लिखल लोक वेद केँ राजनीति केर नाम पर राजनैतिक कठपुतली स्वरुप इस्तेमाल करबा सँ मिथिला समाजमे अलग तरहक समस्या उत्पन्न भ' रहल अछि।

छात्र चेतना केर दिशामे मिथिला स्टूडेंट यूनियनक गठन 2015मे मिथिलाक लेल निश्चित रूप सँ एकटा क्रांतिकारी कदम सिद्ध भेल। अप्पन घोषित दस्तावेजक अनुसार मिसू (मिथिला स्टूडेंट यूनियन) पूर्ण रूपेण एकटा अराजनैतिक संगठन अछि जकर ध्येय मिथिलामे व्याप्त अनेक विसंगति आ समस्या सभक उन्मूलन थिक। हालमे ई संगठन द्वारा ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय केर बाहर एकटा पैघ आन्दोलन कयल गेल जकर लक्ष्य विश्वविद्यालयमे व्याप्त कदाचार केँ दूर करब आ पठन-पाठन केँ दुरुस्त करब छल। आंदोलनक प्रभाव सँ विश्वविद्यालय केर कुलपति केँ हिनक सभक मुख्य मांग केँ मानऽ पड़लनि। अनेक छात्र केँ पुलिसक बर्बरता केर शिकार होमऽ पडलनि मुदा मिथिलाक शिक्षा व्यवस्था दुरुस्त करबाक दिशामे ई एकटा क्रान्तिकारी कदम छल। 2017 केर कोशीक बाढ़िमे एहि संगठनक सेनानी द्वारा बाढ़ि राहत केर कार्य तत्परता सँ कयल गेल। पंडौलमे चीनी मील फेर सँ चालू कराब' लेल ओ सभ एकटा सतत आंदोलनक सूत्रपात कयलाह, दरभंगा, सहरसा आ पूर्णिया केँ स्मार्ट सिटी केर लिस्टमे शामिल कराब' लेल दिल्लीक जंतर मंतर पर आन्दोलन कयलाह। ई तरह सँ देखल जाय त' मिथिलाक विकासक हरेक आयाम पर ई संगठन एकटा चरणबद्ध तरीका सँ कार्य क' रहल छैक। एहेन तरहक अओर संगठनक आवश्यकता मिथिलामे अछि कियाकि एखनो धरि मिथिला केँ जखन गप्प होयत अछि त' गप्प दरभंगा आ मधुबनी धरि ओझरा केँ रहि जायत अछि।

कहल जायत अछि जे छात्र शक्ति राष्ट्रक शक्ति होयत अछि, जँ छात्र सुशिक्षित आ संगठित भ' जाय त' राष्ट्रक निर्माण सुलभ भ' जायत। एहेन कोनो क्षेत्र नञ अछि जत' छात्र अप्पन ज्ञान-शील-एकता सँ समाजक योगदानमे मदद नञ कऽ सकताह। आय मिथिलामे बेरोजगारी केर समस्या सुरसा जेना मुह खोलने छैक, जं मिथिलाक छात्र नीक सँ पढ़ि-लिखि मिथिलामे स्टार्टअप सभक शुरुवात करताह तऽ स्वरोजगार संगे अन्य बेरोजगार सभक लेल नव रोजगार केर स्रोत सेहो बनताह। अनेकानेक चीनी मील, सहरसा केर पेपर मील बंद पडल अछि, मिथिलामे पानि सँ खाली विप्लव आबि रहल अछि, वएह ठाम सुखाड़ बला राज्य सभ तकनीकि केँ बल पर पानिक व्यवसाय ठाढ़ि कऽ सील-पैक पानि बोतलक ब्रांड ठाढ़ि केँ लेलक, छात्र-शक्ति जँ ठानि लिए त' मिथिला मीठ-शीतल पानिक वैश्विक निर्यातक बनबाक क्षमता राखैत अछि सेहो बड्ड कम लागतमे। सामजिक उत्कर्षक लेल आर्थिक उत्कर्ष अत्यंत आवश्यक थिक। छात्र शक्ति केर ई रूप केँ जन-शक्तिक नाम दैत यात्री जी लिखने छलाह

सम्मिलित स्वेच्छा प्राणोदित जयति जय जन शक्ति!

हृदयमे अछि एक
केवल तोहरेटा भक्ति
कृषक श्रमिकक
जीवनों केँ बनबिहह पुनिवेद
आय नञ तं काल्हि
दानवदलक करबह अबस्सँ उच्छेद
लैत प्राचीनक सगुण सद्ज्ञान
लोक हितमे लगबिहह
अपना युगक विज्ञान
कियो ने रहते अकिंचन,
सब हएत लक्ष्मीवान
सबहि कर्मठ सबहि
भोगी हएत सभ विद्वान
एहि धरतीक ओहि
स्वर्गक दिव्य सुख जं हम कदाचित्
भोगि नञ पओलहूँ
तखन भोगत हमर संतान
आइए हम मुक्तकंठे
करइछी जनताक तैं जय-गान।

राष्ट्र एवं राज्य स्तर पर अनेकों एहेन नेतागण छथि जे लोकनायक जयप्रकाश नारायण केर सम्पूर्ण क्रान्ति आंदोलन सँ ठाढ़ि भेल छथि जाहिमे बिहारक वर्तमान मुख्यमंत्री श्री नितीश कुमार सँ ल' क', उपमुख्यमंत्री श्री सुशिल मोदी, पूर्व मुख्यमंत्री श्री लालू यादव आ केन्द्रीय मंत्री श्री रवि शंकर प्रसाद धरि केर नाम शामिल अछि, मुदा 1970 केर ओ दशक केर पश्चात बिहारमे कोनो छात्र आन्दोलन नञ भेल। सम्पूर्ण क्रान्ति केँ तर्ज पर आब मिथिलामे छात्र सभकेँ एकटा मैथिल क्रान्ति अनबाक जरुरत अछि जाहि सँ मिथिलाक दारुण अवस्था केँ देश केँ समक्ष प्रस्तुत कयल जाय आ ज्ञान एवं दर्शन केर ई प्रातापी भूमिक अप्पन पौराणिक गौरव केँ फेर सँ स्थापित कयल जाय, ई तखने संभव भ' सकत जखन मिथिलाक छात्र मिथिला निर्माण आ सर्वांगीण विकासक बीड़ा अप्पन कन्हा पर लेताह।

मिथिलाक सामाजिक विकास

✍ डॉ. सविता झा खान

जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, दिल्ली वि.वि. मे इतिहास संकायमे अध्यापन। हिनकर अंग्रेजीमे दु गोट पोथी प्रकाशित। राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकामे नियमित स्तम्भ लेखन।

संपर्क : बीई 7बी, डीडीए फ्लैट, मुनिरका, दिल्ली-67
ईमेल: savita.khan@gmail.com

✍ अमित आनन्द

संस्थापक सदस्य, सेन्टर फ़ॉर स्टडीज ऑफ ट्रेडिशन एंड सिस्टम्स (आईसीटीएस)।

संपर्क : वीणायतन, महिषी, सहरसा, (बिहार) 852216
ईमेल: amit.mahishi@gmail.com

पौराणिक ग्रन्थ देवी भागवतमे मिथिलाक प्रजाक सदाचार आ समृद्धिक मनोरम वर्णन कैल गेल अछि –

प्रविष्टो मिथिला मध्ये पश्यन् सवर्द्धिमुत्तमाम्। प्रजाश्च सुखिता: सर्वा: सदाचारा: सुसंस्थिता।। (देवी भागवत: 11-14वीं सदी)

आब प्रश्न ई उठैत अछि जे जतय जाहि मिथिलामे, सामान्यतया संकट आ संक्रमण कालमे सेहो ऊपर वर्णित सदाचार आ प्रजा कें समृद्धि आ सुख कें दृश्य उपस्थित होइत छल, ओकर समाज आ सामाजिक सरंचना सुदृढ़ रहय, ओतय संक्रमण काल सँ पहिने आ बाद कें सामाजिक स्थिति केहन रहय, ओकर समाज कें ऐतिहासिक विश्लेषण कुन रूपें समुचित विकास वा ह्रास कें वर्णन करैत अछि। सर्वविदित अछि जे मिथिला कें अस्तित्व एक भौगोलिक-सांस्कृतिक सत्ता कें मादे अदौ काल सँ चलैत आबि रहल छैक, जेकर चौहद्दीमे नेपाल कें एक हिस्सा सेहो अबैत छैक, मैथिली भाषा एहि प्रदेशक भाषा कें रूपमे एकसूत्रमे बान्हबाक काज करैत आबि रहल अछि‌‌ राजनैतिक संप्रभुता सेहो एहि क्षेत्र कें बहुत दिन धरि किछ अंशमे भेटल सँ मानल जा सकैत अछि, एकटा रुचिगर तथ्य एहो अछि जे मिथिलामे शाषण करय वला तीन टा राजवंश कें जातीय संरचना, कर्नाट-क्षत्रिय आ ओइनवार, खान्डवाल-मैथिल ब्राह्मण समुदाय सँ आयल, जाहि सँ एकर सामाजिक संरचनाक बोध होइत अछि आ उच्च वर्णक वर्चस्व कें तरफ इंगित करैत अछि मुदा प्रश्न एहो थिक कि ई वर्चस्व कुन रूपें मैथिल समाज कें विभक्त वा संपृक्त राखलक? वर्चस्व कें मुख्य चिंता की छल? ओ समाज कें कुन तरह सँ संचालित करैत रहल आ एहीमे समयांतरमे कत्ते परिवर्तन कें समावेश भेल?

ई सब किछु प्रश्न अछि जे समीचीन अछि आ एकर उत्तर हमरा लोकनि कें विभिन्न कोण सँ बुझय-परखे परत, हमरा बुझने मिथिला कें चलैत आबि रहल ज्ञान परंपरा एक दृष्टिकोण भ सकैत अछि ओकर सामाजिक दृष्टि पर्याप्त झलक पबैत अछि संगहिं ई स्मरण राखय परत जे याज्ञवल्क्य एहन मनीषी धर्म कें संकल्पना आ निर्णय बुझबा लेल मिथिला कें व्यवहार कें नियामक मानलाह जे ओकर समाज सँ निस्सृत छल, सामाजिक आ सामाजिक निर्देश (उचित-अनुचित कें बोध) सँ मांजल व्यवहार कउनु प्रदेश कें पहचान, ओकर मानक होइत अछि आ सामाजिक विकास वा ह्रास तय करबाक लेल ई एकटा प्रमुख अवयव मानल जा सकैत अछि। संगहि ओकर ज्ञान परंपरा आ सामुदायिक चिंतन सेहो सामाजिक वृहत्तर दर्शन कें तरफ किछु प्रकाश दैत छथि, अहि सामाजिक समरसता, सामुदायिक परस्परता आ हिंसा कें समाजमे उपस्थिति-अनुपस्थिति एक प्रमुख निर्णायक मानल जा सकैत अछि

किएक तऽ अजुका समय केँ वैश्विक स्तर पर सबस पैघ समस्या, क्राइसिसँ हिंसा आ सांप्रदायिक संबंधी छैक, ओ हिंसा चाहे स्त्री आ अशक्त केँ प्रति होए वा ओकर रूप विभिन्न प्रकारमे विभक्त होई, देखबाक एहो आवश्यक जे समाज एहि हिंसा केँ विभिन्न प्रकार सँ केना सन्मुख होइत अछि, परिमार्जन, अभिव्यक्ति आ स्पेसँ ओही समाज केँ प्रबुद्ध, शास्त्रीय आ लोक परंपरा सबमें विद्यमान अछि वा नञ।

नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो केँ डाटा मिथिला क्षेत्र केँ एकटा अत्यंत महत्वपूर्ण तथ्य केँ तरफ इंगित करैत अछि जे अतय आन क्षेत्र केँ तुलनामे हिंसा केँ घटना सामान्यतया कम देखल जाएत अछि, हिंसा केँ जघन्यता सेहो कम लोमहर्षक रहैत अछि, संगहिं चौदहवीं सदी सँ चली आबि रहल विद्यापतिक धर्म केँ सेक्युलर अवधारणा केँ एहि क्षेत्र केँ सामुदायिक समरसतामे लोकेट कयल जा सकैत अछि, लोक केँ विशाल संसार कखनहूँ एहन पुष्पित, पल्लवित आ सुदृढ़ ओत्तही नञ रहत जतय केँ समाज समावेशी, समन्वयकारी आ लोकरंजक नञ होयधरहत, मिथिला समाज केँ लोक-बेद समावेश केँ प्रक्रिया आ दृष्टि बहुत परिपक्व रहल अछि, एकर प्रकृति केँ प्रति संवेदनशीलता (विभिन्न वर्ग, वर्ण आ जाति के) अहि समाज केँ एक सु-शील समाज, विकसित समाज केँ श्रेणीमे ठाढ़ करैत अछि। विकास केँ मात्र अर्थ परिप्रेक्ष्यमे बुझबाक प्रयास बहुत एकांगी आ विनाशकारी भऽ सकैत अछि आ ई सहजहिं वैश्वीकरण केँ अवसान, ह्रास आ संकटमे देखल जा सकैत अछि, ताहि प्रकरणमे इहो उल्लेख उचित होयत जे एकमात्र मैथिल समुदायमे नव पूंजीवाद केँ पसारल छद्म विकास केँ उत्तर-प्रत्युत्तर, विद्यमान अछि ई उत्तर प्रथम दृष्टया मैथिल समाज केँ 'कण खाक पानि पीब' (न्यूनतममे जीयब) नञ केवल सस्टेनेबल विकास केँ मूल मंत्र भऽ सकैत अछि वरन मैक्सिमम गुड फॉर मैक्सिमम पीपल (अधिकतम लोक केँ संख्यामे अधिकतम भलाई) एकर वेलफेयर उन्मुख समाज हेबाक तरफ इंगित करैत अछि मुदा ई कतहु सँ अहि आलेख केँ प्रयास नञ बुझल जाय जे बिकौआ प्रथा सऽ लऽ कऽ यात्री आ अन्यान्य साहियकार द्वारा कान पकरि कऽ मोचारल गेल सद्प्रयास कतहु सँ अनदेखा करबाक योग्य अछि, ओ साहित्य केँ धर्म छल जाहिमे समाज केँ ओकर दर्पण देखेलक।

आब साहित्य जाहि ज्ञान, दर्शन आ शिक्षा प्रणाली सँ निकलि रहल छल ओकर दिशा निर्देश समाज सँ केना निकलि रहल छल ई मात्र स्त्री-पुरुष विद्यालयी एनरोलमेंट आ प्रतिशत सँ नञ बुझल जा सकैत अछि, जेना आय हमसभ जहन शिक्षाक संदर्भमे चिंतनशील होएत छी, त सबस पैघ बिंदु शिक्षा आओर शैक्षणिक संस्थानक स्वायत्तता होएत अछि। शिक्षाक जिम्मेदारी आओर गुणवत्ताक नाम पर औपनिवेशिक कालमे जखन राज्यक अनेक किसिमक सरंचना कए ठाड़ करब शुरू केलक, त सबस पहिल आघात नञ खाली भारतीय प्रांतीय भाषाक पहुंचल, बल्कि पाठ्यक्रममे शामिल कैल गेल विषय आओर ओकर रूपरेखा भारतीय सामुदायिक आओर सभ्यतामूलक संदर्भ सँ नञ छल। एतय कऽ लोकप्रचलित ज्ञान परंपरा कए, ओकर समाज आओर ओहि सँ उपजल दर्शन परंपरा कए भीषण आघात पहुँचाएल गेल। सवाल ई अछि जे आब एकरा कोन ज्ञान-परंपरामे राखल जाए आओर ओकर भौतिक-सांस्कृतिक कर्म-स्थल कतय होए? एहिक उत्तर कतहूँ न कतहूँ हमर गाममे नुकायल अछि, हमर दृष्टि सँ गुजरल भारतक आन गाम जेंका संभवतः मिथिलाक गाममे पिछला सदी तक फल-फूल रहल, स्वायत्त ज्ञान परंपरा (जे किछु खास गाममे कम-से-कम संसाधनमे नैयायिक आओर मीमांसक घर सँ चलैत छल), जाहिमे राज्य आ कोनो आन सत्ता नञ तऽ पाठ्यक्रम तय कए रहल छल नहिए डिग्री आाओर परीक्षाक ई विकृत, जानलेवा, बाजारोन्मुखी, भौतिकवादी स्वरूप कतहूँ सँ ग्रामीण लोकक समाज पर ई कदर हावी छल जे आजुक सबस पैघ समस्या बेरोजगारी कए महामारी बना दैत। अपेक्षा ज्ञान संकलन आओर आत्मविद्या सँ परिमार्जनक छल, महज रोजगारक नहि। मनुष्य कए, युवा कए महज रोजगारक माध्यम नञ बुझल जा रहल छल, एहि ज्ञान परंपराक ह्रास सँ संभवतः राज्य, रोजगार आओर शिक्षा कए आवंटन करयबला प्रबल शक्ति बनैत चलि गेल आओर लोकक, गामक स्वायत्तता अपन आत्मविद्याक बल पर एकटा पुख्ता रिस्पांस नञ ठाढ़ि कए सकल, जे राज्याश्रय केर बिना सेहो अपन ज्ञान-परंपरा कए अक्षुण्ण रखि सकैत छल आओर आजुक हालत ई अछि जे हम दान नहि, बल्कि अनुदानक कुचक्रमे अपन स्वायत्तता केँ खोजबाक भागीरथ आओर असफल प्रयास कए रहल छी।

ओतय मिथिलाक कलेक्टिव विजडम, विपन्नताक विलास आओर कॉमन रिसोर्सेजक स्वतःस्फूर्त लोकक उत्पत्तिक बड्ड रोचक नमूना छल, ई किस्सा दरभंगाक दग्धरिधचमैनिया पोखरिक उत्त्पतिक छल, कैक परत आओर प्रतीक

सँ गुजरैत ई खिस्सा (अयाची मिश्र, शंकर मिश्र, चमैन, दान) अंततः जलक श्रोत पर ठहरि गेल कि केना एकटा चमैन बड्ड रास धन भेटबा पर अपन मूल गुण (स्किल) सँ च्युत होनाए नञ चाहैत अछि, ओ पोखर खुन्हवाए कए अंततः एकटा सर्वसामान्यक हितमे निर्णय लैत अछि।

आखिरकार दर्शनक एहि सँ उजागर चरित्र हम कतय ताकि सकब, जतय जनसामान्यक जीवन एकटा दर्शन, नीति सँ चलैत होए? संभवतः एतबा स्वायत्तता बिरले आय कोनो विवि वा शैक्षणिक संस्था सीखा पाबए। मुद्दा ई अछि जे ई लेयर्ड विजडम गेल कतय? पोखरि कतय गेल आओर जातिगत प्रपंच कए एहन प्रकरण सब किएक नञ दिशा दिखा पाओल?

चौदहवीं-पंद्रहवीं शताब्दीक सुप्रसिद्ध मैथिल विद्वान अयाची (भवनाथ मिश्र) आओर शंकर मिश्रक चौपाड़ी (गांव सरिसबक बीच एकटा खाली जगह) टा एहिक ज्ञानक केँद्र छल। कोनो भवन, राजभवन आओर राज्यक इंफ्रास्ट्रक्चर पर आश्रित भए हिनक ज्ञान परंपरा दम नञ तोड़लक, बल्कि गामक खुला परिवेशमे बिना कुनू बंधन, भेदभावक बाध्यताक बगैर हुनकर ज्ञानक विमर्श चलैत रहल। एखन किछु दिन पहिनञ ओ परिचर्चा आओर चमैनिया डाबर सरिसब गाममे पर विमर्श कए ई साबित कए देलक जे भारतक गाम मरत नहि, नहिए ओकर लोक ऊर्जा कम होएत आओर नहिए ओतयक ज्ञान-परंपराक आत्मविद्या तत्त्वक प्रति विश्वक रुझान कहियो कम होएत। किएक गांधीक भारत वैह साकार अछि आओर एहि ज्ञान-परंपरा कए ओ 'सुंदर वृक्ष' कहने छल, जाहिमे उपनिवेशक प्रतिरोधक भरपूर बीज छुपल छल आओर जे आजुक सेहो नव उपनिवेशवादक एकटा व्यापक रिस्पांसँ (प्रत्युत्तर) देबाक माद्दा रखैत अछि, बशर्ते कि ज्ञान परंपरा कए ओहिक मूल ग्राम्य परिवेश सँ जोड़िकए कोनो विकासक मॉडल तैयार होए। सवाल इहो अछि जे पंद्रहवीं सदक शंकर मिश्रक चौपाड़ी जेहन ज्ञान-परंपरा, शिक्षाक प्रारूप पर अखनो तक विमर्श किएक नञ भए रहल अछि। किएक आजुक राज्य आओर लोक एहन ओपन स्पेसक स्वायत्तता कए मूल्य नञ दए रहल अछि? आखिरकार एकटा गाम ओकर ग्रामीणक कलेक्टिव विजडम सँ एतबा पैघ बीड़ा उठाकए ई साबित कए देलक जे गाम अखैन धरि मरल नञ अछि आओर शंकर मिश्रक चौपाड़ि अपन स्वरूप बदलिए कए फेर सँ ज्ञान-परंपराक केँद्र बनबाक क्षमता रखैत अछि।

मुदा प्रश्न ई अछि जे कि मिथिलाक गाम, आ मौलिक रूपें भारत आ मिथिला केँ प्राणाधार ग्रामीण समाज अप्पन दिशा आ विकास केँ रूपरेखा तय करबामे कतेक सफल आ मौलिक रही सकत ई आजुक आर्थिक प्रपंच आ संरचनामे कहब कनी कठिन जरूर अछि तैयो मिथिलाक सामाजिक विश्लेषण अजुका दिल्लीमे, मैथिली मातृभाषामे करबाक आ कऽ सकबाक आशय बहुत पैघ अछि आ हम सब आशावादी छी।

आबी... हाथ बढ़ाबी...

अखिल भारतीय मिथिला संघ मिथिला, मैथिली आ मैथिल संस्कृतिक संवर्द्धन आ संरक्षणक लेल सदिक्खन प्रयासरत अछि। एहि प्रयासमे अपने सबहक सहयोगक अपेक्षा सेहो राखैत अछि। जों अहां एहि पुनित काजमे बाटक संगी बनबाक इच्छा रखैत छी त अपनेक स्वागत अछि। निर्धोक संपर्क करि

विद्यानंद ठाकुर
महासचिव
(9717539000)

विजय चन्द्र झा
अध्यक्ष
(9650461788)

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

मुख्यमंत्री मेधावी विद्यार्थी योजना

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

“ माननीय मुख्यमंत्री, श्री शिवराज सिंह चौहान की पहल पर **'मुख्यमंत्री मेधावी विद्यार्थी योजना'** के अंतर्गत प्रदेश के प्रतिभावान छात्रों की उच्च शिक्षा का खर्च शासन द्वारा वहन किया जाएगा। ”

दीपक जोशी
राज्य मंत्री, तकनीकी शिक्षा एवं कौशल विकास (स्वतंत्र प्रभार), श्रम, स्कूल शिक्षा, म.प्र.

योजना की प्रमुख विशेषताएं

- **इंजीनियरिंग:** कोई भी विद्यार्थी जिसका JEE मेन्स परीक्षा में रैंक 50 हजार के अंतर्गत हो। अगर विद्यार्थी किसी भी शासकीय अथवा अशासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश प्राप्त करता है तो शासकीय कॉलेज की पूरी फीस राज्य शासन द्वारा वहन की जावेगी। साथ ही प्रायवेट कॉलेज की फीस 1.5 लाख रुपये या वास्तविक शिक्षण शुल्क जो कम हो राज्य शासन द्वारा वहन की जावेगी।
- **मेडिकल:** जिन छात्रों ने राष्ट्रीय पात्रता और प्रवेश परीक्षा (NEET) से मेरिट पाकर देश के किसी भी केन्द्र या राज्य सरकार के मेडिकल कॉलेज अथवा मध्यप्रदेश में स्थित प्रायवेट मेडिकल कॉलेज के एमबीबीएस पाठ्यक्रम में दाखिला प्राप्त किया हो। शासकीय मेडिकल कॉलेज में विद्यार्थियों की पूरी फीस एवं निजी क्षेत्र में देय शुल्क राज्य शासन द्वारा वहन किया जावेगा।
- **विधि:** CLAT (कॉमन लॉ एडमिशन टेस्ट) के माध्यम से देश भर में राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालयों (NLU) में बारहवीं कक्षा के बाद एडमिशन वाले कोर्स की पूरी फीस राज्य शासन द्वारा वहन की जावेगी।
- मध्यप्रदेश में स्थित भारत सरकार तथा राज्य सरकार के प्रमुख संस्थान जैसे योजना तथा वास्तुकला विद्यालय, भोपाल (SPA), IIM इंदौर के 5 वर्षीय इंटीग्रेटेड पोस्ट ग्रेजुएशन प्रोग्राम के कोर्स की पूरी फीस राज्य शासन द्वारा वहन की जावेगी।
- राज्य शासन के सभी कॉलेज जिसमें बी.एस.सी., बी.ए., बी.कॉम., नर्सिंग, पॉलिटेक्निक तथा स्नातक स्तर के सभी पाठ्यक्रमों की पूरी फीस राज्य शासन द्वारा वहन की जावेगी।

पात्रता की शर्तें

- विद्यार्थियों का मध्यप्रदेश का निवासी होना आवश्यक
- विद्यार्थी के पिता/पालक की वार्षिक आय रु. 6 लाख से कम हो
- वर्ष 2017 में माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा आयोजित 12वीं की परीक्षा में 75% या उससे अधिक अंक अथवा सी.बी.एस.ई./आई.सी.एस.ई. द्वारा आयोजित 12वीं की परीक्षा में 85% या उससे अधिक अंक

- पात्र विद्यार्थी **www.mptechedu.org** एवं **www.scholarshipportal.mp.nic.in** पर अपना रजिस्ट्रेशन करवा आवेदन प्रस्तुत करें तथा आवश्यक दस्तावेज अपलोड करें।
- पात्र विद्यार्थी योजना सम्बन्धित जानकारी हेल्पलाइन मेल आईडी **mmvyhelpline.dte@mp.gov.in** से प्राप्त कर सकते हैं।
- जिन पात्र विद्यार्थियों ने योजना प्रारम्भ होने से पूर्व शुल्क जमा कर दिया है। उनके शुल्क वापसी की कार्यवाही की जा रही है।
- **सी.एम. हेल्पलाइन नं.: 181**

तकनीकी शिक्षा एवं कौशल विकास विभाग, मध्यप्रदेश

मिथिला पेंटिंग आ मिथिलाक स्त्री विकास

✍ संजू दास

लेखिका मिथिलाक पेंटिंगक लब्धप्रतिष्ठ कलाकार छथि। हिनक कलाकृति सब देश-विदेशमे बहुत लोकप्रिय छनि। एहि क्षेत्रमे अपन योगदानक वास्ते ओ बिहार सरकार आ बहुत रास आन संस्था सबसँ सम्मानित भ' चुकल छथि।

संपर्क :
शालीमार गार्डन,
साहिबाबाद
मो. 9899242017

आधुनिक कलाक इतिहास पढ़ला सँ एक बात त' साफ-साफ बुझा जाइत छैक जे कला इतिहासकार लोकनि एकहुटा स्त्री कलाकार केँ कला इतिहासमे जगह देमय नै चाहैत छलाह। हमर मानब ई अछि जे ई बात संभव नै छै जे एकउटा स्त्री नीक कलाकार नै भेल हेती। हमरा सभक लेल ई गौरवक गप अछि जे अपन मिथिला कलाकेँ जे लोकनि इतिहास लिखलनि आ भविष्यमे लिखताह ओ स्त्री कलाकारक जिक्र केँ बिना नै नञ लिखी सकैत छथि। ई कला मिथिलाक नाम त' विश्व भरिमे केबे केलक एतुका स्त्री समाजक उत्थान सेहो केलक।

कल्पनिकता सँ परिपूर्ण आ कला - सिद्धांतक दबाब सँ मुक्त भेलाक कारण कोनो लोककलामे विशुद्ध सौंदर्य आ सहजताक अहसास होइत छैक। एहि कलामे अपन देशक माटिक सुगंध आ परंपरा सँ जुड़बाक अहसास सेहो देखल जाइत छैक। बिहारक मिथिला संस्कृतिक प्रतीक मिथिला पेंटिंग आइ भारत देश टा नञ विश्वकला परिदृश्यमे सबस चर्चित लोककला मानल जाइत अछि। मिथिलाक जन-जीवन, पूजा-पाठ, संस्कृति-संस्कार सब किछु केँ समावेश एहि कलामे भेटैत छैक। मिथिला कलाक रोजगार बिहारक महिला सशक्तीकरण त' करबे केलक संगहि देश-विदेशमे बिहार केँ गौरवान्वित सेहो कयलक। आइ मिथिलांचल क्षेत्र बिहार राज्यक लेल गर्वक बात मानल जाइत अछि जतय बहुत रास लोककला आ हस्तशिल्प सँ जुड़ल राष्ट्रीय व पद्म पुरस्कार सँ सम्मानित कलाकार निवास

करैत छथि। आब ते बहुत रास नाम छथि जिनका राज्य स्तरीय आ राष्ट्रीय पुरस्कार भेट चुकल छनि मुदा सबस पहिने 1970मे जगदंबा देवीकेँ राष्ट्रीय पुरस्कार आ पद्मश्री सँ सम्मानित कयल गेल, तेकर बाद देशमे एहि कलाक प्रति सम्मान बढ़ल। ओकर बाद गंगा देवी, सीता देवी आ महासुंदरी देवी, बौआ देवी सेहो पद्मश्री सँ सम्मानित भेली। सीता देवी आ गोदावरी दत्त केँ शिल्पगुरु पुरस्कार सेहो भेटलनि। गंगा देवी, जगदंबा देवी, सीता देवी, यशोदा देवी, यमुना देवी, चानो देवी, शांति देवी, महासुंदरी देवी, चंद्रकला देवी, गोदावरी दत्त, बौआ देवी, बटोली झा, सत्यनारायन कर्ण आ मोती कर्ण सहित कतेको कलाकार लोकनि इ कला केँ अन्तरराष्ट्रीय ख्याति दियोलनि जाहिमे बेसी स्त्री कलाकार छथि। कर्पूरी देवी, शशिकला देवी, सुभद्रा देवी, उर्मिला देवी, सीबन पासवान, रौदी पासवान, अन्नपूर्णा देवी, इन्द्रकला देवी, काली देवी, भारती दयाल, कुसूम दास, रानी झा चर्चित कलाकार छथि। आइयो सन्तोष दास, शरद कुमार, विभा दास, चन्द्रभूषण कुमार, पुष्पा देवी, मनीषा झा आ विमला दत्त सन कतेको कलाकार छथि, जिनकर कलाकृतिक मांग कला बाजारमे बेसी छैक। गंगा देवी, महासुंदरी देवी, सीता देवी, बौआ देवी, शशिकला देवी, मनीषा झा, अन्नपूर्णा देवी, इन्द्रकला देवी, काली देवी, सपना कर्ण, वीणा दत्त, विद्यादेवी, धीरेन्द्र, इन्द्रकान्त झा, सुदामा देवी, रूधन देवी केँ पेंटिंग सैफरौन आर्टक निलामीमे सेहो शामिल कयल गेल इ गर्वक बात अछि।

जे लोकनि एहि कलाकेँ मधुबनी पेंटिंग कहैत छथिन हुनका नीक जकां नञ बुझल छैन्ह कियैक त' मधुबनीये टा नञ बल्कि सम्पूर्ण मिथिलाक दीवार आ आंगनमे म्यूरल वा अरिपनक रूपमे जरूर देखवामे आओत। रांटी, मंगरौनी, जितवारपुर, रशीदपुर, राजनगर सिमरी, चिचरी, सलेमपुर, बरहेता गाम बेसी चर्चित अछि मुदा सम्पूर्ण मिथिलामे लगभग 25 हजार लोक एहि कला व्यवसाय सँ जुड़ल छथि। शादी-विवाह आ पावनि-तिहारक अवसर पर इ कला सब जातिमे आइयो प्रचलित अछि। पहिने धार्मिक विषय आ धार्मिक चरित्र चित्रण करबाक लेल प्राकृतिक रंगक प्रयोग होइत छल मुदा आब नव-नव विषय केँ चित्रण आ बाजारमे उपलब्ध एकैलिक, फैब्रिक आ एनामेल सब रंगक का प्रयोग होमय लागल। इ कला आब कोहबर घर केँ देवालक म्यूरल, आंगनक अरिपन सँ बाहर निकलि कय कागज, कपड़ा आ कैनवसक माध्यम सँ दुनिया भरिमे पहुंच चुकल अछि। एकर शुरुआत कहिया आ केना भेल एकर प्रमाण तें नञ भेटैत अछि मुदा रामायणमे सीता स्वयंवरक दौरान राजा जनक द्वारा घर-आंगनक सजावट एहि चित्र सँ करबाक चर्चा जरूर भेटैत अछि। 1934 ई केँ भूकंपमे ब्रिटिश अधिकारी डब्लू.जी. आर्चर द्वारा खींचल फोटो दुनिया भरिमे छपल। ताहि फोटोमे टूटल-फूटल घरक देवाल पर बनल पेंटिंग देखिक दुनिया भरिमे एकर चर्चा भेल। एतेक धरिजे पिकासो आ मीरो जकां कलाकारक रेखांकन सँ एकर तुलना होमय लागल। फेर 1966 ई. केँ अकालक बाद हस्तशिल्प विभागक निदेशक पुपुल जयकर आ मुंबई केँ भास्कर कुलकर्णी नामक कलामर्मज्ञ केँ मिथिलाक स्त्री कलाकार लोकनिक उत्साहवर्द्धनक लेल पठाओल गेल। ई लोकनि ओतय गेला पर कलाकार सब सें अनुरोध कैलनि जे अहां सब जे कलाकृति देवाल पर बनबै छी ओकरा कागज पर बनाउ कियैक ते ओकर बिक्री सँ अहां लोकनि केँ आर्थिक लाभ भेटत आ भविष्यमे अहांक आजिविकाक साधन सेहो बनत।

कतेक बरख बाद आब हुनक सपना साकार भेलनि आई मिथिला पेंटिंग बहुत रास परिवारक लेल रोजगारक साधन बनि गेल। दिल्लीमे दिल्ली हाट बिहार इम्पोरियम, सेन्ट्रल काटेज

इम्पोरियम आ क्राफ्ट म्यूजियम स्थित एकर बिक्री केन्द्र आई चर्चित बाजार मानल जाइत अछि। अमरीकाक संस्था एथनिक आर्ट फाउंडेशन द्वारा मधुबनीमे एहि कलाक विकासक लेल 'मिथिला कला संस्थान' 2003 ई. मे शुरू कैल गेल। ई संस्था द्वारा दिल्ली केँ हैबीटैट सेंटरमे एकटा चर्चित प्रदर्शनीक आयोजन सेहो कैल गेल। 1970 ई. मे अमेरिका केँ रेमंड ओएसँ आ जर्मनी केँ इरेका मोजेर मधुबनी शोध करय लेल आयल छली। मिथिला चित्रकला पर आइ धरि हिन्दी-अंग्रेजीमे कतेको पुस्तक प्रकाशित भ' चुकल अछि। इब्सँ वैक्यू केँ लिखल 'आर्ट ऑफ मिथिला', मुल्कराज आनंदक 'मधुबनी पेंटिंग', ज्योतिन्द्र जैनक 'गंगा देवी-ट्रैडीसंसँ एंड एक्सप्रेसंसँ इन मिथिला पेंटिंग', कृष्ण कुमार कश्यपक 'मिथिला चित्रकला', आ अवधेश अमन आ उपेन्द्र ठाकुर द्वारा लिखल पुस्तक खूब चर्चित भेल। ओना तें जापानक हासेगावा म्युजियममे मिथिलाकेँ सब वरिष्ठ कलाकारक कलाकृति संग्रहित अछि मुदा नीक होइत यदि भारतमे सेहो ऐहेन कोनो संग्रहालय बनैत जेकरा भारत केँ आबै वाला पीढ़ी देखिक गौरवान्वित होइत।

मुदा शहरमे जे बेसी मैथिल परिवार रहैत छथि हुनको ड्राइंग रूममे मिथिला पेंटिंग नञ भेटत। एतबै नञ गामो-घरमे आब देवाल पर सीनरी भेट जायत मुदा मिथिला पेंटिंग नञ भेटत। एखन धरि एहि कलाक लेल कोनो संग्रहालय मिथिलेमे नञ मुदा सम्पूर्ण भारत देशमे नञ बनल अछि।

मिथिला कलामे रोजगारक संभावना : सम्पूर्ण मिथिला ते नञ, मुदा किछ गाममे अवश्य इ कला रोजगारक प्रमुख साधन बनि गेल छैक। कोनो कलाकेँ रोजगार बनेबाक लेल कलाकारकेँ लगातार काज करय पड़ैत छैक आ अपनाकेँ कलाकार जकां प्रचारित सेहो करै पड़ैत छैक एतबै नञ ओकर बिक्री लेल सेहो प्रयत्नशील रहय पड़ैत छैक।

मिथिला पेंटिंगकेँ व्यवसायीकरण: व्यवसायीकरण शब्दकेँ लोक गलत नजरि सौं व्यवहार करैत छथि मुदा हमर अपन विचारजे कोनो कलाक विकासक लेल व्यवसायीकरण जरूरी छैक। व्यवसायीकरण के लाभ छै तें किछु हानि सेहो छै। लाभ ई भेल जे मिथिलाक स्त्रीगण आर्थिक रूप सें सबल भेली बिना पढ़लो-लिखलो स्त्रीगण देश-विदेश घुमि अएली। हानि इ भेल जे आब बेसी कलाकार मौलिक काज नञ कयक नकल करैत छथि। बेसी चर्चित कलाकार लोकनि दोसरा सें काज करबय लगलाह।

एहिसँ जुड़ल कलाकारक स्थिति: किछु कलाकारक नीक स्थिति छैन जिनका संपर्क छनि मुदा बेसी कलाकार एकरा मजदूरीसँ नीक बुझिकय कय रहल छथि। आ कलाकार बला सम्मानो भेटैत छनि।

एहि क्षेत्रमे आबय लेल अवश्यक प्रशिक्षण आ संस्थान : अपन समाजमे सबहक माय बहीन एहि कलाक प्रशिक्षण दैत छथिन, मुदा एखन धरि मधुबनी स्थित मिथिला आर्ट इंस्टीट्यूट नीक कला संस्थान मानल जाइत छैक। कियैक तें ओतय नीक शिक्षक, कलाक सामग्री आ नीक कलाकारक चित्र खरीदबाक व्यवस्था सेहो छैक।

आबय बला पीढ़ी आ नवतुरियाक लेल संदेश : नीक काज करू आ गर्व सँ अपन काज केँ देखैल करू कतहु बिक्रीक संभावना बुझि पड़ै तें जरूर बेचू।

एहि क्षेत्रमे मिथिलांगन द्वारा कएल गेल योगदान : दिल्लीमे मिथिलांगन संस्था कला-साहित्येटा नञ बल्कि मैथिल संस्कार केँ बचाबय लेल सदिखन अग्रसर रहैत छथि। दू तीन बेर ई संस्था अपनहु मिथिला कला केँ प्रदर्शनी आयोजित केने अछि आ कलाकार लोकनि केँ तें सदिखन स्वागत-सम्मान आयोजित करैत रहैत छथि।

कला आ उच्च शिक्षा मैथिलीक दशा

✍ विजयव्रत कंठ

लेखक समस्तीपुर जिलान्तर्गत बटहा स्थित सुंदरी देवी सरस्वती विद्या मंदिरमे शिक्षक छथि। विभिन्न सांस्कृतिक-साहित्यिक मंच पर लगातार अपन उपस्थिति दर्ज करैत रहैत छथि। समसामयिक विषय सब पर हिनक कविता बहुत लोकप्रिय होइत अछि।

संपर्क :
सुंदरी देवी सरस्वती विद्या मंदिर, बटहा, रोसड़ा, समस्तीपुर, बिहार

भारतक मानचित्रमे मिथिलांचल उत्तर पूरबमे स्थित अछि जेकर उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गंगा, पूरबमे कोशी तथा पश्चिममे गंडक अछि। मिथिलांचलक भाषा एकमात्र मैथिली अछि। एहि प्रदेशक वासी चाहे ओ कोनो जाति अथवा धर्मक किएक न होथि हुनक मातृभाषा मैथिली अछि। अनपढ़ सै लऽ कऽ विद्वान समक अभिव्यक्तिक एकमात्र भाषा मैथिली अछि। मुदा दुखक विषय इ अछि जे स्कूली शिक्षा संऽ लऽ कऽ उच्च शिक्षा धरि स्थिति प्रतिकूल अछि। मैथिली बाजनिहार हीनताक शिकार भऽ रहल छथि। ठाम ठाम पसरि रहल अंग्रेजी माध्यमक पब्लिक स्कूल एकर मुख्य कारण मानल जा सकैछ। कतेक रास शोध संऽ तथ्य आएले अछि जे प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषामे होयबाक चाही जाहि सँ बेसी ज्ञानार्जन भ सकैत अछि मुदा इ सामान्य सन तथ्य शिक्षा नीति निर्धारक लोकनि कें समझिमे नञ आबि रहल छन्हि। महाविद्यालय आ विश्वविद्यालयक स्थिति त आओर गंभीर अछि। मैथिलीक घोर उपेक्षा भऽ रहल अछि। प्रतिवर्ष मात्र डिग्रीधारीक फौज तैयार भ रहल अछि। ओ सम अपन मातृभाषा संऽ कति रहल छथि। उच्चाधिकारी गण शिक्षाक विगड़ैल स्थिति आ ओकर निदानक लेल मात्र बहसँ करबाक लीन छथि। दिशाहीन शिक्षानीति संऽ सम्पूर्ण शिक्षा संरचना छिन्न भिन्न भऽ रहल अछि। एकर परिणाम घातक अछि। प्रतिवर्ष प्रतिभावान छात्र दोसर राज्यमे पलायन कऽ रहल अछि। अपन क्षेत्र हुनक कौशलक लाभ नाहि उठा रहल अछि। हमर कहब ई जे अपन भाषा मैथिलीक माध्यम सँ शिक्षा देल जाय त, मिथिलांचलक 90 प्रतिशत सँ बेसी लोग विकासक मुख्य धारामे सम्मिलित भऽ सकैत छथि। एकरा पर ज्यों हम सम सोची आ डेग पढ़ावी त सामूहिक उत्थान भ जाएत मुदा हम सम आँखि बन्द कैने छी। आवश्यकता अछि एकता परिवर्तकारी शिक्षानीति बनैबाक जाहिरमे समटा ज्ञानअपन मातृभाषा मैथिलीमे देबाक प्रावधान होय। हम सब मानसिक रूपें स्वस्थ बानि। मैथिलीक विकासक लेल काडा भीडि आ कादोमे गंथल मैथिलीक रथ बाहर आनि। महाकवि विद्यापतिक उद्घोष 'देसिल बयना सम जन मिट्ठा'क साकार करबाक प्रयास अनिवार्य रूपे कोयम चाही। तखने मैथिलीक दशा आ दिशामे अपेक्षित सुधार भऽ सकैत अछि। महर्षि उदयनाचार्यक पण्डिरथ प्रतिमा मिथिले नही विश्वक सम क्षेत्रमे पसरल अछि। एहन उर्वर भूमि कें भाषा मैथिलीकें महत्व देल जाय। जखन जापान जापानी, जर्मनी जर्मन, रूसक लोग रूसी आ चीनक लोग चीनी भाषा कें बल पर विकासक सकैल छथि त हम मिथिलावासी मैथिली अपनाकऽ किएक न विकास करी? मैथिली भाषाक अपन लिपि, व्याकरण आ संपन्न साहित्य भंडार अछि आ सम सँ अद्भुत बात ई जे मैथिली बड मिंठगर भाषा अछि।

मिथिलामे सहकारिता दुग्ध उद्योग

✍ रत्नेश्वर झा

लेखक मिथिला दुग्ध उत्पादक सहयोग समितिक समस्तीपुर डेयरीमे कार्यरत छथि। विविध सामाजिक अभियान आ मंच सब सँ सक्रिय जुड़ाव छनि। रचनात्मक गतिविधि आ लेखनमे विशेष दिलचस्पी रखैत छथि।

संपर्क :
ए/14, अशोका टावर,
चाणक्यपुरी, राजाबाजार,
पटना-80014

मिथिला परिक्षेत्रमे रहनिहार ग्रामीण जनमानसक जीवकोपार्जनक साधनमे पशुधनक संवर्धन कए दुग्ध उत्पादन एवं विक्रय करब एक मुख्य साधनक रूप प्राचीनकाल सँ आबि रहल अछि। ई उद्योग वर्तमान परिप्रेक्ष्यमे संगठित भए रहल अछि। मिथिला परिक्षेत्रक तेइसँ जिलामे, करीब बीसँ जिलाक जनमानस, किसान एवं नारी समूह दुग्ध उत्पादन कार्यमे संगठित रूपसँ लागल छथि। एतबे नञ ओहिमे पचासे सँ साठि प्रतिशत लोकक जीविकाक मुख्य साधन अछि, सहकारिता पद्धतिसँ पशुधनक संवर्धन एवं दुग्ध उत्पादन।

सहकारी पद्धति पर दुग्ध उत्पादन करबाक प्रादुर्भाव वर्ष 1942मे गुजरातमे भेल छल आ क्रमश: 1960 केर दशकमे तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्रीक विश्वास सँ डॉ. वर्गीसँ कोरियनक मार्गदर्शनमे अमूल पद्धतिक जन्म भेल। कालान्तरमे ओ विभिन्न राज्यमे विकसित होइत रहल, ताहि क्रमेण दुग्ध संग्रहणक कार्य बिहार राज्यमे प्रवेश पावि, मिथिला परिक्षेत्रक गामे-गामे संगठित होमए लागल। देश भरिमे ई परियोजना पसरल। संगहि भारत वर्षमे ऑपरेशन फ्लड केँ रूपमे चिन्हित भेल। बिहार राज्य अन्तर्गत ऑपरेशन फ्लड योजनाक प्रादुर्भाव वर्ष 1980मे राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड एवं बिहार सरकारक मध्य भेल अनुबंध केँ अधीन प्रारंभ भेल, जाहिमे पटना डेयरी प्रोजेक्टकेँ नामसँ एक संस्थाक गठन कएल गेल। एहिसँ पूर्व बिहार राज्य डेयरी कॉरपोरेशन बिहार केर दुग्ध उत्पादक किसानक दुग्धक संग्रहण करबामे, संगहि ओकरा प्रसंस्करण कए उपभोक्ता तक पहुंचेबामे पूर्ण रूपसँ असफल भए चुकल छल। बिहार सरकार एवं राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड केँ संयुक्त तत्वावधानमे पटना डेयरीक गठन डेयरी व्यवसायकेँ सहकारिता पद्धतिसँ विकसित कए अमूल मॉडलक स्थापना करबाउ हेतु अग्रदूत केँ रूपमे डॉ. वर्गीसँ कोरियनक अध्यक्षताकेँ काएल गेल।

वर्ष 1983मे राज्य सरकार आ राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्डक समन्वयसँ बिहार राज्य सहकारिता दुग्ध महासंघक गठन भेल। दुग्ध महासंघ जिलास्तरीय दुग्ध संघक गठन करबाक हेतु अग्रसर भेल। उद्धरित करए चाहब जे बिहार राज्यक कोनो जिला एकटा जिलास्तरीय दुग्ध संघक गठन कए यथेष्ट दुग्धक उत्पादन करबामे सक्षम नञ छल, ताहिसँ दू-सै तीन टा जिला केर जोड़ि दुग्ध संघक गठन होबए लागल एवं प्रत्येक दुग्ध संघ ग्रामीण स्तर पर प्राथमिक दुग्ध समितिकेँ गठिन कए दुग्ध संग्रहण करब प्रारम्भ कएलक। ग्रामीण दुग्ध उत्पादक किसान प्राथमिक दुग्ध समितिक हिस्साधारक बनलाह, प्राथमिक दुग्ध समिति, जिलास्तरीय दुग्ध संघक हिस्साधारक भेलाह, दुग्ध महासंघक हिस्साधारक जिला स्तरीय दुग्ध संघ भेल। तदनुरूप त्रिस्तरीय प्रबंधन केर सहयोग सँ दुग्ध सहकारिता विकसित होमए लागल।

संयोग सँ अद्यतन बिहार राज्यमे आठ टा दुग्ध संघक गठन भेल अछि

जाहिमे छहटा दुग्ध संघक कार्यक्षेत्र संपूर्ण रूप सं, वा आंशिक रूपसँ मिथिलाक परिक्षेत्रमे पड़ैत अछि।

पटना एवं नालन्दाकेँ छोड़ि शेष बीसँ टा जिला जाहि ठाम दुग्ध उत्पादन एवं संग्रहण भए रहल अछि ओ मिथिला परिक्षेत्रमे पड़ैत अछि।

अहि परिक्षेत्रक साढ़े आठ लाख दुग्ध उत्पादक किसान प्रतिदिन साढ़े ग्यारह लाख लीटर दुग्धक उत्पादन/संग्रहण, गठित प्राथमिक दुग्ध समिति केँ करैत छथि जकरा संबंधित दुग्ध संघ नियोजित पद्धति सँ संघक डेयरीमे प्रसंस्करण हेतु जमाकए दुग्ध एवं दुग्ध जन्य पदार्थक उत्पादन काएल जाईत अछि। दुग्ध संघ उत्पादक किसान केँ दुग्ध समितिक माध्यमसँ प्रतिदिन औसतन चारि करोड़ रुपया दुग्धक उत्पादित दुग्ध मूल्यक रूपमे भुगतान करैत अछि।

उद्धरित करए चाहब जे आर्थिक रूप सँ पिछड़ल मिथिला परिक्षेत्र जाहि ठाम कोनो संगठित उद्योग नहि, कृषि नञ, कोशी, कमला बलान, बागमती नदीक धारस खंघारल श्वेत, सिंचाईक कोनो संसाधन नहि, ताहि ठाम सहकारिताक शक्ति दुग्ध उत्पादक किसान, महिला किसानकेँ ह्रदयमे तेना नञ एकजुटता प्रदान कएलक जे मिथिला परिक्षेत्रक जी.डी.पी.मे सबस बेसी दुग्ध उत्पादनक राशि होयत, जकर आकलन होयब आवश्यक कारण दुग्धसँ भेल आ आय केँ कृषि आयक संग संबर्धित काएल जाइत अछि।

समस्तीपुर, बरौनी, मुजफ्फरपुर, हाजीपुर, दरभंगा, पूर्णिया, सुपौल एवं भागलपुरमे कुल 12 लाख लीटर हर दिन क्षमताक दुग्ध प्रसंस्करण प्लांट कार्यरत अछि, संगहि अहि परिक्षेत्रमे 14 लाख लीटर हस्तन क्षमताक दुग्ध प्रसंस्करण प्लांटक विस्तारीकरणक कार्य प्रगति पर अछि।

दुग्ध संघ	मु. कार्यालय	कार्यक्षेत्र
वैशाली पाटलीपुत्र दुग्ध संघ	पटना	पटना, नालन्दा एवं वैशाली
तिरहुत दुग्ध संघ	मुजफ्फरपुर	मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, शिवहर, पूर्वी चंपारण एवं पश्चमी चंपारण
मिथिला दुग्ध संघ	समस्तीपुर	समस्तीपुर, दरभंगा एवं मधुवनी
बरौनी दुग्ध संघ	बरौनी	खगड़िया, बेगूसराय एवं शेखपूरा
विक्रमशिला दुग्ध संघ	भागलपुर	भागलपुर एवं मुंगेर
कोशी दुग्ध संघ	सुपौल	सुपौल, सहरसा एवं मधेपुरा
कम्फेड ईकाई	पूर्णिया	पूर्णिया, किसनगंज एवं कटिहार

अहिठाम तीस-तीसँ मीट्रीक टन क्षमताक दुग्ध चूर्ण संयत्रक कार्य विस्तारीकरण भए रहल अछि। आगामी दू-तीन वर्षमे मिथिला परिक्षेत्रमे पच्चीस-सँ-तीस लाख लीटर संग्रहित दुग्धक शीतकरण, प्रसंस्करण, दुग्ध चूर्णक निर्माण काएल जा सकैत अछि। किसानक उत्पादित दूधक प्रसंस्करण अपनञ कार्य क्षेत्रमे होयत। 'सुधा ब्रांड' नामसँ प्रचलित दुग्ध, दही, घी, मट्ठा, लस्सी, पनीर, बटर, आइक्रीम, रसगुल्ला, गुलाबजामुन, पेड़ा, बलुकसाही, कलाकन्द, खोआ, रसकदम एवं मखानक खीरक स्वाद मिथिला, बिहारस होइत दिल्ली घरि पहुंच चुकल अछि।

ग्रामीण स्तर पर गठित प्राथमिक दुग्ध समितिमे पचास सँ दूसए उत्पादक दुग्ध संग्रहण कए कार्य-समिति संचालन प्रजातांत्रिक पद्धति सँ करैत छथि। निर्वाचित 12 सदस्यीय समिति संचालन करैत छथि। त्रिस्तरीय प्रबंधन अप्रत्यक्ष रूप सँ प्राथमिक समिति सँ महासंघ स्तर पर प्रबंधन व्यवस्थापन करवाक अधिकार उपविधि अनुरूप दुग्ध उत्पादक किसानमे निहित अछि।

त्रिस्तरीय प्रबंधन अपन-अपन कार्यक्षेत्र एवं उपविधिक विहित प्राबधानक अनुरूप, दुग्ध उत्पादनमे वृद्धि तथा पशुधनक संवर्धनक हेतु दुग्धउत्पादक किसान एवं महिला सदस्या केँ संगठित कए समितिक गठन नियमित रूपसँ करैत छथि संगहि स्वच्छ दुग्ध उत्पादन एवं संग्रहण पशु प्रजनन एवं पशु स्वास्थ्य संवर्धन, पशु आहार संतुलन, चारा विकास कार्यक्रम, जैविक खेती परियोजनाक प्रोत्साहन, बर्मी कम्पोस्ट एवं बर्मी बेडक व्यवस्थापन, दुग्ध शीत करणक व्यवस्थापन, पशु कृत्रिम गर्भाधान, पशु टीकाकरण आदि विभिन्न परियोजनाक संवर्धन काएल जाइत अछि।

उद्धरित करए चाहब जे भारतीय संविधानमे डेयरी विकास स्टेट लिस्टक विषय थिक अर्थात डेयरी उद्योग, दुग्ध संग्रहण, दुग्ध उत्पादन, दुग्ध जन्य पदार्थक उत्पादन, उपभोक्ता तक दुग्ध एवं दुग्ध जन्य पदार्थ उपलब्ध कराएव आदि राज्य सरकार केर कार्याधीन अछि संगहि सरकारक बाध्यता सेहो कारण दुग्ध आवश्यक सेवा अन्तर्गत अछि। एहना परिस्थितिमे गुजरात जेंका मिथिला परिक्षेत्रक दुग्ध उत्पादक किसान सहकारिता सृजनात्मक प्रारूप दए संगठित भए, पशुधनक रूपसँ करैत अपन जिविकोपार्जनक संग बिहारक माननीय मुख्यमंत्रीय परिकल्पना जै प्रत्येक भारतीय राज्यमे बिहार क' कमसकम एकटा व्यंजन अवश्य हो' केँ पूरा करबा लेल मिथिलांचलक दुग्ध उत्पादक कटिबद्ध भए कार्य करैत अछि। ओकरा आवश्यकता छैक सम्मान, संवर्धन एवं सरकारक संरक्षणक।

अष्टम अनुसूचीमे मैथिली
आन्हर कुकुर, मारे तिड़पित

✍ रौशन कुमार झा

लेखक वरिष्ठ पत्रकार छथि। संप्रति नवभारत टाइम्स, दिल्लीमे वरिष्ठ खेल संवाददाता छथि। मैथिलीमे दूरदर्शन पटना सँ प्रसारित धारावाहिक 'पाहुन' केर पटकथा लेखक रहलाह। हिनक अनूदित बहुत रास पोथी सेहो छपल अछि, जाहिमे तीन गोट पोथी भारत सरकारक प्रकाशन विभाग सँ छपल अछि।

संपर्क :
12/596, तीसरी मंजिल,
वेस्ट गुरु अंगद नगर, लक्ष्मी नगर,
नई दिल्ली-110092
मो. 9350216092

आन्हर कुकुर, मारे तिड़पित। बहुत पुरान अहि ई कहावत। मुदा मिथिला-मैथिली कें आजुक परिदृश्यमे जँ एहि कहावत कें देखी, त' ई बिल्कुल फिट बैसि रहल अहि। चलू, हम अहां सबकें बुझौबल नञ बुझाबी आ सीधा विषय पर आबी। दरअसल हम गप करय जा रहल छी, मैथिली कें अष्टम अनुसूचीमे शामिल करबा सँ लय कें आई धरि कें ओकर प्रगति पर।

जखन 2003 मे तखुनका उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी जी प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयीजी कें मौजूदगीमे मैथिली कें अष्टम अनुसूचीमे शामिल करबाक घोषणा कएने रहथिन त' समूचा मिथिलांचलमे जेना उत्सव कें माहौल भ' गेल छल। बुझायल जेना सदिखन उपेक्षाक शिकार रहल मैथिलजन कें आब अहि सँ किछु फायदा भेटतनि। हुनका आब पलायन करबा लेल मजबूर नञ हुअय पड़तनि। मुदा आय 14 साल बादो मैथिली ओतहिये कें ओतहिये अहि। जं किछु भैयो रहल अहि त' ओकर रफ्तार एतेक कम अहि जे ओकर कोनो फायदा बुझाइये नञ रहल अछि।

अष्टम अनुसूचीमे जगह भेटला कें बादो जँ आई मैथिली पिछड़ल अछि तें एकरा लेल खासकय ओतुका आमजनक संगहि नेता लोकनि सेहो जिम्मेदार छथि। जेना कि आई जतेक भाषा कें अष्टम अनुसूचीमे जगह भेटल छैक ओकर प्राथमिक स्तरस स्कूल सबमे पढ़ाय भ' रहल छैक। मुदा अपनहि राज्यमे प्राथमिक आ माध्यमिक शिक्षामे मैथिली भाषाक अध्यापन दुर्गतिमे अछि। मैथिलीक शिक्षकगण नगण्य छथि, ताहिसँ विद्यार्थी सेहो नदारद।

दोसर जखन मैथिली कें संविधान सँ मान्यता भेटल छैक त' ओतुका सरकारी ऑफिस सबमे सेहो एहि भाषा सबमे काज-राज हेबाक चाही छल। मुदा नञ त' एकहु गोटे मैथिलीमे कोनो दरख्वास्त लिखैत छथि आ नञ सरकार सँ कहियो मैथिली भाषाक लेल कोनो पद सृजित करबाक मांग करैत छथि। पद वा काज त' दूर, मैथिलीक नाम पर जे एकमात्र हमरा सब सरकारी विभाग पर गर्व करैत छलहुं, जकर नाम मिथिलास जुड़ल छल। तकरो आब बदलि गेल। हम गप कय रहल छी मिथिला क्षेत्रीय ग्रामीण बैंककें एकर नाम आब बदलि कें उत्तर बिहार बैंक कयल गेल। बड़का-बड़का आंदोलन करनिहार, जंतर-मंतर पर धरना देनिहार तथाकथित नेता सब एक बेर एहि पर कल्ला नञ अलगौला।

मैथिलीक अष्टम अनुसूचीमे जगह देलाकें बाद संसद भवनमे सेहो एकटा मैथिली अधिकारीक लेल पद सृजित कयल गेल। मुदा एहि पद पर नियुक्त लोकनिक पेशेवर स्थिति ठीक नञ कियेक हुनका लय बहुत काज नञ।

ताहि संओ दोसर काजमे लगाओल गेल छथि। जनैत छी किएक, किएत त' संसदमे जे हमर गिनल-चुनल मैथिल सांसद छथि ओ आई धरि कहियो मैथिलीमे कोनो सवाल नञ पुछलाह। नहि मैथिलीमे कोनो तरहक पत्र-व्यवहार करैत छथि। आखिर एनामे सरकार किएक भविष्यमे मैथिली अधिकारी केँ बहाली करत।

कतेक गिनाबू, गिनाबय लागब त' पूरा पोथी भरि जायत। उम्मीद छल जे आब मैथिलीमे पत्र-पत्रिका सब छपनाई शुरू होयत। हमर सबहक सेहो अपन मनोरंजन चैनल होयत। सरकार त' कानमे तूर-तेल दयकेँ सूतल अछि, किछु लोक प्रयासो कयलाह त' सरकार दिस सँ हुनका कोनो तरहक मददि नञ भेटल। नतीजा भेल जे समय सँ पहिने अखबार वा चैनल दम तोरि देलक। मैथिल प्रकाशक सबकेँ सेहो उम्मीद जागलनि, मुदा ओहो सब आई ओतहिये छथि जतय मैथिली केँ संविधान सँ दर्जा भेटला केँ बाद रहथि।

मुदा हां, हाल-फिलहालमे किछु-किछु उम्मीद जागल अछि। प्रकाशन विभाग, भारत सरकार मैथिलीमे बहुत रास पोथी सब छापलक अछि आ आगु सेहो छापत। सुनबामे आयल अछि जे प्रकाशन विभाग मैथिलीमे कोनो पत्रिका निकालबाक सेहो योजना बना रहल अछि। दूरदर्शन, बिहार पर सेहो किछु दिन पहिने किछु मैथिली धारावाहिक सबहक प्रसारण सरकार तरफसँ कयल गेल। संघ लोकसेवा आयोगसँ बहुत गोटे मैथिली विषय सँ सिविल सेवाक परीक्षा पास कयलनि अछि। कमाल त ई जे मैथिली टा नञ मैथिलेतर छात्र-छात्रा सेहो मैथिली भाषा-साहित्यक पत्रक चयन क' संघ लोकसेवा आयोगक परीक्षामे सफल भ' रहल छथि। ई सब जरूर जखन रुतबा हासिल करताह त' मैथिली केँ उचित स्थान दियेबाक कोशिश करताह।

चलू कोनो बात नहि, आडवाणी जी जाहि निर्मलीमे बनि रहल भपटियाही रेल पुल केँ शिलान्यास केँ दौरान 2003 मे मैथिली केँ अष्टम अनुसूचीमे शामिल करबाक घोषणा कयने रहथि, सँ आब बनि केँ तैयार अछि। किछुए दिन बाद अहि पुल पर सँ ट्रेन सरपट दौड़य लागत। की पता एकरा संगहि मैथिली सेहो अपन प्रगतिक रफ्तार तेज तय दिय। उम्मीद पर दुनिया कायम छै। नञ त' हम मैथिल पर ई कहावत त' सटीक बैसिते अछि जे, 'आन्हर कुकुर मारे तिरपित।'

भेंट घांट

माननीय सांसद श्री प्रभात झाक नेतृत्व में उपराष्ट्रपति श्री बेंकैया नायडु सँ भेंटवार्ताक करैत मिथिला संघक पदाधिकारीगण

वर्तमान मैथिल समाज पर सामाजिक संजालक प्रभाव

✍ मनीष झा 'बौआभाइ'

लेखक युवा कवि आ समीक्षक छथि। मैथिली मासिक पत्रिका 'मिथिला मिरर' केर संपादन विभाग सं जुड़ल छथि। हिनक काव्य संग्रह 'नीक बेजाय' सेहो प्रकाशित छनि।

संपर्क :
ग्राम+पो.-बड़हारा, वाया-अंधरा ठाढ़ी
जिला-मधुबनी
मो.-9717347995

प्रगतिशील समाज केर विकासक परिप्रेक्ष्यमे देखल जाए त' विश्वक अन्यान्य प्रबुद्धसमाज सदृश मैथिल समाजसेहो युगानुकूल प्रत्येक चुनौती कें स्वीकारबाक क्षमता रखैत छथि। चाहे संस्कृति संरक्षणकें गप, भाषा संवर्धनकें गप होए, उच्चतर शिक्षा कें गप होए, रोजगारपरक अवसर कें गप होए वा उच्च तकनीकी वस्तुप्रयोगक गप होए, प्रत्येक समाजक संग डेगसँ डेग मिला चलबामे पूर्ण सक्षम छथि। ओना ई एक पैघ बिडम्बना रहल अछि जे समय-समय पर छद्म राजनीतिक महत्त्वाकांक्षी लोकनिक व्यक्तिगत लालसाक कारणें मूल अस्तित्वकें विभिन्न खड्यंत्रक अंतर्गत दबाओल वामेटेबाक असफल प्रयास कएल जा रहल अछि। एहि कुकृत्य लेल कियो बाहरी व्यक्ति आयातित नञ भ' रहल छथि वा ई कही जे अपनञ घरक लोक रहै छथि, अन्यथा अपन मूल वस्तुक पुनः प्राप्तार्थ आंदोलनकस्तर एत्तेक उग्र नञ होइत।

भौतिक सुख-सुविधाभोगी एहि अंध चलन प्रधानयुगमे जाहि तरहें आवासीय पलायन, सांस्कृतिक ह्रास, भाषायी उदासीनता, विमुख होइत परम्परा सँ किछु लोक भिज्ञ रहितो अनभिज्ञ बनबाक चेष्टा क' रहलाह अछि, हुनक मानसिकता बदलबामे सेहो सोशल नेटवर्क एक सकारात्मक भूमिका निमाहि रहल अछि। जिनकामे किछु करबाक ऊहि छनि वा छलनि मुदा समुचित वातावरण नञ भेटलाक कारणें अपनाकेँ कात रखबाक चेष्टा करैत रहलाह, मुदा समय एला पर हुनक समान सोचक व्यक्ति वा किनको कार्यशैली सँ प्रभावित भ' कतेको गोटे एकटा सार्थक ओ एकीकृत सोचक संग विभिन्न संगठन ओ समूहक निर्माण क' तदनुकूल काज क' रहलाह अछि। एहिमे कोनो दूमत नञ जे कोनो आन्दोलन वा मूल कार्य हेतुमेहनैत जमीन पर जा करय पड़ैत छैक आ आवश्यकतो ओत्तहि छै मुदा रणनीतिकें सफलबनेबा लेल प्रचार-प्रसार ओ माध्यमक रूपमे ई स्थान सभस बेसी प्रभावी ओ उपयुक्त अछि।

प्रसंगवश युवा मैथिल छात्रक संगठन मिथिला स्टूडेन्ट यूनियन केर नाम एहि संदर्भमे लेब आवश्यक अछि। रोजगारक घोर समस्याक कारणें पलायन आजुक समयमे सभस बेसी चिंताजनक स्थितिमे अछि मुदा राजनैतिक उदासीनताक कारणें अपन घरहिमे अपन अधिकार लेबा लेल आन्दोलनक सहारा लेब बाध्यकारी भेल अछि। आजुक समयमे सामाजिक संजालक सहज उपलब्धि ओ विस्तारक कारणें प्रत्येक व्यक्ति अपनाआपमे एकटा स्वतंत्र मीडियाक भूमिकामे देखना जाइछ। विगत किछुए बर्षमे मैथिली मीडियाक क्षेत्रमे क्रांति अनबाक श्रेय विदेह, ई-समाद, मिथिमीडिया, मिथिला-दैनिक, मिथिला दर्शन, मैथिली जिन्दाबाद, मिथिलामेल आदि कें जाइत अछि ओत्तहिलोक अभिरुचिक अनुसार वेब पोर्टलक संगहि वीडियो पत्रकारितास निस्सन उपस्थिति

बनबैत मिथिला मिरर जाहि प्रकारक अभिनव प्रयोग केलक अछि निश्चित रूपसँ सराहनीय योगदानक रूपमे गानल जाएत। विश्वक विभिन्न क्षेत्रमे यत्र-तत्र पसरल मैथिलकेँ एक मंच पर अनबाक प्रयास हेतु मिथिला मीडिया नामक एक स्वतंत्र एप्लीकेशन (एप्प) गूगल प्ले स्टोर सँ सेहो लॉन्च कएल गेल अछि जे एहि उद्देश्यकेँ आगाँ बढ़ेबा लेल दृढ़संकल्पित बुझना जा रहल अछि।

कोनो प्रकारक क्रियाकलाप क्षनहिमे विश्वक विभिन्न कोन धरि पहुँच जाइत अछि। एकसँ एक अद्‌भुत प्रतिभाकेँ सोझा आएब एकर स्वत: प्रमाण थिक। हमरा सभक बीच एतेक कम उमेरमे राष्ट्रीय शीर्ष पर ठाढ़ स्वर साधिका मैथिली ठाकुरस पैघ उदहारण की भ' सकैछ।

जातीय, प्रान्तीय, नस्लीय ओ सामाजिक रूढ़िवादिताक भेदन करैत लोकक बीच अनेको सहानुभूतिक उदाहरण देखबामे अबैत अछि। एकर स्पष्ट परिचय देखबा लए नैन्सी हत्याकांड, प्रद्युम्न हत्याकांड आदिक आलोकमे सगर देशक एकजुटता देखल जा सकैत अछि।

कहियो ओ समय छल जहिया लोकक प्रतिभा साधनक अभावमे कुंठित रहि जाइत छल, जहिया लोक अपन बेसी पेबा लए विभिन्न चक्रव्यूहक शिकार होइत छल, शोषित होइत छल मुदा आवाज उठेबा लेल उपयुक्त स्थान नञ ताकि पबैत छल। आजुक समयमे कमसँ कम अपन मोनक बात रखबा लए ओ प्रतिभा प्रदर्शन हेतु सोशल नेटवर्कक विभिन्न प्लेटफॉर्म सक्रिय अछि।

जीविकोपार्जन हेतु लोकक संघर्ष आ पलायनक असरि एहेन दुष्प्रभावी होइत चल गेल जे लोक अपन भाषा ओ संस्कृति सँ कटैत चल गेलाह। आइ जखन अन्यान्य क्षेत्रक भाषा-भाषी लोकनि अपन भाषा ओ संस्कृतिकेँ प्रस्तुत करबामे बढ़ि-चढ़ि क' सोझा आबि रहल छथि त' स्वाभाविक अछि जे हमरा लोकनिकत' अपन इतिहास आ भूगोल स्वयंमे गौरव बोधक अछि, मुदा ई गौरव बोध कहबा मात्रक विषय नञ अपितु संरक्षित ओ संवर्धित करबाक विषय अछि। मैथिलीक एहनो सपूत सभ भेलाह जे अपन भाषा-संस्कृतिकेँ बीसँ सिद्ध करबामे सफल भेल छथि। मैलोरंग नामक रंगमंडल आही गौरवक एक महत्त्वपूर्ण अंग अछि जे राष्ट्रक राजधानी दिल्लीमे राष्ट्रीय स्तरक मान्यता

कहियो ओ समय छल जहिया लोकक प्रतिभा साधनक अभावमे कुंठित रहि जाइत छल, जहिया लोक अपन बेसी पेबा लए विभिन्न चक्रव्यूहक शिकार होइत छल, शोषित होइत छल मुदा आवाज उठेबा लेल उपयुक्त स्थान नञ ताकि पबैत छल। आजुक समयमे कमसँ कम अपन मोनक बात रखबा लए ओ प्रतिभा प्रदर्शन हेतु सोशल नेटवर्कक विभिन्न प्लेटफॉर्म सक्रिय अछि।

प्राप्त सभस पैघ नाटकक महोत्सव भारत रंग महोत्सव (भारंगम)केर अठारहम बर्खक आयोजनमे मैथिली नाटकक प्रस्तुति देइत हमरा लोकनिकेँ गौरवान्वित केलक अछि। कला-संस्कृति संवर्धन हेतु एहेन सक्रियता ओ क्रान्ति आनब आह्लादक विषय थिक।

प्रवासक जीवनमे स्वयंकेँ स्थिर करब ककरो वास्ते बड्ड पैघ चुनौती होइत अछि, कारण सभस पहिने ओहिठामक स्थानीय समाजकेँ अपना विश्वासमे लेबा लेल अनेकों मान-अपमानक सामना करय पड़ैत छैक। मैथिल एहेन बुद्धिजीवी होइ छथि जे प्रत्येक चुनौतीकेँ सहजतापूर्वक स्वीकारैत कोनो समाजक मध्य प्रतिष्ठापूर्वक अपन स्थान सुरक्षित रखबामे योग्य ओ निपुण होइछथि। कृतज्ञ मैथिल समाज द्वारा विभिन्न महानगरमे बाबा विद्यापतिक नाओं सँ स्मृति पर्व मनेबाक परम्परा एखन जोर पकड़ने अछि जेकि लोक जुटेबाक एक नीक प्रयास कहल जा सकैत अछि। ओना ई एक पैघ बिडम्बना अछि जे अधिकाधिक आयोजनमे नञ त' हुनक व्यक्तित्वक चर्च होइछनि आ नें हुनक अमर कृतित्वक।

भाषा साहित्यक प्रति सेहो चिंताजनक स्थितिकेँ दूर करबा लेल एवं बाबा यात्रीक आह्वान नवतुरिया आब ओ आँगाकेँ सफलीभूत करबा लेल बिना कोनो आडम्बर ओ औपचारिकताकेँ जगह-जगह मैथिल युवा साहित्यानुरागी लोकनि द्वारा अकासतर बैसकी, साहित्यिक चौपाड़ि, साँझक चौपाड़ि, काव्य बैसार, कथा गोष्ठी, कीर्ति कुंभ आदि विभिन्न नामसँ पल्लवित-पुष्पित भ' रहल अछि। नवतुरक एकसँ एक आँखिगर साहित्यसेवी लोकनि आगाँ आबि रहल छथि। साहित्यांगन, झंझारपुर द्वारा प्रत्येक मास मिथिलाक विभिन्न विभूति जिनक जन्मदिवसँ वा पुण्यतिथि होइन्ह हुनका प्रति कृतज्ञता व्यक्त करैत, हुनक व्यक्तित्वक चर्च करैत नियमित साहित्यिक आयोजन भ' रहल अछि। मैथिलीपोथीक सहज उपलब्धि हेतु पटनामे रहि रहल किछु समर्पित युवा लोकनि दुर्लभ सँ दुर्लभ पोथी जुटा ऑनलाइन शॉपिंग पोर्टल "सैप्पी मार्ट" केर माध्यम सँ होम डिलेवरी धरिक सुविधा उपलब्ध करबा रहल छथि। इंटरनेट पर साहित्य पढ़ेबाक चस्का लगेबामे निश्चित रूप सँ विदेह (ई-पत्रिका) केर प्रयास सराहनीय अछि।

अहि पोर्टल पर आ गूगल बुक्सँ पर पीडीएफ फॉर्मेटमे एखनहु मैथिलीक तीन सएसँ बेसी पोथी उपलब्ध अछि। कला प्रतिभा ल' क्षेत्रीयसँ राष्ट्रीय स्तर धरिक कलाकारक योगदानकेँ संग्रह मैथिली सिनेमा डॉट कॉम पर देखल जा सकैछ आ ओतय सँ ज्ञात होइत अछि जे कतेको नामी-गिरामी कलाकार जे राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय शिखर पर नाम केने छथि ओ हमरा लोकनिकघर-परिवारक सदस्य छथि।

भाषा ओ संस्कृतिक प्रति लोकक जागरूकताक साक्ष्य अछि अखिल भारतीय मिथिला संघक स्वर्ण जयन्ती समारोहमे तालकटोरा स्टेडियम ओ मैथिल समन्वय समिति द्वारा आयोजित वर-वधू परिचय सम्मलेनक उपलक्ष्यमे सिरीफोर्ट ऑडिटोरियम सन विशाल जनसमूहक क्षमता बला सभागारमे मैथिलजनक उपस्थिति।

सोशल नेटवर्कक किछु नकारात्मकताक सँ लोक सेहो प्रभावित भ' रहल अछि जाहिमे व्यक्तिगत द्वेष, आपसी वैमनस्यता, कटुवादिता, अनावश्यक विषय-वस्तुक प्रचार-प्रसार, भ्रामक परिवेश बनाएब, एक-दोसराक प्रति छिद्रान्वेषण, गुटबाजी आदि हमरा लोकनिक कमजोर पक्षकेँ सार्वजनिक रूपें उजागर करैत अछि। एहि सभ पर ज' नियंत्रण कऽ लेल जाय त' हमरा लोकनिक अद्वितीय भाषा, क्षेत्र, साहित्य, रोजगार, कला, संस्कृति, परम्परा आदिक निर्वहन करैत ओकरा संवर्धित कएल जा सकैत अछि। जाहित रहें लोकक मानसिकता बदलि रहल अछि, परिवेश बदलि रहल अछि ताहिमे किछु हद धरि सामाजिक संजाल (सोशल नेटवर्क) केर भूमिका सेहो महत्त्वपूर्ण कहल जा सकैछ। देखादेखी नीक अधलाह काजक अनुकरण अदौ सँ आबि रहल एक परम्परा अछि आ इहो कोनो व्यक्ति ओ हुनक परिवार एवं समाजक देल संस्कार पर निर्भर करैत अछि, तहिना सोशल नेटवर्कक सदुपयोग वा दुरुपयोग हुनक ओहने मानसिकता पर निर्भर करैत छनि।

एहि आलेखक क्रममे संभव अछि जे बहुतो एहेन व्यक्ति वा संस्थाक नामक उल्लेख नञ भेल हो वा सांकेतिक हो तथापि जे कियो सोशल नेटवर्कक सदुपयोग करैत अपन मूल वस्तुकेँ राष्ट्रीय पटल पर आत्मविश्वासक संग परसि रहल छथि हुनक प्रयासक सेहो सराहना करैत छी। वास्तविक रूपसँ अपन मांटि-पानिसँ जुड़ल भाषा-संस्कृति प्रेमी ओ चाहे गाममे बसथि वा परदेसमे सोशल नेटवर्कक समुचित उपयोग करैत एकरा प्रचार-प्रसारक माध्यम बनाय उद्देश्यपूर्तिमे लागल छथि।

भेंट घांट

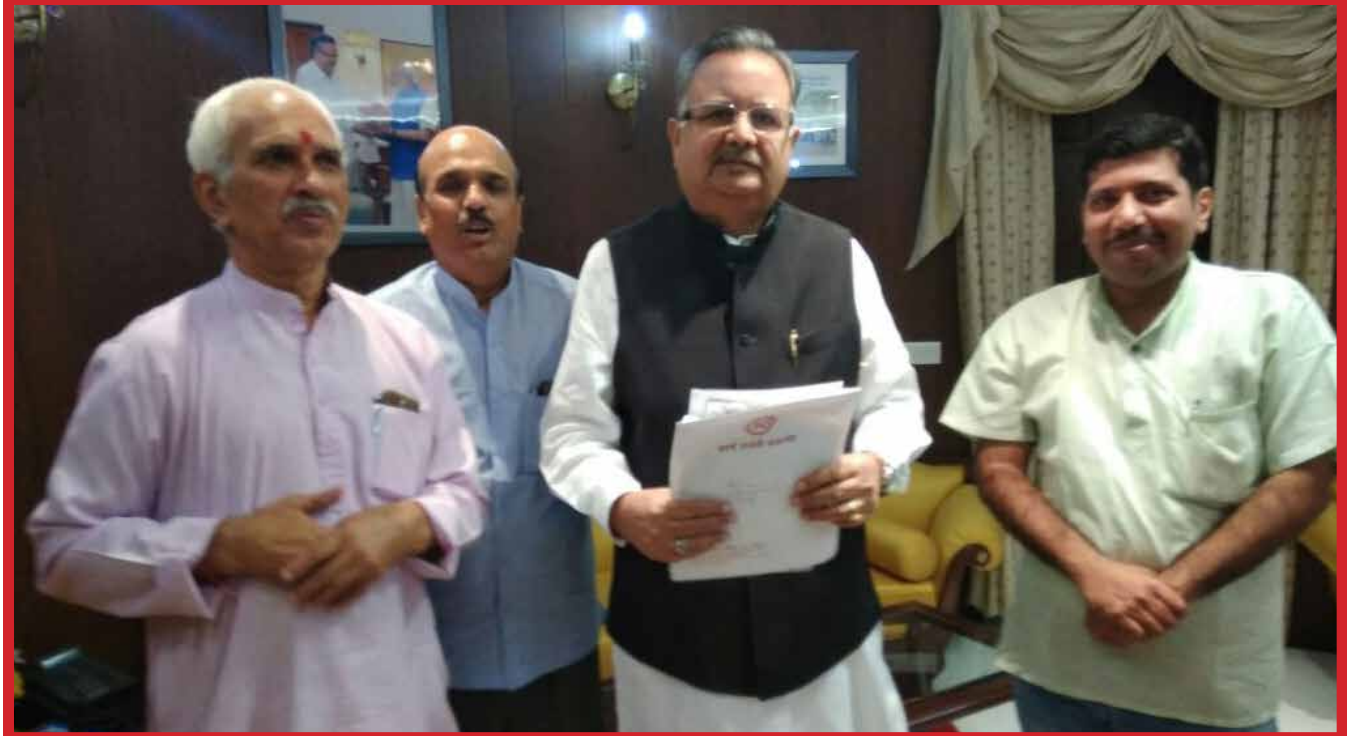

छत्तीसगढ़क मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह सँ भेंट-घांट करैत अखिल भारतीय मिथिला संघक प्रतिनिधि गण

नागदह पोखड़िक उद्भव आ वर्तमान

✍ संजय कुमार झा

कतेको आलेख मिथिला मिरर, लाइव आर्यावर्त समाचार वेब पोर्टल इत्यादि सबहुमे प्रकाशित। मिथिलाञ्चल टुडे, मिथिलांगन, मिथिला लोक, अप्पन मिथिला, पूर्वांचल एकता, मैथिली दर्पण आ मिथिला मिरर इत्यादि पत्रिका ओ अनेक संस्था सभक स्मारिका इत्यादि सबहुमे आलेख, कविता आदि-आदि समय-समय प्रकाशित होइत रहल अछि। डॉ. सर गंगानाथ झाक व्याख्यान (कवि-रहस्य) जे 1929 मे प्रकाशित अछि ताहि पोथीकेँ हिनक द्वारा मैथिली मे अनुदित कएल गेल अछि, जे प्रकाशनाधीन अछि। मैथिली साहित्य महासभा (ट्रस्ट) क सह-संस्थापक, चेयरमैन। संयोजक, विद्यापति-डॉ. सुभद्र झा प्रेरणा मंच।

संपर्क :

ग्राम+पोस्ट-नागदह, जिला-मधुबनी

मिथिला (बिहार) पिन-847222

मोबाईल: 80102180022

जतबहि पुरान अछि नागदह गाम ओतबहि पुरान अछि नागदहक पोखड़ि। नागदह आ बलाइन एक्कें पंचायतमे पड़ैत अछि। हालांकि बहुभाषाविद डॉ. सुभद्र झाक लिखल एक गोट पोथीक संदर्भानुसार बलाइन गांओक प्राचीन नाम छलैक 'बएनागढ़' तथा तकर सटल नागदहक रेवेन्यू नाम थिकैक 'मालगढ़'। नागदहक पोखड़िक संबंधमे जे किछु बुजुर्ग लोकनिस ज्ञात अछि ओ प्रायः एहि तरहे अछिः-

एहि गाममे कियो दू वा तीन भैयारी रहथि। जखन हुनका लोकनिकेँ आपसमे यथा- जातकेँ बंटवारा होमय लागल त' दू वा तीन ठाम बांटल जाय त' स्वतः तीन वा चारि ठाम भ' जाएल रहैत। ई क्रम प्रायः कतेको बेर भेल। गामक लोककेँ बड्ड आश्चर्य लगलन्हि जे भाग वा कुड़ी जखन दू वा तीन ठाम लगैत अछि तें एक भाग स्वतः किया बढ़ि जाइत अछि। तखन एकगोट विद्वान-बुजुर्ग हाथ जोड़ी निहोरा केलाह जे जँ एहिमे किनको भाग अछि जे अदृश्य छी त' कृपाक' अपन स्थान पर आबि वा प्रकट होउ। ई कहला उपरान्त जे भाग बढ़ि जायल छैक ओहि भाग पर फुफकार मारैत नाग सांप साक्षात् विराजमान भ' बैसँ गेलाह।

ओहि राइत किनको स्वप्न भेलनि जे हमर भागक भूमि पर पोखड़ि होएबाक चाहि। तैं ओही भागानुकुल पोखड़ि अछि। मिथिलामे सुनैत छी जे कतेको पोखड़ि दैत्यक खूनल अछि आ एकरो संबंधमे कियो-कियो बजैत छथि मुदा स्पष्ट नहि। ई पोखड़ि मिथिलाक कतेको विशाल पोखड़िमे सँ एक अछि। करीब 20 एकड़, जकर खाता नम्बर 377 आ खेसरा नम्बर 993 ई कहिया केना पंजीकृत भेलसें त' सर्वे कार्यालय सँ पता करए पड़त। ई बात कोन समय केँ अछि सँ एखन धरि स्पष्ट रूपे ज्ञात नहि। ओना लोकानुकूल एहि घटनाकेँ बाद एहि गामक नाम नागदह पड़ल। एहि मान्यताक आधार मानैत जे ई पूर्ण रूपे नागडीह अछि। वर्तमानमे नागदह अछि अर्थात नागक डीह। ई बात सत्य अछि जे एहि गाममे नागक संख्या बहुत छल आ अछि। हम अपने साक्षात् कतेको दिन नागकेँ जोड़ खेलाइत देखने छी।

जेना स्वर्गीय डॉ. सुभद्र झा अपन एक गोट पुस्तकमे लिखने छथि ताहि अनुकूल नागदह नामसँ पहिने कदाचिद एहि गामक नाम मालगढ़ छल। तैं ई कहबामे कनमो अतिश्योक्ति नञ होयबाक चाही, जे जहियास गामक नाम नागदह पड़ल ताहि समयसँ ई पोखड़िक उद्भव अछि। कदाचिद एहन नञ होई जे नागदह गामक उम्र ई पोखड़ी संग जुड़ल हो। एक महातिचारक अन्त भेला पर शुद्धिक समय विकराल महाअकाल पड़ल छल। सौराठ सभामे आगत ब्राह्मण लोकनकिकेँ ग्रासक कोनोटा व्यवस्था नञ होएबाक परिस्थितिमे महाराज माधवसिंह सदिच्छाक अनुसार प्राप्त स्मरणीय मोदी झा समस्त सभैताक भोजनक व्यवस्था

कएल तथा हुनकेँ इच्छानुसार ओहि साल सभा सौराठमे नञ लगाए नागदहमे पोखड़िक पुबरीआ भीड़ पर लगाओल गेल। ई गप हमरा स्वर्गीय डॉ. सुभद्र झा कहने छलाह।

नागदहक पोखड़ि ओहि परोपट्टामे सबस विशाल पोखड़ि अछि। सुनैत छी, एहि पोखड़िसँ पैघ 'बभनदई' बासोपट्टीक पोखड़ि अछि। नागदह पोखड़िकेँ करीब 20 वर्ष पहिने चारु कात भीड़ छल, मुदा आजुक समयमे प्राय: चारु कात घर आंगन अछि आ दिनो-दिन विस्तृत भेल जा रहल अछि। एहि पोखड़िक जलक स्रोत दू टा थिक, एक त' प्राकृतिक रूपे वर्षा आ दोसर कमलास निकलल नहर। ओहिमे आयल बाढ़िसँ नहरक माध्यमसँ एहि पोखड़िक जलाशय उम-डाम भ' जाइत अछि। तदोपरांत बाढ़िक खतरा नागदह पर नञ पड़ैत छैक। गामक आवासीय भागक भूमि उंचस्थ छैक। एकटा समय छल जखन पोखड़िक जलाशय कम भ' जाइत छल, गामक गरीब वर्ग लोकनि थोड़ेक-थोड़ेक पोखरिक जगह छेक ओहिमे जीविकाक लेल मडुआ आ समयानुसारे किछु-किछु उपजाबैत छलाह। बलाइनक मलाह लोकनिकेँ लेल ई पोखड़ि जीविकोपार्जनक प्रमुख माध्यम छलनि। पोखड़ि देखबामे कोनो विशाल महानदीसन बुझना जाइत छल। सालोभरी मलाह लोकनि जाल आ महाजालसँ पोखड़ि सजाऔने रहैत छलाह। कखनो मलेडिया साफ अभियान तें, कखनो मांछ मारल जयबाक इंतजाम।

भरिदिन गामक बूढ़-बुजुर्ग, युवा, बच्चा पोखड़िमे नहाइत आ चुभकैत रहैत छलाह। माल-जाल सेहो पोखरिक शोभा बढ़ाबइत रहैत छल। आइयो धरि गामक विवाह, उपनयन, मुंडन आ

शुभकृत्य पोखड़िसँ जुड़ल कर्म एहि पोखड़िसँ होइत अछि। कदाचिद नागदह पोखड़िक उद्‌भवसँ एखन धरि गामक लोककेँ सम्पूर्ण पोखड़िसँ संबंधित कार्य एहि पोखरीसँ पूर्ण होइत आएल अछि। इ पोखड़ि नागदह लेल सदा शुभ आ शुभाशीष दैत रहैत रहल अछि। ग्राम देवता, स्थान देवता आ नाग देवता सदा अपन एहि ग्रामीण पर स्नेह बनौने रहैत छथि। एहि पोखरिक दक्षिण-पश्चिम कोनमे भव्य नागनाथ महादेवक मंदिर सेहो स्थापित अछि। जकर विधिवत स्थापना 1998 ई.मे भेल, यद्यपि शिवलिंग आ स्थान बहुत पहिने सँ ओहिठाम छल।

पोखड़िक वर्तमान हालात कहबा सुनबा योग्य नञ अछि। जाहि पोखड़िक देख-भाल कतेको सौ-साल सँ नञ भेल हो तकर हाल कि कहल जा सकैछ? ई तऽ मात्र सोचलापरान्त मानसिक पटल पर आबिगेल होयत। कहियो कोनो सरकार एहि पोखड़िकेँ जीर्णोद्धारक वास्ते डेग नञ उठेलथि। एहना स्थितिमे पोखड़िक गहराई कम भेनाइ त' स्वाभाविकेँ थिक। पोखड़ि प्राय: अपन रकबामे 30 प्रतिशत (तीसँ प्रतिशत भाग) भरि चुकल अछि आ कतेक शीघ्र भरि जाएत सँ कहल नञ जा सकैछ, कारण अतिक्रमण बहुत जोर शोरस भ' रहल अछि। जे लोक जाहि दिशामे छथि ओ ओहि भाग पोखड़ि भरनाई शुरू क' चुकल छथि आ इ कार्य युद्धस्तर सँ भ' रहल अछि। कारण ई पोखरिक गिनती किनको व्यक्तिगतमे नञ अपितु सरकारीमे होइत अछि। तैं रोकत के? बाजत के? ई थिक वर्तमानमे नागदहक पोखड़िक स्थिति।

मिथिला क्षेत्रमे बिहार सरकारक उपेक्षा सतत रहल अछि, मुदा एहि दिशामे मिथिलाक विद्वतजनक आँखि प्राय: एखनो धरी बन्न अछि। जँ अपन आंखि नञ फूजल रहत त' दोसर सँ की आस? मिथिलावासी लोकनिसँ आग्रह करैत छी जे अपन धरोहरकेँ बचाबक बास्ते हम सब आगा बढ़ि, नञ त' ओ दिन दूर नञ जखन मिथिलाक एक प्रसिद्ध पंक्तिक गिनती फुंसि भ' जाएत "पग पग पोखड़ि पान मखान, सरस बोल मुस्की मुस्कान"। भविष्यमे जखन पोखड़िए नञ त' मखान कतए सँ?

मध्यप्रदेशः सपनों को साकार करने का जरिया

❒ आर.एस. मीणा

मध्यप्रदेश के विकास में पिछले बारह वर्ष अभूतपूर्व रहे हैं। इस अवधि में प्रदेश ने विकास के नये आयाम स्थापित किये हैं। मध्यप्रदेश के सर्वांगीण विकास में सहज रूप से सड़कों के विस्तारध्उन्नयन की आवश्यकता को उजागर किया। विकसित मध्यप्रदेश में जहाँ वाहनों का आवागमन राष्ट्रीय राजमार्ग, राज्य राजमार्ग, मुख्य जिला मार्ग तथा अन्य जिला मार्गों पर कई गुना बढ़ा, वहीं विकास की रफ्तार ने वाहनों की रफ्तार में भी वृद्धि कर दी। उन्नत किस्म के अद्यतन वाहन मध्यप्रदेश की सड़कों पर दिखायी देने लगे, जिनके लिये उक्त गुणवत्ता के मार्गों की आवश्यकता पड़ी। वाहनों के बढ़ते दबाव तथा मार्ग की गुणवत्ता के सुधार के साथ-साथ एक चिन्ता मार्गों पर बढ़ रही दुर्घटनाओं की भी उत्पन्न हुई, जिसके लिये मार्ग की बनावट में भी आवश्यकतानुसार सुधार किया गया।

सड़क निर्माण/उन्नयन हेतु वर्षवार बजट प्रावधान

वर्ष	व्यय (राशि करोड़ में)	निर्मित/उन्नत सड़कों लम्बाई
2005-06	862.59	3476 किमी.
2006-07	1284.13	4123 किमी.
2007-08	1962.48	2803 किमी.
2008-09	1801.30	3951 किमी.
2009-10	2019.82	2584 किमी.
2010-11	2116.00	2906 किमी.
2011-12	1697.00	3020 किमी.
2012-13	2080.39	2804 किमी.
2013-14	2412.69	3010 किमी.
2014-15	2809.05	2722 किमी.
2015-16	2367.00	2382 किमी.
2016-17	369	1200 किमी.
योग	**2178145**	**34900**

मध्यप्रदेश शासन लोक निर्माण विभाग द्वारा विभिन्न शासकीय भवनों को समय-सीमा में गुणवत्तापूर्वक पूर्ण करने के उद्देश्य से लोक निर्माण विभाग के अधीन पीआईयू की संरचना की गयी। विगत 8 वर्ष में पीआईयू द्वारा भवन निर्माण कार्यों का सफलतापूर्वक सम्पादन किया गया है। कुल 5055 करोड़ की लागत से 3720 कार्य पूर्ण किये गये।

प्रदेश की वे योजनाएँ जिन्हें भारत सरकार ने सराहा

भारत सरकार की व्हीजीएफ (Viability Gap Funding) योजनांतर्गत लाभ लेकर मध्यप्रदेश सर्वाधिक सड़कों के निर्माण में भी प्रथम रहा है।

मध्यप्रदेश राष्ट्र का एकमात्र राज्य है, जहाँ एशियन डेव्हलपमेंट बैंक ने मार्ग निर्माण के क्षेत्र में पाँचवीं बार ऋण दिये जाने में अपनी रुचि प्रदर्शित की है। मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम द्वारा एशियन डेव्हलपमेंट बैंक से चार चरण में 11000 लाख डॉलर के वित्तीय ऋण प्राप्त किये गये हैं। विगत 10 वर्ष में इन ऋणों के माध्यम से प्रदेश में 4500 कि.मी. सड़कों का निर्माण हुआ है। यहाँ यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि प्राप्त ऋण का निश्चित समय-सीमा में समस्त औपचारिकताएँ पूर्ण करते हुए उपयोग कर लिये जाने की वजह से एशियन डेव्हलपमेंट बैंक द्वारा अंतर्राष्ट्रीय-स्तर पर मध्यप्रदेश को प्रशंसित किया गया तथा अन्य देश एवं राज्यों को मध्यप्रदेश के अनुसरण का सुझाव भी दिया गया। एडीबी तथा ब्रिक्स (BRICS) देशों द्वारा प्रायोजित एनडीबी (New Development Bank) से रु. 6000 करोड़ के ऋण का उपयोग आगामी वर्षों में 3000 कि.मी. लम्बाई की सीमेंट-कांक्रीट की सड़कों के निर्माण/उन्नयन में किया जायेगा।

पीआईयू के कार्यों का विवरण

वर्ष	स्वीकृत कार्य	पूर्ण कार्य	व्यय (रु. करोड़)
2009-10	38	00	00
2010-11	1117	01	0.41
2011-12	943	22	142
2012-13	1373	393	588
2013-14	644	788	1158
2014-15	326	956	1094
2015-16	337	1228	1471
2016-17	591	336	602
कुल	5369	3724	5055.41

भारत सरकार की प्रमुख योजनाओं की उपलब्धि

विगत दशक के विकास की रफ्तार को बढ़ाते हुए आगामी दस वर्ष में लोक निर्माण विभाग द्वारा मध्यप्रदेश को और अधिक गतिशील और उन्नत बनाये जाने के दृष्टिकोण से अधोसंरचना विकास में अपने लक्ष्य को अधिक बढ़ाते हुए कतिपय महत्वपूर्ण परियोजनाओं पर कार्यवाही शुरू कर दी गयी है। प्रथम चरण में राज्य के सड़क नेटवर्क को पुनः परिभाषित कर नवीन राज्य राजमार्ग, मुख्य जिला मार्ग घोषित किये गये हैं। इसी प्रकार राज्य राजमार्गों को नवीन राष्ट्रीय राजमार्गों में परिवर्तित किया गया है।

राज्य राजमार्ग से राष्ट्रीय राजमार्ग (अधिसूचित)	2611 किमी.
राज्य राजमार्ग से राष्ट्रीय राजमार्ग (सैद्धांतिक रूप से घोषित, वर्तमान में बीओटी के अंतर्गत संचालित)	2383 किमी.
मुख्य जिला मार्ग से राज्य राजमार्ग अन्य जिला मार्ग से मुख्य जिला मार्ग	3778 किमी.
राज्य सरकर की फ्लेगशिप योजनाओं की उपलब्धियाँ	4211 किमी.

राज्य सरकार की फ्लैगशिप योजनाओं की उपलब्धियां

मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम द्वारा वाणिज्यिक कर, परिवहन, वन, मण्डी तथा खनिज विभागों से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय करों के संग्रहण के लिये 24 एकीकृत जाँच चौकियों का निर्माण तथा दो केन्द्रीय नियंत्रण प्रणाली का निर्माण भी किया जा रहा है, जिसमें इंदौर तथा ग्वालियर स्थित केन्द्रीय नियंत्रण प्रणाली तथा 19 एकीकृत

जाँच चौकियों का निर्माण कार्य सम्पन्न कर लिया गया है। इससे न सिर्फ इन जाँच चौकियों से यातायात सुगम हुआ है, वरन राजस्व चोरी पर रोक लगाने में सफलता प्राप्त की गयी है।

दुर्घटना प्रतिक्रिया प्रणाली (एआरएस) के माध्यम से राज्य राजमार्गों को एकसूत्र में पिरोया गया है तथा राज्यमार्ग पर जीपीएस धारी एम्बूलेंस तथा टोल नाकों पर कैमरे की व्यवस्था सुनिश्चित की गयी है। म.प्र. सड़क विकास निगम द्वारा विकसित 'Accident Response System' प्रणाली को '108 सेवा' से जोड़ा जा रहा है। इससे पूरे मध्यप्रदेश में सड़क दुर्घटना में घायलों को त्वरित एम्बूलेंस सहायता प्रदान की जा सकेगा।

2003-16 तक के विकास का तुलनात्मक विवरण

वर्ष 1994-95 से वर्ष 2004-05 तक लोक निर्माण विभाग में योजना मद में सड़क निर्माण/उन्नयन के लिये रु. 3506.25 करोड़ का व्यय किया गया। इस अवधि में मात्र 11462.00 किलोमीटर सड़कों के निर्माण/उन्नयन की कार्यवाही की गयी। योजना मद में इसी प्रकार वर्ष 2001-02 से वर्ष 2004-05 तक भवन निर्माण के संबंध में मात्र रु. 160.60 करोड़ का ही व्यय किया जा सका। वर्ष 2001-02 से वर्ष 2004-05 के मद गैर-योजना मद में मात्र रु. 509.47 करोड़ का व्यय मार्ग निर्माण/उन्नयन में तथा रु. 138.45 करोड़ का व्यय भवन निर्माण में किया जा सका।

इसकी तुलना में वर्ष 2005-06 से वर्ष 2015-16 के मध्य योजना मद में सड़क निर्माण/उन्नयन के लिये लगभग रु. 21412 करोड़ व्यय कर 33781 कि.मी. सड़कों का निर्माण किया गया। वर्ष 2016-17 में योजना मद में रु. 5000 करोड़ की राशि स्वीकृत हैं, जिसका उपयोग सीमेंट-कांक्रीट की सड़कें बनाने में भी होगा।

निजी पूँजी निवेश के क्षेत्र में भी मध्यप्रदेश की गणना राष्ट्र के अग्रणी राज्यों में की जाती है। विगत ग्यारह वर्ष में (वर्ष 2005-06 से वर्ष 2016-17 के मध्य) लगभग रु. 14521 करोड़ की राशि से लगभग 6500.00 कि.मी. उच्च गुणवत्तापूर्ण सड़कों का निर्माण किया गया है। मध्यप्रदेश ही एकमात्र राज्य है जहाँ बीओटी, बीओटी एन्युटी तथा ओएमटी तीनों वित्तीय मॉडलों में आवश्यकतानुसार निजी पूँजी निवेश को प्रोत्साहित करते हुए मार्ग निर्माण/संधारण की कार्यवाही की गयी है। इतनी अधिक मात्रा में निजी पूँजी निवेश इस तथ्य का भी द्योतक है कि निवेशकों का विश्वास भी राज्य के प्रति बढ़ा है।

विभाग के बजट में इस दौरान हुई वृद्धि

वर्ष 1994-95 से वर्ष 2004-05 तक लोक निर्माण विभाग में योजना मद में सड़क निर्माण/उन्नयन के लिये रु. 3506.25 करोड़ का व्यय किया गया। इस अवधि में मात्र 11462.00 कि.मी. सड़कों के निर्माण/उन्नयन की कार्यवाही की गयी। योजना मद में इसी प्रकार वर्ष 2001-02 से वर्ष 2004-05 तक भवन निर्माण के संबंध में मात्र रु. 160.60 करोड़ का ही व्यय किया जा सका। वर्ष 2001-02 से वर्ष 2004-05 के मद गैर-योजना मद में मात्र रु. 509.47 करोड़ का व्यय मार्ग निर्माण/उन्नयन में तथा रु. 138.45 करोड़ का व्यय भवन निर्माण में किया जा सका।

इसकी तुलना में वर्ष 2005-06 से वर्ष 2015-16 के मध्य योजना मद में सड़क निर्माण/उन्नयन के लिये लगभग रु. 21412 करोड़ व्यय किये गये तथा इससे 33781 कि.मी. सड़कों का निर्माण किया गया। वर्ष 2016-17 में योजना मद में रु. 5000 करोड़ की राशि स्वीकृत है, जिसका उपयोग सीमेंट-कांक्रीट की सड़कें बनाने में भी होगा।

निजी पूँजी निवेश के क्षेत्र में भी मध्यप्रदेश की गणना राष्ट्र के अग्रणी राज्यों में की जाती है। विगत ग्यारह वर्ष में (वर्ष 2005-06 से वर्ष 2016-17 के मध्य) लगभग रु. 14521 करोड़ की राशि से लगभग 6500.00 कि.मी. उच्च गुणवत्तापूर्ण सड़कों कानिर्माण कार्य किया गया है। मध्यप्रदेश ही एकमात्र राज्य है, जहाँ बीओटी, बीओटीएन्युटी तथा ओएमटी तीनों वित्तीय मॉडलों में आवश्यकतानुसार निजी पूँजी निवेश को प्रोत्साहित करते हुए मार्ग निर्माण/संधारण की कार्यवाही की गयी है। इतनी अधिक मात्रा में निजी पूँजी निवेश इस तथ्य का भी द्योतक है कि निवेशकों का विश्वास भी राज्य के प्रति बढ़ा है।

लाभान्वित हितग्राहियों की संख्या (अजा/अजजा/ओबीसी सहित)

विगत 12 वर्ष में लोक निर्माण विभाग ने सड़क एवं भवन निर्माण की अनेक परियोजनाएँ पूर्ण की हैं, जिनका लाभ किसी व्यक्ति विशेष को न मिलकर जन-सामान्य तक पहुँचा है।

क्षेत्र विशेष के या व्यक्तिगत जीवन में आये बदलाव

प्रदेश में सड़कों के विकसित तंत्र का लाभ किसी एक वर्ग विशेष तक सीमित न रहकर प्रदेश के पंक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति तक पहुँचा है। 'जोड़ना-जुड़ना ही विकास है'' को चरितार्थ करते हुए भोपाल-इंदौर राजमार्ग ने औद्योगिक शहर इंदौर में उपलब्ध अवसरों को बड़े जन-समूह के लिये खोल दिया है। इन दो शहरों के बीच की दूरी तय करने में पहले जहाँ 5 से 6 घंटे लगते थे अब यही दूरी 2 से 3 घंटे में पूरी हो जाती है।

नागौद-सिंहपुर-कलिंजर मार्ग पर पड़ने वाले कई गाँवों के लिये यह सड़क बदलाव का संदेश लेकर आयी है। बाढ़ के कारण जो गाँव पहले अलग-थलग पड़ जाते थे, अब वर्षभर एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं।

बैगा आदिवासियों के लिये शहडोल-सिंहपुर-तुलरा-पडरिया मार्ग सरकार की योजनाओं एवं विकास का वाहक बनकर आया है। यह मार्ग दूर-दराज के आदिवासी हाट-बाजारों को शहर के बड़े बाजारों से जोड़कर उन्हें मुख्य धारा में लाने का कार्य बखूबी कर रहा है।

रीवा क्षेत्र के किसानों के लिये रीवा-हनुमना मार्ग वरदान के रूप में आया है। अब वे अपनी फसल एवं अन्य उत्पादों को कम समय में मण्डी पहुँचा पाते हैं।

वाहन पर आधारित रोजगार पर जीवन-यापन करने वाले बस, ट्रक एवं ऑटो चालक सड़कों की सुधरी हुई गुणवत्ता के लिये मध्यप्रदेश सरकार को धन्यवाद देते नहीं थकते हैं। अच्छी सड़कों के कारण उनकी गाड़ियों को होने वाला नुकसान, मेंटेनेंस, ईंधन का खर्च काफी कम हो गया है।

प्रदेश में विकसित बायपास मार्गो ने शहरों के विकास में भी नये आयाम जोड़ दिये हैं।

आज मध्यप्रदेश की विकास दर दो अंकों में है। इसका प्रमुख कारण पिछले 12 वर्ष में हुआ सड़कों का विकास ही है। मध्यप्रदेश में आज सड़कें सपनों को साकार करने का जरिया बनकर आयी हैं ओर उनकी अच्छी गुणवत्ता मध्यप्रदेश की पहचान बनी है।

M&M
BUILDERS
Kaisville
40 Lacs* onwards
Choice of 1-2-3 BHK Apartments and Independent Villas
Own A Vacation Home In Kullu-Manali
First of its Kind Group In Himachal Pradesh
HIMUDA Approved • Non-Himachalis can buy • Freehold Property
Features & Facilities
Terraced Landscaping I Multi cuisine restaurant I Gym & Spa I Yoga & Medication
Recreational Club I Organized Library I Badminton Court I Basketball Court
Table Tennis I Pool Tables I 24 hr power back up I Ample car parking
Luscious fruit orchards in the complex
Project Approved for Home Loan From:
All Apartments can be customized as READY TO MOVE IN
One of the finest Kais Monastery in your Neighbour
Picturesque valley views from all rooms
Watch River Beas flowing majestically from your balcony
Enjoy Mild Snowfall in winters
M&M
BUILDERS
An ISO 9001: 2008 Co.
Manchanda & Manchanda Builders Pvt. Ltd.
Site Office: Left Bank Kullu-Manali Road, Kais Village, Kullu, Himachal Pradesh
Ph: +91 9810065455, 9811896383, 9873473197
Head Office: HS-24, Kailash Colony Market, New Delhi-110048
Ph: +91 11 41730286, 41730287
Email: info@manchandabuilders.com Web: www.manchandabuilders.com

साहित्य अकादेमी सँ आय धरि पुरस्कृत मैथिली पोथी सबहक सूची

साहित्य अकादेमी (मूल पुरस्कार)

वर्ष	मूल कृति का शीर्षक	लेखक
2016	बड़की काकी एट हॉटमेल डॉट कॉम (कहानी)	श्याम दरिहरे
2015	खिस्साक (कहानी)	मनमोहन झा
2014	उचाट (उपन्यास)	आशा मिश्र
2013	संघर्ष आ सेहन्ताय (संस्मरण)	सुरेश्वर झा
2012	किस्त-किस्त जीवन (आत्मकथा)	शेफालिका वर्मा
2011	अपक्ष (कविता-संग्रह)	उदय चंद्र झा 'विनोद'
2010	भामती (उपन्यास)	उषाकिरण खान
2009	गंगा-पुत्र (कहानी-संग्रह)	मनमोहन झा
2008	कतेक डारिपर (संस्मरण)	मंत्रेश्वर झा
2007	सरोकार (कहानी-संग्रह)	प्रदीप बिहारी
2006	काठ (कहानी-संग्रह)	विभूति आनंद
2005	चानन घन गछिया (कविता-संग्रह)	विवेकानंद ठाकुर
2004	शकुन्तला (महाकाव्य)	चंद्रभानु सिंह
2003	ऋतंभरा (कहानी-संग्रह)	नीरजा रेणु (कामाख्या देवी)
2002	सहसमुखी चौक पर (कविता-संग्रह)	सोमदेव
2001	प्रतिज्ञा पांडव (प्रबंधकाव्य)	बबुआजी झा 'अज्ञात'
2000	कतेक रास बात (कविता-संग्रह)	रमानंद रेणु
1999	गणनायक (कहानी-संग्रह)	साकेतानंद (एस.एन. सिंह)
1998	तकैत अछि चिड़ै (कविता-संग्रह)	जीवकांत
1997	ध्वस्त होइत शांति स्तूप (कविता-संग्रह)	कीर्तिनारायण मिश्र
1996	आइ काल्हि परसू (कहानी-संग्रह)	राजमोहन झा
1995	कविता कुसुमांजलि (कविता-संग्रह)	जयमंत मिश्र
1994	उचित वक्ता (कहानी-संग्रह)	गंगेश गुंजन
1993	सामाक पौती (कहानी-संग्रह)	गोविन्द झा
1992	विविधा (निबंध-संग्रह)	भीमनाथ झा

वर्ष	मूल कृति का शीर्षक	लेखक
1991	पसिझैत पाथर (नाटक-संकलन)	रामदेव झा
1990	प्रभासक कथा (कहानी-संग्रह)	प्रभास कुमार चौधुरी
1989	पाराशर (महाकाव्य)	काञ्चीनाथ झा 'किरण'
1988	मंत्रपुत्र (उपन्यास)	मायानंद मिश्र
1987	अतीत (कहानी-संग्रह)	उमानाथ झा
1986	नातीक पत्रक उत्तर (रम्य रचना)	सुभद्र झा
1985	जीवन-यात्रा (आत्मकथा)	हरिमोहन झा
1984	सूर्यमुखी (कविता-संग्रह)	आरसी प्रसाद सिंह
1983	मैथिली पत्रकारिता का इतिहास (सर्वेक्षण)	चंद्रनाथ मिश्र 'अमर'
1982	मरीचिका (उपन्यास)	लिली रे
1981	अगस्त्यायिनी (महाकाव्य)	मार्कण्डेय प्रवासी
1980	ई बतहा संसार (उपन्यास)	सुधांशु शेखर चौधुरी
1979	कृष्ण-चरित (कविता-संग्रह)	तंत्रनाथ झा
1978	बाजि उठल मुरली (कविता-संग्रह)	उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'
1977	अवहट्ठ : उद्‌भव ओ विकास (साहित्येतिहास)	राजेश्वर झा
1976	सीतायन (महाकाव्य)	वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु'
1975	किछु देखल किछु सुनल (संस्मरण)	गिरीन्द्रमोहन मिश्र
1973	नैका बनिजारा (उपन्यास)	ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'
1971	पयस्विनी (कविता-संग्रह)	सुरेन्द्र झा 'सुमन'
1970	राधा विरह (महाकाव्य)	काशीकांत मिश्र 'मधुप'
1969	दु पत्र (उपन्यास)	उपेन्द्रनाथ झा
1968	पत्रहीन नग्न गाछ (कविता-संग्रह)	यात्री (वैद्यनाथ मिश्र 'नागार्जुन')
1966	मिथिला वैभव (दार्शनिक प्रबंध)	यशोधर झा
(1967, 1972 आओर 1974मे कोनो पोथीकेँ पुरस्कार नञ भेटल)		

मैथिली अनुवाद पुरस्कार

(1966 से)

वर्ष	अनुवाद का शीर्षक	अनुवाद	मूल कृति का शीर्षक (भाषा/विधा)	लेखक
2016	मिथिलाक लोक साहित्यक भूमिका	रेवती मिश्र	इंट्रोडक्शरन टु द फोक लिटरेचर ऑफ़ मिथिला (अंग्रेज़ी आलोचना)	जयकांत मिश्र
2015	बदलि जाइछ घरेटा	देवेन्द्र झा	बाड़ी बदले जाय (बाङ्ला उपन्यास)	रमापद चौधुरी
2014	मलाहिन	राम नारायण सिंह	चेम्मीरन (मलयाळम् उपन्यारस)	तक्षी शिवशंकर पिल्लैश
2013	बाङ्ला एकांकी नाट्य संग्रह	गुणनाथ झा	बाङ्ला एकांकी नाट्य संग्रह (बाङ्ला एकांकी-संग्रह)	संक. एवं संपादन: अजीत कुमार घोष (विभिन्न लेखक)
2012	कार्मेलीन	महेन्द्र नारायण राम	कार्मेलीन (कोंकणी उपन्यास)	दामोदर मावज़ो
2011	उपरवास कथात्रयी	खुशी लाल झा	उपरवास कथात्रयी (गुजराती उपन्यास)	रघुवीर चौधरी
2010	प्रज्वलित प्रज्ञा	नित्यानंद लाल दास	इग्नाइटेड माइंड्सँ (अंग्रेज़ी निबंध संग्रह)	ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
2009	बीछल बेरायल मराठी एकांकी	भालचंद्र एस. झा	निवडक मराठी एकांकिका, (मराठी एकांकी संग्रह)	विभिन्न लेखक
2008	संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र	ताराकांत झा	साख्तियात, पस-साख्तियात आओर मशरिक़ी शेरियात (उर्दू समालोचना)	गोपीचंद नारंग
2007	युद्ध अओर योद्धा	अनंत बिहारी लाल दास 'इंदु'	युद्ध र योद्धा (नेपाली कविता)	अगमसिंह गिरि
2006	कालबेला	राजानंद झा	कालबेला (बाङ्ला उपन्यास)	समरेश मजूमदार
2005	बिहारक लोककथा	योगानंद झा	फ़ोकटेल्सँ ऑफ़ बिहार (अंग्रेज़ी लोककथा)	पी.सी. रायचौधुरी
2004	प्रेमचंद : चयनित कथा भाग-1	प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'	संकलन (हिन्दी खिस्सा)	प्रेमचंद
2003	मनोज दासक कथा ओ कहानी	(स्व.) उपेन्द्र दोषी	मनोज दासनक कथा ओ कहिनी (ओड़िया खिस्सा)	मनोज दास
2002	पतझड़क स्वर	प्रबोध नारायण सिंह	पतझड़ की आवाज़ (उर्दू खिस्सा-संग्रह)	क़ुर्रतुल-ऐन हैदर
2001	अंतरिक्षमे विस्फोट	सुरेश्वर झा	अंतराळतीळ स्फोट (मराठी विज्ञान कथा)	जयंत विष्णु नार्लीकर
2000	तमस	अमरेश पाठक	तमसँ (हिन्दी उपन्यास)	भीष्म साहनी
1999	आरोग्य निकेतन	मुरारी मधुसूदन ठाकुर	आरोग्य निकेतन (बाङ्ला उपन्यास)	ताराशंकर बंद्योपाध्याय
1998	परशुरामक बीछल-बेरायल कथा	चंद्रनाथ मिश्र 'अमर'	चुनी हुई कहानियां (बाङ्ला खिस्सा-संग्रह)	राजशेकर बसु 'परशुराम'
1997	माटिमंगल	नवीन चौधरी	मरलि मन्निगे (कन्नड उपन्यास)	के. शिवराम कारंत
1996	अबुल क़लाम आज़ाद	फ़ज़्लुर रहमान हाशमी	अबुल क़लाम आज़ाद (उर्दू जीवनी)	अब्दुल क़वी दसनवी
1995	रवीन्द्रनाथ नाटकावली खंड-1	सुरेन्द्र झा 'सुमन'	चिरकुमार सभा, विसर्जन आओर चित्रांगदा (बाङ्ला नाटक-संग्रह)	रवीन्द्रनाथ ठाकुर
1994	सगाई	रामदेव झा	एक चादर मैली-सी (उर्दू उपन्यास)	राजिन्दर सिंह बेदी
1993	नेपाली साहित्यक इतिहास	गोविन्द झा	हिस्ट्री ऑफ़ नेपाली लिटरेचर (अंग्रेज़ी)	कुमार प्रधान
1991	शरतचंद्र : व्यक्ति एवं कलाकार	शैलेन्द्र मोहन झा	शरतचंद्र : मैन एंड आर्टिस्ट (अंग्रेज़ी समालोचना)	सुबोधचंद्र सेनगुप्त
1990	विप्रदास	उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'	विप्रदास (बाङ्ला उपन्यास)	शरतचंद्र चट्टोपाध्याय

(1989 आओर 1992मे कोनो पुरस्कार नञ भेटल।)

बाल साहित्य पुरस्कार

वर्ष	मूल कृति का शीर्षक	लेखक
2017	लालगाछी (उपन्यास)	अमलेन्दु शेखर पाठक
2016	भारत भाग्यय विधाता (भाग-1) (जीवनी)	प्रेम मोहन मिश्र
2015	हंसनी पान आ बजन्ताव सुपारी (उपन्याहस)	रामदेव झा
2014	हमर अठन्नीआ खसलइ वनमे (कविता-संग्रह)	(स्व.) जीवकान्त

वर्ष	मूल कृति का शीर्षक	लेखक
2013	हमरा बीच विज्ञान (निबंध-संग्रह)	धीरेन्द्र कुमार झा
2012	पिलपिलहा गाछ (कहानी-संग्रह)	मुरलीधर झा
2011	जकर नारि चतुर होइ (कहानी-संग्रह)	मायानंद झा
2010	ई भेटल तं की भेटल (कहानी-संग्रह)	तारानंद वियोगी

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कागर

वर्ष	मूल कृति का शीर्षक	लेखक
2017	धरतीसँ अकास धरि (कविता-संग्रह)	चंदन कुमार झा
2016	जे कहि नई सकलहुं (कविता)	दीप नारायण 'विद्यार्थी'
2015	प्रतिवादी हम (कविता)	नारायण झा
2014	विषदंती वरमाल कालक राति (कविता-संग्रह)	प्रवीण कश्याप

वर्ष	मूल कृति का शीर्षक	लेखक
2013	अंकुरा रहल संघर्ष (कविता-संग्रह)	दिलीप कुमार झा 'लूटन'
2012	एतबे टा नहि (कविता-संग्रह)	अरुणाभ सौरभ
2011	हठात् (नाटक)	आनंद कुमार झा

भेंट घांट

माननीया लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन सँ भेंटवार्ताक करैत मिथिला संघक पदाधिकारीगण

MINERAL EXPLORATION CORPORATION LIMITED

A MINIRATNA CPSE OF GOVT. OF INDIA

Dr.Babasaheb Ambedkar Bhavan, Seminary Hills, Nagpur-440 006, India.
Phone :091-712- 2511841, 2510310 Fax :-712-2510548
E.mail – headbd@mecl.gov.in, Visit us on – www.mecl.gov.in

THE PREMIER EXPLORATION AGENCY FOR SYSTEMATIC AND DETAILED EXPLORATION

MINERAL TARGETTING

- Order OF Magnitude Studies
- Remote Sensing Studies
- Regional & Detailed Geological Mapping
- Topographic & Underground Survey
- Surface & Borehole Geophysics
- Pitting & Trenching
- Laboratory Studies
- Appraisal/ Evaluation Report

MINERAL DEPOSIT ASSESSMENT

- Exploratory Drilling & Mining
- Borehole Deviation Survey
- Core & Mine Sampling
- Chemical & Physical Analysis
- Mineralogical & Petrological Studies
- Preparation of Plans & Section
- Reserves & Grade Estimation
- 3-D ore body modelling

OTHER SERVICES

- Survey for Infrastructure facility
- Bulk sampling for beneficiation studies
- Mine construction
- Manufacturing of drilling accessories
- Consultancy related to mineral industry

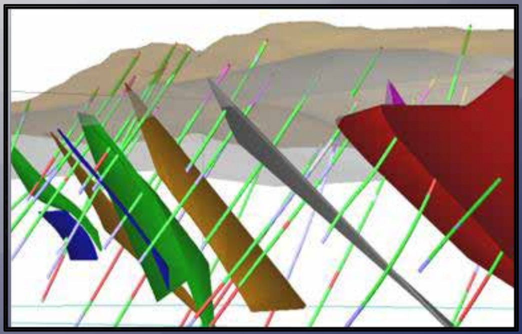

Our Search is Limit less, Our Strive is Endless...

A Nodal Agency of Govt. of India under National Mineral Exploration Trust (NMET)

सौन्दर्य सर्वेक्षण विद्यापतिक सौन्दर्य दर्शन

✍ डॉ. वीरेन्द्र मल्लिक

विद्यापति वाङमय केर गहन अध्येता, यात्री साहित्यक मर्मज्ञ रचनाकार, मैथिली नाटक आ रंगमंचक प्रतिबद्ध समीक्षक, अहि पीढ़ीक ख्यातिलब्ध हस्ताक्षर, गंभीर एवं तथ्यान्वेषी समालोचक, प्रवास मे रहि मैथिली भाषा-साहित्यक एवं संस्कृतिक प्रचार-प्रसारमे अनुखन तत्पर, वरिष्ठ कवि, कृती रचनाकार विगत पचास वर्ष सँ मिथिला-मैथिलीक समर्पित सेनानी।

संपर्क :
ए-816, जीडी कॉलोनी, निकट हनुमान मंदिर, मयूर विहार, फेस-3, दिल्ली
मो. : 09830460649

विद्यापति मूलत: प्रेम आ सौन्दर्यक कवि छथि। प्रेम आ सौन्दर्य दुनू शब्द एक दोसराक पूरक आ सहगामी थिक। प्रेम, वस्तु वा व्यक्तिमे नवीनता आ सौन्दर्यक सृष्टि करैछ, तं सौन्दर्य प्रेमक मूल बनि, जीवनमे स्पन्दनक सृष्टि करैछ। प्रेम सौन्दर्यसँ जीवन रस ग्रहण कए पुन: सौन्दर्यहिमे पर्यवसित भ' जाइछ। दुनूमे एतबा तादात्म्य रहलो सन्त। अधिकांश विद्वानक अनुसार प्रेमहिसँ सौन्दर्यक उत्पत्ति होइछा–

''Love, then is the mother of beauty and not its child, it is sole origin of that primary beauty which is a person's and not of things.[1]''

संसारक प्राय: सभ देश आ सभ कालक साहित्यक विषय-वस्तु थिक–प्रेम आ सौन्दर्य। साहित्यक उक्त विषय सनातन होइतहु चिर नवीन अछि। एहि दुनू शब्दमे मानव हृदयक समस्त वृत्ति आ जगतक समस्त रूप समाविष्ट अछि। प्रेम आ सौंदर्य–यएह भेल कविताक आदि विषय। सहस्रो पुनरावृत्तिक अतिरिक्त, यएह रहल अछि कविताक उपजीव्य।

शृंगारक उन्मुक्त गायक छथि विद्यापति। ओ प्रेम-सौन्दर्य विधायक छथि, यौवन आ विलासक उद्‌गाता छथि। हुनक रसमय वाणीमे नैसर्गिक माधुर्य एवं संगीतक मूर्छना अछि। शब्दक अपूर्व शिल्पी, वाणीक जादूगर, संगीतक सम्राट ओ काव्य कलाकेँ जौहरी छथि। हुनक प्रत्येक गीतिपदमे रसक पारावार तरंगायित अछि। शृंगारक तीनहु तत्व–काम[2], सौन्दर्य[3] आ प्रेम[4] एतय उपस्थित अछि। यएह कारण जे 'कीर्ति पताका' मे शृंगारक पक्षधरता करैत विद्यापतिक स्पष्ट उद्‌घोष अछि–

''संसार रत्नं मृगशावकाक्षी
रसो च श्रृंगार रसो रसानाम्।''

एतावता, प्रेम आ सौन्दर्यक यौवन आ श्रृंगारक कवि भेलाह विद्यापति। सौन्दर्यक रमणीय अभिव्यक्ति भेल हुनक काव्यक साध्य। कविताक शब्द-शब्दस सौन्दर्य-सुषमा प्रस्फुटित भेल अछि, एक-एक पदस सौन्दर्य-मंदाकिनी प्रवाहित भेल अछि। चहुधा रूपक वितान पसरि गेल अछि, स्वर्गिक सौन्दर्य धरती पर उतरि आएल अछि। रूप राशिक बिम्ब-विधान द्रष्टव्य अछि–

देख-देख राधा रूप अपार
अपरुब कें विधि आनि मिलाओल,
खिति-तललावनि सार।
अंगहि अंग अनंग मुरछायत,
हैरय पडन अथीर
मनमथ कोटि मथनकर जेजन,
सँ हरि महिमा गीर।

तथास्तु, आब प्रश्न अछि– 'सौन्दर्य' ककरा कही 'सुन्दर' शब्द आएल कतए सँ? ओकर की अर्थ? वस्तुत: 'सौन्दर्य' शब्द संस्कृतक 'सुन्दर' (विशेषण) शब्द सँ भाव अर्थमे 'ष्यञ्' प्रत्यय जोड़िकेँ होइछ। स्वयं 'सुन्दर' शब्दक व्युत्पत्ति सन्देहास्पद। वाचस्पत्य कोषमे

'सुन्दर' शब्द केँ 'सु' उपसर्ग पूर्वक 'उन्द' धातु सँ 'अरन' प्रत्यय जोड़िकेँ सिद्ध कएल गेल अछि। अत: धात्वर्थक अनुसार 'सुन्दर' शब्दक अर्थ भेल- 'सु' अर्थात् सुष्ठ वानीक जकां आ 'उन्द' अर्थात् आर्द्र करब तथा 'अरन' कर्तृ वाचक प्रत्यय। अहि प्रकारें 'सुन्दर' शब्दक व्युत्पत्ति लब्ध अर्थ भले-नीक जकां आर्द्र वा सरस कयनिहार।

'सुन्दर' शब्दक निष्पत्ति भ्वादि गणक 'उनादि समृद्धो' धातु सँ सेहो भ' सकैछ: 'सु' (उपसर्ग) अर्थात् नीक जकां आ 'नन्दयति' अर्थात् जे प्रसन्न करैत अछि। एवंविध, जे नीक जकां प्रसन्न करए, ओ 'सुन्दर' कहबैत अछि।

सौन्दर्य शब्दक एक व्युत्पत्ति आओर थिक, सुन्दराति इति सुन्दरम्, तस्य भाव: सौन्दर्यम्। 'सुन्द' केँ जे अनैत हो ओ सुन्दर तथा ओकर भाव जतए हो, 'सौन्दर्य' कहबैत अछि। 'सुन्द' पूर्वक 'रा' (धातु) अर्थात् 'आदाने' (आनब) धातु सँ औणादिक 'अच' प्रत्यय सँ 'सुन्दर' शब्द तथा गुणवाचक ब्राह्मणादिभ्य: ष्यञ एहि पाणिनी सूत्र सँ 'ष्यञ प्रत्यापरान्त 'सौन्दर्य' शब्द व्युत्पन्न भेल।

'सुन्द' क' अर्थ थिक कर्तनी अर्थात् जे कैंची जकां कटैत हो, आ तकरा जे आनैत हो, ओ 'सुन्दर' भेल। सौन्दर्य नेत्र द्वारा हृदय पर, कैंचीक काट जकां पक्का प्रभाव छोड़ैछ से सर्वविदित अछि। एतावता, जे आर्द्र वा सरस करए, जे नीक जकां प्रसन्न करए, जे कैंची जकां काटय, जे जीवन आ आनन्द प्रदान करए, सूत्र रूपें ओ भेल 'सौन्दर्य'।

तथास्तु। भारतीय काव्यमे सौन्दर्य भावनाक एक सुदीर्घ परम्परा उपलब्ध अछि। भारतक शस्य श्यामल भूमि अछि सौन्दर्यकेँ अक्षय भण्डार। श्री-सुषमा-सम्पन्न एहि देशक कण-कण सौन्दर्य-माधुरी सँ आप्लावित अछि। वन-उपवन, पशु-पक्षी, लता-सुमन, सरिता-तड़ाग, सागर-निर्झर, बादल-बिजली, चन्द्र-तारिका, उषा-निशा आदि भेल एहि भूमिक प्राकृतिक वैभव। तें यथार्थे कहल गेल अछि-

सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्
शस्य-श्यामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम् वन्दे।

अनादि कालहि सँ स्वर्गतुल्य ई भूमि, श्री-सुषमाक केन्द्र रहल अछि। 'माताभूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या' कहि देशक रक्षामे सहस्रो लोक प्राणो तिसर्ग करैत रहल अछि। यएह कारण जे देवतालोकनि सेहो एहिभूमिक प्रशंसामे गान करैत, एहि ठाम रहबाक कामना करैछ-

गायन्ति देवा: किलगीतकानि
धन्यास्तुते भारत भूमि भागे...

'वसुधैव कुटुम्बकम्' केर शंख-नाद भारत अदौ सँ करैत रहल अछि। यएह कारण अछि जे एहि सन्दर्भमे विश्वकवि रवीन्द्रनाथक स्पष्ट गर्वोक्ति अछि-

हे मोर चित्त पुण्य तीर्थ जागो रे धीरे
एहि भारतेर महामानवेर सागर तीरे।
हेथाय आर्य, हेथाय अनार्य
हेथाय द्रविड चीन
शक-हूण दल, पाठान,
एक देहे होलो लीन।

अनेकतामे एकता भारतीय संस्कृतिक मंत्र रहल अछि। अनादि कालहि सँ ई देश भूमंडलीकरण (Globlisation) क' संदेश दैत रहल अछि, विश्व शान्तिक शंख नाद करैत रहल अछि-

द्यौ शान्तिरन्तरिक्षं शान्ति
पृथिवी शान्तिराद: शान्ति
रोषघय: शान्ति। वनस्पतय:
शान्तिर्विश्व देवा: शान्ति
ब्रह्म शान्ति सर्व शान्ति वे
शान्ति समा शान्तिरेधी:।[5]

आओर यैह कारण जे विश्वभरिमे आइयो भारतक मान-प्रतिष्ठा अक्षुण्ण अछि। तें तं कहल गेल अछि-

सारे जहां सँ अच्छा,
हिन्दोस्तां हमारा।
हम बुलबुले हैं इसकी
यह गुलसितां हमारा।।

एवंविध एक दिस एहि देशक गौरव-गरिमाक गान जगाद्विख्यात, तें दोसर दिस 'स्वर्गादपि गरीयसी' एहि भूमिक प्रकृति सुषमाक जय गीत श्रुति-मधुर। श्री-सुषमा-सम्पन्न एहि भूमिक रमणीयताक प्रथम साहित्यिक अभिव्यक्ति ऋग्वेदक उषासूक्तिमे उपलब्ध अछि-

उषो मदेगिरा गहि दिवाश्चिद्रोचनादधि।
वहन्त्वणप्स्व उपत्वा सोभिनो गृहम्।[6]

द्वितीय प्रमुख ग्रंथ अछि प्राचेतसक रामायण(वाल्मीकि रामायण) जहिमे प्राकृतिक नैसर्गिक शोभाक विस्तृत वर्णन आ वर्षा, शरद, हेमन्त, गंगा, पर्वतादिक मंजु-मनोहर चित्र सेहो उपलब्ध अछि। उदाहरणार्थ,

व्यामिश्रितं सर्ज कदम्ब पुष्पैर्नवं
जलं पर्वत धातुताम्रम्।
मयूर केँ काभिरनुप्रयातं
शैलापगाह शीघ्रतरं वहन्ति।।[7]
पुनश्च-
विद्युत्पताका शवलाक माला
शैलेन्द्रकूटा कृत सन्निकासा।
गर्जन्तिमेधा: समुदीर्णनादा:
मत्र: गजेन्द्रा: इव संजुगुत्सा।।

प्राचीन संस्कृतक प्रमुख कविमे वाल्मीकिक पश्चात कालिदासक स्थान अबैछ, जनिक विभिन्न कालजयी रचनामे प्रकृति आ मानव सौन्दर्यक एक सँ एक यथार्थ आ नैसर्गिक चित्र उपलब्ध अछि। हुनक आदर्श कल्पना 'मेघदूत' केर विरहिणी यक्षिणीमे साकार भ'

उठल अछि–

तन्वीश्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी
मध्येक्षामा चकितहरिणी प्रेक्षणा निम्न नाभिः।
श्रोणीभारादलसगमना स्तोकनम्रा स्तनाभ्यां,
या तत्र साद्युवतिविषय सृष्टिराद्येव धातुः।।[8]

एतबहि नहि, 'कुमारसंभव' (5/1) मे जे ओ पार्वतीक अनिद्य सौन्दर्यक वर्णन कयने छथि, ओ विद्वन्मंडलीयमध्य प्रख्यात अछि–

निनिन्द रूपं हृदयेन पार्वती
प्रियेषु सौभाग्य फला हि चारुता।[9]

कालिदासक दृष्टि नैसर्गिक सौन्दर्यमे जे लावण्य रहैछ, सँ कृत्रिम सौन्दर्यमे कतए? नैसर्गिक सौन्दर्य केँ कोनो अलंकरणक आवश्यकता नञ रहैछ–

सरसिज मनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं
मलिनमपि हिमांशार्लक्ष्मलक्ष्मीं तनोति।
इयमधिक मनोज्ञा बल्कले नापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मंडनं नाकृतीनाम्।।[10]

कालिदासक अतिरिक्त भवभूति, भारवि, माघ, बाणभट्ट आदिक कृतिमे सेहो प्रकृति आ मानव सौन्दर्यक एक सँ एक उदाहरण उपलब्ध अछि। भवभूतिक सौन्दर्य भावना जतए अकृत्रिम आ शुद्ध सात्विक (उत्तर रामचरित) अछि, ओतहि बाणभट्ट सौन्दर्य भावना परमोज्वल आ लावण्यमय! महाश्वेताक वर्णनमे बाणभट्टमे सौन्दर्य स्पष्ट भ' उठल अछि–

''अति धवल प्रभा परिगत
देहतया स्फटिक गृह गतामिव
दुग्ध सलिल मग्नामिव
विमल चीनांशुकान्तरितामिव
आदर्शतल संक्रान्तमिव शरदभ्र
पटल तिरस्कृतामिव
अपरिस्फुट विभाव्यमानावयवाम्
पंचमहाभूतमय
मपहाय द्रव्यात्मक
मंगनिष्पादनोपकरण कलापम्
धवल गुणेनैल केवलेनोस्पादितम्।''

–बाणभट्ट, कादम्बरी,
पृष्ठ 390–91

एवंविध, संस्कृत साहित्यक महान कलाविद ओ सौन्दर्य शिल्पीक पश्चात जनिक नाम अबैछ, ओ थिकाह कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर जनिक अमर कृति 'वर्णरत्नाकर'मे सेहो कतिपय स्थल एहन अछि, जतए मानव सौन्दर्य एवं प्रकृति सौन्दर्यक अभिनव चित्र उपलब्ध अछि। एकर पश्चात साहित्य क्षेत्रमे पदार्पण होइछ अभिनव जयदेव विद्यापतिक, जनिक कालजयी कृति 'पदावली'मे मानव सौन्दर्य मुखर भ' उठल अछि।

पाश्चात्य साहित्यमे त' एहि विषय पर विशद विवेचन कएल गेल अछि। पाश्चात्य सौन्दर्य शास्त्रीलोकनिक मध्य (प्लेटो) सौन्दर्य केँ शिवत्वक प्रकाशनमे सार्थक मानैत छथि। विक्टर कूजियो ईश्वरहिमे चरम सौन्दर्यक स्थापना करैत छथि। लॉक आनन्दप्रद ब्राह्य रंग आ आकारमे सौन्दर्यक दर्शन करैछ।

हिगेल (Hegel) मानवक माध्यम सँ दिव्यसत्ताक अभिव्यक्ति केँ सौन्दर्य कहैत छथि। कांट (Kant) निष्काम निरपेक्ष आनन्दप्रदायक पदार्थ केँ सौन्दर्य सम्पन्न बतबैत छथि। शेलिंग (Schelling) ससीममे असीमक प्रकाश नञ केँ सौन्दर्य बतबैत छथि। ह्यूम (Hume) सौन्दर्य केँ पूर्ण व्यक्तिपरक बताक ओकरा मोनहिमे स्थिर करैत छथि। अभिव्यंजनावादी क्रोचे (Croche) सौन्दर्य केँ कल्पनामूलक, निरपेक्ष एवं काल्पनिक आत्मसत्ता मानैत छथि। प्रसिद्ध कवि कीट्सँ (Keats) सौन्दर्य केँ उच्च कोटिक आनन्द–प्रदाता ओ सत्य–संधाता मानैत छथि। विल डूरेन्ट (Will Durant) सौन्दर्यक सम्बन्ध शाश्वत चेतनाक स्रोत सँ बतबैत छथि। समाजवादी विचारक क्रिस्टोफर कॉडवेल (Christofer CauowQell) तथा जी. वी. प्लेनखानोव (G.V. Plenkhanov) सौन्दर्य केँ सामाजिक उपयोगिताक संदर्भमे देखैत छथि। सुतरां, पाश्चात्य सौन्दर्य तत्व चिंतक लोकनिक वस्तुपरक दृष्टिकोणक आधार पर, सौन्दर्य संबंधी अवधारणा केँ चारि वर्गमे विभक्त कएल जा सकैछ–

(1) वस्तुवादी किंवा यथार्थवादी वैज्ञानिक दृष्टिकोण

(2) आत्मवादी किंवा आदर्शवादी दृष्टिकोण

(3) मध्यमार्गी किंवा समन्वयवादी दृष्टिकोण।

भारतीय सौन्दर्य चिंतक लोकनिक दृष्टिकोण मुख्यतः आध्यात्मिक रहल अछि। आदि शंकराचार्यक उच्च आदर्शवाद जगत–प्रसिद्ध थिक। 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या', वस्तुतः प्राचीन आ नवीन सभ भारतीय चिंतक (शंकर, बल्लभ, कालिदास, भवभूति, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, अरविंद, सम्पूर्णानन्द आदि) सौन्दर्यक आदर्श रूपहि केँ वरण कयलनि अछि। किन्तु सौन्दर्य संबंधी पाश्चात्य एवं पौर्वात्य अतिवादी सिद्धांत केँ समाप्त कए, समन्वयवादी सिद्धांतक स्थापना कएल गेल अछि, जे सर्वतोभावेन श्रेयसँ एवं उपादेय अछि। समन्वयात्मक सिद्धांतक प्रतिनिधि पाश्चात्य चिंतकमे प्लेटो, बोजांक, हिगल, विश्वकोषकारादि तथा भारतीय चिंतकमे डॉ. कुमार स्वामी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, डॉ. आत्रेय, आदरणीय रामचन्द्र शुक्ल, हरिवंश सिंह शास्त्री, शिलीमुख, डॉ. कुमार विमल आदिक नाम उल्लेख्य अछि।

एतावता, ई निर्भ्रान्त अछि जे सौन्दर्यक कोनो सर्व मान्य आदर्श निर्धारित नञ कारल जा सकैछ। अतः यएह कहल जा सकैछ जे रूप–लावण्य

सँ समन्वित शरीर प्रेमोत्पादनक मूल आधार थिक जे मानव-प्रियता केँ लक्षित करैछ। सौन्दर्यक वास्तविक मापदण्ड थिक 'वीर्य विक्षोभन शक्ति।' काम भावनाक जाहि व्यक्तिमे जतबा अतिशयता रहैछ, ओकरा दृष्टिमे कोनो विशेष नारी ओतबहि अधिक सुन्दर प्रतीत होइछ, मुदा कामोत्तेजनाक परिसमाप्तिक बाद ओही नारीक सौन्दर्य ओहि व्यक्तिक दृष्टिमे कम भ' जाइछ। कविपति विद्यापति सेहो 'पदावली'मे एहि मानवीय सौन्दर्यक विविध चित्र अंकित कयलनि अछि जे हमर प्रतिपाद्य विषय अछि।

'सौन्दर्य' शब्दक अर्थमे वस्तुतः नाना भाव-तरंग समाविष्ट अछि-यथा उदात्त, सौम्य, मनोहर, रमणीय, मनोज, मनोरम, मधुर, पेशल, चारु, मंजुल, रुचिर, साधु, कान्त, लावण्यवान, द्युतिवान, छविवान, सुषमावान, अभिराम, मंगलकारी, भल, शुभ आदि। ओना तं पाश्चात्य एवं पौर्वात्य सौन्दर्य चिंतक लोकनि द्वारा सौन्दर्यक विविध रूपक चर्चा कएल गेल अछि, मुदा मुख्यतः ओकरा चारि वर्गमे विभक्त कएल जा सकैछ- (1) मानवीय सौन्दर्य (2) प्राकृतिक सौन्दर्य (3) वस्तुगत सौन्दर्य आ (4) कलागत सौन्दर्य महाकवि विद्यापतिक कृतिमे एहि चारू कोटिक यत् किंचित सौन्दर्यक अतिरिक्त कतिपय सौन्दर्यहुक सृष्टि कएल गेल अछि जकर अनुशीलन अपेक्षित। विद्यापति केँ एक सुदीर्घ काव्य परम्परा उपलब्ध छलनि। ओ स्वयं रुचि सँ सुसंस्कृत, युग-जीवन सँ परिचित, राजनीतिक उत्कर्ष अपकर्षक प्रति सजग, रूढ़िक विरोधक आ विचार क्षेत्रमे क्रांतिकारी छलाह। यैह कारण जे ओ वासना आ सौन्दर्यक सरस गीत गौलनि, तं प्रेमक परमोज्ज्वल रूप केँ सेहो चित्रित कयलनि। तें जे एक दिस हुनक काव्यमे चतुर शब्द शिल्पीक निपुणता, उक्ति वैचित्र्य एवं अलंकारक छटा उपलब्ध होइछ, तं दोसर दिस भाव-तल्लीनता, मार्मिकता आ नारी जीवनक वेदनाजन्य मौन पुकार आ शोषणक हाहाकार सेहो प्राप्त होइछ।

विद्यापति महान सौन्दर्योपाषक छलाह। सौन्दर्य हुनक जीवन-दर्शन, सौन्दर्य हुनक जीवन-दृष्टि। एहि सौन्दर्य केँ ओ नाना रूपमे देखले छलाह, ओकरा ओ कुशल मणिकार जकां चुनलनि, सजौलनि आ आलोकित कयलनि। जाहि युगमे ओ प्रादुर्भूत भेल छलाह, ओ श्रृंगारिक युग छल। सामंतवादी व्यवस्थाक सभ दुर्गुण ओतए उपस्थित छलैक। राज्याश्रित रहलो सन्ताओ चारण नहि, जन सामान्यक सुख-दुःखक भोक्ता आ अनुकर्त्ता छलाह। यैह कारण जे ओ श्रृंगारक उन्मुक्त गान कयलनि। जाहि श्रृंगार सरस्वती केँ वेदव्यास श्रीमद्भागवत आ ब्रह्मवैवर्त पुराणमे प्रवाहित कयने छलाह, ओकरहि एक नूतन स्रोत जयदेव 'गीत गोविन्द'मे प्रवाहित कयलनि आ ओकरहि विद्यापति काम, सौन्दर्य आ प्रेमक त्रिवेणी संगम रूपमे समुपस्थित कयलनि।

विद्यापति वस्तुतः मानवीय सौन्दर्यक उपासक थिकाह। मानवीय सौन्दर्य केँ दू वर्गमे विभक्त कएल जाइछ-नारी सौन्दर्य आ पुरुष सौन्दर्य। विद्यापति पुरुष सौन्दर्यक अन्तर्गत छलिया कृष्णक अनुपम सौन्दर्यक चित्रण तं करबे कयलनि अछि, मुदा नारी सौन्दर्यहि हुनक प्रतिपद्य वा वर्ण्य विषय रहल अछि। ओ नारी-सौन्दर्यक कुशल चित्रकार छथि। नारीक शारीरिक आ मानसिक सौन्दर्यक ओ महान शिल्पी छथि। यैह कारण जे ओतए उक्ति वैचित्र्य आ वाग्वैघ्य अछि, तें प्रतीक-योजना आ बिम्ब-विधान सेहो अछिः, अलंकारक वर्षा अछि तं श्रृंगारक बाढ़ि सेहो। ओतए नायिकाक जमघट व्यंग्यक चुभन, दृष्टिकूटक बुझौअलि आ लोकोक्ति-मुहावराक सुघर प्रयोग एक संग उपलब्ध अछि। आओर एहि सभक मध्य सौन्दर्य सुषमाक आस्फालन अछि, मृदु-मंजुल वितान पसरल अछि।

विद्यापतिक मानवीय सौन्दर्यक अन्तर्गत नारीक शारीरिक आ मानसिक (inward beauty and outward beauty) दुनू सौन्दर्य पक्षक समन्वय भेल अछि। शारीरिक सौन्दर्यक अन्तर्गत ओ नेत्र, मुख, केश, पयोधर, कटि, नितम्ब, अधर, दांत, हास, मुस्कान, नाभि, रोमावलि आ त्रिवली तथा यौवनावस्थाक अलंकारमे हाव, लीला, विलास, विच्छित, किलकिंचित, ललित, मोट्टाइत, बिव्वोक, विहित कुट्टमित, आदिक शत-सहस्र मधुर-मादक चित्र अंकित कयने छथि। मानसिक सौन्दर्यक अंतर्गत संयोगमे शालीनता, हास-परिहास, एवं ऋतु-वर्णन तथा वियोगमे मानक माध्यम सँ नायिका अनिंद्य रूप लावण्यक अभिनव छवि सेहो अंकित कयने छथि।

पुरुष सौन्दर्यक अपेक्षा नारी सौन्दर्यक चित्रणमे विद्यापतिक मोन विशेष रमल छनि जे सर्वथा स्वाभाविक। पुरुषक अपेक्षा नारी सौन्दर्य सँ विश्व वाङमय अभिमंडित अछि। यैह कारण जे विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर लिखने छथि-

"When god created man
He was a school master
But when he created woman
He became an Artist."

साहित्यमे 'नख-शिख वर्णन' कवि परिपाटी रहल अछि। विद्यापतिक नख-शिख-वर्णनमे राधाक अम्लान यौवन सुषमाशाली शरीर यष्टि आ भुवनमोहिनी छविक अंकन भेल अछि-

माधव कि कहब सुन्दरि रूपे।

कतेक जतन विहि आनि समारल,
देखल नयन सरूपे।
पल्लवराज चरण जुग शोभित,
गति गजराजक भाने।
कनक कदलि पर सिंह समारल,
ता परमेरू समाने।
मेरू ऊपर दुइ कमल फुलायल,
नाल बिना रुचि पाई।
मनिमय हार धार बह सुरसरितें,
नञ कमल सुखाई।

यद्यपि 'विद्यापति पदावली'मे नारी शरीरक विभिन्न अवयवक चारू-चित्र उपलब्ध अछि, मुदा ताहिमे किछु अप्रधान यौन-उत्पादक केन्द्र अछि जकरा अत्यधिक आकर्षक आ कामोत्तेजक (attractine and titelleting) कहल जाइछ। स्टूटज यौन-उत्पादनक वैद्य सूची प्रस्तुत कयने छथि। हेवलाक एलिस (Havlock Ellis) एहिमे सँ दू प्रमुख उत्पादन-स्तन आ नितम्ब कें सर्वाधिक महत्व प्रदान कयने छथि। विकसित यौवनक चिह्नमे ओ पांच वस्तुक नामांकन कयने छथि-यथा लावण्य, विस्फारित नयन, पयोधर, त्रिवलीयुक्त क्षीण कटि आ नितम्ब। विद्यापतिक गीति पदमे एकर सभक चित्ताकर्षक चित्र प्राप्त अछि जकर संक्षिप्त विवरण काम्य।

(1) मानवीय सौन्दर्य

(क) स्त्री सौन्दर्य (ब्राह्य सौन्दर्य)

मुखमण्डल: मानवीय सौन्दर्यमे मुंहक गढ़नि, सुकुमारता, प्रसन्नता आदिक महत्व निर्विवाद रूपमे स्वीकार कएल गेल अछि। साक्षात्कार समय सर्वप्रथम मुख-सौन्दर्यहि प्रभावित करैछ। ताहूमे नारीक मुखमंडल-ओकर कथे विशिष्ट अछि। संसारक अनेक महायुद्धक कारण कोनो-ने-कोनो रूपमे नारीए रहलीह अछि। यूनानी कवि होमर अपन एक गोट काव्य-नायिकाक मुख सौन्दर्यक प्रतापक सन्दर्भमे यथार्थ लिखने छथि- "This is the face that launched a thousand ships."

विद्यापतिक राधा रूप-लावण्यक प्रतिमा छथि। हुनक मुखमंडल चन्द्रमाक सार भाग सँ निर्मित अछि, जिनका देखि नायक (कृष्ण) कें चकविदोर लागि जाइछ। सुधा सँ प्रक्षालित मुखमंडल कें जखन ओ अपन आंचर सँ पोछैत छथि त' दसहुं दिशामे इजोत छिड़िया जाइछ-

चांद सार लए मुख घटना करू,
लोचन चकित चकोरे।
अमिय धोय आंचर धनि पोछलि,
दह दिस भेल इजोरे।।

पुनश्च:
सुधामुखि कें विहि निरमल बाला।
अपरुब रूप मनोभव मंगल,
त्रिभुवन विजयी माला।।

नेत्र: नायिकाक नेत्र वर्णन भेल कविलोकनिक प्रिय विषय। संस्कृतक आचार्यलोकनि नख-शिख वर्णनमे नेत्रक उपमानक चर्चा कयने छथि। एहि सन्दर्भमे केशव मिश्र नेत्रक उपमानक रूपमे मृग, मृगनेत्र, कमल, कमलपत्र, मत्स्य, खंजन-नयन, चकोर, केतकी, भ्रमर, कामवाण आदिक चर्चा कयलनि अछि। विद्यापति प्रेमव्यापारक उत्पादनमे आंखिक रूप, रंग, गुण आ व्यापारक क्रममे यद्यपि परम्परा सँ ग्रहीत उपमानहि कें बेसी प्रश्रय देने छथि, तथापि किछु नवीन उपानहुक प्रयोग हुनका द्वारा कएल गेल अछि। नेत्र-वर्णनमे आंखिक दीर्घता, नेत्र-व्यापारमे कटाक्षोत्क्षेप, कटाक्ष-पात, कटाक्षक्षेप आ नेत्रक विविध रंग आदिक उल्लेख काव्यशास्त्रमे विशेष रूप सँ कएल गेल अछि। विद्यापति जाहि मिथिलामे प्रादुर्भूत भेल छलाह, ओ अद्यपर्यन्त दीर्घ-नेत्री किशोरी ललनाक लेल विख्यात अछि, आमक फॉकसन आंखिक लेल प्रसिद्ध अछि। यथा-

बड़ कौसल तुअ राधे,
किन्हल कन्हाइ लोचन आधे।

पयोधर: संस्कृत ग्रंथमे कुचक्र हेतु जाहि रूढ उपमानसभक प्रयोग कएल गेल अछि, ताहिमे सँ अधिकांश उपमानक प्रयोग तं विद्यापति अपन गीतिपदमे कयनहि छथि, किछु नव उपमानक प्रयोगहु हुनका द्वारा कएल गेल अछि। संस्कृत ग्रंथमे एकरा लेल पुंगफल, कमल, कनककोरक, विल्व, ताल, गुच्छ, हाथीक कुंभ, पर्वत, घट, चक्रवाक, सौभीर, बीजपुर, समुद्र, छोलंग आदि रूढ़ उपमानक नामोल्लेख अछि। विद्यापति एहि रूढ उपमान सभकें गनबैत बैल, ताल, पर्वत, घट, हेमफल, गिरि, कटोरि,मेरू शिखर, अरविंद, चकेब, कनकांचल आदिक विशेष प्रयोग कयलनि अछि। प्राकृतिक दृष्टिमे एकरा उन्नत, विस्तृत, दृढ, पांडु आदि कहल गेल अछि। विद्यापति अधिकांश स्थल पर स्तन कें कनक शंभु वा शंभुशेखर कहलनि अछि। वराहमिहिर वर्तुलाकार, घन, अविषम आ कठोर उरोजक प्रशंसा कयलनि अछि। हैवलाक एलिस (Havlock Ellis) सेहो नायिकाक ब्राह्य सौन्दर्यक अद्भुत चित्र प्रस्तुत कयनि छथि:

How beautiful are they feel in sandals
O prince's daughter
They rounded things are like jewels,
The work of the hanosQ of evening workmen,
The novel is like a rounded goblet
Where in no mingled wire is wanted.[12]

कालिदासक यक्षिणी 'स्तोकनम्रा-

स्तनाभ्याम् छनि, तें पंडितराज जगन्नाथक उक्ति छनि 'सदैव सेव्यम स्तनभारवत्य:।' संस्कृत, प्राकृत ओ अपभ्रंश साहित्यमे कुचक्र अतित्वंगत्वक विशेष वर्णन उपलब्ध अछि। विद्यापति सेहो 'पीन पयोधर' क' अनेकश: उदाहरण प्रस्तुत कयलनि अछि। किछु उदाहरण अवलोक्य अछि–

(क) पीन पयोधर दूबरिगता,मेरू उपजव कनक लता।

(ख) गिरिवर गरुअ पयोधर परसित गिम गज मोतिम हारा।

काम कम्बु भरि कनक सम्भु परि ढारत सुरसरि धारा।।

(ग) पहिल बदरि कुच पुन नवरंग, दिन–दिन बाढय पिड़य अनंग।

सँ पुन भए गेल वीजक पोर, अब कुच बाढल सिरफल जोर।।

(घ) सुरति समापि सुतल वरनागर, पानि पयोधर आपी।

कनक सम्भु जनि पूजि पुजारी, धरय सरोरुह झांपी।।

कटि–नाभि–रोमावलि–त्रिवली: संस्कृतक आलंकारिक लोकनि, कटि नाभि रोमावलि आ त्रिवली केँ आकर्षक केन्द्र बनबैत दक्षिणावर्त नाभिकेँ प्रशस्त ओ मंगलकारक घोषित कयलनि अछि। एकरा लेल रसातल, आवर्त, झील, हृदय आदिक उपमानक देल जाइछ। कवि शेखराचार्य कृत 'वर्णरत्नाकर' क' 'अथ नायिका वर्णना'क अन्तर्गत दक्षिणावर्त नाभिक उल्लेख भेल अछि। मैथिली रंग नाटकक मसीहा महेन्द्र मलंगिया अपन बहुचर्चित ग्रंथ 'शब्दक जंगलमे अर्थक खोज'मे सरस ओ खोजपूर्ण (अनुसंधनात्मक) तथ्यक उद्‌घाटन कयलनि अछि। उक्त ग्रंथमे कटि–नाभि–रोमावलि ओ त्रिवली सेहो प्रशस्त विवरण प्रस्तुत कएल गेल अछि। नायिकाक क्षीण कटिक प्रशस्ति संस्कृत, हिन्दी, उर्दू आदि साहित्यमे मुक्त कंठ सँ गाओल गेल अछि। बाणभट्टक 'कादम्बरी'मे तथा ज्योतिरीश्वरक 'वर्णरत्नाकर' ग्रंथमे 'मुष्टिग्राह्य' अर्थात् मुट्टीमे आबयवला कटि (डांर) क' उल्लेख भेल अछि। एकरा अतिश्योक्ति अलंकार कहल जाइछ। एहि सन्दर्भमे हिन्दीक निम्न उक्ति अति प्रसिद्ध अछि–

कनक छड़ी–सी कामिनी,
काहे को कटि क्षीण?
कटि को कंचन काटि विधि,
कुवन मध्य धरि दीन।

उर्दू साहित्यमे त' कटिक क्षीणता सीमा पार क' चुकल अछि–

सुना है सनम को कमर ही नहीं है
खुदा जाने नाड़ा किधर बांधती है?
पुनश्च–
इं तहाये लागरी सँ
जब नजर आया न मैं,
हंसँ केँ ओ कहने लगे,
विस्तर केँ झाड़ा चाहिये।

अस्तु, नाभिक नीचाक भाग केँ 'वलि' कहल जाइछ, जकर वर्णन कविलोकनि केँ प्रिय रहलनि अछि। एकर उपमान लता, नदी, तरंग आदि सँ देल जाइछ। कटिक वर्णनमे सूक्ष्म नोक, शून्य, अणु, सिंहक डांर आदि सँ देल जाइछ। विद्यापतिक 'पदावली' सँ गृहीत किछु उदाहरण द्रष्टव्य अछि–

(1) नाभि विवर सँ लोमलतावलि, भुजगिनिसार पियासा।

नाशा खगपति चंचुभ रमभय, कुच गिरि संधि निवासा।।

(2) केहरि समकटि गुन अछि सजनी गे, लोचन अम्बुज धारि।

विद्यापति कवि गाओल सजनी गे, गुन पाओल अवधारि।।

(3) कूप गंभीर तरंगिनी नीर, जमुना सँ मार लता बिनु नीर।

(4) रोमावलि जनु सुण्ड अनुरूप, पानि पिअय चल नाभी कूप।

नितम्ब: पीन नितम्ब केँ आर्य स्त्री केर सौन्दर्यक प्रमुख विशेषतामे परिगणित कएल जाइछ। पैघ कद–काठीक आर्य ललनाक लेल पीन नितम्ब प्राकृतिक वरदान थिक। अनार्य स्त्रीक नितम्बमे पीनता (पुष्टता) केँ अभाव रहैछ। संस्कृत साहित्यमे सुन्दरीक नितम्ब केँ 'गुर्वी नितम्बस्थली' कहल गेल अछि। विद्यापति, नायिकाक वय:सन्धि सँ ल' कए वृद्धावस्था धरिक नख–शिख वर्णन प्रसंगमे नितम्बक पुष्टता एवं गुरुताक प्रशंसा कयलनि अछि। कालिदास यक्ष प्रियाक नितम्बक लेल 'श्रोणी–भारादलसतगमना' केँ प्रयोग कयलनि अछि, तं राजशेखर कर्पूर मंजरीक यौवनक अनुशंसामे अंगलावण्यपुण्णं स्सवण परि लोअण हारतारा' केँ प्रयोग कए हुनक नितम्बक पुष्टता ओ गोलाइक भूरि–भूरि प्रशंसा कयलनि अछि। ज्योतिरीश्वर 'वर्णरत्नाकर'मे नायिकाक नितम्ब केँ 'पीन, मांसल कर्म्मपृषकार श्रोणी' कहलनि अछि। विद्यापति सेहो परम्परानुसार नितम्बक पुष्टता आ गुरुता केँ विशेष प्रश्रय देलनि अछि। किछु उदाहरण द्रष्टव्य अछि–

(1) गुरुअ नितम्ब कहां चल गेल।

(2) गुरु नितम्ब भरे चलए न पारए माझ खीमन माइ।

(क) स्त्री सौन्दर्य (आन्तरिक सौन्दर्य)

नारी सौन्दर्य केँ मुख्यत: दू वर्गमे विभक्त कएल जाइछ– ब्राह्य सौन्दर्य एवं आंतरिक सौन्दर्य। आन्तरिक सौन्दर्यहि केँ मानसिक सौन्दर्य आ सूक्ष्म सौन्दर्य सेहो कहल जाइछ। एकरा अन्तर्गत स्त्रीक शील–स्वभाव, शालीनता आदि गुणक निरूपण कएल जाइछ। भवभूति, कालिदास, रवीन्द्रनाथ, जयशंकर प्रसाद आदि भारतीय कवि लोकनि शीलहि

केँ सर्वाधिक महत्व प्रदान कयलनि अछि। पाश्चात्य साहित्यहुमे एकर उत्कृष्ट उदाहरण उपलब्ध अछि (यथा शेक्सपीयरक डेस्डेमोना आदि)। शीलक अन्तर्गत सच्चरित्रता, मर्यादा, लज्जा, सेवा, दया, त्याग, समर्पण, करुणा, उदारता, विनम्रता आदि गुण केँ परिगणित कएल जाइछ। एहि सौन्दर्यक अभावमे भारतीय नारीक सौन्दर्य निस्सार बुझना जाइछ। देश केँ शत्रु सँ मुक्त करबाक लेल तरुआरि हाथमे लेने अरि-दल मध्य वीर ललनाक सौन्दर्य सेहो नारी सौन्दर्यक मध्य अबैछ। शील-स्वभाव-शालीनतायुक्त नारी सौन्दर्यहि केँ भारतीय संस्कृतिमे प्रश्रय देल गेल अछि। सीताक सौन्दर्य एकर उत्कृष्ट द्रष्टांत अछि-

सिय सुन्दरता बरनि न जाइ।
लघुमति बहुत मनोहरताइ।
आबत देखि बरातिन्ह सीता।
रूप रासि सब भांति पुनीता।।[13]

यैह कारण जे 'केलिन पॉल' क' कथन छनि जे स्त्रीगण कोनो अशालीन कार्य केँ करबामे 'ना-नू' नञ करैछ, जतबा ओकरा कहबामे ज्यॉं पॉल सार्त्रक कहब छनि जे स्त्रीगण केँ हं कहबामे जतबा लज्जाक अनुभव होइछ, ओतबा आओर कोनो बातमे नहि- "Women are shy of nothing so much as the little word 'Yes'."

हेवलॉक एलिस सेहो एहि सन्दर्भमे ठीक एहि प्रकारक मन्तव्य व्यक्त कयलनि अछि- "Modest women have a much greater honor of saying unmodest things than doing them." स्त्रीक एहि नाकारात्मक स्वीकृति केँ माधुर्यक कारण मानल जाइछ। त' त नीलकंठ दीक्षित लिखने छथि- 'प्रायोनेति श्रृतिविषयता विश्वमाधुर्य हेतुः।' भर्तृहरि सेहो स्त्रीक एहि नञ केर पश्चातहि मिलनक अभिलाषा व्यक्त करबाक उल्लेख कयलनि अछि। विद्यापतिक 'पदावली' मे लज्जाक स्वीकृति, गर्व, निषेध वा नहिमे ह द्वारा वैदग्यपूर्ण ढंग सँ चित्रण कयल गेल अछि। किछु उदाहरण द्रष्टव्य अछि-

(1) न न न न कर सखि परिनत ससिमुखि, सकल चरित तोर बुझल बिसेरवी।

(2) नञ नञ नञ पार भारवे। तइअओ कोटि जतन कर लाखे।

'पदावली' मे राधाक शालीनता ओ लज्जा मिश्रित सौन्दर्यक एक सँ एक चित्र उपलब्ध अछि-

(1) सैसव जौवन दरसन भेल।
दुहु दल बले दन्द परि गेल।।
कबहुं बांधय कुच कबहु बिथारि।।
कबहुं झांपय अंगक बहु उघारि।।
अति थिर नयन अथिर किछि भेल।
उरजक उदय थल लालिम देल।।
(2) अब सब खन रह आंचरहात।
लाजे सखिगन न पुछय बात।।
कि कहब माधव वयसक संधि।
हेरइत मनसिजमन रहु बांधि।।
तइयो काम हृदय अनुपाम।
रोपल घट ऊचल कर ठाम।।
सुनहत रस-कथा थापय चीत।
जइसे कुरंगिनी सुनय संगीत।।

(ख) पुरुष सौंदर्य

नारी सौन्दर्यजकां पुरुष सौन्दर्यक सेहो काव्यमे महत्व अछि, परंच ओकर वर्णन अपेक्षाकृत कम अछि। स्त्री जकां पुरुष ब्राह्य-रूप-सौन्दर्यक ओतबा महत्व नहि, जतबा ओकर कर्म-सौन्दर्य केँ महत्व प्रदान कयल जाइछ। ओकर प्रताप, ओज एवं बलक प्रशस्ति गाओल जाइछ। युद्धभूमिमे शत्रुदल गंजनमे रतवीर पुरुषक शौर्यक प्रशंसा कयल जाइछ। एकर अतिरिक्त आत्म कल्याण ओ लोक कल्याणक उच्चतेमे पुरुषक जीवन सौन्दर्य-आंकल जाइछ। विद्यापतिक 'पदावली' मे मानवीय सौन्दर्यक अन्तर्गत पुरुष सौन्दर्यमे मुख्यतः कृष्ण ओ शिवक सौन्दर्य अंकित कएल गेल अछि। कृष्ण-दामोदर, चानूर्दन, मधुसूदन, मुरारी, राधामाधव, माधव, कान्ह, श्याम, हरि मोहन, गोविन्द, वनमाली आदि विभिन्न नाम सँ अभिहित कएल जाइत छथि। विद्यापतिक गीतिपदमे नञ वात्सल्यक आलम्बन यशोदानंदने प्राप्त होइछ, नञ हुनक दुष्ट दलन अवतारी रूपहिक दर्शन होइछ। एतय मधुसम्पन्न, काम कलामे प्रवीण माधवहिक प्रेम-लीला-प्रदर्शनक प्रमुखता अछि, भक्तक भगवान कृषणक दर्शन कंचिते उपलब्ध होइछ। आधुना एहि वैज्ञानिक युगमे कोनहु कवि वा लेखकक मूल्यांकन ओकर गुण-दोषक विश्लेषण-विवेचन, प्रतिशतहिक आधार पर कएल जाइछ। मूल्यांकनक एहि निकष पर विद्यापति कृष्ण ओ राधा घोर श्रृंगारहिक प्रमाणित होइत छथि। एतय देवत्वक आतंक आ अवतारवादक कोनो भय नहि, अपितु मानवीय प्रेम आ सौन्दर्यहिक आकर्षण अछि। विद्यापतिक गीतिपदमे कृष्ण शारीरिक एवं मानसिक सौन्दर्य-चित्रण अत्यंत सान्द्रतापूर्वक कएल गेल अछि। राधाक दृष्टिमे कृष्णक सौन्दर्य दर्शनीय अछि-

कि कहबहे सखि कानुक रूप।
केँ पति आएत सपन सरूप।।
अभिनव जलधर सुन्दर देह।
पीत वसन पर दामिनी रहे।।
सामर झामर कुटिलहि केसँ
काजर साजल मदन सुवेस।।
जातिक केतहि कुसुम सुबास
फुलसर मनमथ तेजल तरास।।
विद्यापति कवि की कहब आर।
सून करल बिहि मदन भंडार।।

राधाक सखी-बहिनपा कृष्णक

अपूर्व सौन्दर्यक वर्णन करैत, प्रिय मिलनक हेतु ओकर उसकबैत अछि–

ए सखि पेखलि एक अपरुप।
सुनइत मानबि सपन सरूप।।
कमल जुगल पर चांदक माला।
कालिंदी तट धीरे चलि जाता।।
विमल बिम्ब फल जुगल विकास।
तापर कीर थीर करू बास।।
तापर चंचल खंजन जोर।
तापर सांपिनी झापर मोर।।

(ग) प्राकृतिक सौन्दर्य

प्रकृतिक संग मानवक चिरकालिक संबंध रहल अछि। प्रकृति भेल मानवक सहचरी। ऋग्वेद सँ ल' क' वर्तमान युगक गीति काव्य पर्यन्त प्रकृतिक शांत-समृद्ध रूपक अनेकशः चित्र उपलब्ध अछि। प्रकृति-सौन्दर्य कोमल आ मधुर अछि, तें भीषण आ उदात्त सेहो। मानव आ प्रकृति सौन्दर्यक सन्दर्भमे उदात्त आ करूपक चर्चा आवश्यक। उदात्त सौन्दर्यमे मानव आ प्रकृतिमे व्याप्त आत्माक अनंतता, विशालता, उदात्तता आ विराटताक दर्शन होइछ। प्रचंड झंझावात, अभ्रकंश-महिम-विराट हिमवानक विस्तार, विशाल-विस्तृत नद, तारिका खचित अनन्त आकाश आ क्षितिज, विस्तृत तरंगित नील-बैंगनी रंगक रत्नाकर, दृढ़ विशाल भवन, शिवक ताण्डव ओ हुनक जटा-जूट पर आकाश सँ कुदैत गंगा आदिक सौन्दर्य केँ उदात्त सौन्दर्य कहल जाइछ। वस्तुतः उदात्त सौन्दर्यमे मानव एवं प्रकृतिमे व्याप्त आत्माक विराटताक दर्शन होइछ। धार्मिक भाव मिश्रित भय किंवा आतंक भेल एकर मुख्य तत्व। सुतरां, उदात्त ओ सौन्दर्य छिक; जे आश्रम केँ पहिने पराभूत आ तदनन्तर आकर्षित करैछ। एहिमे पहिने धात, तदुपरान्त आहलादन रहैछ।

सौन्दर्यक सन्दर्भमे करूपताक विशेष चर्चाक पाश्चात्य सौन्दर्य चिंतकलोकनिमे अरस्तू, हिगल, लेसिंग तथा भारतीय सौन्दर्य चिंतकमे डॉ. कुमार विमल विस्तारपूर्वक कयने छथि। कुरूप केँ सेहो सौन्दर्यक तत्व मानव गेल अछि। एकर गणना दुःसाध्य सौन्दर्य (Difficult Beauty) केँ रूपहुमे कयल जाइछ।

अस्तु, विद्यापति प्रमुखतः मानवीय सौन्दर्यक कवि छथि। प्रकृति सौन्दर्य हुनक वर्ण्य-विषय नञ तथापि 'पदावलि' मे यत्र-तत्र विभिन्न रूपमे प्रकृति-सौन्दर्यक चित्रण कयल गेल अछि। विद्यापति प्रकृति निरूपण दू रूपमे कयने छथि- (1) वर्ण्य वस्तुक रूपमे ओ (2) उद्दीपनक रूपमे कवि द्वारा कतेकुह गीतिपदमे वसंतक स्वतंत्र रूपमे चित्रण कयल गेल अछि, तें कतहु बालकक रूपमे, कतहू तरुणक रूपमे, तें कतहु राजाक रूपमे, मुदा एहि सभमे मानवीकरणक आरोपन कयल गेल अछि। राजाक रूपमे वसंतक सौन्दर्य अतुलनीय अछि–

आयल रितुपति वसंत, घाओल अलिकुल माधवि-पंथ।

दिनकर-किरण भेल पौगंड, केसर कुसुम घयल हेमदंड

नृप-आसन नव पीठल पात, कांचन कुसुम छत्र घरू माथ।

मौलि रसाल मुकुल भेल ताय, समुखहि कोकिल पंचम गाय।

विद्यापति सँ पूर्व मैथिली साहित्यमे प्रकृति चित्रणक सजीव स्वाभाविक परम्परा रहल अछि। ज्योतिरीश्वरक 'वर्णरत्नाकर' मे प्रकृति चित्रणक एक-सँ-एक उदाहरण उपलब्ध अछि, मुदा विद्यापति केँ ज्योतिरीश्वर जकां स्वतंत्र प्रकृति चित्रण करबाक अवकाश नञ छलनि। प्रकृति हुनक विषयो नञ छलनि हुनक प्रकृति सौन्दर्यक जतबा चित्र उपलब्ध अछि, ओहिमे सँ अधिकांश उद्दीपनगत चित्रण थिक। हुनक प्रकृति सौन्दर्यक किछु उदाहरण अवलोक्य अछि–

(1) सूखल सर सरसिज भेल झाला।
तरुन तरनि तरु रहल न हाल।।
देखि दरनि दरसाव पताल।
अबहु धराधर धरसिन धार।।
(2) तातल-सैकत वारि विन्दु सम,
सुत मित रमणि-समाज।

सौन्दर्यक क्षेत्रमे अभिनव प्रयोग

विद्यापतिक सौन्दर्य भावना केँ मुख्यतः अपरुपक सौन्दर्य, चिरनूतन सौन्दर्य, सहज सौन्दर्य, पारस रूप सौन्दर्य, सूक्ष्म सौन्दर्य, अभिव्यंजनाक सौन्दर्य प्रभृति विभिन्न वर्गमे विभाजित कएल जा सकैछ। वस्तुतः सौन्दर्यानुसंधानक क्षेत्रमे भारतीय साहित्य मध्य ई विद्यापतिक महान अवदान थिकनि, जकर विश्लेषण अपेक्षित।

(1) अपरुपक सौन्दर्य

विद्यापति मुख्यतः अपरुपक कवि छथि। हुनक 'अपरुप' वा 'अपरुब' अपूर्व आ अपूरब थिक। ऊ अपरुप, अलौकिक अछि। सौन्दर्य संबंधी हुनक सम्पूर्ण दृष्टिकोण एहि एक शब्द 'अपरुप' मे समाहित भ' गेल अछि। 'अपरुप' ओ रूप वा सौन्दर्य अछि जे विद्यापतिक शब्दमे तिल तिल नूतन होए' अर्थात जे अनुपम आ नित नवीन अछि, अनन्त आ विश्वव्यापी अछि। जे महाकवि माघक शब्दमे क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रुपं रमणीयतायाः' अछि। विद्यापति भेलाह सौन्दर्यवादी कवि। सौन्दर्य मानेकें कतबा विहवल क' दैछ, सँ हुनका बुझल आ भोगल छलनि। तें ओ 'अपरुप' केँ एक सजीव पदार्थक रूपमे ग्रहण कयलनि। हिनक 'अपरुप' संपूर्ण त्रिभुवन-विजेता

अछि। ई ककरहु चित्त केँ चंचल क' सकैछ, कोनहु ज्ञानी केँ क्षुब्ध बना सकैछ–

सुधामुखि को विहि निरमिल बाला।
अपरुप रूप मनोभव मङ्गल।
त्रिभुवन विजयी माला।।

'माधव की कहब सुन्दरि रूपे', 'सजनी अपरुप पेखल रामा', 'ए सखि पेखल एक अपरुप' आदि गीतिपदमे एहि अपरुप सौन्दर्यक भाव-संकुलता देखल जा सकैछ। ई हुनक काव्य मर्मज्ञता, मनोवैज्ञानिक भाव-प्रवण ाता एवं सहृदयताक परिचायक थिक। वस्तुतः हुनक 'अपरुप सौन्दर्य' मोनकेँ चंचल केँनिहार, लावण्यक सार तथा ऋषि-मुनि-यती केँ विक्षुब्ध केँनिहार थिक। एकर किछु उदाहरण द्रष्टव्य अछि–

(1) ए सखि पेखलि एक अपरुप।
सुनइत मानिनी सपन सरूप।।
(2) सजनी पेखल अपरुब बाला।
सैसव यौवन दुहु एक भेला।।
(3) सजनी अपरुप पेखल रामा।
कनकलता अबलम्बन ऊअल,
हरिन-हीन हिमधामा।
(4) माधव अपरुब तोहर सिनेह।
अपने विरह अपन तन जरजर,
जिबइत भेलि सन्देह।

अंतिम पदमे विरह-विदग्धा नायिकाक प्रेमोत्कर्षक चित्रण अछि, जतए 'माधव-माधव' रटैत-रटैत राधा, माधव बनि जाइछ। 'अनुखन माधव-माधव सुमरित राधा भेलि मधाइ' केँ सन्दर्भमे नरेन्द्रनाथ गुप्तक कथन अवलोक्य अछि–

'एत उच्च भावेर कविता वैष्णव काव्ये आर नाइ।'

(2) चिर नूतन सौन्दर्य

विद्यापतिक सौन्दर्यक सब सँ पैघ विशेषता अछि चिर नूतनता। महाकवि माघ अपन 'शिशुपाल-वधम् नाटक' मे लिखने छथि–

क्षणै: क्षणै: यन्नवतामुपैति
तदेव रूपं रमणीयताया:।

नित्य नूतनताक कारणहि विद्यापतिक आंखि एहि सौन्दर्य केँ देखि कहियो तृप्त नञ भ' पबैत छनि–

जनम अवधि हम रूप निहारल,
नयन नतिरपित भेल।
सेहो मधु बोल स्रवनञ सूनल,
स्रुतिपथ परस न गेल।।

विद्यापतिक यौवन आ सौन्दर्य - दुहू चिरन्तन आ आभिराम थिकनि–

कि अरे! नव यौवन अभिरामा।
जत देखल तत कहए न पारिअ,
छओ अनुपम एक ठाम।

विद्यापतिक नेत्र भेल अणुवीक्षण यंत्र तुल्य सौन्दर्य पारखी। ओ स्वयं छथि नवीनतावादी ओ चिर नवीनताक आकांक्षी–

नव वृन्दावन नव-नव तरुगन,
नव-नव विकसित फूल।
नवल वसंत नवल मलयानिल,
मातल नव अलि कूल।।

(3) सहज सौन्दर्य

विद्यापतिक सौन्दर्य भावना मात्र अपूर्व, अलौकिक आ अपरुपे नहि, ओ सहज स्वाभाविक आ सरल-सरस सेहो अछि। ओतए कृत्रिमताक कोनो स्थान नहि, साज श्रृंगारक कोनो बेगरता नहि–

सहजहि आनन सुन्दर रे, भौंह
सुरेखलि आंखि।
पंकज मधुपिबि मधुकररे, उड़ाए
पसारल पांखि।।
ततहि घाओल दुहु लोचन रे, जतहि
गेलि वर नारि।
आसा लुबुधन न तेजए रे, कृपनक
पाछु भिखारि।।
मात्र मुंह सुन्दर नहि, भौंह सेहो सुरेखित अछि– मानू सोनामे सुगंध।

सहज सौन्दर्यक अधिषत्री नायिकामे छैक चुम्बकीय शक्ति, अपार आकर्षण। एतबहि नहि, नायिकाक शरीरमे अतेक ने चुम्बकत्व छैक जे नायक भिखारी जकां ओकरा पांछा लागि जाइछ। नायिकाक शरीरमे एकटा अजगुत सेहो देखल जाइछ। पर्वत पर त' सभ कियो लता केँ देखने होयते मुदा कनकलता (शरीर) मे दूगोट पर्वतक (कूचद्वय) केँ स्पष्ट रूपमे मात्र विद्यापतिए देखि सकबामे समर्थ छथि। तें तँ हुनक उक्ति छनि–

सहज सुन्दर गोर कलेवर पीत
पयोधर सिरी।
कनकलता अति विपरीत, फरल
युगल गिरी।।

(4) पारस रूप सौन्दर्य

विद्यापति अपरुप सौन्दर्य, ओ पारस-रूप सौन्दर्य थिक, जे कुरुपोकेँ विश्वसुन्दरी बना दैछ, लोहो केँ स्वर्णमे परिवर्तित क' दैछ। हिन्दी कवि जायसीक नायिक पदमावतीक हंसला उत्तर सूर्योदय भ' जाइत छलैक, कमलदल प्रस्फुटित होइत छलैक, एतए विद्यापतिक नायिका जतए पयर धरैछ, ओतए अमृतक वृष्टि होमए लगैछ, जेमहर नेत्र घुरबैछ, सूर्योदय भ' जाइछ। एतबहि नञ, कनेको हंसला पर अमृतक धार बहय लगैछ आ कटाक्ष कयला पर मदन वानक वर्षा होमए लगैछ–

जहां-जहां नयन विकास,
तंहि-तंहि कमल प्रकास।
जहां-जहां लहुहाससंचार,
तंहि-तंहि अमिय विकास।
जहां-जहां कुटिल कटाक्ष,
ततहि मदन-सर लाख।

विद्यापतिक राधा उड़िक' कृष्णक पास पहुँचि जयबाक कामना करैछ आ पारस-रूप कृष्ण केँ हृदय सँ लगा

लेबए चाहैछ। कहल जाइछ जे महापुरुष लोकनि एकहि रंगक बात सोचैछ। विद्यापति राधिकेँ जकां अंग्रेजी कवि एलिन पो केर नायिक सेहो उड़ि क' प्रियतम पास पहुंचि जयबाक कामना प्रकट करैछ। विद्यापतिक राधाक उक्ति अछि–

मन करे तहां उडि जाइअ,
जहां हरि पाइअ रे।
प्रेम परसमनि जानि,
आनिउर लाइअ रे।।

एलन जो केर नायिकाक कथन तुलनीय अछि–

How I the wings of a dove
I would have listed him again

(5) सूक्ष्म सौन्दर्य

सौन्दर्योपासक कवि सौन्दर्यकभोक्ते नहि, स्रष्टा सेहो होइछ। विद्यापति सौन्दर्यक भोक्ता आ स्रष्टा दुनू छलाह। हुनकेँ जकां विश्वकवि रवीन्द्रनाथ सौन्दर्य भोक्ता-स्रष्टा दुनू छलाह। तें तं ओ लिखने छथि–

If you have got beauty, I will take it
If you have none, I will adore it.[16]

विद्यापतिक सौन्दर्य भावना मात्र शारीरिकेटा नहि, मानसिक आ सूक्ष्म सेहो अछि। हुनक 'अपरुप' सूक्ष्म सौन्दर्यहि पर्याय अछि। हुनक सौन्दर्य भोगल यथार्थ पर आधारित अछि। यैह कारण जे हुनक सौन्दर्य साधारण भइयोक' असाधारण अछि, चिर परिचित भइयोक' चिर नूतन अछि। ओ शाश्वत सत्य आ मंगलमय सौन्दर्यक व्याख्याता छथि। अंग्रेजी कवि कीट्सँ सेहो सौन्दर्य केँ सत्याश्रित मनलनि अछि, तुलसीदास छवि गृह दीपशिखा जनु बरई' कहि एहि सूक्ष्म सौन्दर्यक अंकन कयलनि अछि। विद्यापतिक सूक्ष्म सौन्दर्यक एक उदाहरण द्रष्टव्य अछि–

चांदसार लार मुख घटना करु,
लोचन चकित चकोर।
अमिय धोए आचर धनि पोछल,
दह दिस भइल इजोर।।

(6) अभिव्यंजनाक सौन्दर्य

सुन्दर अभिव्यक्ति लेल सौन्दर्यमय अभिव्यंजना आवश्यक। विषय-वस्तु कतबो सुन्दर हो, मुदा सुन्दर अभिव्यंजनाक अभावमे ओ फीका पड़ जाइछ। अभिव्यंजना- सौन्दर्यक अन्तर्गत शब्द सौन्दर्य, नाद-सौन्दर्य, संगीत-सौन्दर्य आ भाषा-सौन्दर्य अबैछ। विद्यापतिक 'पदावलि' भेल एहि सभ सौन्दर्यक प्रकारक मणिमय मंजूषा। ओहिमे अछि शब्द, नाद, संगीत आ भाषा- सौन्दर्यक समुच्चय ओ भावानुकूल शब्द चयन। उदाहरण द्रष्टव्य–

नन्दक नन्द कदम्बक तरुतर,
घिरे-घिरे मुरलि बजावी। (258)

एतय 'नन्दक नन्द' शब्द ध्यानकेँ आकृष्ट करैछ, ओतहि सम्पूर्ण पद सुधी पाठक केँ रूप बिम्ब ओ ध्वनि बिम्ब सँ आह्लादित सेहो करैछ। शब्द-शिल्पी विद्यापतिक गीतिपदमे अगणित शब्द-चित्र उपलब्ध अछि–

खने खने नयन कोन अनुसरई।
खने खन वसन धूलि तनु भरई।
खने खन दसन-छटा छुट हास।
खने खन अधर आगे गहु बासा।
(616)

विषय केँ स्वरक माध्यम सँ व्यक्त करबाक प्रक्रिया केँ नाद सौन्दर्य कहल जाइछ। निम्न गीतिपदमे नाद सौन्दर्यक अद्भुत अभिव्यंजना भेल अछि–

बाजत द्रिमि-द्रिमि धौद्रिम द्रिमिया
नटत कलावति मांति श्याम संग,
कर करताल प्रबंधक ध्वनियां।
डम डम डंफ डिमिक डिम मादल,
रून-झुन मंजिर बोल।
किंकन रनरनि बलआ कनकनि,
निधुबन रास तुमुल उतरोल।
बीन पखाबज मुरज स्वरमंडल,
सरिगम पधनिसा बहु विधि भाव।
(1502)

लय द्वारा भाव केँ सघनतर बनयबाक प्रक्रिया केँ संगीत-सौन्दर्य कहल जाइछ। विद्यापतिक प्रायः सभ गीतिपद स्वर, लिपि, ताल पर आधारित अछि। हुनक अधिकांश गीतमे कहरबा, गजल, रूपक, दादरा, त्रिताल, बसंत, तीव्रा, त्रिवरा आदि ताल पाओल जाइछ। लय-विधानमे कवि निण्णात छथि–

सुन्दरि चललिह पहु-धर ना,
चहुदिसि सखिसभकर धर ना।
(895)

एहि गीतमे 'ना' केर लयमे मधुर अनुरोध निहित अछि, संगहि नयिकाक प्रतिसखीसमक अपनत्वक भाव सेहो व्यंजित भेल अछि। 'नंदक नन्द कदम्बक तरुतर, धिरे-धिरे मुरली बजाव' गीत, राग 'कहरबा' पर गाओल जाइछ। भाषा तं विद्यापतिक अनुचरी थिक। ओ जेना चाहैछ, तहिना ओकरा चलए पड़ैछ। की भाव-पक्ष आ की कला-पक्ष-सर्वत्र भाषाक सौन्दर्य अतुलनीय अछि–

काक भाख निज
भरवहरे पहु आओतमेरा।
क्षीर खांड भोजन देब रे
भरि कनक कटोरा।

भाषाक भंगिमामे ओ अद्वितीय छथि। समग्र भारतीय नव्य भाषाक मध्य प्रथम लोककवि विद्यापतिये छथि। ओ महान छथि, हुनक वाङमय महनीय अछि। भाषाक क्षेत्रमे 'प्रथक क्रांतिकारी' ओएह थिकाह।

एतावता, मध्यकालीन साहित्यक एकमात्र सौन्दर्योपासक कवि छथि विद्यापति। हुनक प्रभाव क्षेत्रक आस्फालन बंगला, असमिया, उड़िया,

हिन्दी, भोजपुरी आदि साहित्य धरि परिव्याप्त अछि। वस्तुत: ओं छथि, मानवीय सौन्दर्यक अमर चित्रकार, नारी सौन्दर्यक महान कलाकार! ओ प्रधानत: 'सुन्दरम्' के कवि छथि, मुदाहुनक 'सुन्दर' मात्र सुन्दरहि नहि, 'अपरुप' अछि। अपरुप अर्थात् अपूर्व। ई 'अपरुप' अलौकिक थिक। यैह हुनक ईश्वर, यैह हुनक सिद्धि। एहि 'अपरुप' कैँ देखि कहियो तृप्ति नञ होइछ। तें तें हुनक स्पष्ट उद्घोषणा अछि–

जनम अवधि हमरूप निहारल
नयन न तिरपित भेल।...

संदर्भ :

1. The pleasures of Philosophy : Will Durant, p. 195.
2. काम (Sex) : पुरुषार्थ (अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष) क' एक विशिष्ट अंग 'काम'क उल्लेख ऋग्वेदमे उपलब्ध अछि–

   कामस्तग्रे समवर्तताधि मनसोरेत: प्रथमंयदासीत।
   ततोबन्धुमसति निरविन्दन हृदि प्रतीव्या कवयो मनीषा।।

   – ऋग्वेद, नासदीय सूक्त 10/29/4
3. सौन्दर्य (Beauty):
   'Beauty is truth, truth beauty - that is all ye know on earth and all ye want to know' – Keals
   'A thing of beauty is a joy for ever; its loviliness increases, it will never pass into nothingness.' – Keals: Edymion.
4. प्रेम (Love) :
   "अनिर्वचनीयम् प्रेमस्वरूपम् मूकास्वादनवत्।"

   – नारदभक्ति सूत्र, 51-55

   'Love looks not with the eyes but with the mind, And therefor is winged cupud painted blind.'

   – Shakespeare: A Mid-Summer Night Dream.
5. तैतिरीयोपनिषद् 1/1/1
6. ऋग्वेद 1/49
7. वाल्मीकि रामायण
8. कालिदास, उत्तरमेघ 22,मेघदूत
9. कालिदास, कुमारसंभव 5/1
10. कालिदास, अभिज्ञान शाकुन्तल
11. बाणभट्ट, कादम्बरी, पृ. 390-91
12. Havlock Ellis: Studies in the Psychology of Sex, Vol-1, P. 40
13. तुलसीदास; रामचरितमानस, बालकाण्ड
14. Havlock Ellis: Psychology of Sex, Vol-1, P. 66
15. A.C. Bradley, S. Alexander; Beauty and other forms of value, p. 164
16. Rabindranath Tagore, Philosophical concept of Rabhindranath.

भेंट घांट

माननीय सांसद श्री प्रभात झाक नेतृत्व मे बिहारक मुख्यमंत्री श्री नीतिश कुमार सँ भेंटवार्ताक करैत मिथिला संघक पदाधिकारीगण

कृषि एवं ग्रामीण विकास की सेवा में समर्पित
राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (एन.सी.डी.सी.)

राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (एनसीडीसी) कृषि उत्पादों के उत्पादन, प्रसंस्करण, विपणन, भंडारण, आयात एवं निर्यात, खाद्यान्नों तथा संबद्ध कार्यकलापों जैसे कृषिक कार्यों हेतु सहकारिताओं के जरिए विभिन्न विकासात्मक कार्यक्रमों का संवर्धन कर रहा है जिनमें मुख्यतया निम्नलिखित कार्यक्रम सम्मिलित हैं:–

- **जिन्निंग, प्रेस्सिग एवं कताई, बुनाई एवं वस्त्र निर्माण**
- **चीनी एवं अन्य कृषि प्रसंस्करण इकाइयां**
- **उपभोक्ता व्यापार करने के लिए सहकारिताओं को सहायता**
- सभी प्रकार की **औद्योगिक सहकारिताएं,** कुटीर एवं ग्रामोद्योग, हस्तशिल्प / ग्रामीण शिल्प आदि
- **ऋण एवं सेवा सहकारिताएं** श्रमिक सहकारिताएं एवं सेवा सहकारिताएं : सहकारिताओं के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में जल संरक्षण कार्य एवं सिंचाई, पशु देखभाल / स्वास्थ्य, कृषि बीमा एवं कृषि ऋण, ग्रामीण स्वच्छता, पर्यटन, आतिथ्य एवं यातायात / नई एवं गैर पारम्परिक एवं अक्षय ऊर्जा स्रोतों का उत्पादन एवं वितरण / ग्रामीण आवास / अस्पताल / स्वास्थ्य देखभाल एवं शिक्षा आदि
- चुनिंदा जिलों में **एकीकृत सहकारी विकास परियोजनाएं**
- **कमजोर वर्गों** के कार्यक्रम – मात्स्यिकी, डेरी एवं पशुधन, कुक्कुटपालन, अनु0जा0 / अनु0ज0जा0, हथकरघा, कॉयर, पटसन, कोशकीटपालन, पर्वतीय क्षेत्र, श्रम एवं महिला सहकारिताएं
- **कम्प्यूटरीकरण हेतु सहायता**

एनसीडीसी का शुद्ध एनपीए शून्य है और इसके ऋणों की वसूली स्थिति 99% से अधिक है। एनसीडीसी द्वारा विभिन्न सरकारी विकास कार्यक्रमों हेतु अब तक लगभग 1 लाख करोड़ रूपये से अधिक की संचयी सहायता दी जा चुकी है।

राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम

(आईएसओ 9001:2015 प्रमाणित संगठन)
4, सीरी इंस्टीट्यूशनल एरिया, हौज खास, नई दिल्ली–110016
फोनः 26567475, 26567026, 26567202, 26567140
फैक्सः 0091–011–26962370, 26516032
वेबसाइटः www.ncdc.in

वर्णरत्नाकरः मध्यकालीन मिथिलाक झांकी

✍ सुरेन्द्र राउत

मैथिली भाषा साहित्य विशेषज्ञ। वर्ष 2006 मे संघ लोक सेवा परीक्षामे मैथिली सँ पहिल सहभागी, 2008 सँ मैथिलीक शैक्षणिक काजमे जुटल। संघ लोक सेवा आयोग आ बिहार लोक सेवा आयोग मे हिनक योगदान सँ 100 सँ बेसी विद्यार्थी चयनित। अहि लेल 2015 मे बिहार शिक्षा शिरोमणि पुरस्कार सँ पुरस्कृत भेलाह। एकर अतिरिक्त मैथिली आ सामान्य अध्ययन पर हिनक कतेको रास पोथी लिखल अछि।

संपर्क :
206, तीसरी मंजिल, जैना हाऊस कॉम्पलेक्स, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
मो. 9015277823

वर्णरत्नाकर कर्नाट वंशक अंतिम शासक हरिसिंह देवक संरक्षण मे ज्योतिरीश्वर ठाकुर द्वारा लिखल गेल। ऐहि पोथीक रचनाकाल पर प्रकाश दैत सुनीति कु. चटर्जी कहैत छथि जे ''वर्णरत्नाकरक पृष्ठभूमि विशुद्ध हिन्दू अछि आ मुसलमानी कालसँ पूर्वक अछि।''

वर्णरत्नाकर मैथिलीक पहिल उपलब्ध गद्य ग्रंथ अछि। एहि ग्रंथक मुख्य विशेषता ई अछि जे एहिमे जतबे राजकीय विषय-वस्तुक वर्णन भेटैत अछि ओतबे जनसामान्य समाजक। तँ एहि पोथीक आधार पर मिथिलाक सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थितिक अवलोकन निम्न रूपमे कैल जा सकैत अछिः-

सामाजिक स्थिति

वर्णरत्नाकरमे मिथिला समाजक विस्तृत वर्णन अछि, तँ एहि पोथीकेँ समाजशास्त्रीय दृष्टिसँ उपयोगी बुझल जायत अछि। वर्णरत्नाकरक अनुसारस मिथिला पुरुष प्रधान समाज अछि। सैद्धान्तिक रूपसँ महिलाकेँ देवीक स्थान देल गेल अछि मुदा व्यवहारमे एहन नहि अछि। मिथिला समाजक आधार वर्णाश्रम धर्म अछि। एहि व्यवस्थाक मध्य जातिप्रथाक कठोरताक वर्णन भेटैत अछि। जातिक रूपमे ब्राह्मणकेँ सर्वश्रेष्ठ बुझल गेल अछि। पुराणमे जे अवध ारणा अछि कि ''सौ वर्षक क्षत्रीयसँ 10 वर्षक ब्राह्मण पैघ होयत अछि।'' एकर निर्वाह ज्योतिरीश्वर करैत छथि। ब्राह्मण मध्य श्रोत्रिय, योग्य, पंजीबद्ध तथा जयवार ब्राह्मण उपजातिक वर्णन भेटैत अछि। बाह्मण मध्य सेहो विवाहक स्तर पर भेद-भावक वर्णन भेटैत अछि। जेना-कोना पंजीबद्ध ब्राह्मण जयवारस वैवाहिक संबंध नहि करऽ चाहैत छलाह, ई अवधारणा अखनहुँ प्रचलित अछि।

वर्णरत्नाकरमे 36 प्रकारक राजपूतक वर्णन भेटैत अछि। राजपूतक वर्णन सैन्य एवं राजनीतिक वर्गक रूपमे भेल अछि। एहि प्रकारसँ वैश्य एवं शुद्रक वर्णन कृषक समुदायक रूपमे भेल अछि। ज्योतिरीश्वर शूद्र जातिकेँ मंद जातिक रूप मे वर्णन करैत छथि, जकरा अंतर्गत धानुक, धनिया, चमार, गोआर, तापसि, तेलि आदिक वर्णन भेटैत अछि। निम्न जातिमे तथा गरीब वर्गमे बैगारक वर्णन भेटैत अछि। एकर अतिरिक्त ज्योतिरीश्वर किछु वन जातिक वर्णन सेहो करैत छथि, जेना-कोच, किरात, नट, पुलिंद, भिल, सबर आदि।

ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरमे हिन्दू पद्धतिक वैवाहिक रीति-रिवाजक वर्णन भेटैत अछि। एहि वर्णनमे सभस प्रमुख अछि पंजीप्रथा, जकर शुरूआत हरिसिंह देव द्वारा कयल गेल। ई प्रथा ब्राह्मण तथा कायस्थ समाजमे प्रचलित छल। एहि प्रथास समाजमे दुई टा नव वर्ग पंजीकार तथा घटकक उद्भव भेल। पंजीकार वंशावलिक तालिका रखैत छल आ वैवाहिक संबंध पंजीकारक सिद्धान्तक बाद ही स्थापित कयल जा सकैत छल।

घटक महाराज वर आ वधुक-मध्य मध्यस्थ वर्ग अथवा विचौलियाक काज करैत छलाह। उच्च वर्गमे समगोत्री विवाह तथा विधवा विवाह वर्जित छल। उच्च वर्गक महिलामे एकल-विवाह तथा पुरुषमे बहु विवाहक वर्णन भेटैत अछि। समाजमे कूलीन प्रचाक स्थापनाक वर्णन सेहो भेटैत अछि।

महिला

वर्णरत्नाकरमे महिलाक नीक आ बेजाय दुनू पक्षक वर्णन भेटैत अछि। सौन्दर्य वर्णनमे महिलाक नीक पक्षक वर्णन भेल अछि ओहिठाम समाजमे महिलाक खराब स्थितिक वर्णन भेटैत अछि। जाति विभाजन 'श्रमक आध ार' पर भेल अछि मुदा सभ जातिक महिलाक स्थिति शुद्रक समान बुझल गेल अछि। ज्योतिरीश्वर नायिका, सखी, वैश्या आदिक चित्रण विलास भावक रूपमे करैत छथि। एकर अतिरिक्त अन्य महिला अर्थात् विरक्ति भावक महिलाक चित्रण श्मशान तथा अंध कारस करैत छथि।

समाजमे स्त्री शिक्षा बंद भऽ गेल छल, मुसलमानक आगमन नहि भेल छल मुदा ओकर आशंकामे पर्दा-प्रथाक शुरूआत भऽ गेल छल। सती प्रथाक वर्णन सेहो भेटैत अछि जकर यथार्थ प्रमाण बादक कालमे शिव सिंहक पत्नी लखिमाक सतीमे देखल जायत अछि। बाल विवाह तथा कम उम्रमे विधवा बनबाक भयावह स्थितिक वर्णन भेटैत अछि। महिला समाजमे व्यवहारिक रूपसँ आदरक दृष्टिसँ नहि देखल जायत छल।

समाजमे वैश्या एवं कुटनिक बहुलताक वर्णन भेटैत अछि, जाहिमे राजाक अंतः पुरमे विलासक साधनक लेल पैघ संख्यामे युवती तथा गणिकाकेँ राखल जायत छल। सामंती प्रथा होयबाक कारणेँ सामंत लोकनि द्वारा सेहो युवती तथा गणिकाकेँ विलासक वस्तुक रूपमे राखल जायत छल।

निम्न जातिक महिला आर्थिक सहभागितामे योगदान दैत छलीह तथा सामाजिक बंधन कठोरता, जेना एकल विवाह, वर्जित विधवा विवाह आदिक प्रतिबंध ओकरा पर नहि होयत छल तेँ निम्न वर्गक महिलाक स्थिति परिवारक मध्य उच्च जातिक महिलास नीक छल। समाजमे सामाजिक जीवन सादगीपूर्ण रहैत छल मुदा समाजमे अछुत प्रथा बड्ड कठोर छल। एक जातिक लोक दोसर जातिक संग भोजन नहि कऽ सकैत छल। निम्न जातिक लोककेँ राजकीय मार्ग पर चलबाक मनाही होइत छल। कारण जे निम्न वर्गक छायास ब्राह्मण अपवित्र भऽ जायत छल।

धार्मिक स्थिति

मिथिला समाजमे धर्मक प्रभाव बड्ड गहिर छल। एहिठामक रहन-सहन, खान-पान, जीवन पद्धति आदि सभमे धर्मक प्रभावक रहैत छल। ब्राह्मणकेँ धार्मिक संस्कारक पूर्ण अधिकार देल गेल अछि मुदा ब्राह्मणक मध्य रूढ़िवादिता तथा कट्टरपंथी ज्योतिरीश्वरक अनुसारेँ प्राचीन कालसँ ही रहल छल।

ज्योतिरीश्वर कालीन मिथिला पंचोदेवोपासक छल जे ज्ञान, धर्म एवं भक्तिक समन्वय पर आधारित छल परन्तु बौद्ध धर्मक वज्रयान शाखाक प्रभावक कारणेँ तांत्रिक पद्धति केँ प्रश्रय भेटल। जाहिसँ मिथिलामे तंत्र-मंत्रक प्रभाव अंध विश्वासक रूपमे बढ़ल।

'शिव' मिथिलाक श्रेष्ठ देवताक रूपमे प्रतिष्ठित छथि। जे जन देवताक रूपमे सभ जाति द्वारा पूजल जायत छथिन। आमजनमे सिद्धनाथक प्रभाव बड्ड गहिर छल तेँ नाथपंथी लोकनि अपन समुदायमे योग एवं शिव तत्वक समावेश कऽक ओकरा जनताक बीच आकर्षक बनौलनि। बादमे एहि संप्रदाय सँ कतेको भ्रष्टाचार जनताक बीच जन्म लेलक। योग आ मंत्रक आश्रय लेनिहार पाखंडी साधु, मंहत आ योगिक संख्यामे वृद्धि भेल तथा समाजमे अंध विश्वास सुदृढ़ होइत चल गेल। मंत्र आ योगसँ उत्पन्न चमत्कारक बल पर एहन घृणित सम्प्रदाय बनल जे तंत्रक नाम पर पंचमकारक प्रचार करऽ लागल तथा स्त्री आ पुरुषकेँ मद्य एवं मैथुनक पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान कयलक जाहिसँ समाजमे नैतिकताक क्षरण भेल।

वर्णरत्नाकर मे मीमांसक भट्ट सम्प्रदाय तथा प्रभाकर सम्प्रदायक वर्णन भेटैत अछि। एकर अतिरिक्त न्यायिक रूपमे उदयनाचार्यक वर्णन भेटैत अछि। मीमांसक मध्य वाद-विवादक वर्णन भेटैत अछि। 'संगहि मीमांसक' आ 'नाथपंथीक' बीच संघर्षक वर्णन सेहो भेटैत अछि। वर्णरत्नाकरमे वैष्णव सम्प्रदायक वर्णन तथा गीत गोविन्दक प्रभावक वर्णन सेहो भेटैत अछि। हिनक श्रृंगारिक रचनामे जे काव्य दक्षताक-वर्णन भेटैत अछि ओकर अनुकरण परवर्ती कवि द्वारा राधा- कृष्णक श्रृंगारिक गीतमे कैल गेल।

निम्न वर्गकेँ धार्मिक अधिकार प्राप्त नहि छल। एहिमे लोरिक तथा स्थानीय देवी-देवताक वर्णन तथा तांत्रिक देवी रूपमे योगिनी, भिंदी आदिक वर्णन भेटैत अछि। पूजा स्थलक रूपमे मन्दिर, मठ आदिक वर्णन भेटैत अछि। राजाक दरबारमे पूजा स्थलक तथा पूजा लेल विभिन्न विधि विधानक वर्णन भेटैत अछि। वर्णरत्नाकरमे कतेको ठाम

कर्मकाण्डक वर्णन यज्ञशाला आदिक वर्णन सेहो भेल अछि। ज्योतिरीश्वर द्वारा बौद्ध पक्षकेँ आपत भीषण आ बौद्ध विरोधी उदनाचार्यक सिद्धान्तक प्रशंसा कैल गेल अछि।

आर्थिक स्थिति

मध्यकालीन मिथिला समाज सामंती प्रथा पर आधारित छल, एहिमे सामंतक स्तर पर सेहो प्रतिभेद भेटैत अछि मुदा सभ वर्गक सामंत राजाक प्रति निष्ठावान रहैत छल। समाजक अर्थव्यवस्थाक मुख्य आधार कृषि छल। कृषि व्यवस्था आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्थाक रूपमे स्थापित छल जकर स्वरूप जजमानी व्यवस्था पर निर्भर छल।

पशुपालन, कृषियंत्र एवं विभिन्न प्रकारक कृषि फसलक वर्णन भेल अछि। 'धान' अगहनी आ भदई दुनु रूपमे होयत छल। रबी फसलक रूपमे तिलहन, दलहन आदिक वर्णन भेटैत अछि। पान आ माछक खेतिक वर्णन सेहो भेटैत अछि। खेतीक काजमे वैश्य आ शुद्र जातिक बहुलता छल। वर्णरत्नाकरमे सेहो बाढ़क विभीषिकाक वर्णन भेटैत अछि।

राजनीति एवं शासन

सुरेश्वर झाक अनुसारेँ वर्णरत्नाकरकेँ राजनीतिक ग्रंथ कहब बेसि उचित अछि, हालाँकि वर्णरत्नाकरमे राजनीति एवं शासनक वर्णन करबाक लेल फराकसँ कोनो कल्लोलक रचना नहि कैल गेल अछि मुदा, दोसर, तेसर, चारिम, पाँचम तथा आठहम कल्लोलमे एकर वर्णन कैल गेल अछि।

द्वितीय कल्लोलक आधार पर ज्योतिरीश्वरक अनुसारेँ ई कहल जा सकैत अछि जे राजनीतिमे साध्य एवं साधन दुनुकेँ समान रूपसँ नैतिक मूल्य पर होयबाक चाहि। एहि प्रकारक अवधारणा वर्तमानमे स्वच्छ लोकतंत्रक अवधारणा बुझल जायत अछि। द्वितीय कल्लोलमे नायक वर्णन अछि, जाहिमे राजाक गुणक स्थापना परोक्ष रूपसँ कैल गेल अछि। राजाक वंशावली भारतक श्रेष्ठ राजवंश सूर्यवंश आ चंद्रवंश सँ स्थापित कैल गेल अछि। एहिमे राजाकेँ सर्वशक्ति सम्पन्न जाहिमे 36 प्रकारक युद्ध कला 84 प्रकारक राजनीति तथा सदाचारी सेवक आदि रूपमे वर्णन कैल गेल अछि।

तेसर कल्लोलमे अस्थान वर्णनाक रूपमे राजदरबार, राजाक दैनिक जीवन तथा कार्य एवं विभिन्न पदाधिकारी एवं कर्मचारिक वर्णन कयने छथिन। एहिमे ज्योतिरीश्वर अपन आश्रयदाता राजाकेँ युधिष्ठिर सन सत्यावादी, परशुराम सन वीर, लंकेश्वर सन आज्ञा देनिहार दुर्योधन सन अहंकारी, गोपाल सन बिलासी, समुद्र सन मर्यादा पूर्ण, महादेव सन एश्वर्यशाली आदि गुणसँ सुसज्जित करैत छथि। ज्योतिरीश्वर अनुसारेँ राजा राष्ट्रक प्रतीक तथा मुखिया होयत अछि। हुनक व्यक्तित्व जीवन तथा कार्य सेहो सार्वजनिक महत्त्वक होयत अछि। राजाकेँ सदिखन जनहितमे लगल रहबाक चाही। राजा गुणक इ विश्लेषण कौटिल्यक अर्थशास्त्र तथा वर्तमान लोकतंत्रक विचार केँ स्मरण करबैत अछि।

चारिम कल्लोलमे राजाक राज्याभिषेक वर्णन होयत अछि। राज्याभिषेकक समारोह पाँच प्रकारक ध्वनि तथा स्वर पाठ, वैदिक मंत्रक ध्वनि, शंखनाद, मांगलिक एवं विजय घोषणाक संग आरम्भ होयत छल। पांचम कल्लोलमे राजाक आखेटक वर्णन भेटैत अछि। आठहम कल्लोलमे दुर्गक वर्णन भेटैत अछि। दुर्ग ओहि कालक राज्यक महत्त्वपूर्ण अंग होयत छल। दुर्ग ऊँचा स्थान पर बनायल जायत छल जे बेंत, काठ आ बाँससँ घेरल रहैत छल।

वर्णरत्नाकरमे राजाक समृद्ध स्थितिक वर्णन भेटैत अछि। मिथिलाक सीमा पर नेपाल, गौड़, भूटान, कामरूप, उत्कल, आयोध्या, मगध आदि राज्य स्थित छल। कर्नाटक, कोंकण, सिंघल, मालव, गूर्जर, महाराष्ट्र आदि राज्यसँ राजदूतक आदान-प्रदानक वर्णन तेसर कल्लोलमे भेटैत अछि।

तेसर आ आठम कल्लोलमे राजदरबारी तथा पदाधिकारीक विस्तृत वर्णन भेटैत अछि। एहि संबंधमे डॉ. सुनीति कु. चटर्जी कहैत छथि जे- "राजदरबारी तथा पदाधिकारी लोकनिक जतेक पैघ सूची ज्योतिरीश्वर द्वारा प्रस्तुत कैल गेल ओतेक पैघ सूची समकालीन कोनो राजनीतिक चिन्तक द्वारा नहि देल गेल अछि।"

राजाक व्यक्तिगत कर्मचारी सहायक सेवक अथवा परिचारक कहबैत छल। मनोनीत राजा 'कुमार' कहबैत छल। राजाक श्रेष्ठ पुत्रकेँ 'राजपुत्र', सेनाकेँ 'सेनापति', गृह विभागक अधिकारीकेँ 'मंत्री', परराष्ट्रक मंत्रीकेँ 'संधिविग्रह', राज्यक भूमि देखभाल अधिकारी केँ 'राजगुरू' कहल जायत छल।

राज्यक विभाजन मंडलमे कैल गेल छल जकर अधिकारीकेँ मांडलिक कहल गेल अछि। मंडलक विभाजन पुरमे कैल गेल छल जकर अधिकारीकेँ पुरपति कहल गेल अछि। ग्राम प्रशासनक सभस छोट इकाई छल जकर अधिकारीकेँ ग्रामिक कहल गेल अछि।

सांस्कृतिक स्थिति

वर्णरत्नाकरमे जनसमान्यक सांस्कृतिक वर्णन अछि तेँ गियर्सन महोदय एकर तुलना बिहार पीजेंट लाइफ सँ करैत छथिन। सांस्कृतिक वर्णनक रूपमे नृत्य,

गीत एवं संगीतक वर्णन विस्तार पूर्वक भेल अछि। एहिसँ संगीतक शास्त्रीय अध्ययन ओ अभ्यास पर सेहो स्पष्ट प्रकाश पड़ैत अछि। एहिमे विभिन्न प्रकारक राग-रागनिक नामक उल्लेख कैल गेल अछि। लोक रंग-मंचक वर्णन सेहो भेटैत अछि। एहि लोक-रंग मंचक क्रममे अश्लीलताक वर्णन भेटैत अछि।

छठम कल्लोलमे विद्यावंत वर्णना अछि, जाहिमे नर्तक एवं नर्तकी दुनुक विवेचना भेटैत अछि। विद्यावंत स्वयं राजनर्तक छलाह जकरा संग एकटा तेलंगी आ एकटा महाराष्ट्र नर्तकी छलीह। एहिमे एकगोट कारी तथा एक गोट गोर छलीह। ओहि नर्तकी संग विद्यावंत शुद्ध सारंग एवं संकीर्य रागक शुरूआत कयलनि। एहि नृतक क्रममे विभिन्न प्रकारक वाद्ययंत्र वर्णन भेटैत अछि। जेना डमरू, मजिरा, काठताल, वीणा, वंशी, सिंगा आदि। लोकनृत्यक रूपमे लोरिक नाच्यौ, लागनी, माएना, बड़नी आदिक वर्णन भेटैत अछि।

वर्णरत्नाकरमे कर्नाट वंशक राजा नान्यदेवक वर्णन कुशल संगीतकारक रूपमे भेल अछि। हिनका द्वारा संगीत विषय पर 'सरस्वती हृदयालंकार' पोथी लिखल गेल। जाहिमे वर्णित-विभिन्न राग-रागनिक वर्णन ज्योतिरीश्वर करैत छथिन। हरिसिंह देवकेँ सेहो संगीत संरक्षक रूपमे ज्योतिरीश्वर वर्णन करैत छथि।

मिथिलामे वास्तुकलाक वर्णन सेहो भेटैत अछि। जाहिमे गर्भगृह, मीनार, द्वारमण्डप आदिक वर्णन भेल अछि। चौकोर मंदिरक वर्णन सेहो भेल अछि, जे अंधराठाढ़ी, उच्चैठ, वीरपुर, भगवानपुर आदिसँ भेटैत अछि। एकरा डॉ॰ स्पूनर तिरहुत नमूनाक मंदिर कहैत छथि।

राजमहल एवं दुर्गक वर्णन भेटैत अछि। राजमहल ''सिमराउँगढ़'' मे स्थित छल। मुर्तिकलाक सेहो वर्णन भेटैत अछि। विष्णु, शिव, काली, दुर्गा आदि देवी-देवताक प्रतिमाक वर्णन भेटैत अछि। एहि मूर्ति पर अलंकरण एवं तांत्रिक चक्रक वर्णन सेहो भेटैत अछि।

वर्णरत्नाकरमे मिथिलामे प्रचलित चित्रकलाक वर्णन अल्पाइन एवं विलेपन नामसँ वर्णन कैल गेल अछि। ई चित्र माटीक भितीक संग-संग माटीक बर्तन, तस्तरी आ बयना पर बनायल जयबाक वर्णन भेटैत अछि। वर्णरत्नाकरक अनुसारेँ एहि चित्रक थीम आधार लोकगाथा तथा पौराणिक कथा सभ पर आधारित छल। एहि प्रकारक दोसर रूपमे चित्रक प्रमुखता कोहबर चित्रमे भेटैत अछि। ज्योतिरीश्वर एहि कलाक वर्णन घरेलू चित्रकलाक रूपमे करैत छथिन। ई चित्रकला अखनहुँ ओहि रूपमे अछि जाहि रूपमे वर्णरत्नाकर मे वर्णन भेल आछि। आरम्भस अखन धारि ई महिला प्रधान चित्रकला रहल अछि।

मिथिलामे प्रचलित नाच परंपराक रूपमे डफिला, लोरी, बिरहा, चाचरी आदि वर्णन भेटैत अछि। लोकसात्यिक परंपरामे विभिन्न प्रकारक कहवी, बुझौअल, चुटकूल आदिक वर्णन भेटेत अछि।

शिक्षा

वर्णरत्नाकरक अनुसारेँ कर्णाट वंशक राष्ट्रभाषा संस्कृत छल। जन व्यवहारमे देसील बयनाक वर्णन भेटैत अछि। वर्णरत्नाकरमे ओहिकालक 6 टा भाषा एवं 39 टा उपभाषाक प्रचलन चर्चा कैल गेल अछि। भाषाक रूपमे संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ठ, पैशाची, शौरसेनी आ मागधी तथा उपभाषाक रूपमे शकारी, अमीरी, चण्डाली, साबली आदिक वर्णन भेटैत अछि। वर्णरत्नाकरमे तत्सम, तद्भव, देशज शब्दक संग-संग विदेशज शब्दक रूपमे अरबी आ फारसीक किछु शब्द सेहो भेटैत अछि। एहि काल धरि मिथिलामे मुसलमानक प्रवेश नहि भेल छल मुदा वर्णरत्नाकरस स्पष्ट होयत छल जे मुसलमानी प्रभाव स्थापित भऽ गेल छल। एहि संबंधमे डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा कहैत छथि जे- ''लोक भाषाक शक्ति ओ सीमाकेँ देखैत जखन संस्कृतज्ञ लोकनि एहि दिस आकृष्ट भेलाह तँ साहित्य अभियानमे नव स्फूर्तिक संचार भेल। ज्योतिरीश्वर एकर एकान्त साक्षी छथि। हुनक वर्णरत्नाकर एहि अभियानक प्रथम कीर्तिमान थिक।''

एहि तरहेँ मिथिलाक मध्यकालीन समयमे संस्कृत साहित्य, व्याकरण, दर्शन आ कोशक एक गौरवशाली परम्पराक आरंभ भेल छैक। मिथिलाक ई कालखण्ड भारतीय साहित्यिक इतिहासमे 'स्वर्ण' युग छल। एहि समयक एक विशिष्टता ईहो छैक जे संस्कृत साहित्यक संग-संग लोकभाषा साहित्यक विकासक प्रथम प्रभावशाली प्रयास सेहा प्रारंभ होइत छैक। वर्णरत्नाकर लोकभाषाक एक कीर्तिस्तंभ थिक। एहि पर प्रकाश दैत प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. उपेन्द्र ठाकुरक कथन छनि जे- ''प्राचीन क्लासिकीय भाषा सबहिक अवनतिक उपरान्त ई सर्वप्रथम स्म्पूर्ण पूर्वी भारतमे स्थानीय लोकभाषाकेँ साहित्यिक अभिव्यक्तिक गरिमा प्रदान कयलकैक।''

एहि प्रकार सँ वर्णरत्नाकरमे मध्यकालीन मिथिलाक संगोपांग वर्णन भेटैत अछि, जकर फलस्वरूप डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' मैथिलीक पहिल शब्दाकोश कहैत छथि। संग ही वर्णनक विस्तारक कारणेँ एकरा 'वर्णनक सागर' एवं 'एनसाइक्लोपीडिया ऑफ मैथिली लिटरेचर' कहल जायत अछि।

मैथिली नाट्य लेखनक स्थिति आ वर्तमान स्वरूप

✍ प्रकाश झा

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार सँ 'आधुनिक मैथिली नाटकों का अध्ययन एवं विश्लेषण' विषयक लेल 'सीनियर रिसर्च फ़ेलोशिप' प्राप्त। नाट्यकलामे पीएचडी। वर्ष 1994 सँ इप्टा मधुबनी संग सक्रिय रंगकर्म सँ जुड़ल। दिल्ली स्थित सुप्रसिद्ध, सुगठित संस्था मैथिली लोक रंग (मैलोरंग रेपर्टरी) आ मैलोरंग प्रकाशनक संस्थापक निदेशक छथि। संगहि 'बारहमासा' आ 'ग्राम ज्योति' संस्थाक अध्यक्षक पद पर सेहो मनोनीत छथि।

संपर्क :
डॉ. प्रकाश झा, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय,
भगवान दास रोड, नई दिल्ली-01
prakashjha.nsd@gmail.com
मो. 9811774106

नाट्यकला संश्लिष्ट कला अछि, तेँ ई कला लोकतांत्रिक मूल्य केँ सशक्त बनबैत अछि। मैथिली भाषामे एखनो धरि लिखल अधिकांश नाटक मात्र पाठ्यक्रमक हिस्सेटा अछि। छात्र लोकनि केँ एखनो धरि एतबे पढ़ाओल जाइत छन्हि जे, साहित्यक अन्य विधा जेना नाटको साहित्यक एकटा विधा मात्र छैक। तेँ नाट्य लेखनों अहि बिन्दु पर केन्द्रित रहल। पाठ्य-पुस्तकमे नाटक संग संग ओकर मंचनक कोनो पाठ वा संदर्भ छात्र लोकन्हि केँ नञ पढ़ाओल जाइत छन्हि।

मिथिलामे एखनहुँ प्रायः पाबनि-तिहारे पर नाटक मंचनक परम्परा अछि। एहन नाटक मंचनमे पाबनि-तिहारे जेना उत्साह आ उमंग रहैत छैक। दुर्गापूजा, सरस्वतीपूजा, कालीपूजाक काल गाम-गाममे नाटकक पर्दा संदूकसँ निकालल जाइत अछि आ पूजाक भसान संग नाटकोक बूझू भसाने भ' जाइत छैक। ओना नाटकक मंचन सँ नाट्य लेखनक जोड़ब सेहो बेसी उचित नञ होयत। जे संस्था नाटक मंचित करैत छैक वैह लोकन्हि नाटक लिखेबो करथि ई कत्तहु सँ उचित नहि, हाँ लिखथि त' बेसी नीक। नाटक लिखब आ नाटक मंचन करब ई दुनू काज फराक अछि। नाटकक लेखन नञ भ' रहल अछि तकर कतेको कारण बुझना जाइत अछि।

प्रायः देखबामे अबैत अछि जे आन विधामे बेसी नवतुरिया लोकन्हि ओहि विधाक कोनो पूर्व अध्ययन केनञ बिना लीखब शुरू क' दैत छथि। हुनका लोकन्हि केँ तत्क्षण नीक, की बेजाय (ओना प्रायः नीके) प्रतिक्रिया भेटब सेहो शुरू भ' जाइत छन्हि। शनैः शनैः ओ लोकन्हि वापस अपन विधाक पूर्व अध्ययन दिस अग्रसर होइत छथि। एहि प्रक्रियाक ठीक विपरीत होइछ नाटक लेखन। एक त' बिना पूर्व अध्ययन केँ एक्को पाँति लिखा नञ सकैत अछि। दोसर लिखलाक बाद, बिना मंचन केँ कियो हरसठ्ठे वाह वाही दैयो नञ सकैत अछि। मंचन लेल कोनो नाट्य दल सँ जुड़ब जरूरी आ ताहि लेल समय देब आवश्यक। अभिनेता आ निर्देशक केँ हाथमे गेलाक बाद आँखिक आगु अपन रचनाक पोस्टमार्टम होइत देखब कोनो रचनाकार लेल बर्दास्त करब कठिन। 'अहाँ एकटा नीक नाटक लिखलहु अछि'... ई गप्प सुनबा लेल कम-स-कम एक वर्षक समय चाही। शीघ्रातिशीघ्र सब किछु हँसोतै बला एहि वर्तमान समयमे एकटा रचनाक परिपक्वता लेल एक वर्षक समय देब बुड़बकैये होयत नञ?

एतबे नञ, जँ अहाँ नीक नाटक लिखलहुँ आ वाह वाही हुअ' लागल त' मैथिलीक तथाकथित साहित्यकार लोकनिक सिंहासन 'इन्द्र भगवानक सिंहासन' जेना छनेमे डोल' लगैत छन्हि।

ओ लोकन्हि एहि नाटक लेखकक चर्चे नञ करताह। अपन साहित्यकारक उट्ठक-बैठकमे हिनका फराकेँ रखताह। कविता पाठ, कहानी पाठ त' छोड़ू, जँ नाटको पर कोनो विचार विमर्शक आयोजन हेतैक त' एहि साहित्यकार लोकन्हिक डेग पहिनै पहुँच जेतन्हि। हमर ई नाटककार दर्शको दीर्घामे बैसबाक हकदार नञ भ' पबैत छथि। एकर दोसर पक्ष इहो अछि, जँ कोनो रचनाकारक एकटा नाट्य रचना सुतरि जाइत छन्हि त' ओ बाँकि विधाक सयटा रचनाक आगु छाती तनने ठाढ़ रहैत अछि। आम जनमे जतेक प्रसिद्धि नाटककारक होइत छन्हि ओतेक दोसर कोनो विधाक रचनाकारक नञ भ' पबैत छन्हि। तेँ जल्दी कोनो रचनाकार केँ नाटककारक उपाधि साहित्यकार दिस सँ भेटब मुश्किले बुझू। तेँ कियो किएक लिखताह नाटक?

एहन दूरूह काज सँ त' नीक जे भोरे उठू, मुँह हाथ धोबू, कम्प्यूटर खोलू आ एकटा दस पाँतिक तुकबन्दी (जकरा तथाकथित साहित्यकार कविता कहैत छथि) फेसबुक पर चेप दियौ, एहि कैप्शन केँ संग जे 'रातिकेँ अँहरियामे चान देखैत'। सजि धजि क' ऑफिस जाउ। साँझखन मलरैत घर आबू। कम्प्यूटर खोलू। कविता पर पाँच सय लाइक देखू, सयटा कमेंट लीअ', बस अहाँ आबि गेलहु साहित्यकारक श्रेणिमे रातिक दस बजैत बजैत कोनो अगिला आयोजनमे आमंत्रण संग सुति रहू, भोरमे पुनः ई क्रम दोहरेबाक लेल। एहन सुबिधा नाटक लिखनिहार केँ नञ भ' सकतन्हि। नञ विश्वास हुए त' पुछि लियौन्हि सर अरविन्द अक्कूजी के, कुमार गगनजी केँ, प्रदीप बिहारीजी केँ, महेन्द्र मलंगियाजी के, गोविन्द झाजी केँ, नचिकेता जीकेँ, कुणालजी केँ। तेँ 'घर बारह' सन निस्सन पत्रिका दिस स'मेल पर आयल कॉटेशन पाँति "मैथिली नाट्य लेखनमे आएल अकाल" मैथिलीक तथाकथित साहित्यकारक लेखकीय योग्यतापर प्रश्नचिन्ह छन्हि, नञ कि नाटक सँ जुड़ल व्यक्तिक लेल कोनो प्रकारक उपराग।

कहल जाइत छैक जे आई धरि जे कोनो नीक नाट्य रचना भेल अछि सँ काव्येक रूप थिक। मैथिली छोड़ि आन सब भाषामे उत्कृष्ट नाट्य रचना करनिहार काव्य लिखनिहारे भेलथि अछि। सैकड़ों उदाहरण अछि हमरा सोझाँ। मुदा, आश्चर्य जे मैथिली काव्य रचनिहार (एक दू गोटे केँ छोड़ि क') एहन किएक नञ भ' पबैत छथि ? निश्चित रूपे एहन काव्य लिखनिहार साहित्यकार दिस प्रश्नवाचक दृष्टि सँ हम सब देखैत छी।

ई कहबामे कोनो संकोच नञ जे वर्तमानमे आन विधा सँ बेसी मैथिली नाट्यकर्मी अपन बौद्धिक विकास केलन्हि अछि। ओ लोकन्हि मैथिली नाटकक नवरचना उपलब्ध नञ होयब आ मैथिलीक तथाकथित साहित्यकारक अगुतायल रचना सँ उबि क' नीक कथा/कविताक सहारा ल', नाट्यरूपमे परिवर्तित क' क' मंचन करैत छथि। माने अपन नाट्य विधा केँ सक्कत बनब'मे प्रयसरत छथि।

इहो अकानब आवश्यक अछि जे एना किएक भ' रहल छै? आइ सँ तीन-चारि हजार वरस पहिने लिखल नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मृच्छकटिकम्, इडिपस; लगभग सात सय साल पहिने लिखल नाटक धूर्तसमागम्, लगभग तीन-चारि सौ साल पहिने लिखल नाटक पारिजात हरण, मैकबेथ, हेमलेट आ डेढ़ सौ साल पहिले लिखल नाटक अँधेर नगरी, ध्रुवस्वामिनी, आ तकरा बाद अन्धायुग, रुकमिणि हरण, काठक लोक, आषाढ़ का एक दिन, तुगलक, वेटिंग फॉर गोदो एहन नाटक सभ आइयो अपन सार्थकता, समकालीनता आ प्रासंगिकता बनौने अछि आ लगैत अछि जे आगुओ रहत। त' आजुक समयमे एहि स्तरक कालजयी नाटक किएक नञ लिखा रहल अछि? की! हमरा सब लग ओहन स्थितिक आकि सामग्रीक अभाव अछि, जाहिमे एहन कृत्तिक जन्म होइत छैक?

जखन कोनो नाटक अपन समय सीमा केँ नाँघि क' कतेको शताब्दी तक ओहिना टटका, समकालीन, सार्थक आ प्रासंगिक लगैत अछि जतेक कि अपन रचनाक कालमे; तखने ओकरा कालजयीक श्रेणीमे राखल जाइत छैक। एहि निष्कर्षक पाछाँ नाटकक कथ्यक मार्मिकता, ओकर गहराई, कतेको डाढ़ि-पात, संग संग एकटा आर तत्वक अपेक्षा रहैत अछि ओकर शाश्वत आ सार्वजनीन होयब। जँ आइयो रामायण आ महाभारत समाजमे अपन उपस्थिति बनेने छैक तकर कारण धार्मिक संकीर्णता होयब नञ अछि बल्कि कथ्य केँ, दूरगामी होयब अछि। ई सब युग लेल ओतबे आवश्यक रहत जतेक अपना रचनाकालमे छल। ऊपर जतेक नाटकक नाम हम लेलहु अछि ओहि सभमे एहि प्रकारक गुण अछि त' ई सभ आइयो लोक केँ आकर्षित करैत अछि आ एकर बेर बेर मंचन कयल जाइत छैक।

जे किछु नाटक एहि बीच देखेबो कयल, ओकर अध्ययन केँ बाद इएह कहब जे नाटक लेल कथ्य प्रमुख होइत अछि, नाटक शैली आ संरचना बादमे

अबैत छैक। नाटकक कथ्य त' अपन शैलीक निर्धारण स्वयं क' लैत छैक। जखने कोनो नाटक लिखनिहार कथ्य सँ पहिने अपन नाटकक शैली आ ओकर संरचना केँ प्रमुखता दैत छथि तखने ओ रचना अक्षुन्न जीवंतता सँ वंचित रहि जाइत अछि। बेसी नाट्यरचनाकार एहि विधामे अपन रचना फिल्म आ दूरदर्शन सँ प्रभावित भेला बाद शुरू करैत छथि, हुनका मंचक व्याकरण सँ बेसी फिल्म आ दूरदर्शनक यांत्रिकता सँ प्रेरणा भेटल रहैत छन्हि। यैह कारण थिक जे नवनाट्यरचनामे पैघ पैघ दृश्य वा अंकक समायोजन नञ रहैत अछि। ताहि सँ नाटकमे पात्रक चरित्र आ हुनक व्यक्तित्वक विकास संभव नञ भ' पबैत अछि। फिल्म आ दूरदर्शन विधामे दृश्यक प्रमुखता रहैत छैक तकरा बाद स्थान अबैत छैक श्रव्यक। नाटकमे दृश्य आ श्रव्य दुनू विधाक समान उपस्थिति होयब आवश्यक होइछ। कहल त' ई जाइत छैक जे नाटकमे श्रव्ये केँ दृश्य बनाओल जाइत अछि। आवश्यक अछि जे हमर नाटककार लोकन्हि प्रत्येक माध्यमक अंतर केँ नीक जेना जानि-बूझि लेथि तकरा बाद शिल्प आ शैली केँ अपेक्षा कथ्य केँ प्रमुखता देथि। तखने नीक रचना हमरा सबहक आगु आबि सकत, जकर कि बेगरता अदौ काल सँ अछि।

एकटा गप्प आर-आइ काल्हि मूल रचना आ ओकर नाट्य रूपांतरण पर तरह तरह केँ विचार आबि रहल अछि। कियो एकर पक्षमे छथि, त' कियो विरोधमे जतेक ज्ञानी ततेक मत्तभिन्नता। एतेक साल धरि रंगकर्म सँ जुड़ल रहलाबाद हमरो किछु अनुभव भेल। कोनो साहित्यिक विधा यथा कविता, कथा, उपन्यास आदि सँ नाटकक रूपांतरण प्राय: होइत अछि।

एहि सब नाट्य प्रस्तुति केँ देखला बाद कतेको तरहक प्रश्न उपस्थित होइत छैक। जेना, की कारण अछि जे मूल विधा (यथा कथा/कविता/उपन्यास) आ ओकर रूपांतरण; दुनूक प्रभावमे अंतर भ' जाइत छैक ? हम सब जखने कोनो एक विधा केँ दोसर विधामे देखैत छी त' अनायास एहि नव विधामे सेहो मूल रचनाक ताका-हेरी क' र' लगैत छी। हम सब ई बिसरि जाइत छी जे दुनू माध्यमक व्याकरण एकदम अलग अलग होइत अछि। एकटा वर्णित माध्यम अछि त' दोसर दृश्यात्मक माध्यम। ओना आग्रह ई जे अनुदित वा कि रूपांतरित नाट्य आलेखक प्रस्तुति केँ सेहो मैथिली रंगमंचक स्मृद्धि करबाक प्रयास बूझल जाय।

साहित्यक कोनो आन विधाकेँ 'पढ़ल' जाइत अछि। एहि लेल हम सब समय निकालि क' कोनो एकांत स्थान हेरैत छी। जाहि ठाम हम असगर होइत छी आ हमरा आगु मात्र हमर पाठ होइत अछि। हम पढ़ैत रहैत छी आ ओही पाठ केँ आधार पर हमरा सबहक मस्तिष्कमे चित्र बनैत रहैत अछि। जँ हाथमे उपन्यास होइत अछि त' कतेको घंटा वा कि दिन लागि जाइत अछि पढ़वामे, त' कथा आ कविता एक बैसारमे कतेको पढ़ि लेल जाइत अछि। एकर ठीक उल्टा नाटक होइत अछि। नाटक देखबा लेल हमरा लोकनि कोनो निश्चित ठाम पर जाइत छी, उपन्यासक नाट्यरूपांतरण केँ सेहो एक सँ दू घंटामे पूरा देखबाक रहैत छै त' कथा वा कविताक नाट्य रूपांतरण केँ सेहो नमारि क' एक सँ दू घंटाक करबाक होइत छैक। हम सब अपना आँखिक आगु घटना होइत पहिने देखैत छी, तखन मस्तिष्कमे ओकर शब्द अपन स्थान बनबैत अछि। यानी ठीक उन्टा। तखन प्रभावो एक रंग कोना होयत? तेँ कोनो मूल रचना, कोनो दोसर नवमाध्यममे ओहिना केँ ओहिना कहियो नञ रहि सकैत अछि। जखन हम नाटक देखैत रहैत छी तखन हमरा आगु सजीव अभिनेता, हुनक परिधान, हुनक मुख सज्जा, मंच सज्जा, प्रकाश प्रभाव, संगीतक प्रभाव, मंच पर कखनो इजोत त' कखनो अन्हार - ई सबटा सम्पूर्णतामे देखैत रहैत अछि। कोनो कथा, कविता वा कि उपन्यास पढ़बा काल उपर्युक्त स्थिति हमरा सबहक मोनमे नञ चलैत अछि। तेँ हमर कहब जे कोनो प्रकारक रूपांतरणमे मूल रचनाकेँ ताकब एकटा व्यर्थ कोशिश होयत। दुनूक अपन अपन विशेषता छैक, अपन अपन व्याकरण छैक, अलग अलग ग्राह्यता छैक।

अंतमे यैह जे नाटक अत्यंत अर्थ आ श्रमसाध्य विधा थिक आ नाट्य लेखन अहू सँ बेसी। नाट्यलेखन अत्यंत एकाग्रचितता आ धैर्यक माँग करैत अछि। जाहि साहित्यकारमे ई दुनू गुण छन्हि सँ ओ लोकन्हि एखनो नीक नाटक लीख रहल छथि। हड़बड़िया साहित्यकारमे ई गुण नञ होइत छन्हि ओ कहियो काल क' टुकधुम टुकधुम क' क' 'संवादगद्य' (हुनका नाटक लेल यैह शब्द उचित बुझना जाइत अछि) लिखि रहला अछि। मैथिली नाटक तेँ नञ आबि रहल अछि मैथिली रंगकर्म लेल संसाधन बढ़त त' लेखन सेहो आब' लागत। एहि उपभोक्तावादी समाजमे बाजार माँग आ आपूर्तिक सोंगर पर अड़कल रहैत अछि। मैथिलजनमे रंगमंचक माँग बढ़तन्हि त' लेखक सब अपन रचना सँ ओकर आपूर्ति करबे करताह।

उच्च शिक्षा का गढ़
छत्तीसगढ़
छत्तीसगढ़ शासन
बेमिसाल 14 साल
छत्तीसगढ़ में IIIT, IIT, NIT, IIM, HNLU जैसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर के शैक्षणिक संस्थान.
सेन्ट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ प्लास्टिक इंजीनियरिंग एवं टेक्नोलॉजी (सीपेट) की स्थापना.
छत्तीसगढ़ में केन्द्रीय विश्वविद्यालय एवं तकनीकी विश्वविद्यालय स्थापित.
14 वर्षों में राजकीय विश्वविद्यालयों की संख्या 3 से बढ़कर 8 हुई.
14 वर्षों में 101 नए शासकीय महाविद्यालयों की स्थापना.
वर्ष 2003 में 184 महाविद्यालय थे, जो अब बढ़कर 439 हुए.
छात्राओं को स्नातक तक निःशुल्क शिक्षा.
शिक्षित राज्य– विकसित राज्य
LIVELIHOOD COLLEGE DANTEWADA
इंजीनियरिंग कॉलेजों की संख्या 12 से बढ़कर 47.
पॉलीटेक्निक कॉलेज 10 से बढ़कर 60.
राज्य के सभी जिलों में पॉलीटेक्निक कॉलेज - 4 कन्या पॉलीटेक्निक भी स्थापित.
राज्य में फार्मेसी के 10, प्रबंधन के 15, एम.सी.ए. के 8 एवं आर्किटेक्चर के 03 शैक्षणिक संस्थान स्थापित.
छत्तीसगढ़ सूचना क्रांति योजना 33956 विद्यार्थियों को लेपटाप एवं 105614 को टेबलेट वितरित.
आईआईटी की संख्या 61 से बढ़कर 178.
IIIT, RAIPUR
युवाओं को कौशल विकास का कानूनी अधिकार देने वाला करने वाला देश का पहला राज्य छत्तीसगढ़
राज्य के सभी 27 जिलों में लाइवलीहुड कॉलेज 42379 प्रशिक्षित, 16771 नियोजित।
मुख्यमंत्री कौशल विकास योजना
- 3,19039 युवा प्रशिक्षित
- 1,14,617 युवाओं को रोजगार।
छत्तीसगढ़ जनसंपर्क
Chhattisgarh CMO
DPR Chhattisgarh
सबका साथ – सबका विकास

मैथिली अनुवाद कार्य, जेना हम बुझैत छियैक!

✍ रमाकान्त राय 'रमा'

सेवानिवृत्त शिक्षक। मैथिली साहित्य संस्कृति विकास परिषद, समस्तीपुरक सचिव। पहिल कविता 1965 ई. मे 'बटुक' मे छपल। दू वर्षक अभ्यन्तरे ओही पत्रिकामे टालस्टायक अनुदित एकटा कथा 'तीनिटा बाबाजी' छपल। पाँचटा मौलिक, तीनटा अनुदित आ दूटा सम्पादित कृति प्रकाशित। आधा दर्जनसँ बेसी रचना प्रकाशन हेतु तैयार अछि, जाहिमे चारि फर्माक बाल-कथा संग्रहसँ लऽकऽ पचीस फर्माक गवेषणात्मक रचना सभ अछि।

सम्पर्क:
श्री रमा निवास, मानाराय टोल,
पो.-नरहन, जिला-समस्तीपुर,
पिन-848211
मो. 9430441706/8051788976
वाट्सएप-9931675579
ईमेल: ramakantrama35@gmail.com

अपन अनुभूतिकेँ अपन लेखनक विधा आ अपन भाषामे रोचक-प्रेरक शब्द-समूहमे बान्हिकऽ पाठकक आगाँ सांठब, परोसब, लेखकक कृति या मूल रचना कहबैत छथि। अपन अथवा दोसरक कोनो रचनाकेँ ओकर मूल भाव, पात्रक चरित्र, बिम्ब आदिकेँ बिना कोनो क्षति पहुँचौने कोनो दोसर भाषामे लिखब अथवा उनटि देब, परिवर्तित करब, अनुवाद कहबैत अछि। मूल रचना लेखनमे लेखक, कवि, कथाकार अपन अनुभूतिमे अपन विचार, भावकेँ मनोनकूल आकार-प्रकार-विस्तार दऽ सकैछ, ओतहिं अनुवादमे मूल रचनाक भाव-विचारक रक्षा करब अनुवाद कलाक लेल अत्यन्त महत्वपूर्ण तथ्य कहल जाइत अछि।

एकरा लेल अनुवादककेँ दुनू भाषामे निपुण होयब आवश्यक अछि। ओना अनुवाद करबाक एकटा आओर विधि प्रचलित अछि-आन भाषाक माध्यमसँ अनुवाद करब। एहिसँ मूल अनुवादेय भाषाक जानकारीक बिना सेहो कोनो आन भाषामे अनुदित रचनाक आधारपर अनुवादक अपन (तेसर) भाषामे अनुवाद कयल जाइत अछि। आइ विश्वगामक कल्पनाक क्रममे लोककेँ एक दोसरक निकट आनबामे एहि प्रकार अनुवादक विशेष महत्व अछि।

लेखन-कला जकाँ अनुवादो करब एकटा कला अछि, जे लेखन कलाक अधिकांश गुणक अपेक्षा रखैत अछि। जहिना कोनो मूल रचना लिखैत काल लेखकक अपन मोनक भाव आ अनुभूतिक अनुकूल शब्द सभ स्वत: लेखकक मन-मस्तिष्कक माध्यमे लेखनीक नोक द्वारा कागतपर उतरैत चल जाइत अछि, रचनाक अंग-उपांग, रक्त-मज्जा अस्थि-मेदादि बनि ओकर विनिर्माणक सबटा संगोर करैत ओकरा पूर्णता दिस अग्रसर करैत अछि, तहिना अनुवाद कार्य सेहो अपेक्षा रखैत अछि जे मूल रचनाक भावक रक्षा करैत ओहि भाषाक शब्दक समानार्थकेँ नहि, प्रत्युत् ओहि भाषाक शब्दक, ओहि भावक अभिव्यक्तिक सामर्थ्य रखनिहार शब्दक माध्यमे अनुवाद कार्य कयल जाय।

रचनाक मूल भाषा नञ जानबाक स्थितिमे दोसर भाषाक माध्यमे अनुवाद करबाक काल ई उत्तरदायित्व आओर बेसी बढ़ि जाइत अछि। कारण अहाँ जाहि दोसर भाषाक अनुदित रचनास अपन भाषामे अनुवाद करऽ चाहैत छी, ओहि अनुदित कृतिक अनुवादक मूल भाषाक शब्द सभक संग अपन भाषामे उनटेबाक क्रममे कतेक न्याय कयने छथि-ई विशेष महत्त्वपूर्ण अछि!

कोनो भाषामे मात्र शब्दक अर्थ बूझि कोनो रचनाक अनुवाद कयने उत्तम अनुवाद नञ होयत। सभ भाषामे

मुहाविरा, लोकोक्ति प्रचुर मात्रामे होइत अछि। ई दूनू यद्यपि सभ भाषामे अपन स्थानीय वातावरण, परिवेश, व्यवहार आदिक सहयोगसँ बनैत अछि, ओकर समुचित प्रयोग लेखक बहुत सूझि-बूझिक संग करैत छथि। अनुवादककेँ एहन ठाम अत्यधिक सावधानी राखब जरूरी अछि। बहुधा सामान्ये भाव रखनिहार लोकोक्ति, मुहाविरामे भाषा विशेष आ स्थान विशेषक कारणे अर्थ वैभिन्य, किंवा अर्थान्तर संभव अछि। एहि अन्तर आ वैभिन्यक ध्यान राखि अपन क्षेत्र आ भाषाक अनूकूल समुचित मुहाविरा आ लोकोक्ति प्रयोग यदि अनुवादक करैत छथि तें सोनामे सुगन्ध कहाओत। यदि ओ एहिमे चूकि जाइत छथि, तें सभटा गुड़-गोबर भऽ जाइत अछि। एहन ठाम अनुवादक लेखक द्वारा प्रयुक्त मुहाविरा-लोकोक्तिक प्रयोगक मोह छोड़ि एकटा तेसर मार्ग अपना सकैत छथि। ओ ई जे ओकर अनुवाद मुहाविरा, लोकोक्तिक प्रयोगक मोह छोड़ि खाँटी अर्थक खूब नीक जकाँ मिलाकऽ उपयोग करथि। मुदा ई प्रयोग बड्ड सावधानीक अपेक्षा रखैत अछि। कृपया ई ध्यान राखब जे लेखक-अनुवादक लेल अनिवार्य जकाँ अछि जे हुनक रचनामे एकोटा वाक्य, शब्द किंवा अक्षर धरि अनावश्यक नञ होअय जे अर्थमे विभ्रान्ति उत्पन्नकऽ ओकरा दोषपूर्ण बनाबय।

शब्दक समुचित प्रयोगक प्रसंग एकटा दृष्टांत स्मरण करायब हम आवश्यक बुझैत छी। महर्षि व्यासक 'महाभारत' गणेशजी लिखैत छलाह आ ओ स्वयं लिखबैत छलथिन। दूनू गोटेमे ई निर्णय भेल छलनि जे गणेशजी बिना बुझने लिखथि नहि, आ व्यासजी गणेशजीक लेखनी ठमकऽ नञ देथिन। व्यासजीकेँ जखन अनुभव होइनि जे गणेशजीक हाथ आब रूकि जयतनि तें ओ किछु कठिन अर्थवाला श्लोकक रचनाकऽ देथि आ गणेशजीकेँ ओकरा ह्रदयंगम करबामे किछु समय लागि जाइत छलनि। एहि बीच व्यासजी अनेक श्लोकक झड़ी लगा आगाँ बढ़ि जाथि।

एकरा हम कनेक आओर स्पष्ट करऽ चाहब। 'पोथी' मैथिलीक एकटा शब्द अछि, एकर अर्थ पुस्तक वा किताब होइत अछि। मुदा पोथी वेद, महाभारत, रामायणोक भऽ सकैछ आ धियापुतक पाठ्य-पुस्तकोक। संगहि ओ कोनो प्राचीन हस्तलेखक सेहो। यदि एकर अनुवाद आन भाषामे कयल जायत तें वेद, रामायण आ महाभारतकेँ ग्रन्थ कहब समुचित होयत, ओतहिं हस्तलेख केँ पुस्तकक पाण्डुलिपि कहबे तर्कसंगत प्रतीत होइत अछि। तहिना क्रियापदमे सेहो सावधानी रखने अनुवाद कार्यक मौलिकता तें सुरक्षित रहबे करत, ओ अनुवाद श्रेष्ठ होयत आ मूल रचनाक आस्वाद देबामे सक्षम होयत।

प्राचीन विद्वान् लोकनि संस्कृतक अनेक पैघ-पैघ, किंवा आम जनोपयोगी पुस्तक अथवा ओकर प्रमुख अंशक अनुवादकऽ लोकानुरंजन कयलनि अछि।

मैथिली अनुवादक समारम्भ भारतीय भाषाक आदि गद्यग्रन्थ 'वर्णरत्नाकर' क रचयिता कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर (1280-1340) अपन मूल संस्कृत नाटक 'धूर्तसमागम'क मैथिली अनुवाद चौदहम शताब्दीमे कयलनि। कविपति विद्यापति सेहो संस्कृत साहित्यक मैथिली किंवा स्वदेशी भाषामे अनुवादकऽ एहि परंपराकेँ आगाँ बढ़ौलनि। संस्कृत साहित्यक अनेक उपाख्यान आ आख्यानक मैथिली आद्य साहित्यमे उपलब्ध अछि जे संस्कृत साहित्यसँ अनुदित अछि।

एहि क्रममे म.म. परमेश्वर झाक "सीमन्तिनी आख्या" (प्रायः 1906) उपन्यास अछि जकरा डा. रामदेव झा मैथिली उपन्यासक पहिल कृति मानैत छथि। तदन्तर बंगला साहित्यसँ अनेक कथा, उपन्यासक मैथिलीमे अनुवाद भेल अछि।

एम्हर चलिकऽ बीसम शताब्दीक उत्तरार्धक किछु बादस साहित्य अकादेमी एक भारतीय भाषास दोसर भाषामे अनुवादपर जोर देलक अछि जाहिसँ देशक साहित्यिको क्षेत्रमे आदान-प्रदान होइत रहय।

एखन अधिकांश अनुवाद मूल भाषास नञ भऽकऽ दोसर भाषाक माध्यमे होइत अछि। हिन्दी भाषामे अनुदित ओड़िया, मराठी आ गुजरातीक किछु पुस्तकक चर्चकऽ हम ई कहऽ चाहैत जे मैथिली भाषाक अनुवाद साहित्य सेहो विश्व साहित्य-सरिताक अवगाहनक एकटा सशक्त सोपान बनि गेल अछि।

एहि क्रममे हम दूटा उड़िया कृतिक मैथिलीमे अनुवाद कयलहु अछि- ज्ञानपीठ पुरस्कारस सम्मानित, सुप्रसिद्ध कथाकार उड़िया कथाकार डा.प्रतिभा रायक कथा संग्रह 'उल्लंघन' आ ज्ञानपीठसँ पुरस्कृत डा. गोपीनाथ महान्तीक भारतीय भाषाक प्रथम आंचलिक उपन्यास 'अमृतक संतान।' एहि दूनूक प्रकाशन साहित्य आकादेमी, नई दिल्ली द्वारा भेल अछि।

'उल्लंघन'मे प्रतिभारायक 18टा कथा

अछि जे सभ एका-पर-एक अछि। एहि पुस्तकपर हुनका साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटल छलनि। तहिना गोपीनाथ महान्तीक 'अमृतक संतान' आदिवासीक दुर्लभ जीवनक अमरगाथा अछि। एहि उपन्यासकेँ पुरस्कृतकऽ साहित्य अकादेमी ओड़िया भाषामे पुरस्कार देबाक समारम्भ कयने छल।

जहिना हम कथा, कविता, आलेखादिक प्रति छात्रे जीवनसँ संवेदनशील छलहुँ तहिना साहित्यिक अनुवाद सेहो हमर छात्र जीवनक एकटा हॉबी छल। प्रभास कुमार चौधरी, साकेतानन्द, मायानन्द मिश्र आदिक मैथिली कथाक हिन्दीमे अनुवाद कयल करी आ अपन हिन्दीक अध्यापकसँ ओकर भाषिक सौन्दर्यक जाँच कराबी।

एहि क्रमक दूटा रचना ओहि समयमे प्रकाशित भेल छल-म.म. उमेश मिश्रक 'विद्यापतिक एकटा पद'क हिन्दी अनुवाद (सरस्वती आ मिथिला अमरमे) आ टाल्स्टायक एकटा हिन्दी कथा 'तीनिटा बाबाजी', हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुदित 'बटुक'मे बादमे ई कथा 'बटुक' प्रकाशन इलाहाबाद द्वारा पुस्तकाकार सेहो छपल जे हमर पहिल प्रकाशित पुस्तक अछि।

हमर एकटा आत्मीय मित्र आ साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीक मैथिली परमर्श मंडलक सदस्य (2003-2007) डा. नरेशकुमार 'विकल' सेहो मराठी आ गुजराती भाषाक दूटा उपन्यासक मैथिलीमे अनुवाद कयने छथि। मराठी उपन्यास ''ययाति''क मूल लेखक छथि विष्णुसखाराम खाण्डेकर। आत्मकथ्यात्मक शैलीमे लिखल पौराणिक कथानकपर आधारित कोनो उत्कृष्ट महाकाव्यक गुण कनिको न्यून नञ अछि ई उपन्यास एहिमे दैत्य गुरु शुक्राचार्य एवं विषपर्वाक बेटी शर्मिष्ठाक बीच कामुकताक आ 'अहम्'क चित्रण कयल गेल अछि। शापसँ बूढ होयब आ पुन: यौवन आपसीक रोचक वर्णन तें अछिए, पुरुषार्थक परिभाषास सम्पन्न ई कृति इतिहासक एक अपूर्व उदाहरण अछि।

विकलजीक दोसर अनुदित पुस्तक अछि गुजराती लेखक ध्रुव भट्टक 'तत्त्वमसि'। एहि उपन्यासमे 'हमहीं सब किछु (ब्रह्मा) छी' एहि भ्रमसँ विरक्त करबाक सार्थक प्रयास कयल गेल अछि। नर्मदा नदीक महत्त्व एवं आदिवासी जीवन-शैलीक मनोरम चित्रण नायक एवं पत्रकार युवक द्वारा आत्मकथ्यात्मक शैलीमे वर्णित अछि।

मैथिली साहित्यक दधीचि पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' बंगला साहित्यक सुप्रसिद्ध कथाकार परशुरामक कथा सभक मैथिली अनुवाद 'परशुरामक बीछल-बेरायल कथा' नामे कयलनि अछि। वरेण्य विद्वान् डा. रामदेव झा राजेन्द्र सिंह वेदीक प्रसिद्ध पंजाबी उपन्यास 'एक चादर मैली-सी' क मैथिली अनुवाद मैथिली नामकरणक संग 'सगाइ' नामे कयने छथि। पं. सुरेन्द्र झा 'सुमन' नोबेल पुरस्कार विजेता बंगलाक सुप्रसि) लेखक रवीन्द्रनाथ ठाकुरक 'रवीन्द्र ग्रन्थावली' क मैथिलीमे अनुवाद कऽ एकटा कीर्तिमान स्थापित कयने छथि।

मैथिली अनुवाद साहित्यक नाम गनायब हमर अभीष्ट नञ अछि आ नहि ओकर सभक समालोचने, एहि छोट-सन आलेखमे सम्भव अछि। हँ, हम एतेक अवश्य कहऽ चाहैत छी आब अपन मैथिली भाषाक माध्यमोसँ अहाँ अपन अपेक्षित रचनाकारक कृतिक आस्वाद लऽ सकैत छी।

दू गोट मैथिली गजल

– प्रो. अरविन्द मिश्र 'नीरज'

(1)

हमर नेनपन केर अंगना दलान कतऽ गेल
बाप दादा केर बान्हल मचान कतऽ गेल।

माटि चिक्कन सँ लेबल दोलेबल छल टाट
ठाठ टांगल छल छाता खड़ाम कतऽ गेल।

ओ चुल्हा केर पाछू चिनबारक गोसाई
सीर-पाट हेतु बूढ़क ओरियौन कतऽ गेल।

घूर लगबऽ लऽ बीछि हम करसी जतऽ
गाय बरदक गोरिमा बथान कतऽ गेल।

जतऽ गामक बहार छल पोखरिक महार
साझ जुटै छल नबकामेहमान कतऽ गेल।

(2)

राजा जनकक संकल्पक विकल्प कतऽ छथि।
प्रश्न नम्हर केर उत्तर सु-स्वल्प कतऽ अछि।।

हम डुबकी अथाहमे लगाबि रतन लेल
हाथ आओत नब जिनगीकेर गल्प कतऽ अछि।।

तृषित तन मन केँ करत सिक्त वचन दान सं
प्राण पुलकित करि पाओत ओ अर्क कतऽ अछि।।

करब अर्जित निज सृजित समर्पित कतऽ
मन वांछित वर दाता ओ कल्प कतऽ अछि।।

संपर्क :
हटिया गाछी, मानस नगर,
वार्ड नं.-32, सहरसा-852201
मो. 9771006810

श्रमिकों की मददगार छत्तीसगढ़ सरकार

- श्रम कानूनों के प्रवर्तन में पारदर्शिता एवं प्रक्रियाओं का सरलीकरण.
- श्रम अधिनियमों के तहत पंजीयन एवं अनुज्ञप्ति की प्रक्रिया अब आनॅलाईन.
- 14 वर्षों में कारखानों में नियोजित श्रमिकों की संख्या 1,45,633 से बढ़कर 3,57,674 हुई.
- वर्ष 2008 में निर्माणी श्रमिकों के लिए छत्तीसगढ़ भवन एवं सन्निर्माण कर्मकार मंडल गठित.
- वर्ष 2011 में छत्तीसगढ़ असंगठित कर्मकार राज्य सामाजिक सुरक्षा मण्डल गठित.
- अब तक 22.20 लाख निर्माणी श्रमिकों एवं असंगठित कर्मकारों का पंजीयन.
- निर्माणी श्रमिकों एवं असंगठित कर्मकारों के कल्याण पर अब तक 713 करोड़ रुपये व्यय.
- श्रमिकों के 67,173 बच्चों को नौनिहाल छात्रवृत्ति तथा 66592 को मेधावी छात्रवृत्ति मिली.
- श्रमिकों के 240 बच्चों को एम.बी.ए., एम.बी.बी.एस. इंजीनियरिंग, नर्सिंग आदि की पढ़ाई के लिए सहायता.
- विश्वकर्मा दुर्घटना मृत्यु सहायता के तहत 22600 श्रमिक परिवारों को सहायता
- राजमाता विजयाराजे कन्या विवाह सहायता योजना-68265 बेटियों के विवाह हेतु 45.20 करोड़ की सहायता.
- भगिनी प्रसूति सहायता योजना के तहत 79021 पंजीकृत महिला श्रमिक लाभान्वित.

- पंडित दीनदयाल उपाध्याय श्रम अन्न सहायता योजना के अंतर्गत **श्रमिकों को 5 रुपये में गर्म पौष्टिक भोजन.**
- मुख्यमंत्री परिवार सशक्तिकरण सहायता योजना 68864 श्रमिकों एवं उनके परिजनों को कौशल विकास प्रशिक्षण.
- मुख्यमंत्री सायकल सहायता योजना - 2,47,762 श्रमिकों एवं कर्मकारों को निःशुल्क सायकल.
- मुख्यमंत्री सिलाई मशीन सहायता योजना - 1,41,951 श्रमिकों एवं कर्मकारों को निःशुल्क सिलाई मशीन.
- मुख्यमंत्री औजार किट सहायता योजना - 95,870 लाभान्वित.
- प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना - 5,05,067 श्रमिक बीमित.
- प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना - 66,336 श्रमिकों का बीमा.

खेल गढ़ छत्तीसगढ़

- परसदा रायपुर में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम का निर्माण.
- रायपुर एवं राजनांदगावं में अन्तर्राष्ट्रीय हॉकी स्टेडियम का निर्माण.
- बिलासपुर में 112 करोड़ की लागत से राज्य खेल प्रशिक्षण केन्द्र निर्माणाधीन.
- खेल को बढ़वा देने 2004-05 से राज्य खेल अलंकरण पुरस्कार शुरु.

छत्तीसगढ़ संवाद, आर.ओ.-62724/1

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क | Chhattisgarh CMO DPR Chhattisgarh

सबका साथ – सबका विकास

गोबरक दाम

✍ डॉ. गंगेश गुंजन

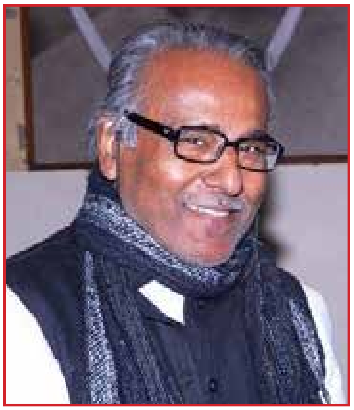

लेखक समकालीन मैथिली साहित्यक सशक्त हस्ताक्षर छथि। हिनका मैथिली साहित्य मे योगदानक लेल साहित्य अकादेमी समेत कतेको रास सम्मान आ पुरस्कार भेटल छनि। मैथिली लेल 1994 में भारत सरकार द्वारा साहित्य अकादेमी पुरस्कार, बिहार सरकार सँ विद्यापति सम्मान, स्वस्ति फाउंडेशन सँ प्रबोध साहित्य सम्मान सेहो भेटल अछि। एखन किछु दिन पहिने हिनका उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान सँ सौहार्द सम्मान (मैथिली) सँ सम्मानित करबाक निर्णय भेल अछि।

संपर्क :
पारस टियरा, टावर-08, फ्लैट नं-102,
सेक्टर. 137, (एक्सप्रेस मार्ग)
नोएडा- 201301 (उ.प्र.)
मो. 9899464576

भागलपुरमे एकटा उनटा पुल कहबैत छैक। उनटा पुलसँ दक्षिण मुँह जे सड़क जाइत छैक,तकरा बौंसी रोड कहल जाइत छैक। बौंसी रोड पर कएकटा बस्ती-मोहल्ला पड़ैत छैक लगे-लग। बहुत रास दोकान आ लोकक, ट्रक-बस, टमटम, रिक्शा सभक खूब घन आवाजाही। सुखायल मौसममे भरि ठेहुन धूरा आ भदवारिमे भरि ठेहुन पानि-कादो। शहरी नाला सभक कारी गंदगीसँ सड़क भरल-पूरल। कैक समय पयरे आयब-जायब कठिन। मुदा सड़क छैक पीच। मोजाहिदपुर मिर्जान हाट चौक, हबीबपुर आ हुसैनाबाद तथा अलीगंज। कैक जाति आ पेशाक लोक। काठ गोदामसँ लऽ कऽ तसरक उद्योगी धरि आ जानवरक गंध तोड़ैत हड्डीक टालसँ लऽ कऽ हरियर टटका तरकारी सभक हाट धरि। तहिना टिकटिक घोड़ास लऽ कऽ बड़दोसँ बत्तर छातीतोड़ श्रम करैत घामे-पसेने तऽर ठेलास माल ऊघैत मजूर सेहो। बच्चा, सियान सभक भीड़ भेटत कतहु दोकानमे लागल फलकल कोबीक छत्ता जकाँ, कतहु अलकतराक उनटल पीपा जकां। ई दृश्य थिक सड़कक दुनू कातक उनटा पुलसँ ता अलीगंज। अलीगंजसँ किछुए आगाँसँ सड़क खूब पकठोस छैक। चिक्कन कारी। तेहन जे कैक टा परिवार ओहिपर मकै-गहूम पर्यन्त पथार दऽ कऽ सुखबैत भेटत।

ओही इलाकाक एकटा घटना थिक। माने बीच सड़क परक अलीगंज बस्ती जतऽ खतम होइत छैक। ताही ठाम सड़कक कातमे एकटा आर कल छैक जे हरदम अबन्ड छौंड़ा जकाँ छुरछुरबैत रहैत छैक। यद्यपि भागलपुरमे पीबाक पानिक कष्ट बड्ड सामान्य बात अछि, मुदा एतऽ पानिक उदारता देखिकऽ से समस्या अखबारी फूसि बनि जाइत छैक। खैर, ताहू दिन खूब तेजीसँ पानि छुरछुरा रहल छलैक। क्यो भरनिहार नहि रहैक। खूब रौद रहैक। चानि खापड़ि जकाँ तबैत। तेहन सन जे यदि रोटी बेलिकऽ धऽ देल जाइक चानिपर तँ पाकि जयतैक। एहना मौसममे कलसँ सटले दस गोटे बीस गोटे अपन चानि तबबैत यदि घोलमालि करैत ठाढ़ हो तँ ध्यान जायब स्वाभाविके। हमहूँ अपनाकेँ रौद, लू आ उमसमे उलबैत-पकबैत ओही दऽ कऽ लऽ जाइत रही। एकटा उपयुक्त कारण बुझायल सुस्तयबाक। भने किछु लोक घोँघाउज कऽ रहल छलैक। लगमे ओतेक प्रवाहसँ जल झहरि रहल छलैक कलसँ, से एकटा मनोवैज्ञानिक शीतलता पसारि रहल छलैक मने। जखन ओहि गोल लग पहुँचलहुँ तँ ईहो देखबा योग्य भेल जे ओहि घोँघाउजि मण्डलीसँ आगाँ एक टा मिनी बस ठाढ़ छैक। सन्देह नहि रहल जे कोनो दुर्घटनास फराक किछु बात नहि छैक। एहन दुर्घटनामे सड़क पर ककरो मृत्यु सामान्य घटना थिक। डेग अनेरे किछु झटकि गेल। लग पहुँचलहुँ आ ओहि घरेलू घोंघाउजिक कन्हापरसँ हुलकि कऽ देखलहुँ तँ बीचमे दू मथिया गोबर हेरायल बीच सड़कपर। एक टा

छौँड़ा हुकुर-हुकुर करैत...। घोँघाउज खूब जोरसँ चलि रहल छल। ओही लोकक गोलमे एक कात करीब 10-12 बर्षक दूटा छौँड़ी आदंकेँ चुप्प ठाढ़ि आ कनैत... खरुकी पहिरने खूजल देह, छिट्टा सन केश...। ओहिमे सँ एकटा छौँड़ीक जमड़ी लागल अगँहिमे फाटल पैंट, ताहिपर टटका गोबर लेभरल। दुनू छौँड़ीक गालपर हाथमे, सौँसे देहपर गोबर लागल आ दुर्घटनाग्रस्त छौँड़ाक छातीपर गोबर लागल दू टा नान्हि टा हाथक छाप यद्यपि ओहि कड़ा रौदमे सुखा गेल रहैक, मुदा स्पष्ट रहैक।

आदंकमे पड़लि दुनू छौँड़ी, अंदाज करैत छी, गोबरबिछनी छैक। बाट-घाट जाइत-अबैत गाय-महींसक कएल गोबर जमा अछि, भरि दिन तकर गोइठा थोपैत अछि, माय वा परिवारक क्यो लोक आ तकरा सुखबैत अछि आ पथियामे सजाकऽ बेचैत अछि शहर जाकऽ। जीविकाक एकमात्र साधन यैह गोइठाक आमदनी। गोइठा जाहिसँ बनय से गोबर आबय कतऽ सँ एहिना अनिश्चित। कहियो एको पथिया, कहियो किछु नें। त' ँ एहि सड़कपर गोइठा बिछनी छौँड़ी सभक झोंटा-झोंटीक दृश्य बड्ड आम घटना रहैत छैक। आ ओ ओकरा माय-बापकेँ गारि-सराप देलक, ओ ओकरा माय बहिनकेँ घोड़ास वियाह करौलक... एकहि दिन पहिने दूटा छौँड़ी बीच सड़कपर तेना पटकम-पटकी करैत रहय आ एक दोसराक झोंटाकेँ तेना नोचि रहल छल जे दया आ क्रोध दुनू आबय मनमे, मुदा समाधान की। गोबर जकर जीविका छैक, ताहि परक आफत तँ ठीके नै सहल हेतैक ओकरा। ताहूमे एक दिन हम एकटा छौँड़ी केँ पुछने रहिऐक- 'तोरा सिनी एना झगड़ा केहने करै छैँ, जरी टा गोबर के वास्ते?'

- 'जरी टा छलै? एतना छलै, हम्मे जमा करी कऽ रखलिऐ आरू ई रधिया मोटकी-धुम्मी ने अपनऽ छिट्टामे धरी लेलकऽ। आय हमरा केतना मारतै माय? माय तँ इहे न कहतै जे हम्मे गोबर नहि बीछय छलियै, कहीं दिन भर खेली रहलऽ छलियै? की खयतै लोगें?'

हमर प्रश्न हमरे खूब भारी चमेटा जकाँ बुझायल, हम चोट्टहि ससरि गेल रही। मुदा ओहि दिनुका दृश्य बड्ड मार्मिक छलैक। आदंकेँ चुपचाप दहो-बहो कनैत दुनू छौ ँड़ी एक बेर चारू कातक लोककेँ एक बेर

शोणित बहैत बच्चाकेँ देखैत ठाढ़ि रहैक।

- 'की होलै भाइ जी?' हम एकटा सज्जन सँ पुछलियनि।

- 'अरे कलियुग छौं भाई जी। बताबऽ जरी टा गोबर के वास्ते एकरा सिनीमे आपसमे झगड़ा होलै आरू हौ छौँड़ी एकरऽ छोटऽ भाइकेँ धकेली देलकै मिनी बसऽके आगूमे। देखै नै छहौ जे घड़ीमे दम टुटलऽ छै छौँड़ाके आहा...

- 'जरी टा गोबर छलै ऊ? माय किरिया खा के कही तँ लछमिनियाकेँ जे हमरऽ एक चोत गोबड़ छेलै कि नै?' अचानक जेना खूब साहस करैत आदंकति एकटा छौँड़ी कनिते बाजलि। हमरा अकस्मात लोक सभपर खासकऽ ओही भाइ साहेबपर क्रोध उठल।

- 'विचित्र बात! तोरा की नहि देखाइ रहलऽ छऽ जे ई बुतरू मरि रहलऽ छै? आ अस्पताल पहुँचाबै के फिकिर नै करी कऽ दर्शक बनलऽ खाड़ऽ छऽ। धिक्कार।'

सभ जेना हमरे पर गुम्हरऽ लागल।

- 'आबऽ की ई बचय पाड़तै? की फयदा लय गेलास। उल्टे पुलिस कानून के झंझट।'

- 'तैयो लै जायमे की हर्जा? भाइ-साहेब ठीके तँ कही रहलऽ छै हौ।' एक गोटे अपन विचार देलकैक।

मुदा तकर कोनो प्रयोजन नहि भेलैक। घोल-फचक्का मचिते रहलैक, ओ दुनू गोबरबिछनी छौंड़ी आदंके ठाढ़िए रहलि लोकसँ घेरायलि। बीच बाटपर ओहि घायल नेनाक प्राण छुटि गेलैक। एक चुरुक पानियो ने देलकै क्यो।

एहि संदर्भमे एकटा लेखकक टिप्पणी-प्रस्ताव करैत छी जे ई दृश्य छल एकटा नहि, कैकटा गोबर पर जिनहार परिवारक बच्चाक संघर्षक। एक बहिन ककरो एक चोत गोबर चोरा लेलकै तँ तामसमे ओ चौरौनिहारक छोट भाइकेँ सड़कपर धक्का दऽ देलकै आ मिनीबस ओकरा पीचि देलकै। पीच पर शोणित आ गोबर बराबरि दामक भेल रौदमे सुखाइत रहलैक।

बौंसी रोडक ई दृश्य जे देखने होयता सैह बुझने होयता-एतबे कहब। हमरा तँ ईहो नहि बुझल अछि जे मुइल छौंड़ाक मायो-बाप छलैक कि नहि? छलैको तँ ओकरा कखन खबरि भेल होयतैक जे ओकर बेटा मिनीबसमे पिचा कऽ मरि गेलैक। कतेक काल सड़क जाम रहल हेतैक। वा मिनी बसक ड्राइवर कोन थानामे जाकऽ कहने होयतैक जे हम एकटा निरीह छौंड़ाकेँ खून कऽ कऽ आबि रहल छी? थाना पर किछु तरघुसकी थमा कऽ निश्चिंत छुटि आएल हेतैक।

हमरा तँ नहि बूझल अछि ओहि दुनू छौँड़ियो दऽ। मुदा ओहि घटनाक बादसँ एहि बातक अंदेशा अवश्य होइत रहैत अछि मनमे जे कतहु दुनू छौंड़ी फेर ने एहि बौंसी रोडपर गोबर बीछैत भेटि जाय... कतहु फेर ने भेटि जाय। ओना, सत्य पूछी तँ आब हमरा सभ गोबरबिछनी एक्के रंग लगैत अछि।

अन्हार गलियारी

✍ गिरिजानन्द झा 'अर्धनारीश्वर'

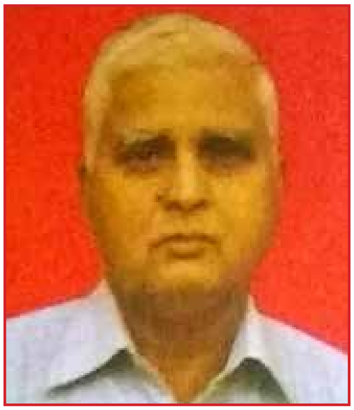

इस्पात प्राधिकरण, बोकारोमे इंटर स्तरक अंग्रेजीक व्याख्याता पद सँ सेवानिवृत्त। प्रकाशित रचना: कलंकिनी (मैथिली कथा संग्रह) मिथिला सांस्कृतिक परिषद् बोकारो द्वारा 1986 मे प्रकाशित। हाइकमाण्ड (मैथिली साहित्यिक निबंध संग्रह) – साहित्य लोक बोकारो इस्पात नगर द्वारा 1996 में प्रकाशित। माएक नाम चिठी-मैथिली कविता संग्रह-2013 ई. में प्रकाशित। संपादन- काव्यलोक (मैथिली कविता संग्रह)- मिथिला सांस्कृतिक परिषद् बोकारो। अन्य प्रकाशन: मैथिलीक पोथी एवं मैथिली तथा हिन्दीक पत्र-पत्रिका मे अनेक कथा, कविता एवं आलेख प्रकाशित।

सम्पर्क:
मैथिली भवन, ग्रा.+पो.-बाथ,
जिला-मधुबनी
मो. 9471307399

ओएखने पंचायत सँ आएल छल। अबितहि मात्र अपन झोपड़ीक स्नेह स्पर्श केलक ठीक ओहिना जेना सासुर जाइत पुत्रीक स्नेह-स्पर्श माए करैछ। माएक आँखिमे नोर होइछ, ओकरो आँखि डबडबैल छलैक। ओहि झोपड़ीक प्रति अजस्र ममत्वक प्रवाह ओकर दुनू आँखिमे स्पष्ट झलकि रहल छल। मुदा एकटा अंतर छल – एहि आँखि सँ चिनगियो छिटकि रहल छल आ' एहि सिंह दृष्टियों सँ बेशी तरंगित छल ओकर मस्तिष्क। डूबि गेल छल विचारमे ओ एहि तरहे जे बिसरि गेल छल अड़ोस-पड़ोसँ केँ।

पिठियौने आएल छलाह लाल काका। सिनेहक बरखा करबामे सदिखन तत्पर रहनिहार लाल काका। कैला पर हुनक अपूर्व स्नेह छल। कैलाकेँ नेनास कैले कहल जाइत रहल छल। आ आइयो धरि कैलुओ तक नञ बनि पओलक। एके जनममे तीन नाम दोसराक भागमे रहल होइक कैलाक लेल तें सपने अछि। ओना रक्त वंशक कोनो सम्बन्ध नञ अछि लालकाका आ कैलामे तइयो लड़िकपने सँ ई भल मानुस एहि पितृहीन कैला पर जाहि वात्सल्य स्नेहक बरखा केलनि अछि ताहि सँ ओकर तनमन चिर कृतज्ञ बनि गेल अछि। बड्ड आत्मबली छथि लाल काका स्वयं तें संघर्षशील छथिये, दोसरो केँ अन्याय सँ लड़' काल हिम्मत बढ़बैत रहैत छथि। हिनकेँ संगतिमे रहि कैलो अन्याय सँ लड़ब सिखलक। एहि स्नेह सूत्रस निर्मित संबंधी-लालकाकाक बातकेँ शिरोधार्य करब ओकरा हेतु सद्कार्य रहल अछि। मुदा आइ तीन-तीन बेर हाक देलो पर कैला बाजल नञ। किएक समाधिस्थ अछि ओ।

कान्ह वेँ झकझोरैत ओकर अपरिपक्वता आ' अपन अनुभवक दोहाइ दैत लाल काका अपन बात मानि लेबाक आग्रह ओकरा सँ केलथि।

सुनिकेँ चौंकि उठल कैला। सोचए लागल की ई वैह लाल काका छथि, जिनक संगतिमे ओकर लौह व्यक्तित्वक निर्माण भेल अछि? एक मन भेल – कतहु ओ ओकर परीक्षा तें नञ ल' रहल छथि। मुदा फेर मन नञ मानलक। दोसर विचार आएल जे ई मात्र सुझावो भ' सकैछ – 'मुदा एहन कायरतापूर्ण सुझाव! की काका आब कमजोर भ' गेलाह अछि? थाकि गेलाह अछि। या वैह अपनञ त' कमजोर नञ भेल अछि जकर आभास पाबि काका एहन प्रस्ताव कएल अछि।'

नहि-नहि ओ एखन थाकल नञ अछि। एखनो दम-खम बांकी छैक ओकर। रहल तजुर्बा, तें जकर खुदी बुलंद होइक तकरा तजुर्बाक चिंता करब व्यर्थ। पैगक बात ओ किन्हु नञ मानत, मनहि मन निश्चय केलक। प्रकटत: बाजि उठल– ''काका, संघर्षीक लेल अनुभवहीनता कोनो बाधा नञ थीक। संघर्षे ओकर पथ थीक, विद्रोह ओकर पाथेय आ' परिवर्तन लक्ष्य।''

एकबेर फेर बुझेबाक प्रयास केलनि काका। ओकर माली हालत आ' मंहग न्याय व्यवस्थाक हवाला देलथिन्ह। हारिकए सावधान केलथिन्ह। पाथर सँ सिर टकड़ाए पाथर तोड़क प्रयास नादानी थीक-बुद्धिमानी नञ।

'हुवे दियौक, हमरा बला सँ।'

अन्याय सँ जूझनाइये ओकरा भागमे लिखल अछि। मानलहुं, मैनजन सब सँ बैर करब पानिमे रहि मगर सँ बैर मोल लेब थीक। मुदा ओकर दिमागक कोन कथा, दिलो एहि बात केँ स्वीकार नञ करैछ जे अपन पैत्रिक भूमिकेँ अन्याय पूर्वक लेबए दैक आ स्वयं चुपचाप तमाशा देखए। तैं, ओहन उल्हार देल।

मुदा की दिल-दिमागक बात पर दृढ़ भेनाइ कमजोर मनुक्खक लेल अशोभनीय नञ? कांच करची जकां लिबबाक क्षमता गरीब केँ राखकचाही। सब पंचक सैह तें विचार छल। परन्तु एहन एक पक्षीय फैसला बिना विचारनञ सब एके स्वरमे बाजल छल झोंपड़ी हटेबाक बात। बुझाएल छल जेना विवेकशून्य जानवरक जमघट लागल हो। कैलाक मन खीझ उठल छल – आखिर महलवला सब झोंपड़ी केँ उजाड़बाक पाछां किएक पड़ल रहैछ? – काका सँ ओ प्रश्न केलक।

झोपड़ी आ महलक ई खेल युग-युग सँ चलि रहल छैक – काका बुझवैत बजलाह – 'अरे वताह। जतए कतहु महल उठैत छैक झोंपड़ी ओतए पहिने पहुंचैत छैक। आ' तखन ओ दिल खोलि केँ काज करैछ। ईटा उघैत अछि, चून, सीमेंट, बालू, छड़ की-की ने उठबैत अछि। आ' कंगूराक निर्माणकाल तें खसि केँ मरियो जाइछ। फलतः एकटा सहमल-दबल चीख बहराइछ जकरा बंद करक हेतु महल रोटीक एकटा टुकड़ा फेकैछ। दोसर दिन देशी पीबि पुनः पूरा जोश सँ झोंपड़ी काज करए लगैछ जेना काल्हि किछु भेले नञ हो।'

कैला केँ ई दार्शनिक भाषण बड्ड अजगुत लगलैक। ओ बुझि नञ पबैत छल जे झोपड़ी महलक निर्माण हेतु अपन प्राणोत्सर्ग तक क' दैछ तकरे उजाड़बाक आयोजन महल किएक करैछ? ओ कहलक, 'काका महलक चाहलो सँ तें झोपड़ीमेटाएल नञ। जतेक ओकरा उजाड़बाक प्रयास भेल ततबे ओ बढ़ैत गेल। महानगर धरिमे एक दिस गगनचुम्बी अट्टालिका अछि तें दोसर दिस स्लम ड्वेलर्स तइयो महल अपन कारगुजारी सँ बाज किएक ने अबैछ?'

बड़ जोर सँ हंसि पड़लाह काका। हुनका बुझेलन्हि जे जीवनक यथार्थ केँ बुझवामे एखनों असमर्थ अछि कैला। कहलथिन्ह – 'नदान कहीं का! अरे महलक सोंझामे झोपड़ीकेँ सजबाक अकड़पन यदि नहिं तोड़ल जाए तें फेर महलक शान की रहतैक! झोपड़ी केँ सदिखन झूकिकेँ रहक चाही। माथ झुकाकेँ रहनाइ जे झोंपड़ी नञ सीखलक तकर खाक भ' गेनाइये नीक।'

'त' की ओकरहुं खाकमे मिलए पड़तैक? की यैहटा नियति बांचल अछि? की पंचैक कहल ठीक अछि? की क्षय मात्र ओकरा भागक लेख अछि। काश! ई सब नञ भेल रहितए! व यदि भेल तें तकरा होनी वा' मानि ओहो स्वीकार क' सकितए! मुदा नहि – इहो तँ भ' सकैछ जे ओकरा भागमे महल सँ टकरा केँ धारा केँ मोड़बाक बात हो।'

कैलाक मस्तिस्कमे जेना तूफान उठल छल आ' अनेकानेक विचार विड़रो जकां घुरियाए रहल छल। ओकरा मन पड़लैक कोन संयोग सँ एहि झंझटमे फंसल छल। ओकरा मोन पड़लैक कोन संयोग सँ ओ एहि झंझट।

सातेक साल पहिलुका गप थीक। आनंदी बाबू अपन इहो साध साधि लेब' चाहैत छलाह। अपना पैरुख सँ की-की नञ ओ अर्जन केलथि। पांच बीघाकेँ सै पर पहुंचेलथि। धन आ' अकबालमे गामक कोन कथा, परगन्ना भरिमे नामी भ' गेलथि। मुदा एखनो धरि एकटा नीक घर नञ बनाए सकल छलाह। एहन बात नञ जे टाका नञ हो वा' खर्च करक इच्छाशक्तिक अभाव हो। मुदा एहि सघन बस्तीमे बीच गाममे बासडीहक नितान्त अभाव छल। अपन प्रतिष्ठानुरुप पोखरा-पाटन बनेबा योग्य बास डीहमे कैलाक झोपड़िये बाधक छल। ओकर अतिक्रमणस चारु खूट सुन्दर महल बनि सकैत छल। तैं एहि कांट केँ निकालब आवश्यक छल।

आनन्दी बाबूक जीवनक सबसँ पैघ बात ई छल जे असफलताक स्वाद ओ जीवनपर्यन्त नञ चखने छलाह। जहिया कहियो जेहन जे इच्छा भेल ओ पूरा कए केँ छोड़ल। सांध्यपूर्ति लेल साधनक चिंता ओ नञ करथि। साध्यक सिद्धिये हुनक नैतिकता छल आ' तैं पसरल छल गाम भरिमे भययुक्त धाख। हुनका शानक खिलाफो केओ करत से सोचबो असंभव छल। फेर कैला तं हुनका दबेलक लोक छल, बहिया जकां खटनहार। प्रत्यक्षतः गनेबाक लेल अनेक उपकार केने छलाह आनन्दी बाबू। तइयो बदलल समयक ध्यान राखि बड्ड चतुर चालि चलने छलाह ओ।

कैला आब टाका-पैसा दैछ की नहि? कैलाक माएसँ बड्ड प्रेमसँ आनन्दी बाबू पुछलथिन्ह।

हम टाका ल' क' की करब।

जाहिमे ओकर सुख सैह हमरो सुख।

नहि-नहि, आजुक धिया-पुत्ता कमाइत देरी माए-बापकेँ बिसरि जाइत छैक, तैं पुछलहुं।

नञ हमर बेटा तेहन नञ अछि।

बेटा आज्ञाकारी अछि तैं परखक लेल विगत उपकारक ब्याजें झोपड़ि हटेबाक लेल कैलाकेँ मनेवाक वचन ओकरा माइयेसँ ल लेने छलाह आनन्दी बाबू।

पुन: छलेबा हेतु तत्पर देखि माए पर बिगड़ि उठल कैला- ''वैह किएक ने दोसर ठां चलि जाइत छथि। बीच गाममे नहि, मुदा गामसँ सटले तें ढेर रास जमीन छन्हि। ओतए महल बनेनाइ आओर नीक रहत। हमरा लग तें बाप-दादाक इएह एक मात्र निशानी बांचल अछि। सब किछुतें हड़पिये चुकल छथि, आब ई देखि करेज पर सांप किएक लोटैत छैन्हि।

पहिलवेर गामक कोनो व्यक्ति आनन्दी बाबूक अवज्ञा करक दु:साहस केने छल। सांपकेँ फण उठेबास पूर्वहि ओ कुचलैत आएल छलाह, मुदा एहि बेर अनजानेमे अपने पोसल सांप फण काढ़ि बैसल छल। ओहि सांपक फण केँ ठीकसँ थकुचि देबाक आवश्यकता ओ अनुभव कएल।

हुनक संग देबाक तरीका नायाब होइत छल। नादान बिद्रोहीक लेल भिन्न-भिन्न प्रकारक चक्रव्यूह रचल अछि। द्रोणाचार्य एकेटा चक्रब्यूह जनैत छलाह आ' तकर काटो शिष्य अर्जुनकेँ बतौने छलाह। मुदा आनन्दी बाबू सहस्त्रो चक्रब्यूह रचनामे प्रवीण छलाह आ' तकरा तोड़बाक तरीका खासम-खास व्यक्तियो केँ नञ बतबैत छलाह। प्रात:मे जे कैला उठल तें घर सँ निकलबाक रास्ते बंद पओलक। ओ ई तें बुझि गेल जे ब्यूहमे फंसाए हथियार रखबेबाक कार्य आनन्दी बाबू शुरू कएल अछि, मुदा, ओकरे जमीन केँ घेरि ओकरे रास्ताकेँ बंद करक प्रयास बड्ड अटपट लगलैक।

दूरदर्शी आनन्दी बाबू कांच गोली नञ खेलाएल छलाह। निकटतम मित्रोक लेल ओ ब्यूह तैयार रखैत छलाह। तैं कैलाक माएसँ जखन गाछी आ भीठ लिखाए रहल छलाह तं एहि जमीनक नम्बर सेहो चुपचाप चढ़ा देने छलाह। एहि राजकेँ राजे रहए देने छलाह ताकि मधुसँ यदि केओ मरए तें तकरा विष देबाक कोन काज! आ आइ साम-दाम सँ काज नञ चलल तैं चक्रब्यूहमे फंसाए सर्वनाशक आयोजन शुरु कएल। हुनक विश्वास छल जे कानूनी दाव पेंचक चक्रव्यूहकेँ अभेद्य बुझि कैला हारि मानि लेत आ यदि तइयो टकरेबाक कोशिश केलक तें एहि पक्का सबूत केँ गलत साबित करक लेल न्याय केँ अंहार गलियारीमे ढुकि सर्वनाशे केँ प्राप्त करत।

काँच लौह नहि, इस्पात पिण्ड सँ बनल छल कैला। पहिलबेर एकटा अदना सन आदमी आनन्दी बाबूक विरुद्ध मुकदमा दायर क' देलक। ओ सोचए लागल छल जे शीघ्रे ओ किला फतह क' लेत। गामोमे पहिलबेर कानाफूसी शुरू भेल छल जे कैले अपना धर्मबाप केँ सबक सिखओत।

लोगो सब विचित्रे होइत अछि। स्वर्गीय गंगा पहलमानक गर्भ आन्हर बेटाक धर्म बाप बना देलक अछि आनन्दी बाबू केँ अंखिक आन्हर नाम नयन सुख सन बात थीक ई। ओहि व्यंग्य सँ उत्पन्न दर्द कैलाक लेल कतेक मर्मान्तक होइत छैक तकर अनुमान कमे लोक क' सकैत अछि।

पहलमान केँ टी.बी. विश्वास नञ होइछ। मुदा राजयक्ष्मे भेल छल गंगा पहलमान केँ ओहि समयमे ई आत्रुक कैंसर आ एड्स जकां लाइलाज छल। फल भेल असमयक मृत्यु। क्षय रोग अपना संग धनक विनास सेहो नेने आयल छल। गाछी आ भीठ छोड़ि सबटा चास पहलमानक दवाईमे स्वाहा भ' गेल। मुइला पर पांच सौ मूरक सूदि सहित पन्द्रह सै टाका बांचल छल आनन्दी बाबूक। उदारता देखबैत ओ गाछी आ भीठ लिखाए ऋण माफ क' देने छलाह। आ' तहिकाल एहि चक्रव्यूहक निर्माण क' देने छलाह।

सदा सयता देखबैत माए बेटाक पालन हेतु भनसियामे राखि लेने छलाह मसोमात केँ माइ बहिकरनी बेटा चरवाह। गाएक चरवाहो कएक खन गोसईयां सन बुधियार भ' जाइछ। भले ही गोंसइयां बनक अवसर बिरले केँ भेटैछ। कैलोक बुद्धि बचपने सँ परिपक्व होमय लागल। कठोर जीवन संघर्ष सँ निर्मित भेल छल बुद्धि। मध्यराति धरि काज कएनिहारि अबला मसोमात संग जे जे जुलुम केलथि आनन्दी तकर क्षणिक स्मरण मात्रो सँ मन तीत भ' उठैछ कैलाक।

गंगा पहलमानक एहि एक मात्र निशानी केँ मनुक्ख बनावक हेतु की-की ने सहलक मसोमात। मुदा आनन्दीक धूर्तताक कारण उच्च शिक्षा नञ दियाए सकलि बेटा केँ साक्षर कैला केँ अपना पहुंच सँ बिहार सरकारमे चतुर्थ श्रेणीक कर्मचारी नियुक्त क' एक गोली सँ दू शिकार क' देल आनन्दी। आ' एहि सब उपकारक बले ओ कहाबए लगलाह धर्मबाप।

किछु कालक लेल तें बुझाए पड़ल रहैक जे वास्तवमे कैला आनन्दी बाबू केँ सिखाए देत, मुदा सँ बात बालू

पर केँ पानि जकां क्षणिक सिद्ध भेल। सात साल सँ केस लड़ैत-2 कैला जानि सकल छल जे न्याय पेनाइ कतेक कठिन छैक। एखन धरि केस खुलियो नहि सकल छल आ' ओकर कमाइक अधिकांश ओहिमे खर्च भ' जाइत छल। सात साल धरि आर्थिक डांग मारलाक बाद आब आनंदी बाबू झोपड़ीकेँ उजाड़क मन बनाए चुकल छलाह। पुलिसकेँ पक्षमे क' लेल, गाम अधीने छल आ' न्याय एक तें आन्हर आ' दोसर बिनु ठेंगाक।

गामक पंचायतकेँ नाइंसाफीक पर्याय बुझि न्यायालयक शरणमे कैला गेल छल आ' आइ हारि थाकि ओही पंचक शरणमे घूमि आएल छल। सोचलक पंच परमेश्वर होइछ सँ बात बुझक चाही। मुदा पंचैती तें ओकर हिम्मते तोड़क लेल बजाएल गेल हो तहिना बुझना गेल। पमरियाक तेसर जकां सब पंच 'हां जी' 'हां जी' करयवला छलाह। एकटा पंच तें आओर हद्द केलनि। ओ कहि उठलाह - अद्भुत जमाना आबि गेलैक अछि आनन्दी बाबू। अहां सात साल धरि झोपड़ी नञ उजाड़लियैक ताकि ठीक रास्ता पर आबि सकए कैला।

मुदा कुकुड़क नाग्गरि कतौ सोझ भेल अछि। आइ तें परबे बाज केँ आँखि देखबैत छैक। गीदर केँ अपटी खेतमे मरबाक बेर अबैत छैक तें अहिना गाम दिस विदा होइत अछि आ' गरीब केँ चुटी जकां पांखि निकलैत छैक तें कचहरी दिस दौड़ैत अछि। मुदा एकटा बात अछि। अहांक भनसियाक बेटामे किछु तं अहांक गुण हेबाक चाही।

सुनि केँ आगि लागि गेल छल कैलाक तन-मनमे फुफकारि उठल छल ओ- यौ। अहां पंच सब आनन्दी बाबूक दबेलमे रहनिहार छी तैं दोसर पक्ष नञ सुझैत अछि। जे समाज अपना केँ एक व्यक्तिक अनयक आगु समर्पण क' देने हो तकरा सँ एहि सँ अधिक की उमेद भ' सकैछ। यौ पहिने डकैतोक मानदंड होइत छलैक नैतिकता होइत छलैक। धन ली तें धर्म नञ ली, धर्म ली तें धन नञ केँ सिद्धान्तक पालन ओहो करैत छल। मुदा आजुक समाजक आनन्दी बाबू सब तें तेहन डाकू बनल छथि जे धन आ धर्म दुनू लुटैत छथि आ समाज मूक भेल देखैत अछि। एके बेर मुइला सँ गोनुझा माए केँ चिनहने होथु वा नञ मुदा हम एके बेरक पंचैती सँ समाज केँ चिन्हि गेलहुं।

विचारक चक्रवात आओर कतए धरि जइतए तकर ठेकान नञ मुदा लालककाक द्वारा अपन बात दिस पुनः ध्यान आकृष्ट करवा सँ विचार तन्तु टूटल। एहन नञ छल जे लालककाक समझौतावादी विचार सँ हुनक सहृदयतामे कोनो अंतर आओल हो। कैला जनैत छल जे एकटा वैह टा छलाह जे सुख-दुखमे समान रूपे निस्वार्थ भावें सहायक रहलाह अछि आ' रहताह। मुदा ओ कोना मानत हुनक सुझाव। मानक कोन कथा, विचारबाक पलखति धरि नञ छल। कारण ओ आब ओहि स्थितिमे पहुंचि गेल छल जतए सोचबाक रास्ता खतम भ' जाइछ आ' मात्र संघर्षक रास्ता सूझैत रहैछ। आ' एहि ज्वालामुखीक विस्फोटमे झोपड़ी आ महल दुनू विनष्ट भ' उठैछ।

विस्फोट सँ पूर्व वेदनाक तीव्र अनुभूति मन केँ तेना पीड़ित क' दैछ जे ओ भावाभिव्यक्ति लेल छटपटाए लगैछ। उचित माध्यम नञ भेटला सँ अटपटो अंगभंगिया सँ प्रतिक्रिया प्रकट होमअ चाहैछ। एहन अव्यवहारिक प्रदर्शनक सीधा सम्बन्ध तात्कालिक परिस्थिति सँ नहियो रहला संता मानसिक स्थितिक प्रतिबिम्ब होइछ। कैला अचेतन मनक आदेश पर झोंपड़ीक मांझमे खांभ लग पहुंचि गेल। एक बेर सतृष्ण नेत्रें एहि खांभ केँ तेना देखलक जेना आनन्दीक वज्रहस्त तिनका जकां तोड़ि एहि एकमात्र अवलम्ब पर आधारित झोंपड़ी केँ धाराशायीक देत। मुदा पुनः बुझाएल जेना ओ खांभ नञ आनन्दीक प्रतिविम्ब हो। आ' आनन्दीक ध्यान अविते खून खौलि उठल आँखि अंहराए गेल। खाम केँ अपना दुनू बांहिमे ल' ओहिना कसए लागल जेना सै पुत्रक मृत्यु सँ दुखी धृतराष्ट्र लौहक भीम केँ कसए लागल छलाह।

जहिना धृतराष्ट्र ओहि भीम केँ चूर-चूर केने छलाह। बुझाइत छल कैला आनन्दी स्वरूप ओहि खाम केँ मसलि देत। ओकरा कपार पर पसीनाक बून्न झलकि उठल। लाल-लाल आँखिमे दृढ़ताक चिन्ह छल आ' संग छल न्यायक अंहार गलियारीमे बर्खो दौड़बाक संकल्प। ओ निःशब्द छल, मुदा ओहि मूक वाणीमे जे आवेग छल ताहिमे सैकड़ो आनन्दी केँ बहाए देबाक सामर्थ्य छल। लालो काका आइ तक कैलाक ई रौद्र रूप नञ देखने छलाह। आशीर्वादक मुद्रामे ओ बुदबुदाए उठलाह- एकर कैला नाम ठीक नञ ई तें संघर्षी थिक। एहन संघर्षी जे अपन दृढ़ संकल्प सँ न्यायक अन्हारो गलियारी केँ पार कर'मे सक्षम हो। जोर सँ बाजि उठलाह -

करोति सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः

किछु चारिपतिया मिथिला नामे

✍ अमरनाथ झा

सेवानिवृत्त उप-लेखानियंत्रक, वित्त विभाग, बिहार सरकार।
प्रकाशित कृति: "अकानल डेग" (कविता संग्रह)
प्रकाशनाधीन: थिर कएने मोन (कविता संग्रह)
विभिन्न पत्रिकामे फुटकर प्रकाशन।

संपर्क :
ग्राम पो. महरैल
भाया-झंझारपुर (मधुबनी)
पिन-847404

उत्तरमे हिम शैलाच्छादित
दक्षिणमे जे गंग नहाथि
पूब पुरनका कौशिकी
पश्चिम गंडक धरि जाथि।

इएह रहै चौहद्दी मिथिला
बांटल भेलै अछि दू देश
एमहर भाग बिहारे कहबै
ओमहर कहबै ओ मधेश।

बोली-बानी, टोन-टोनमे
भने होउक अदली बदली
मुदा ऐहि भाखाक मूलमे
सभतरि अछि ई मैथिली।

प्रकट भेली सीता जतय
ओ धन्य पुनौरा गाम
परब्रह्म आएल छला
स्वयं जनकपुर धाम।

मृदुल बोल छै सरस जय
सबहुक अनुपम बानि
माटि एकर हल्लुक, तन्नुक
मिठगर एतहुक पानि।

दर्शन, न्यायक छल जतय
पीठ अनेकहु भेद
सुग्गहु जतय पढ़ैत छल
न्याय वाक्य आ वेद।

वाचस्पति, मंडन एतय
विद्यापति केर गीति
नञ ककरहुसँ याचना
अयाचीक छल नीति।

सुमन, मधुप आ किरण जतय
हरिमोहन केर संग
दिनकर, आरसी बनल ततय
मिथिला केर बहु रंग।

विद्या, वैभव, ऐश्वर्यक छल
एतय सम्मलित बाना
शस्य श्यामला हरित भूमि-
छल बहुतो कल कारखाना।

प्रजातंत्र केर भेंट चढ़ल
हम्मर मिथिला आइ
केओ नञ नायक बनल
जे करितय अगुआइ।

प्रकृतिक छै मारलि मिथिला
कखनो बाढ़ि तं छनञ सुखार
नगद फसिल अलोपित भेलै
भेटियो नञ रहलै रोजगार।

भाखा सहजहिं चढ़ल श्रूब पर
विद्यालयमे आहुति पड़लै
धीरे धीरे कल कारखाना
एक एक कय अलोपित भेलै।

जाति-पातिमे जनता बंटलै
राशि-राशि कँ बानी छंटलै
नेता अलगे आगि लगौलकै
जनता गरमे फानी फंसलै।

एक सूत्र नञ बान्हल रहतै
जाबत मिथिलाक लोक
ताबत एकर विकास ने हेतै
कतबो कोसिसँ हौक।

यद्यपि बहुतो जन लागल
अपना-अपना ढंगे
कए रहलाह प्रयास बहुत
विविध रूप आ रंगे।

मुदा बहुत खगता छै एकबेर
मिलिकँ जोर लगाबी
मिथिला, मैथिल, मैथिलीक
सभ चिंता दूर भगाबी।

नफरत

(एगो दीर्घ कविता)

✍ रमण कुमार सिंह

वैचारिक पत्रिका 'समयांतर', प्रतिष्ठित प्रकाशन गृह 'राजकमल प्रकाशन' के संपादन काज केला के बाद टीवी पत्रकारिता आ सम्प्रति 'अमर उजाला' दैनिक केर संपादकीय पृष्ठ पर प्रमुख उपसंपादक पर कार्यरत। एकटा हिंदी कविता 'बाघ दुहने का कौशल' आ मैथिलीमे कविता संग्रह 'फेर सं हरियर' प्रकाशित।

संपर्क :
डी-340, वेस्ट विनोद नगर,
दिल्ली-110092
मो. 9711261789

व्याकरण मे नफरत केँ
भाववाचक संज्ञा मानल गेल अछि
मुदा जखन ई क्रिया रूप लैत अछि
तं तबाही आ विनाशक दृश्य देखाइत अछि
छगुन्ता मे पड़ल छथि वैयाकरण
जे ई कोना भ' रहल अछि

ई हमरा समयक
सबसं खतरनाक शब्द अछि
ई सबसं घातक
हथियार अछि हमरा समयक

प्रेम आ नफरत दुनू
मनुक्खक प्राकृतिक स्वभाव
मुदा एक-दोसरा सं
होइत अछि कतेक फराक
आ दुनूक परिणति
सेहो कतेक विपरीत
नफरत केर भावना
अदौ काल सं अछि समाज मे
जहिना इजोतक संग
रहैत आयल अछि अन्हार
मुदा पहिने प्रेम पर
भारी नहि पड़ैत छल नफरत

लोक मानैत छल जे ई पिरथी
टिकल अछि प्रेम पर
सात घर मुद्दइयो खातिर
लोक नै करैत छल अशुभ कामना
एहनो देखल गेल जे
मुद्दई आ मुदालह एक्के रिक्शा पर
चढ़िके जाइत छल कचहरी

तहिया असहमतिके मतलब
दुश्मनी नहि होइत छल
नफरतके तहिया वोट पाबै लेल
नहि कयल जाइत छल इस्तेमाल
लोक पाप आ अपराध सं करैत छल घृणा
मुदा आबतं भाषा
सेहो चिन्हल जाइत अछि
धर्मक खांचामे बांटिके
आ रंगो भ' गेल अछि
हिंदू आ मुसलमान

मुदा ई सब आइए शुरू नहि भेल अछि
जहिया गांधी बना रहल छलाह
अहिंसा के औजार
भगत सिंह अपन
धरती माता खातिर देलनि प्राण
नेताजी युवा सभसं
मांगलनि आजादी खातिर खून
जहिया अंबेडकर समानता आ
सामंजस्य केर गप्प करैत छलाह
तहियो किछु एहन उन्मादी लोक छल जे
तरे-तरे धधका रहल छल नफरतक आगि
बांटि रहल छल

समाज कें धर्मक खांचा मे
नतीजा यैह भेल जे बंटि गेल ई धरती
आ ओकर निशान
खाली जमीने टा पर नहि
लोकक मोनो पर खंचित भ गेल आ

बंटवारा खाहे देशक हो कि मोन केर
ओकर परिणति केहन वीभत्स होइत छैक
ई कोनो चर्च करबाक बात नहि अछि
मनुक्खक सभ्यता के सबसं पैघ तबाही
देखलक दुनिया जखन बांटल गेल देश

यैह नफरत बांटलक देश के आ
यैह नफरत पसारलक देश में दंगा
यैह नफरत कयलक कलम पर प्रहार
यैह नफरत कयलक मानवता कें लाचार

यैह नफरत कयलक गांधी केर हत्या
यैह नफरत करौलक समय-समय
अलग-अलग शहर मे दंगा-फसाद
दाभोलकर, पनसारे आ गौरी लंकेश
भेल एहि नफरत केर शिकार
ई नफरत पसरले जा रहल अछि
गामे-गाम नगरे-नगर देश भरि मे

यैह नफरत थिक जे वंचित रखैत अछि
दलित आ आदिवासी के मुख्यधारा सं
करैत रहल ओकरा सभक शोषण
तरह-तरह सं आ बारैत रहल
ओकरा सभक अन्न-पानि
यैह नफरत थिक जे ठाढ़ करैत अछि
स्त्रीक आगू डेग-डेग पर अवरोध
सिरजैत रहैत अछि ओकरा सभ लेल

नव-नव छान आ पगहा
रचैत रहैत अछि नव-नव षड्यंत्र
घृणाक भांग पीबि
उन्माद पसारे बला लोक
कोनो आन ग्रह सं नहि आयल अछि
ओ सभ हमरे सभक बीच रहै बला
बीमार लोक छथि जेना
रहैत अछि कोनो विक्षिप्त

एहि उन्मादी भीड़क पीछू ठाढ़ अछि
किछु घाघ षड्यंत्री शिकारी
चीन्हू भाइ चीन्हू एहि सभकें
जे घृणा केर आगि पसारि के
ओहि पर सेकैत अछि अपन रोटी

नफरतक आगि पजारै बला लोक
सभ सं पहिने हड़पे चाहैत अछि
दोसराक जमीन
फेर ओ छीनैत अछि
दोसराक स्वतंत्रता
फेर ओ बांटय लागैत अछि
राष्ट्रभक्ति केर सर्टिफिकेट
पहिने ओ एक व्यक्ति के
देशद्रोही कहैत अछि
फेर एगो समूच्चा समूह के
आ तेकर बाद विरोध करय बला
सब लोक के घोषित करैत अछि देशद्रोही
एहिना बढ़त जाइत अछि ओकर दायरा
आ धधकय लगैत अछि समूच्चा देश
ओकर पजारल नफरतक आगि मे

तखन उन्मादी भीड़क इंसाफ
सब कायदा-कानून के नांघि जाइत अछि
ओकरा खातिर लोकतंत्र आ संविधान केर

सबटा मूल्य झुनझुना मात्र
बनि के रहि जाइत अछि
हिंसक अपराधी सभ
बनि जाइत अछि नायक

उन्मादी भीड़ तय करय लगैत अछि जे
केकरा रहबाक छै अय देश मे
आ केकरा चलि जयबाक चाही दूर देश
लोक के की खयबाक चाही
आ की पहिरबाक चाही

एहना समय मे जखन कि इनारे में
घोरल जा रहल अछि नफरतक भांग
आ एगो समाजक रूप मे हमरा सभक
सामूहिक चेतना भ रहल अछि अलोपित
तखन ई कोनो असंभव नहि जे
हमहूं अहां कहियो भ जाइ एकर शिकार

एहने समय मे प्रेमक गीत गायब
बुझाइत अछि जरूरी
लोहा सँ लोहा के काटबाक
उपाय भ' गेल पुरान
बहुत भेल घृणा सँ घृणा केँ
खत्म करबाक खेल
आब सोचय पड़त नव उपाय

एना जं नफरत सं
नफरत के खतम करबाक
चलैत रहत खेल पहिने जकां
त ओ दिन दूर नहि जहिया
ई देश बनि जाइत भयावह मरघट
मरघट त नहि अछि अपन ई देश!

तों एक्के गोली सँ नञ मरि सकै छें, दोस...

(हमर गामक पारसमणि सी.आर.पी.एफ.मे फौजी छलाह, 26 जनवरी, 2012 केँ ओ शहीद भेलाह)

✍ अरुणाभ सौरभ

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार (मैथिली) आ भारतीय ज्ञानपीठ नवलेखन पुरस्कार (हिन्दी) देसिल बैना सम्मान (हैदराबाद) सँ सम्मानित युवा लेखक। प्रकाशित कृति: एतबे टा नहि (कविता संग्रह), दिन बनने के क्रम में (कविता संग्रह), वचन (कर्नाटकक वचन साहित्यक मैथिली अनुवाद), सजग कविता संस्कृति (संपादित पुस्तक)।

संपर्क :
जे-23, जैतपुर एक्सटेंशन,
पार्ट-1, अर्पण विहार
बदरपुर, नई दिल्ली-44
मो. 9871969360

ऐं रौ छौड़ा
एना कोना तों
एक्केटा गोली सँ मुईलें

कत्तेक मनोकामना
अरजने रहौक
माय-बाप जे
एक्केटा बेटा
जुआन भेल
करेताह दुओ
जुआन बहीनक कन्यादान
अही बाभनक गाम-समाजमे
जाहिमे दहेज एगो
अनिवार्य नियम छै
बियाहक

बड़ मनोकामना रहैक
तोरा बापक
जे बेटा बाजए
फाटाफट इंग्लिश
से भेबो केलौ
रौ छौंड़ा
तों हमरे संग
पढ़लें, खेललें आ
संगे-संग
उड़ेलें गुल्ली-डंटाक, पुल्ली

एक्के संग ठोर पर चढ़लौ
इंग्लिश हमर-तोर
एक्के संग नौकरी लागलौ
हम मास्टरीमे गुवाहाटीमे
तू सी.आर.पी.एफ. मे
दुओ गेलौं पूर्वोत्तर एक्के संग
अवध-आसाम सं
ई केहन काज रौ बौआ

जे सत्ताइस बरखक बसंत
आ बरखाक बाद शहीद
गणतंत्रक रक्षा निमित्ते

वाह रे गणतंत्र
लइये लेलकौ तोहर परान
तैयो
ऐं रौ छौड़ा तों
एक्केटा गोली सँ कोना
शहीद भेलें

मोन अछि जे 24 जनवरी,
2012 केँ
आएल रहै गुवाहाटी
माउन्टेन शैडो-हमर डेरा पर
गाम सँ ड्यूटी जेबाक लेल
आ ओही राति
पीटर-स्कॉट पीबैत-पीबैत
अपना दुओक आँखि
लाल भिजुंग भए गेल रहैक

हम कहलियौ भूख...
तों कहलें...
भूख... हा... हा... हा...
भूख अय समयमे
ककरो नञ लागै छै
कियो भूख सँ मरि जाय
तैयो ककरो भूख नञ लागै
छै-
ई सरकार कछै छै - हम
नहि!
किछु खो पारस...
'सा... ले... देश-मे...
नब्बे प्रतिशत लोग भूखा
सोता है

आओर तुम मुझे खिलाएगा...
हम फौजी हैं...'

रौ छौड़ा
कतेकों गोली
अपना सभ
फायर केने रही बच्चामे
गामक भुतहा बाधमे -
बरियाही बला थिरनट्टा सें
तखन एक बेर
एक्के गोली सं
कोना चलि गेलैं

कानञ छौ
तोर माय-बाप
बहीन आ समुच्चा गौंआं
केहन मजगूत छलही तों
जे जुआनो भेलाक बाद
बन्नूकेँ पकड़लें
आ थलि गेलें फौजमे
माय तोर छाती पर
पाथर राखि पाथरक
देवता-पितर
सँ कतेक उचिति मिनती

आ अरदास केने रहौक
आ हमरा लगैये जे
अखनो तिरंगा सं
लपेटल लहास के छोड़ि,
ट्रक के छोड़ि
तों चलि देबए हमरा संग
बाबागाछी टिकुला खाय
लेल
किएक त' तों एक्के गोली सं
नञ मरि सकै छें... दोस...।

दू गोट कविता

✍ डॉ. सच्चिदानन्द पाठक

मैथिली, संस्कृत आ हिंदीक कवि। हास्य व्यंग्य, समसामयिक रचनात्मक लेखन सेहो। साहित्य अकादेमीक सदस्य, ऑल इंडिया ओरिएंटल कॉन्फ्रेंसक पूर्णकालिक सदस्य। हिनक दर्जनो गीत टी सीरीज आ नीलम कैसेट्स पर उपलब्ध छनि। राजगीर महोत्सवमे बिहार सरकार द्वारा सम्मानित केल गेल। बेगूसराय जिला प्रशासन द्वारा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड सेहो भेटल छनि। राजकीय जे के स्कूल बेगूसराय के पूर्व प्राचार्य पद पर से सेवानिवृत्त भेला आ सामाजिक कार्य से सेहो जुटल छथि।

संपर्क :
रघुनंदनपुर, तेघड़ा,
बेगूसराय-851133 (बिहार)
मोबाइल नंबर : 9430046312

नया साल एलै

नया साल एलै बरखक दिन खूब हरखक दिन
बच्चा जुआनका सियनका मुदित भेल
वृद्ध कर्ताथ जंजाल एलै नया साल...
गामक पोखरिमे भेलै उजहिया
पोठिया माछस भेंट भेल तहिया
कक्का कनञ छथि घरकँ दसा पर
कमवैत भेलहुं हम बरद बहिया
बड़का बाबू केर मुर्गा मोसल्लम छोटका
कय बासी रोटी दाल
एलै नया साल...
नेन्न भुटका भोरे भोर कनय छथि
नोरे सँ घरनी चिक्कस सनय छथि
दम्मा सँ बाबू केर दम्म फुलैए
आय काल्हि परसू ओ दिन गनय छथि
कोनाकय हेतै भातो भैयारी
चर्चा नेने चौपाल
एलै नया साल...
माझिल बौआ कौलेजमे पढ़ै छथि
जेठकाते पढ़िकय घास गढ़ै छथि
छोटका नेन्ना छथि एतेक पढ़ाकू
सतकां सँ आगू नहिए बढ़ै छथिं
कर कुटमैती ओ घर घरारी सभ ठामसँ
एके हाल चाल
एलै नया साल...
जुवकक भेलै एतन उछाही
जलसा लेल अपनामे चन्दा उगाही
पछिया केर धुन पर उछलैत कूदैत छथि
ई सभ बिसरला घरक तवाही
एतन कमाल नवयुवक जुलूसमे धोती केर फारि रूमाल
एलै नया साल...
घोटैत घोटैत बाबू भेलै घोटाला
एतन देवाली जे देसँ देवाला
चारा अलकतरा ओ खादक खबर की
भारत भेलै हवाला कय हवाला
उठल सबेरे चहकैत चिड़ैया मुसकैत
चौखटि पर दलाल
एलै नया साल...
घरमे जिन्हका कन्या कुमारी
चारिधाम भ्रमण सन भेल बरतुहारी
बरक पिता छथि अटल हिमालय
मुंह हुनक बंगालक खारी
कन्याक पिता केर हालत देखि लागय
कटोरा नेने कंगाल एलै नया साल...
सालक स्वागतमे शब्द सजैये
लेकिन चेहरा पर बरह बजैये
भोर सांझ राति दिन किछु नञ बदलल
मोट छांट लोक लेल अंगूर बेदाना गरीबक
चुटकल गाल एलै नया साल एलै...

धनतेरस

लोटा चुए थारी चनकल फुटि गेल अछि छिपली
हहरैत ठुक्का पाती आबए कतऽसँ किनबै दिपली
सीसी तेलक बून्द लेल तरसय बिना लवण केर व्यंजन
पावनि दिलमे भोगि रहल छी आन दिन सन गंजन
पांच दिन सँ देखै छी चुन्हीमे जनमल मोथा
पेटक भाखा लिखू कविजी व्यर्थ लिखैछी पोथा
सरस कवि केर कनिया भऽ कँ किए बजै छी बेरस
नोन तेल माचिसँ हम कीनब परसू अछि धनतेरस।।

दू गोट नवतुरिया कविता

✍ स्वाती शाकम्भरी

मैथिली कविताक क्षितिज पर एकटा नवोदित पुंज। पहिल कविता संग्रह 'पूर्वागमन' 2017 मे साहित्य अकादेमी, दिल्लीसँ प्रकाशित। देश भरिक मैथिली मंच सब पर सक्रिय उपस्थिति। विविध पत्र-पत्रिका सबमे कविताक नियमित प्रकाशन।

संपर्क :
हटिया गाछी, मानस नगर, वार्ड नं.-32, सहरसा (बिहार) 852201
shakambhariswati2016@gmail.com

किछु हेरायल शब्द

काशक पटिया
आ कूशक चटाय
साबे घासक डोरी
मूजक बनल पथिया
घर-घर चरखा
काठक टकुरि
बांगक तूड़
जनेऊ खेहब
अंगने-अंगने
देवउठौनक अरिपन
गहबाक संक्रांति-दिन
गायक गोबरक चिपरि
हकारल लोकक लेल
तेल आ सिनूर
काजर पारबाक विधान
नव चिल्का
चिलकौरक मान
उचिति-विनती
सोहर-समदाऊन
सांझ-पराती
गीतक गान
ढेकी पर
काकीक ताल
ओम्हर हरबाहा कँे
जलखैय हेतु
काका अगिया बेताल
ई जे मिथिलाक अंगना
मैथिलानिक पहचान
भांगक कोठी
बाबाक दलान
भंगघोटना लग
मिसिया भरि
भांग लें
लोकक भरल मचान
चुनाओल तमाकुक लेल
एक दोसराक लग
हाथ पसैर
करैत खेखनी
ई जे मैथिल
मिथिलाक चिन्हान
ग्लोबल युगमे
विदेश सँ देशमे
भाषा आ
वेशमे
आहार-व्यवहारमे
संस्कृति-संस्कारमे
मेटा गेल पुरना
पहचान अछि।

प्रेम

प्रेम प्रेम प्रेम
की छी प्रेम
एकर अर्थ की
आजुक भागदौड़क
जिनगीमे।
कोना व्यक्त
होयत प्रेम?
कोना सिक्त
होयत प्रेम?
कोन भावक
उद्वेग सं
विभाषित
होयत प्रेम?
मनक संवेग कँे
कोना नियंत्रित
करत प्रेम?
मिलबाक
उत्कण्ठा
कोना चरितार्थ
करत प्रेम?
पियासल नयन कँे
कोना भिझा
सकत प्रेम?
देहक भाव कँे
नेहक घाट
सँ कोना प्राप्त
करत प्रेम?
रागमे प्रेम
रंगमे प्रेम
त्यागमे प्रेम
विरागहुमे प्रेम।
सरस ई प्रेम
नीरस नञि होइये
तीव्र ग्रीष्ममे
शीत लगैये।
तें, अधिकार प्रेम
कर्तव्य प्रेम
दू देहक नेह
विदेहक प्रेम।।

दू गोट कविता

✍ विनीत उत्पल

पोखरि छोडि नहर पर छैठ मनाबैत अछि

मिथिलाक मूल दरभंगा आ मधुबनीसँ दूर
हमर गाम नञ त' गंगाक कात अछि आ नञ कोसीक धार पर
नञ पूर्ण मैथिली लोक बाजैत अछि आ नञ अंगिका
मुदा समाज आ संस्कार त' मैथिले अछि।

तिलकौरक पातक तरुआ
बड़ी-भातक झोर
अंचार-दही मिलाकँ छप्पन सचार
आ अप्पन पोखैर माछ सं
महकैत अछि संपूर्ण गामए

गामक चारू दिस बांसँ आ कंचुक पात
सांझ भेला पर झींगुरक गान
भोरकँ कोयलक कूक
घास पर सीतक बून
अहांक बाट ताकैत आ स्वागत करैत अछि।

पूबमे नहर आ उदा बाजार,
पछिम भरि सोझें भगवतीक थान,
भोला बाबाक मंदिर आ बिसहरिया
आ नेमुआ गाम
उत्तर भरि नेशनल हाइवे एक सौ छौ आ गाम गंगौरा
आ दखिन भरि स्कूल आ पंचायत भवन संग गाम अछि बराही
अहां जेहन लोकक आसमे रहैत अछि।

मधेपुरा जिलाक छोट सन गाम आनंदपुरा अछि
थाना उदाकिशुनगंज आ भाया ग्वालपाड़ा अछि
लोक भरल ई गाममे जाइत बाभन आ ग्वार अछि
नौआ आ डोमिनक किछु घर सुहाबै भरमार अछि।

नागपंचमी पर बड़कामेला भगवती थान पर लागैत अछि
ए-वन झालमुढ़ी, जिलेबी आ चौमीन बिकायत अछि
किछु भगवत कथा, किछु नाच सेहो देखाबैत अछि
हरहरा सांपकँ लोक सभ दूध-लाबा चढ़ाबैत अछि।

काका, काकी, बाबा, दादी सँ भरल ई गाम अछि
घड़ी पावैनमे सभकँ सभटा कुटुंब गाम आबैत अछि
जनम-मुड़न सँ ल' क' ब्याह आ श्राद्ध धरि
सभ लोक संग सँ मनाबैत अछि
मुदा गामक पोखरि छोडि नहर पर छैठ मनाबैत अछि।

चूड़ी-लहठी

आजुक कालमे जौ अहां कीनब
चूड़ी-लहठी-सिनूर
लगायब पाइरमे आल्ता
माथमे टिकुली, आ गरमे मंगलसूत्र
ते अहांकँ कहल जायत जे
अहां लगौने छी मुंह पर
धरमक मुखौटा।
कँ कहत सँ बुझले होयत
किये की ई कहि बला लोक
अपनाकँ 'प्रगतिशील' बुझैत अछि
आ एकरा सभकँ बाजारक अत्याचार
पुरखक मानसिकता आ धरमक आडम्बर।
मुदा ओ जतेक बात बनाबै
असलियत यएह अछि जे
ओ सभ आ हुनका समर्थन करय बला लोक
पूंजीवादी व्यवस्थाकँ घोरि-घोरि पीबैत अछि
सरकारी दफ्तरमे काज कम, बपराहैट बेसी करैत अछि
कोनो पूंजीवादी कंपनीमे नौकर अछि
'हवा नियंत्रक'मे बैसँ माथ धुनैत अछि
आम लोक सँ दूर आम लोकक मुखौटा ओढने अछि।
जौ ई गैप सत नै, त' हुनका सँ पूछियो हुनक दरमाह
देखियो हुनक हाथक रेखा
आ बताबियो जे, एक-एकटा चूड़ी आ लहटी बनाबैमे
कोना गरीबक हाथ भट्टीमे जरैत अछि
कोना सिनूर बनाबैमे हाथमे सीसा गरैत अछि
कोना आल्ता बनैत अछि
कोना टिकुलीक डिजाइनमे पसीना छुटैत अछि
कोना मंगलसूत्र बनाबैमे सूइया गरैत अछि
कोना शोणित बहै आ फोकाक दर्द होयत अछि
तकर बादो नञ पूरा पाई भेटैत अछि।
एहन कालमे जखन हम रहि रहल छी
पूंजीवाद लोक हम गरीबक 'कौशलता' कँ गीड़ रहल अछि
हमर बच्चा-बुच्ची भूखले कानैत-कानैत सुतैय ये
तखन अहां सभके
अहि पसीनाक नूनमे धरम लखाह द' रहल अछि
अहि फाटल नुआमे अहांक श्रृंगार लखाह देत अछि
किये नञ चूड़ी-लहटीक भट्टीमे कूद जाइत छी
तखन आभास होयत जे घुटैत-घुटैत
आगिमे झोंकल जिनगी की होयत अछि।

मिथिला-मैथिलीक लेल

✍ धीरेन्द्र कुमार झा

अशेष शुभकामना

अखिल भारतीय मिथिला संघक
स्वर्ण जयंती शुभ अवसर पर,
सभ मैथिलकेँ मुदित मोन सं
दै छी शुभकामना अशेष।
गरिमामय अछि पर्व विशेष।।
दिल्ली स्थित इ मिथिला संघ
मिथिला, मैथिल हित सधैत अछि।
मां मैथिली भाषाक समुन्नति
हेतु सदति लागल रहैत अछि।।
अनुखन क्षेत्र अपन भाषाहित
कएल अथक श्रम बहुबिध वेश।
स्वर्ण जयंती शुभ अवसर पर
दै छी शुभकामना अशेष।।
मिथिलाकेँ सपूत सँ पूजित,
कतेक विभूति सँ सम्पूजित।
जनप्रतिनिधि सभ सँ इ सेवित
संघ सुविकसित भेल विशेष।
स्वर्ण जयंती शुभ अवसर पर
दै छी शुभकामना अशेष।।
विविध कलाकारहि अछि सेवित,
कवि,लेखक,गायक अनुरंजित।
राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति आ
सांसद जन सँ भेल प्रशंसित।।
मिथिला संघक सीमित नै सीमा
ख्याति प्राप्त अछि देश, विदेश।
स्वर्ण जयंती शुभ अवसर पर
दै छी शुभकामना अशेष।।
जे केओ पद नीक प्रतिष्ठित
ओ जन मिथिलाकेँ गरिमाहित।
संघ करय निज सभामे हुनका
पहिरा पाग दुपट्टा मानित।।
संघक ध्येय सदति रहलैए
अपन बचाबी रीति विशेष।
स्वर्ण जयंती शुभ अवसर पर
दै छी शुभकामना अशेष।।
अष्टमभाषा हो अनुसूचित
मैथिलीक सम्मान यथोचित।
अपन नीति सँ प्राप्त लक्ष्य भेल
हम सभ छी एहि सँ गर्वान्वित।।
दिल्लीमे मैथिली अकादेमी
निर्मित भेल,उपलब्धि विशेष।
स्वर्ण जयंती शुभ अवसर पर
दै छी शुभकामना अशेष।।
मिथिला संघक अपन भवन अछि,
उपलब्धिक सुन्नर उपवन अछि।
संघक मंशा कतहु बसल मैथिल
सँ हम्मर अपन स्वजन अछि।।
जे किछु काज करक बांकी अछि
प्रण करु,काज करब अवशेष।
स्वर्ण जयंती शुभ अवसर पर
दै छी शुभकामना अशेष।।
आउ मिलू सभ एहि संघक संग
बनू सभ केओ एकर सुदृढ अंग।
सोचू मिथिलाकेँ विकासहित
चलू बढ़ू सभ एकस्वर संग।।
सभ मिलि अपन विकास करी नित
रहि मिथिला मैथिल परिवेश।
स्वर्ण जयंती शुभ अवसर पर
दै छी शुभकामना अशेष।।
जतय बसल छी जे मैथिल जन,
संघ करय सादर अभिनन्दन।
कतहु रहू,मिथिला, मैथिलीहित
काज करु उत्साहे तन मन।।
कर्मठता सँ काज करु नित
मान गढ़ू मिथिलाक विशेष।
स्वर्ण जयंती शुभ अवसर पर
दै छी शुभकामना अशेष।।
जय हो मिथिला, जय हो मैथिली,
जय जय हो मिथिलाक संस्कृति।
संघक इ उद्देश्य सदति अछि
हो मिथिलाक सदैव प्रोन्नति।।
सभ तरहें सभहक विकास हो
संघक मंशा आ सन्देश।
स्वर्ण जयंती शुभ अवसर पर
दै छी शुभकामना अशेष।।

धन्यवाद

हम धन्यवाद दै छी हुनका,
मां मैथिलीक जे छथि सेवक।
जिनका चितमे मैथिली बसथि
आ जे मिथिला हित उत्प्रेरक।।टेक।।
जे छथि समाजकेँ काज करैत
जे अपन संस्कृतिक सम्पोषक।
निज परंपरा केँ ध्यान रखथि
पुरुखाक अमानत संरक्षक।। टेक।।
अपना भाषाकेँ नञ बिसरथि
बाजथि, भूकथि, लिखथि, सूनथि।
जननी आ जन्मभूमि केँ जे
छथि सतत समर्चक, आराधक।।टेक।।
जन हितमे जे कविता लिखथि
अपना इतिहास केँ जे समझथि
निज सामाजिक उत्थान हेतु
जे काज करथि, मिथिला साधक।।टेक।।
जे नैतिकता केँ पंथ चलथि
सत्पंथ दिसन जनकेँ मोड़थि
जे स्वार्थहीन निज त्याग करथि
सँ वन्दनीय मिथिला पोषक।।टेक।।
कुल, गाम, राज्य सम्मान करथि
निज देशक जे अभिमान करथि।
बांटथि जे आपसमे सीनेह
सत्ते सँ मैथिल छथि प्रेरक।।टेक।।
जे अपन कलम जन उकसाबथि
कहि वाह वाह जन अगुआबथि।
ओ सतत समादरणीय कवि,
लेखक, पाठक, मिथिला चिन्तक।।टेक।।
जे अपन कर्म सँ कोनो तरह
निज मातृभूमि वन्दना विरह
लिखथि, गाबथि आ सुनथि मोन
तिनकर "धीरेन्द्र" समाराधक।।टेक।।

डॉ. इन्द्रकान्त झाक किछु कविता

✍ डॉ. इन्द्रकांत झा

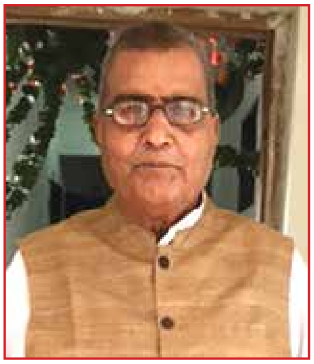

पूर्व यूनिवर्सिटी प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना।
पूर्व निदेशक सह सचिव, मैथिली अकादेमी, बिहार, पटना।
पूर्व निदेशक सह सचिव, बिहार संस्कृत अकादेमी, बिहार, पटना।

भिखमंगनी-1

एक दिन ओ घुमय
निकलल
देखलक सड़कक एक
कातमे
भिखमंगनीकेँ बैसल
दोसर कातक छोड़ परक
भिखमंगाकेँ ओकर आँखिमे
पैसल
दुनू छल भूखल पिआसल
हाथ पसारिकेँ बैसल
मुंहसँ कहलक
किछु देने जाउ
पापक पोटरी रखने जाउ
धर्मक बाट खोलने जाउ
अपन-अपन नेना भुटकाकेर
दुख संताप पीड़ाकेँ
हमर माथ पर थोपने जाउ
तीर्थ-व्रतकेँ सब फलकेँ
अपन-अपन घर लेने जाउ
हमर हाथमे किछु कैंचा देने
जाउ।

भिखमंगनी-2

भिखमंगनी छी
कोखिमे रखने देशक भविष्य
केँ
भूखक कारण
दर्द उठलए पेटमे
असहनीय दुख झेलै छी
रोटीक टुकडा मांगै लए
मुंहमे आवाज नहि
एक हाथस पेटकेँ दाबने
दोसर हाथ पसारि कए
कखनहुं पेट दिस देखै छी
कखनहुं दातादिस ताकै छी
ककरो ध्यान नहि छै
मोर पेटक भूखक
जेना लगैए
सब अपने भूखल छै
अपने पैट टा बुझै छै
ओ नञ कहियो भरै छै
नहि जरै छै
नहि मरै छै
तें भिखमंगनी केँ
केओ नञ पुछै छै
नहि सुनै छै
नहि बुझै छै।

दिव्यांजलि-1

हे नाथ! शब्द ब्रह्म थिक
ब्रह्म नञ भेटक हमरा
गुंथब शब्दक डोरीमे
अनुपम रूपक वाक्यक
माला
माला पहिराएब तोर गरदनिमे
मदमस्त वायु बहत
पसरत मस्त सुगन्ध
मोर अन्तसमे पहुंचत
भागत दुर्गन्ध काया केर
पोर-पोरस
राग द्वेष सागरमे डूबत
माया मोह उड़त अकाशे
तोर आभा विद्युत बनि
चमकत
बाटहिमे माया-मोह
भस्मीभूत होएत
तोर प्रकाश अपनी पर
उतरत
मानव तन मन उज्ज्वल
निर्मल अनुपम होएत।

दिव्यांजलि-2

मान सम्मानक दिस
तूं कखनहुं ने तकिहें
सुख केर पलना पर नहि
झुलिहें
गहना निन्दाक पहिरिहें
निन्दक केँ बन्धु बुझिहें
सदिखन गरा लगबिहें
जीवन सुखमय जीबै लए
संबलमे दुखक पोटरी रखिहें
गान ओहन तं गाबैत चलिहें
जाहिमे सुरतालक संगम हो
बाटमे भेटतौ अपमानक घर
घरमे तेहन अलाप अलापिहें
जे सुनतौ सँ देखते रहतौ
अपने मान करै ले दौड़
औतौ
दीन दुखी केर घर तूं देखिहें
ओकरे पैरक रज तर चलिहें
आनन्दक अमृत भेटतौ
जगमे सभकेँ बाटैत चलिहें
मान सम्मानक दिस
तूँ कखनहुँ नञ तकिहें।

संपर्क :
जे.एफ.-1, ब्लॉक नं.-7, फ्लैट नं.-80, राजेन्द्र नगर, रोड नं.-10, पटना-16
मो. 8252828639

दू गोट नवगीत

✍ शिव कुमार झा टिल्लू

लेखक मैथिली भाषाक चर्चित समालोचक आ गीतकार नवगीतक संग संग प्रगीतकाल पर विशेष अधिकार रखैत छथि। ओ पूर्वमे मैथिली ई-पत्रिका विदेहक सहायक संपादक सेहो रहलाह।
प्रकाशित कृतिः
अंशु (समालोचना)
क्षणप्रभाः कविता संग्रह

जय मिथिला

मिथिक डगरिपर मातृसिनेही ठाढ़ छै
कान्हपर मैथिली भासक नेने कहार छै!

घूमि क' आयल करियन महिषी मंगरौनी
माथमे बन्हने विद्यापतिनगरक तौनी
देखल सगरो परभाषाक बजार छै
दु:खसँ ओक्कर कांपैत जर्जर हाड़ छै!

हाक लगाबै देसिल कहारपर बैसबा लेल
मायक मधुरी आत्म हियामे पैसबा लेल
रोमरोममे मधुवाणी मल्हार छै
उरस निकसैत- नञ बूझब व्यापार छै!

अचकेँ आयल बनल कहरिया मजुर किसान
भेल सुखित ओ मैथिलीकेँ भेंटलनि सम्मान
दीनक घरमे कोकिल कंठ बहार छै
व्यर्थ दृष्टि छल -जानकी बोल उजाड़ छै!

एखनहुं माटिक गंध लपेटलि बहुआंचर
हमर भाससँ गमकैत आंगन च'र चांचर
गामक लोकक मिथिलेटा संसार छै
डाक वचनमे कुचरैत कागा चार छै!

गाम बचाबू कहैत अचल पथ चलि देलक
हमर अपन इतिहास देखा मोन हरि लेलक
बोल अपन नञ त' केहेन संस्कार छै
मैथिली बिनु ई मिथिला नाओं बेकार छै!

अविरल स्मृति

मोन पड़ल पुनि घुरिक'
आबय ओहि क्षणके'संग दौड़ी अय
चलू सखी किछु क्षण लेल
नैहर खेलब चित्ती कौड़ी अय!

प्रेमक चटकन बाबूकेँ हाथे
मायक नेही डंटा अय
चलू भायसंग घुरि पुनि करबै
जे बिसरल ओ टंटा अय
हमर पक्ष ल' दाय ठाढ़ छथि
कहथि ई पोती गौरी अय!

सुन गे मुनियां किए कनञ छें
जो खेलें कित्ती कित्ती
ढाढसकेँ 'अहिवात जड़ाक'
कहथि हमर छोटका पित्ती

एहिठां बहुआसिन बनि
गेलहुं आंजुर कर्म फुलौड़ी अय!
सासुमाय नञ विधिक धाय
छथि प्रेमक पथ संघोर अय

ह'म सूतलि छी कोमल
शय्या चाह बनाबथि भोर अय
मुदा जाहिघर नेनपन बीतल
ओहिठां प्रेम तिलौड़ी अय!!

संपर्क : जे.एम.ए. स्टोर्स लिमिटेड
फेयरडील काम्प्लेक्स (तृतीय तल्ला),
राममंदिर कें सामनेमेन रोड बिस्टुपुर
जमशेदपुर : 831001
फोन: 0657-2320123, 2320118
मो.: 91-9204058403

काव्य रंग

गुनधुन

– कुमकुम झा

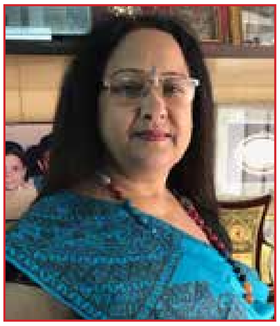

पानिक बून्न सन
अरजल हमर लेखनी
आओर हमर गहल रचना
ककरा सुनाऊ? किएक हम सुनाऊ?

क्षितिजकेँ ओहि छोर धरि
छलनी भेल हमर अन्तर्मन
अछि जीवनक सत्य जे
नञ दैत अछि सुगंध अपनापनकेँ
मुदा ककरा बुझाऊ? कोना बुझाऊ

निश्वासमे बसल भावक अर्पण
लहराबैत अछि विचारक नर्तन
अपन माथा परहक चिंताक लकीर
ककरा देखाऊ? किएक हम देखाऊ

अपन आह आओर समर्पण
मोम सन पिघलल पिघलल तन मन
ओझरायल सन ई जीवन
ककरा सँ नुकाऊ? किएक हम छिपाऊ?

अनगिनत हमर अछि आशा
गहन पीड़ा आ निराशा
मनक एहि द्वंदकेँ
ककरा कहि? किएक कहि?

संपर्क :
35/4, टाईप-5, बीएसएनएल क्वार्टर, आईजीएल सीएनजी स्टेशनक सोझां, उद्यान मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली

कल्पना झा केर दू गोट कविता

– कल्पना झा

पपियाहा पेट

जे नञ करय ई पपियाहा पेट
पापी पेट पहाड़ अछि
पापी पेठ जपाल अछि
पतित पेट नञ मानय करवनो
दु:खमे, सुखमे, राग-रंगमे
परंच कखनो चैन सँ बैसिकऽ
सोचू विचार करू,
चिंतन मनन करू
पेट नञ रहैत तखन?
पेट अछि त' सभ किछु अछि
राग-रंग, सुख-दुख, अमन, चैन
सभ किछु एहिं पेटक प्रतापे
बिना पेटक जीवन त फक्का...
कल्पना नञ कए सकब
बिनु पेटक जीवन
सभटा कार्य त' पेटे लेल
बिनु पेटक जीवन
रंगहीन, गंधहीन, स्वादहीन,
अर्थहीन
अस्तित्वहीन, दिशाहीन,
संबंधहीन
कियैक त' सबहि नचाबत
पेट गोसाईं।

स्त्री

हम बेचारी छी
हम अबला छी
कियेक त हम स्त्री छी
अहां जुनि हंसू
जुनि उपहास करू
जुनि कहू जे आब...
समय बदलि गेल अछि
कियेक त' अखनो
स्त्री अबले छथि
जिनका अहां
सबला कहैत छी
ओ स्त्री नहि
हुनक रसूख थिक
ई तर्क-वितर्क
अहूं सभ त' बुझिते छी
नञ त' कहू...
की?
कहियो कोनो बेटा के
सासुर बसबाक
आशीष दैत छी?

संपर्क : सी-43, पॉकेट-7, केंद्रीय विहार नोएडा, सेक्टर-82, उ.प्र.
मो. 9873442999

पाचन शक्ति

– नीलमाधव चौधरी

हे, आब' दीअय हमरा
हम प्रकाश,
दूर तक संग देब
आगु बड्ड अन्हार अछि
हम नव-नव रूप,
रंग देब
हे हम अहांकेँ जनैत छी
मुदा कोना आब दीअय
अहांक तेज केँ सहत
झड़ैक-झड़ैक सब मरत
जं ऐबे करब तं
कनि रूकू
हमरा तं भाग दीअय
हम सब अन्हारोमे
कोहुना जीब लेब
पाचनशक्ति अद्भुत अछि
लोक-लाज, पाप -पुण्य
सब घोरिक पीब लेब।

संपर्क:
के-962, सेक्टर-23, संजयनगर, गाज़ियाबाद (यू.पी.) 201002
मो. 9818757445
ईमेल: nkc4967@gmail.com

छुटकी

✍ मृणाल आशुतोष

युवा साहित्यकार। फेसबुकिया साहित्यिक दुनियामे चर्चित नाम। आकाशवाणी, दरभंगासँ लघुकथा सभक प्रसारण। एम.ए. बी.ए. आ इतिहास स्नातकोत्तर। सदावहार कवि आरसी प्रसाद सिंहक ग्राम एरौतक निवासी।

संपर्क :
द्वारा श्री तृप्ति नारायण झा
ग्राम+पो.: आरसीनगर, एरौत
भाया-रोसड़ा, समस्तीपुर,
बिहार-848210
मो. 8010814932

बड़ दिनक बाद आय सब दोस्तक संग फुटबॉल खेलबाक परग्राम बनल।विकास अपन संघी सबक साथ

फुटबाल खेल रहल छल।अचानक अपन नाऊ सुनि ओ इम्हर उमहर देख लागल। ओकर पड़ोसी विनय दौड़ल ओकरा लंग दौड़ैत पहुंचल।

"विकास, रौ विकास!"

"की भेलौ रौ!की बजवें..."

"ओ तोहार भतीजी..."

"की भेलय हमर छुटकी क? बाज न रौ, की भेल हमर छुटकी क?"

"ओ!ओ स्कूटी सँ एक्सीडेंटक गेलौ। गाम पर कँ लोग सब ओकरा झाजी नर्सिंग होम ल गेल खिन हन।"

"अरे बाप रौ बाप। ई की भ गेलै। यौ लाल भैया कनि अपन बाइकक चाभी दीअ। हमर बाइक गामे पर धाएल अछि।

भागैत विकास हॉस्पिटल पहुंचल त भैया गेट पर ठार छलैथ।

शायद ओकरे प्रतीक्षा करैत छलाह।

विकासक देखैत भैया भोकाईर पाइरक कानअ लगला, रौ विकास, आब हम नय बचबौ। दखी न, छुटकीक की भ गेलेय।

"भैया,आब हम आईब गेलिये हन न। सब नीक भ जेतै। अहां बस भगवान पर भरोसा राखु। कत छै छुटकी?"

"आई!आईसीयूमे अछि"

"अरौ बाप!कोन मंज़िल पर?"

"दोसर मंज़िल पर।"

भागिक विकास आईसीयू पहुंचला त ओतअ मां, बाबुजी आ भौजी कँ प्राण सूखैत छल।

मन त भेल कि पूछि जे ई एक्सीडेंट क्योनो भेल मुदा मन मसोइसँ रहि गेल बेचारा विकास बहुत कोशिश केलक मुदा तामस

पर नियंत्रण बेसी देर तक नय राखि सकल आ मन कँ सब भड़ास बाहर आबि गेल।

"मना करैत छलौं न अहां सबक कि अखन स्कूटी नय देल जाऊ। त नय हमर गुड़िया रानी अखने सँ स्कूटी चलेताह। तेरहो बरख ओकर भेलय हन कि। अब मनमे शांति आबि गेल न!

"मां, अहां की कहैत छलियै!ज़माना आगां बढ़ी गेलय हन। नर्सिनियां कँ बेटा चौदहहे बरिखमे मोटरसाइकिल चलबैत अछि। कर्नल साहेबक बेटा त कारो चला लैत अछि। आबि आओर दिअ स्कूटी!"

हमरा माफक दीअ, बच्चा। हम आन्हर भ गेल छलिए। बच्चा सभक चलबैत देख, हमरो मन भ गेल कि अपनो बच्चा चलावै। पूत आ धीमे अन्तर किछ अछि आबि की। देख न, तोहर बात नय मानेयक भल हम सब भगैत रहल अछि।"

"अहूंक कतेक समझेलूं कि मां बाबुजीक मनाबु जे अखन अपन छुटकीक उमर नय भेलय हन स्कूटी चलावै बला।अखन त ओकर पायेरौ न चुमहैत अछि।सभक दिन दुर्घटनाक समाचार आवैत रहैत अछि।"

"आ अहां कि कहनञ छलियै?याइद अछि कि नय। हम जलय छि अपन छुटकी सं।हम जलय अछि किया कि बाबुजी हमरा कॉलेज म मोटरसाइकिल नय देने छलाह। जेकरा हम अपन जान सँ बेसी मानैत अछि, ओकरा सँ जलब हम!"

"हमरा सब सँ बहुत नम्भर गलती भ गेलय। चुपो भ जाऊ न आब।छुटकी हमर सभक क्यो नय छलय की? आब हमरासभक जान लेब की?

"हां, जान ल लेब। अगर हमर छुटकीक किछ भ गेल त ककरो नय छोड़ब। याइब राखब ई बात।"

अचानक सँ आईसीयूक दरबज्जा खुलल। सभक धकधक्की बैढ़ गेल। विकास

तेज़ी सँ आगां बढ़ल। "आब अहांक बच्ची खतरा सँ बाहर अछि।''

हक् सँ सभ गोटाक प्राणमे प्राण ऑइल।

हमरा माफक दीअ, बच्चा। हम आन्हर भ गेल छलिए। बच्चा सभक चलबैत देख, हमरो मन भ गेल कि अपनो बच्चा चलावै। पूत आ धीमे अन्तर किछ अछि आबि की। देख न, तोहर बात नय मानेयक भल हम सब भगैत रहल अछि।''

"अहूंक कतेक समझेलूं कि मां बाबुजीक मनाबु जे अखन अपन छुटकीक उमर नय भेलय हन स्कूटी चलावै बला। अखन त ओकर पायेरौ न चुमहैत अछि।सभक दिन दुर्घटनाक समाचार आवैत रहैत अछि।''

"आ अहां कि कहने छलियै? याइद अछि कि नय। हम जलय छि अपन छुटकी सं। हम जलय अछि किया कि बाबुजी हमरा कॉलेज म मोटरसाइकिल नय देने छलाह। जेकरा हम अपन जान सँ बेसी मानैत अछि, ओकरा सँ जलब हम!''

"हमरा सब सँ बहुत नम्भर गलती भ गेलय। चुपो भ जाऊ न आब।छुटकी हमर सभक क्यो नय छलय की? आब हमरासभक जान लेब की?

"हां, जान ल लेब। अगर हमर छुटकीक किछ भ गेल त ककरो नय छोड़ब। याइब राखब ई बात।''

लघु कथा

दू गोट बीहनि कथा

✍ घनश्याम घनेरो

1980 वाला दशकमे कथाकारक रूपमे प्रवेश। मिथिला मिहिरक उपज। तत्पश्चात अनेकानेक पत्रिकामे कथा प्रकाशित। हिंदी दैनिक भास्करमे मैथिली बीहनि कथा लिखैत छथि। "उपरांत'' बीहनि कथा संग्रह प्रकाशित। ग्लोबल लिटरेचर क्लब ऑफ इंडिया द्वारा सम्मानित।

संपर्क :

61, शक्तिनगर, कुर्जी,

बालुपर, सदाकत आश्रम,

पटना-800010

मो. 9955995509

भट्ठी

लाल कक्का बैकुंठ लगचिया नेने रहथि। हाथ घुरघुरेलनि। आहि रे बा! मोबाइले कोना संगे चल आएल? खैर!

हेलो? हं ! कें ?

एह? हम अनुज यौ?

सुनबामे आयल जे हवाई जहाज सँ उड़ल अबै छह?

फुरसति कहां? अहां गुजरि गेलहुं तं आब' पड़ि रहल अछि।

बाउ! हमरो सेहन्ता पूरि गेल। हमहुं अखन विमाने पर छियह।

ओ कें! पापा।

हमर दाह-संस्कार करबहक ने?

ओह, पापा! ई सभ एक्सपेंसिव आ टाइमटेकिंग होइत छैक।

तं कुकूरे हुलका दहक?

पापा! विद्युत शव गृह छैक ने!

वैह ने - भट्ठी-फर्नेसँ?

करेक्ट पापा!

हं हौ मोन पड़ल करिया भाइ कें कहब - बेटाक लक्षण देखते छी। एक तं आओत नहि। जं एबो करत तं भाकसीए झोंकत!

विद्युत शव गृहक ट्राली पर राखल पार्थिव शरीरकें स्विच ऑन होइतहि, पार्थिव शरीर कें भट्ठीमे पटकि फुर्र द' घुरि आएल। अनुज बड़का निसास छोड़लक। सीट...!

दूरंगा चरित्र

(मूल : वंशु सैनी)

अनुवाद : घनश्याम घनेरो

जखने पैर देलक राज घरमे कि पत्नी दीपा सभटा उकैट क' हाथमे देलनि आब हमरा सँ अहांक पैरेंट्सक सेवा कयल पार नञ लागत। खन चाह, खन जल, ओ आबि रहल छथि ण्ण्णआखिर हमरो अपन जिनगी अछि ने ? अहांक पैरेंट्सँ छथि अहीं समहारु। हमर मानी तं हिनका सभ कें वृद्धाश्रम छोड़ि आउ।

अहूंक मां-बाबूजी कें तं उम्र भैए गेल हं, संग लगा देबनि ? दीपा ! किछु बजबा सँ पहिने सोचबाक चाही।

अहां कोन कम ? हमरो पैरेंट्सँ कें तं अहूमे सानिए देलहुं।

दीपा आइ हम जे किछु भी छी सँ अपन मां-बाबूजी कें बदौलत। जतेक भाभट पसरल अछि हुनकें देन छन्हि। हमरा सँ हुनका सभ कें छोड़ल पार नञ लागत। हम अहीं कें छोड़ि दैत छी। जाउ ! अहां कें आइ सँ स्वतंत्र केलहुं।

राज ! हमरा सँ गलती भ' गेल। पापक भागीदारी सँ बचाओल। माफ करु ?

सॉरी ! आब हमर अहांक पैरेंट्सँ नञ हमर सभक पेरेंट्सँ बूझब। हुनक सम्मान करबन्हि आ आगु दिन सँ गलत विचार मोनमे नही आनब।

पावरग्रिड
ऊर्जा
का ग्रिड
www.powergridindia.com
3,11,185 एमवीए की ट्रांस्फोर्मेशन क्षमता
जो बदल रही है जीवन
विद्युत पारेषण के कारोबार से जुड़ी पावरग्रिड, विश्व की विशालतम भारतीय विद्युत उपयोगिताओं में एक है जो अंतर राज्य पारेषण प्रणाली एवं राष्ट्रीय और क्षेत्रीय पावर ग्रिडों की योजना, समन्वय, अधिवीक्षण एवं नियंत्रण का उत्तरदायित्व निभाती है। पावरग्रिड भारत में उत्पादित कुल विद्युत का लगभग 50% देश के कोने कोने तक पारेषण करके इस बात को सुनिश्चित करती है कि देश के हर हिस्से तक खुशहाली और समृद्धि पहुँच सके।
India's Best Companies To Work For 2017
THE ECONOMIC TIMES
GREAT PLACE TO WORK
पावर ग्रिड कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
केन्द्रीय कार्यालय : "सौदामिनी", प्लॉट नं.-2, सेक्टर-29, गुड़गाँव-122 001 (हरियाणा)
पंजीकृत कार्यालय : बी-9, कुतब इंस्टीट्यूशनल एरिया, कटवारिया सराय, नई दिल्ली-110 016
सीआईएन : L40101DL1989GOI038121
• पारेषण लाइन >142,989 ckm • सबस्टेशन 226 Nos. • सिस्टम उपलब्धता > 99.% • अखिल भारतीय अंतर-क्षेत्रीय क्षमता 78,050 MW
• 150 से भी अधिक भारतीय ग्राहकों को पारेषण संबंधी परामर्श एवं 18 देशों में विश्व-व्यापी मौजूदगी
• 43,450 km टैलीकाम नेटवर्क पर स्वामित्व एवं संचालन
• नवप्रवर्तन : विश्व में पहली बार 1200 kV UHV सिस्टम प्रणाली का विकास एवं उसका ग्रिड के साथ संकालन

पुनौरा धाम

✍ सिद्धार्थ झा

लेखक वरिष्ठ पत्रकार छथि। संप्रति लोकसभा टीवी मे पछिला दस साल सँ कंसल्टेंट छथि। डॉक्युमेंटेशनक काज मे हिनक नाम चर्चित छनि। सामाजिक-सांस्कृतिक विषय सभ आ स्वास्थ्य संबंधी विषय सभ पर कार्यक्रम निर्माणमे विशेष रुचि। दूरदर्शनमे सेहो कार्यरत रहल छथि। विविध पत्र-पत्रिकामे नियमित लेखन।

सम्पर्क:
आरडी-255, धर्मपुरा एक्सटेंशन,
नजफगढ़, नई दिल्ली
मो. 9312895664

पुनौरा धाम माँ जानकी केँ प्रकट स्थली सीतामढ़ी सँ मात्र पांच किलोमीटर पर दक्षिण पक्षिम स्थित अछि। अहि ठाम माँ जानकी पृथ्वी केँ कोख सँ उत्पन्न भेल रहतीं। ई दिव्य स्थान केँ देख केँ लेल लोग दूर दूर सँ अबैत छथि। अहि थाम बहुत सुन्नर राम जानकी केँ मंदिर आओर सीता कुंड निर्मित अछि। बाल्मीकि रामायणमे वर्णन भेटे अछि राजा महर्षि जनक केँ राज्यमे भयंकर सुखाड़ पड़ल। तखन ई भविष्यवाणी भेल जे जँ राजा जनक स्वयं खेतमे हल चलौथिन त' बरखा संभव होएत। राजा जनक पुनौरामे खेतमे हर जोतलखिन तखने एकटा घड़ा निकलले जइमे लक्ष्मी अवतरित भेलखिन। जखने राजा हुनका कोरामे लेलखिन झमाझम बरखा शुरू भेल। माँ सीता कालांतरमे जानकी, मैथिली वैदेही अनेक नाम सँ विख्यात भेलीह। बड्ड कम लोक केँ लागे अछि जे माँ सीता केँ जन्म जनकपुरमे भेले जे बिहारक जयनगर केँ बॉर्डर पर स्थित अछि, जे नेपालमे अवस्थित अछि। हुनकर लालन पालन जरूर जनकपुर भेल मुदा जान स्थली पुनौरा अछि। पुनरा धाम मिथिलांचल आर सम्पूर्ण भारत केँ गौरव अछि। आई पूरा भारत अयोध्यामे राम मंदिर लेल निरंतर संघर्ष को रहल आई मुदा क्यो अखन तक माँ जानकी केँ भव्य मंदिर केँ लेल बात नए को रहल अइछ। भगवान राम केँ मंदिर जरूर बनवाक चाही मिथिलांचल केँ लोग अई लेल अपन खून पसीना बहावक लेल तैयार अइछ अपन सबक प्रतिष्ठा गौरव धर्म केँ प्रश्न अछि। लेकिन मा जानकी लेल हम सब की क' रहल छी तनिक सोचल जाय। मिथिला माय केँ कर्ज चुकावक लेल अहि सँ नीक अवसर फेर नही भेटत। राम सीता केँ नाममे पहिल नाम सीता केँ आबै अछि। राम जी सीता केँ लेल ज़मीन आसमान एक क' देने राहलखिन हम सब सपूत सब

सँ एकटा भव्य मंदिर लेल कियाक बैसल छी। सब मिथिलावासी केँ अहि बारेमे सोचबाक चाही। अखिल भारतीय मिथिला संघ अनेको बेर राज्य केंद्र सरकार सँ एकर मांग क' रहल अछि। मिथिला केँ बेटा आओर मिथिलांचल केँ हृदय सम्राट सांसद प्रभात झा केँ सिर्फ एकटा सपना अछि कहूना का मा सीता केँ भव्य मंदिर स्थापित कैल जाय। जकरा देखक लेले देश सँ नाइ विदेश सँ लोग आबय। प्रभात जी बहुत बेर पुनौरा धाम गेला आओर माँ जानकी सँ आशीर्वाद लेलथि जे अहि पुण्य काजमे हुनका सफलता भेटय। सरकार सँ अपन मांग कतेक मंच सँ उठौने छथि। बांकी जहीन भगवती केँ इच्छा। हुनका संग पूरा मिथिला समाज आगू आईब क' पूरा जोरशोर सँ अपन मांग राखतियै त' ओ दिन दूर नञ अछि जखन सीता माता केँ भव्य मंदिर पुनौरा धाम भारतकेँ पटल पर सूर्य समान चमकत। सोचल जाय अयोध्यामे भगवान राम आओर पुनौरामे सीता माता केँ मंदिर स्थापित हुअए सँ हिन्दू धर्मक यशमे कतेक वृद्धि होयत। माँ सीताक त्याग, धैर्य, समर्पण, पतिव्रता आ धर्मक मार्ग केँ अनुसरण केँ प्रेरणा सँ पूरा संसार आलोकित भ' जायत। पुनौरा धाम आबू आओर माँ जानकीक दर्शनक संकल्प लिअ जे माँ जानकी केँ मंदिर जरूर जल्द सँ जल्द बनाबि आओर एकरा लेले स्वयं केँ समर्पित क' देब। बांकी माँ जानकी केँ आशीर्वाद सब पर बनल रहय, यहि कामना अछि।

प्राचीन समयमे एतय पुण्डरीक ऋषि केँ आश्रम सेहो छल। मिथिलांचल केँ सांस्कृतिक भव्यता एतय दू दिनक सीतामढ़ी महोत्सवमे प्रत्येक बरख देखहि लेल भेटत अछि। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम केँ जन्मस्थली अयोध्यामे राम मंदिर बनेबाक लेल अक्सर देश-विदेशमे चर्चा होयत रहल अछि, मुदा हुनका मर्यादा पुरुषोत्तम बनबाक लेल अपन सब किछु न्योछावर करय वाली माँ सीताक प्रकाट्यस्थली पुनौरा धाम केँ बेसि महत्व नञ देल गेल आ भयंकर उपेक्षा भेल। माँ जानकी वैशाख मासमे पुनौरामे प्रकट भेलखिन। माँ सीताक जन्मदिन पर सप्ताह भरि धरि अनेको कार्यक्रम होएत अछि जाहिमे देश भरि सँ साधु-संत पुनौराक जानकी माँ केँ मंदिरमे आशीर्वादक लेल आबैत अछि। अहि ठाम केँ पहिले सीतामहि सेहो कहल जायत रहल अछि, जे आई सीतामढ़ी भ' गेल कालांतर में। सीतामढ़ीमे दू टा स्थान पर माँ जानकी केँ मंदिर अछि एकटा जानकी स्थान, दोसर पुनौरा में। जन्मदिन केँ उपलक्ष्यमे एतय महिला सब सप्ताह भरि मंगल गीत गाबय छथिन। पुनौरा सँ नेपाल केँ जनकपुर धरि साधु-संत हजारों-लाखोंक संख्यामे पूजा-अर्चना करैत अछि। सिर्फ जन्मोत्सव नञ मुदा विवाह पंचमी केँ अवसर पर सेहो पुनौरा केँ शोभा देखैत बनैत अछि। एतय सँ बारात विदा होएत अछि आओर हुनकर सभ केँ जनकपुरमे भव्य स्वागत केल जाइत अछि। रामायणमे वर्णित कतेक रास स्थल एतय आपसमे एक-दोसरा सँ जुड़ल अछि। एतय अहिल्या स्थान, पुनौरा, हलेश्वर स्थान, पंथ पाखर, जनकपुर, धनुष सभ आपसमे जुड़ल अछि। माँ सीता केँ जन्मस्थली केँ संदर्भमे माननीय सांसद प्रभात झा राज्य सभामे एकटा सवाल राखने रहैत, जाहि पर केंद्रीय सांस्कृतिक मंत्री केँ जवाब पर पूरा संत समाज आओर मिथिलाक लोक आंदोलित भ' गेल। दरअसल, संसदमे ओ ई जवाब देलखिन जे पुनौरा या सीतामढ़ी केँ मंदिर धार्मिक आस्था का केंद्र अछि, एकर कोनो एतिहासिक प्रमाण नहि अछि।

सिमरियामे 1411 साल बाद महाकुंभ

✍ हितेन्द्र गुप्ता

मिथिलांचलक सिमरिया सँ एहि साल धनतेरसक दिन फेरसँ महाकुंभ शुरू भेल। ऐतिहासिक साक्ष्यक अनुसार ई महाकुंभ करीब 1411 साल बाद लागल अछि। एहिसँ पहिने राजा हर्षवर्द्धन सन 606मे महाकुंभ शुरू कएने छलाह। कहल त' इहो जाएत अछि जे जनक परंपराक राजा कराल जनक धरि एहिठाम कुंभ केँ परंपरा जारी रहल, मुदा बादमे कुंभस ई परंपरा कल्पवास धरि समटैत चलि गेल।

सिमरिया केँ छोड़ि देल जाए तें देशमे अखन नियमित रूपसँ चारि ठाम कुंभ लगैत अछि- हरिद्वार, उज्जैन, प्रयाग आओर नाशिक। मुदा संत समाजक कहनाय छनि जे स्कन्द पुराण आओर रुद्रयामल तंत्रक मुताबिक भारतमे 12 ठाम कुंभ हेबाक जिक्र अछि। वैदिक कालमे बिहारक सिमरिया, असमक गुवाहाटी, हरियाणाक कुरुक्षेत्र, ओडिसाक जगन्नाथपुरी, पश्चिम बंगालक गंगा सागर, गुजरातक द्वारिकाधीश, तमिलनाडुक कुम्भकोणम आओर रामेश्वरममे कुंभ लगैत छल। बादमे बाहरी हमला, गुलामीक कारण देशभरमे कतेक ठाम होमऽ वाला कुंभक परम्परा लुप्त होएत गेल।

सैकड़ों वर्षक बाद फेरस कुंभक महान परंपरा केँ जीवित करय केँ श्रेय परम पूज्य करपात्री अग्निहोत्री स्वामी चिदात्मनजी महाराजजी केँ जाय छनि। हुनक प्रेरणास एहि साल 17 अक्टूबर 2017 सँ 16 नवंबर धरि महाकुंभक आयोजन भेल। करपात्री अग्निहोत्री स्वामी चिदात्मनजी महाराज जीक योगविद्या, वेद,

हितेन्द्र गुप्ता वरिष्ठ पत्रकार छथि। गत लगभग दू दशक सँ एहि क्षेत्रमे सक्रिय रहि अनेक नामी चैनल आ अखबार सँ जुटल रहलाह। 'हेलो मिथिला' नामक हिनक वेबसाइट मैथिलीमे बहुत लोकप्रिय छनि। संप्रति प्रधानमंत्री कार्यालयसँ संचारकर्मीक भूमिकामे जुटल छथि।

सम्पर्क:
ग्राम+पोस्ट-केवटी, प्रखंड-केवटी
जिला-दरभंगा
मो. 9873606696
ईमेल: guptahitendra@gmail.com

वैदिक रीति रिवाज, हिंदू परम्परा आओर तंत्र पर नीक पकड़ छनि। सिमरिया घाट पर स्थित हिनक सिद्धाश्रम कालीपीठकेँ सर्वमंगला आश्रम छनि। हिनक कहनाय छनि जे सिमरियामे कुंभ फेर शुरू होए सँ हिंदू समाजमे एकटा नवका जोश उत्पन्न होएत। कुंभ सिर्फमेला नञ एकटा अलौकिक धरोहर अछि, जकरा जन-जन धरि पहुंचयबाक अछि।

कुंभ दुनियाभरिमे सभस पैघ आयोजनमे सँ एक अछि। बारह वर्षकमे एक बेर लागय वाला कुंभ लोकक लेल साक्षात भगवानकेँ दर्शन करय जकां अछि। एहि ठाम आम श्रद्धालु केँ संग-संग अखाड़ा सभकेँ साधु-संत, धर्मगुरु, तपस्वी, भक्तिमार्गी, अघोड़ी, नागा साधु सभक पैघ जमावड़ा होएत अछि। आस्था केर एहिसँ पैघ प्रमाण पूरा दुनियामे कतहुं नञ भेटैत अछि।

खगोलीय रूपसँ जखन सूर्य, चन्द्रमा आओर बृहस्पति एक राशिमे आबैत अछि, तखन कुंभ योग बनैत अछि। कहल जाएत अछि जे एहि खगोलीय अवस्थामे गंगा स्नान करलास बारह वर्षक स्नान जतय यश भेटैत अछि। वैदिक कालमे बारह राशिकेँ हिसाब सँ देश भरिमे 12 ठाम कुंभ केर आयोजन होएत छल, जे अखन सिर्फ चारि ठाम होएत अछि। असलमे कुंभ एहनमेला अछि, जतय देश-दुनियाकेँ अलग-अलग बोली, भाषा, संस्कृतिक लोककेमेल-मिलाप होएत अछि। संत समाज एहिठाम समाजक समस्याकेँ हल करय छथिन्हे। एहिठाम ज्ञान चर्चा, संगोष्ठी, विचार मंथन सेहो होएत अछि।

बिहारक बेगूसराय जिलाक सिमरिया केँ समुद्र मंथनक घटनाक साक्षी हेबाक कारणे कुंभस्थली सेहो कहल जाएत अछि। संगहि संग तुला राशिमे लागय वाला प्रथम कुंभ स्थली सेहो सिमरिया अछि। रुद्रयामल तंत्र आओर बाल्मिकी रामायणमे सिमरियाक समुद्र मंथनक भूमि बताओल गेल अछि। क्षीर सागर एहिठाम छल आओर क्षीर सागरमे भेल मंथन सँ 14 टा रत्न बहराएल छल। एहि ठाम देवता सभकेँ बीच अमृत वितरण भेल। ओहि अमृतकेँ देवता सभमे बांटय लेल भगवान विष्णु मोहिनीक रूप लेने छलाह। समुद्र मंथन आइओ मिथिलांचलक लोक परंपरामे रचल बसल अछि। अनंत चतुर्दशीमे अनंत नामक रक्षा सूत्र बान्हय केँ परंपरा मिथिलांचलमे अखनो जारी अछि। एहि रक्षा सूत्रमे मंथनसँ मिलल 14 रत्न जकां 14 गांठ होएत अछि। अनंत पूजामे पुरोहित यजमान केँ दूधस भरल कलशमे खीरास मंथन करय लेल कहय छथिन्हे। एहिमे दूध सँ भरल कलश क्षीर सागरक प्रतीक अछि आओर खीरा मंदार पर्वत केर।

एहि मंथनक क्रममे पुरोहित प्रश्न करय छथिन्ह-

किम् मंथसे?- की मंथन करैत छी?

यजमान कहैत छथिन्ह- क्षीर निधिम, यानी क्षीर सागरक मंथन करैत छी

फेर प्रश्न होएत अछि-

किम् मृग्यसँ?- की देखैत छी?

यजमान कहैत छथिन्ह-

अनंततम् यानी अनंत भगवानक देखैत छी।

अगिला प्रश्न होएत अछि-

प्राप्तसत्वया? - की अनंत भगवान मिलला?

एकर उत्तर दू बेर नहिमे मिलैत अछि-

न प्राप्तोमया- नहि, नञ मिलला।

तेसर बेर एहि प्रश्नक उत्तरमे यजमान कहय छथिन्ह

प्राप्तोमया- यानी हां अनंत भगवान भेटलाह।

अनंतकेँ संग मिथिलाक मधुश्रावण ी पावनिमे सेहो समुद्र मंथनक जिक्र अछि। ब्याहक बाद पड़य वाला पहिल सावनमे पतिक नम्हर उम्र लेल नवविवाहिता सभ मधुश्रावणीक पावनि करय छथीह। एहिमे पुरोहिताइन व्रति सभकेँ सभ दिन एकटा कथा सुनावय छथीह। एहिमे सती, बिषहरी, विहुला, मनसा आओर मंगला गौरी केँ कथा तं होइते अछि, समुद्र मंथनक कथा सेहो सुनाएल जाएत अछि। एहिने रुद्रयामल तंत्रक अनुसार, भगवान शिव स्वयं पार्वती देवी केँ समुद्र मंथनक कथा सुनाबय छथिन्ह।

कहल जाएत अछि जे समुद्र मंथनमे मंदार पर्वत केँ मथनी आओर बासुकीनाथ केँ रस्सी बनाओल गेल। चाहे ई सत्य होए वा एकटा प्रतीक... मंदार पर्वत आ बासुकीनाथ धामक सिमरियास दूरी लगभग 200 किलोमीटर अछि। मंदार पर्वत पर रस्सी जकां निशान अहांकेँ आइओ देखय लेल मिल जाएत। एकरा अहां एकटा संयोग कहि खारिज क' सकय छी, मुदा समुद्र मंथनक दोसर प्रमाणक देखलाक बाद लागत अछि जे सिमरिया आदि कुंभ स्थली अछि। देश भरिमे ओना तें पवित्र गंगा मैया उत्तर सँ पूरब दिस बहैत छथिन्ह, मुदा सिमरियामे गंगा उत्तरायनी भ' जाएत छथिन्ह। एहिठाम गंगा किछु ठाम धरि उत्तर दिस बहय छथिन्ह। एहि ठामक लोक केँ लेल सिमरियाक महत्व काशीसँ कम नञ अछि। वेद पुराण ाक अनुसारे ई स्थान पहिने शाल्मली वनकेँ नामसँ विख्यात छल, जे बादमे सिमरियामे बनि गेल। एहि सिमरियामे फेरस कुंभ शुरू भेल अछि। एहि शुरुआतक स्वागत अछि।

मिथिलाक चित्रकला: कोबर आ अरिपन

✍ राकेश झा

लेखक मिथिलाक हस्तशिल्प आ कलाक संरक्षण लेल सदिक्खन प्रयत्नशील छथि। 'क्राफ्टवाला' संस्थाक माध्यम सँ एहि दिशामे काज क' रहल छथि। एहि वर्ष मधुबनी रेलवे स्टेशन पर मिथिला पेंटिंग सँ सजावट केर काजमे हिनक सक्रिय भूमिका रहल।

सम्पर्क:
ठाढ़ी, मधुबनी
मो. 9304364856
ईमेल: craftvala@gmail.com

मिथिलाक भूमि कला-संस्कृति केर भूमि अछि। एतअ हर घरक आँगन मे कोनो नञ कोनो रूप मे कला आ संस्कृति कें जिया राखै के प्रयत्न करल गेल अछि। जाहि कारणे कला केर अनेको रूप सामान्य जन जीवनक अभिन्न अंग बनि मिथिला कें पहिचान बनि गेल अछि। जाहि मे मिथिला चित्रकला जेकरा मधुबनी पेंटिंग नाम सँ जगत प्रसिद्धि भेटल। ई मिथिला चित्रकला मे प्रयुक्त अनेको रूप मे कोबर आ अरिपन अपन अलग विशिष्टता बनेने अछि कियैक त' अछिके अनेकों रूप सम्पूर्ण भारतमे प्रचलित अछि। मिथिला चित्रकला पर मिथिला कें महिला सबहक एकाधिकार छनि। ई अपन आँगन-घर कें लीप-पोइत, लेबिया-मुनियाँ क' घरक भीत या आँगनक मैट पर अपन सृजनात्मक कल्पना कें उकैर ओय मे रंग भरि ओकरा जीवंत क' दैत छथिन। ई चित्रकला कें माध्यम सँ मिथिलानी स्त्री मिथिलाक लोक जीवन शैली, परंपरा आ संस्कृति कें प्रदर्शित करैत छथि। मिथिला केर ई चित्रकला एहि ठामक प्रचलित वैदिक संस्कार कें कर्म कांड मे प्रयुक्त विधि-व्यवहार कें चित्रांकन अछि जे मिथिला मे पुज्य देवी-देवता कें समर्पित अछि जाहि मे मुख्य काली, दुर्गा, गौरी , शंकर , गणेश आदि छथि।

मिथिला कें वैवाहिक संस्कार मे दूल्हा-दुल्हन कें गौरी देवी कें समर्पित क सब तरहक विध-व्यवहार कें संपन्न कराओल जाइत अछि। जाहिमे दूल्हा कें अलावे पुरुषक भागीदारी नञ कें बराबर होइत अछि। गौरी देवी दुल्हन कें आराध्य देवी होइत छतिन्ह जिनका सँ सदिखन नीक घर-बर कें कामना करैत अयली हैं। विवाह कें उपलक्ष्य मे घर आँगनक देबाल पर बनाओल जाय बला चित्र प्रतीकात्मक रूप मे ब्रह्मांडक सम्पुर्ण मौलिक ऊर्जा कें दरसाबैत रहैत अछि।

विवाहक अछि खास समय मे विवाहित नव दम्पति लेल एकटा अलग घर कें अंदर आ बाहरक देबाल कें कतेको तरहक रेखा चित्र आ प्रतीक वस्तु कें चित्र द्वारा सजायल जाइत अछि जेकरा कोबर कहल जाइत अछि। मिथिला चित्रकला कें सब सँ विशिष्ट रूप कोबर मे दिखबा मे आबैत अछि जेकर साज-सज्जा सामाजिक प्रथा कें रूप मे अदौ सँ चलल आईब रहल अछि। जय मे बनै वला गाछ-वृक्ष (बांस-केरा आदि), जीव-जंतु (कछुवा,माछ आदि) कें आकृति प्रतीकात्मक रूप मे नव दंपत्ति कें दीर्घायु आ खुशहाल वैवाहिक जीवन कें संग-संग प्रजनन शक्ति आ संतान उत्पत्ति कें संकेत करैत अछि। संगे-संग देवी-देवताक चित्र हुनक आशीर्वाद कें प्रतीक होइत अछि।

ब्याहक उपलक्ष मे बनै वला ई चित्र मुख्य रूप मे गोसाऊनिक घर (पूजा घर), कोबर घर आ कोबर घरक देबालक कोनियां। गामक अनपढ़ स्त्री कें द्वारा बनाओल गेल ई चित्रकला कें

आकर्षण देखते बनैत अछि। जे स्त्री सभ हक कलात्मकता आ कौशल केँ प्रकट करैत अछि।

कोबर घर बाहरी हिस्सा केँ ग्रामीण जीबनक चित्र, डोली–कहार, राधा–कृष्ण प्रेम आ गाछ–वृक्ष सभक फूल–पत्ती सँ सजायल जाइत अछि। गाछ मे आम, केरा, कदंब, अशोक आदि मुख्य होइत अछि। मिथिला चित्रकला मे विवाह विशेष विषय मे सांपक देवी विषहारा केँ पूजा केँ संग–संग बाघ सवार दुर्गा देवी अपन सब सँ शक्तिशाली रूप मे नव दम्पति केँ के रक्षा करैत छाईथ, अहिना पोखैर मे फुलायल कमल वंशक वृद्धि केँ संकेत अछि।

ई विवाह विशेष चित्रकला शैली एक जाति सँ दोसर जाति मे कनी फराक अछि जेकर मुख्य कारण धार्मिक अनुष्ठान अछि। ब्राह्मण आ कायस्थ मे अनुष्ठानक स्वरूप लगभग समान अछि जाहि कारण अछि मे समानता अछि। मुदा जाहि ठाम अछि मे अंतर पायल जाइत अछि ओय ठाम चित्रणक शैली सेहो किछ फराक भ' जाइत अछि।

अरिपन

अरिपन संस्कृतक शब्द "अलेपन" सँ लेल गेल अछि जेकर अर्थ "लीपै केँ लेल" होइत अछि।

अरिपन नञ खाली मिथिला मे बल्कि पूरा भारत मे चित्रकलाक शुभ रूप मानल जाइत अछि जे मूल रूप सँ पुण्य शुद्धिक वास्ते गायक गोबर सँ जमीन पर आरा–तिरछा ज्यामितीय रूप मे आरेखित करल जाइत अछि।

देशक अलग–अलग भाग मे ई अलग–अलग नाम सँ प्रचलित अछि जेना गुजरात मे एकरा सतिया त महाराष्ट्र मे रंगोली, मध्यप्रदेश–उत्तरप्रदेश मे चौक पूरना वा सांझी त राजस्थान मे मंडने, आंध्रप्रदेश मे मुग्गुल आ दक्षिण भारत मे कोलम कहल जाइत अछि। नेपालक भोजपुरी भाषी आ नेपाली मिथिला मे एकरा "चौक्कर्ण वा आरपम" कहल जाइत अछि।

अरिपन बनेबाक परंपरा मिथिलाक घरे-घर, घरक महिला वर्ग द्वारा धार्मिक आ संस्कारिक पर्वक अवसर पर पूजन या अनुष्ठान स्थल पर बनायल जाइत रहल अछि।

मिथिलाक पूजा–पाठ जेना चौरचन, देवोत्थान एकादशी आ संस्कारिक पर्व जेना छठ्ठीयार (बच्चाक जन्मक छठम दिन), मुंडन (बच्चाक पहिल बेर जहन माथक केश कटाओल जाइत अछि, जेनऊ (यग्योपवीत संस्कार), ब्याह, कोजगरा आदिक अवसर पर अनेको अकार–प्रकार मे या त' घरक मुख्य प्रवेश या भंडार गृह या आँगना मे जमीन पर बनायल जाइत अछि।

मिथिला मे विभिन्न अवसर आ उद्देश्य पर विभिन्न तरहक अरिपन अलग–अलग रूप मे चित्रित करल जाइत अछि। जेना तुसारी पूजाक अवसर पर अविवाहित मैथिल कन्या द्वारा नीक बर-घर केँ कामना केँ संग बनायल जाइत अछि। जाहि मे मंदिर, चंद्रमा, सुर्य, नवाग्रह (9 ग्रह) केँ चित्रण होइत अछि।

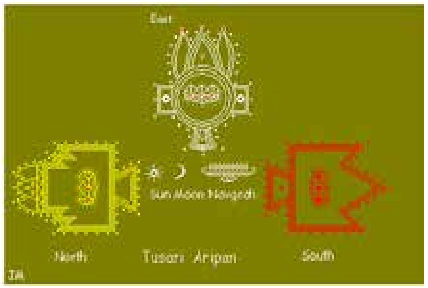

अहिना संध्या अरिपन जे संध्या देवी केँ समर्पित अछि ओय बनायल मंदिर सांकेतिक रूप मे पूरा ब्रह्मांड केँ प्रतिनिधित्व करैत अछि। पंच देवता (5 देवता) और सप्त ऋषि (7 ऋषि) केँ कमलक आकार मे दर्शायल जाइत अछि। अहिना जहन नव युवती सबहक मासिक धर्म प्रारंभ होइत अछि त ओय समय एकटा विशेष अरिपन बनाओल जाइत अछि जेकरा ब्रह्माण्डक निर्माण आ विनाशक प्रतीक होइत अछि त गत्रा–संक्रांत अरिपन जन्म आ मृत्यु केँ प्रतीक अछि। कोजगरा अरिपन मखानक

पात केँ रूप मे आ दिवाली अरिपन धन-लक्ष्मी केँ स्वागत हेतु सम्पुर्ण मिथिला मे चित्रित करल जाइत अछि। जबकि स्वस्तिक अरिपन आशीर्वादक शुभ चेन्ह केँ रूप मे बनायल जाइत अछि।

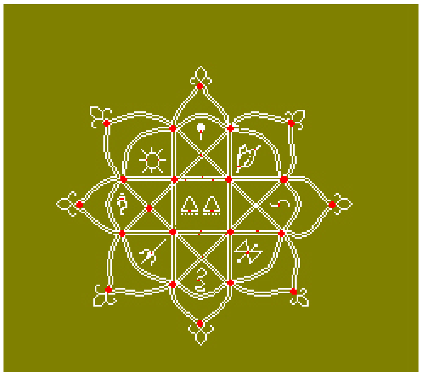

ASHTADAL ARIPAN
used in Satyanarain Pooja

अरिपन कला केँ माध्यम सँ प्रकृति केँ लौकिक शक्ति सबहक अभिव्यक्ति केँ प्रदर्शन करल जाइत अछि। एकर निर्माण मे प्रयुक्त सामिग्री मे मुख्य चौरक (चावल) चूरन आ पाईन केँ मिश्रण पिठार अछि। जेकरा आंगुरक मदद सँ महिला सब घर-आँगन मे मैट केँ ऊपर नाना प्रकारक ज्यामितीय रेखाचित्र केँ रूप मे बनायल जाइत अछि। एकरा सुंदर देखायल जाय लेल सिंदुरक लाल रंगक प्रयोग सेहो करल जाइत अछि। अरिपनक तीन आंतरिक त्रिकोण केँ महा गौरी केँ प्रतीक मानल जाइत अछि।

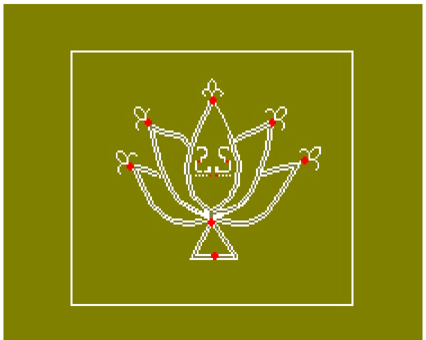

PANCHDAL ARIPAN
used in Bhagwati puja

हालाँकि अरिपन चित्रकला भारतक विभिन्न प्रान्त मे अन्यान्य रूप मे सेहो पायल जाइत अछि आ सब रूप मे किछु नञ किछु समानता सेहो देखबा मे आबैत अछि। जेना - अरिपनक चित्रण मे स्त्रीक एकाधिकार , जेकर पाछु बहुत रास कारण अछि। कहल जाइत अछि जे कि एकर निर्माणक क्रम मे जेना-जेना आकार स्पष्ट भेल जाइत अछि तेना-तेना एकरा बनेनिहार स्त्रीक स्वभाव, प्रेम , लगन आ काजक प्रति ओकर समर्पण दिखबा मे आबअ लागैत अछि। अरिपन जतेक स्पष्ट आ सुंदर स्वरूप मे बनि क तैयार होइत अछि ओय सँ बनेनिहार केँ ओतेक आंतरिक सुंदरता आ शुद्धता केँ झलक मिलैत अछि।

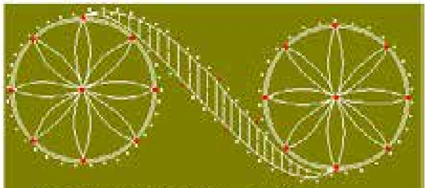

ARIPAN FOR PURHAR PATIL

एहन मान्यता अछि जे मैथिल नव युवती सब अपन आरंभिक अवस्थाये सँ नीक घर-बर केँ कामना संग विभिन्न व्रत-त्योहार सब करैत रहैत छथि ताही कारण सँ अरिपन मे घर-गृहस्थी सम्बंधित सब चीज जेना धान, माछ, सूप-चालैंन, हर-पालो आदि सभक चित्रण करल जाइत अछि। नव ब्याही स्त्री जहन अपन सासुर जाइत छथि त' घर मे प्रवेश काल कतेको जगह आँगनक ड्योढ़ी, घरक द्वार सब पर अरिपन बना ब' पड़ैत छनि। हिनका लक्ष्मी स्वरूप माईन हिनक स्वागत मे अरिपन मे कमल बनाओल जाइत अछि।

अरिपन भले ही मांटी पर बनला कारण सँ ज्यादा समय तक नय टिकैत अछि मुदा जाहि शुभ प्रयोजन वास्ते ओ

बनायल गेल ओ शुभ-शुभ सम्पन्न भ जाई ई कामना अपने आप मे बनेनिहारक लेल काफी संतुष्टि दायक अछि। ई हमर सबहक मैथिल समाजक धरोहर थिक जेकर सफल संरक्षण एक पीढ़ीक स्त्री वर्ग दोसर पीढ़ीक स्त्री वर्ग केँ सीखा क रहली है।

चुँकि मिथिलांचल केँ मैदानी भाग बरसातक समय बाढ़ि एहन विपदा सँ हमेसा त्रस्त रहल अछि। मुदा अछि बाढ़िक पईन सँ दहा क' आयल जलोढ़ माटि अपन उर्वरता सँ एकरा धन-धान्य सँ भरपूर रखैत अछि। मिथिलांचलक यैह बाईढ़ प्रभावित भाग जाहि ठाम जलक जमाव वर्ष मे अधिकांश महीना रहैत अछि। ओय ठाम "खस" नामक एकटा घास पायल जाइत अछि जेकर वैज्ञानिक नाम vetiveria zizanioides अछि, ढेर ढाकी मात्रा मे पायल जाइत अछि। अछि घास केँ मिथिलांचलक ग्रामीण महिला सब कतेक तरहक घरेलू उपयोगी सामग्री जेना डलिया, पौती, मौनी आदि बनाबैत छाईथ जेकरा सिक्की हस्तकला केँ नाम देल गेल अछि।

मिथिलांचल केँ ई पारंपरिक लोक हस्तकला मे निर्मित वस्तु केँ निर्माण प्रक्रिया सितबंर महीना सँ शुरू भ' जाइत अछि जहन खस घास मे सँ ओकर डंठल जेकरा सिक्की कहल जायत अछि ओकरा निकालल जायत अछि। अछि दौरान महिला द्वारा विशहरा लोक गीत केँ गायन करल जायत अछि।

अछि डंठल केँ रौद मे सुखायल जायत अछि। सुखला बाद एकर कड़ापन केँ दूर करै लेल एकरा गर्म पाईन मे राखल जायत अछि। अछि केँ अछि डंठल सबके लाल, हरियर, पियर आदि रंग मे रंगल जायत अछि जाहि सँ निर्मित सामिग्री सबके मनचाहा रंग देल जायत अछि। मुख्यत: ग्रामीण महिला सब द्वारा डलिया, बैठकी केँ आसन, बच्चा सबहक खिलौना, घरेलू सजावट केँ सामान जेहन घरेलू उपयोगी समान सब तैयार करल जायत अछि।

वर्तमान मे धीरेंद्र जी, पिंकी देवी, चंदन जी, गौरीशंकर जी सनक लोक छैथ जे अपन दम पर मिथिलांचल केँ ई अदभुत हस्तकला केँ बचेने छाईत आ एकर व्यवसायिक रूप द कतेको लोक केँ जीविका उपलब्ध करा आर्थिक स्वाबलंबन द रहल छाईथ। आई ई सिक्की केँ पातर-पातर चीर क ओकरा छोट-छोट टुकड़ा मे काइट ओ टुकड़ा केँ चिपका क एक सँ एक कलाकृति केँ निर्माण करल जा रहल अछि। अछि केँ माध्यम सँ प्राकृतिक दृश्य, ग्रामीण जीवन आ देवी-देवता केँ चित्र तैयार क विभिन्न प्रदर्शनी मे बिकाइ लेल भेजल जाइत अछि। पर्यावरण मित्र ई सिक्की हस्तकला सँ बनल चीज कोनो तरहे आधुनिक चित्रकला सँ कमजोर नञ भेला केँ कारण देश-विदेश मे खूब बिक रहल अछि। यदि अछि हस्तकला सबके सरकारी संरक्षण आ उचित प्रोत्साहन देल जाई त मिथिलांचल केँ लघु कुटीर उद्योग केँ रूप मे ई हजारों हाथ केँ रोजगार देत। ई हमर विश्वास अछि। मुदा अछि तरहक अभाव केँ बादो धन्यवाद हम ओ ग्रामीण महिला सबके दैत छियैन जे एकरा एखन तक बचेने छाथि।

सामा-चकेवा

✍ धर्मव्रत चौधरी

मूलरूप सँ मधेपुरा जिलाक बरदाहा गाम निवासी धर्मव्रत चौधरी वर्तमानमे नई दिल्ली स्थित जामिया मिल्लिया इस्लामियाक हिन्दी विभाग सँ मैथिली साहित्यकार राजकमल चौधरीक कथा पर शोध क' रहल छथि।

सम्पर्क:
पीएचडी शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
जामिया मिल्लिया इस्लामिया,
नई दिल्ली-110025
मो. 8010950755

सामा-चकेवा मिथिलाक प्रसिद्ध लोक-पावनि थिक। रक्षाबंधन आ भरदुतिया जकां इहो पावनि भाय आ बहिनिक बीच खूब स्नेह सँ मनाओल जाइत अछि। ई एकटा लोक पावनि थिक। ताहि द्वारे एहिमे पांडित्य प्रदर्शनक अभाव रहैत अछि। छठिये पूजा जकां एहियोमे पंडितक कोनो जरूरी नञ रहैत अछि। हां, एहिमे लोक गीतक बड्ड महत्व अछि। एहि अवसर पर गाभोल जाइ बला लोकगीत सुमधुर आ सारगर्भित होइत छल।

सामा-चकेवा मनेबाक पाछां एकटा कथा अछि। कथा एना अछि जे सामा भगवान श्रीकृष्णक पुत्री छलथिन। हुनका पर किछु अवैध संबंधक झुट्ठे आरोप लगा देल गेल। ई गप सुनि श्रीकृष्णजी अपन पुत्री सभ केँ पक्षी बनि जयबाक श्राप द' देलखिन। तखन हुनकर भाय चकेवा ई गप्प सुनलक त' ओ तपस्या क' केँ आपन बहिन सामा केँ श्राप मुक्त कयलखिन। ताहि दिन सँ ई पर्व भाई-बहिनिक बीच मधुर संबंधक यादमे मनाओल जाइत अछि।

जाहि दिन छठि पाबनिक समाप्त होइत अछि, ओहि दिन सँ सामा-चकेवाक शुरुआत होइत अछि। अर्थात् कार्तिक शुक्ल सप्तमी केँ एहि पाबनिक शुरुआत आ कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा केँ एकर समापन होइत अछि। एहि अवसर पर मैट सँ बहुत तरहक आ बहुत रास पशु-पक्षी बनाओल जाइत अछि। एहिमे सबसँ महत्वपूर्ण अछि- समा-चकेबाक जोड़ी, जे कार्तिक शुक्ल सप्तमी केँ बनाओल जाइत अछि। आ तकर बाद एकादशी धरि चुगला, वृन्दावन, बटगमनी आ कतेको रास पशु-पक्षी सब बना लेल जाइत अछि। एहन कहबी अछि जे एकादशिये केँ दिन सामा केँ सासुर जएबाक दिन तकाओल गेल छल। एकादशी सँ लऽ कऽ पूर्णिमा धरि माटिक सबटा पशु-पक्षी केँ विभिन्न प्रकारक रंग सँ रंगल जाइत अछि। पूर्णिमे केँ

सामा देवी अपन सासुर गेल छलथिन।

सामा-चकेबा बनेबा सँ लऽ कऽ समापन धरि विभिन्न अवसर पर विभिन्न लोक-गीत गाएल जाइत अछि। प्रस्तुत अछि तरह एकटा लोकगीत अछि-

गे माई कोन भैया जैता
गंगा रे जमुनमा
कौन भैया लौता चिकनी माटि-2
कोने बहिनी गढ़ती सामा हे चकेबा
कौन बहिनी खैलय जाय।
गे माई कोन भैया जेता
गंगा रे जमुनमा
कौन भैया लौता चिकनी माटि।
बड़का भैया जेता गंगा रे जमुनमा
छोटका भैया लौता चिकनी माटि
बड़की दीदी गढ़ती समा हे चकेबा
नेहा बहिनू खेलन जाय...
गे माई कोन भैया जेता गंगा रे जमुनमा
कोन भैया लौता चिकनी माटि...

ई सामा चकेबा बनेबा कालक गीत थिक। अहिने बहुते रास लोक गीत एहि अवसर पर गाएल जाएत अछि।

कार्तिक पूर्णिमा केँ बहिन सब अपन सखी बहिनया केँ संग डालामे सबटा सामा-चकेबा (पशु-पक्षी) केँ राखि सामा केँ बिदाय केँ खातिर कोनो जोतल खेतमे जमा होइत छथिन। एहि अवसर पर चुगला केँ मुंह केँ झरकाओल जाइत अछि। ई वैह चुगला थिक जे कृष्ण सँ सामा केँ झुट्ठे अवैध संबंधक चुगलखोरी केने रहैथ। तकरे सजा ओकर मुंह झरका कऽ देल जाइत अछि। आ सामा सँ पुनः अगिला बेर अएबाक अनुरोध कएल जाइत अछि।

ओह वृंदावनमे आगि लागले
कियो नञ मिझावै हे
हमर भैया बड़का भैया
दौड़-दौड़ मिझाबै हे-2
चुगला केँ रेखियौन दुनु रांगल ठोर छै
भैया केँ कोठी चौर छै
चुगला केँ कोठी छौर छै
सामा हे चकेबा हे
अगिला बेर फेर अबिह हे
जोतला खेतमे बेसिहऽ हे
ढेपा फोरि-फोरि खईहऽ हे
वृंदावनमे आगि लागले
कियो ने मिझाबै हे
हम्मर भैया छोटका भैया
दौड़-दौड़ मिझाबै हे।

एहने-एहने अनेकानेक लोक गीतक संग सबटा सामा-चकेबा अर्थात् जतेक पशु-पक्षी बनाओल गेल रहय, ओ सब एक-एकटा केँ बहिन अपन भायकेँ दैत छथिन आ आय ओकरा तोड़ि-तोड़ि केँ बगलेमे सम्मानपूर्वक राखने जाइत छथि। आ एहि तरहें भायकेँ सुख समृद्धि केँ कामना करैत आ सामा देवी सँ फेर अगिला बेर आएबाक अनुरोध करैत एहि पर्वक समापन भ' जाइत अछि।

ककर दोख

✍ **अरूण कुमार यादव**

भगवान केर बनायल कर्म रूपी परिस्थिति केँ झमारल छोट-छोट धिया-पुता लए दिल्ली एहन नम्हर शहरमे आबि विषम परिस्थितिमे अति सुन्नर रूप सँ भगवानक असीम कृपा सँ दिनराति एक एकटा भगवती आओर दोसर साक्षात सरस्वती जँका अपन बच्चा केँ निखारि पुनः एक बेर भाग्यक मारल कर्म भूमि छोड़ि। जन्म भूमि पर अभाव रूपि दानव सँ लड़बाक प्रेरणा लैत परमेश्वरक इक्छा केँ सम्मान करैत। सन्तानक सुख भविष्य आओर ओकर शिक्षा-दिक्षा केँ बिसरि। परिवार रूपि समाजक मर्यादा आ नियम रूपि बन्हन सँ बन्हा एक भावना रूपि रेगिस्तानक गर्मीमे अपना आप केँ जड़बैत। जीवनक गाड़ी केँ चलाबयमे पति केँ शीतलता प्रदान करय हेतु एकटा आँगनमे कैद भऽ गेलीह।

मुदा भरि राति-दिन कानैत-खिजैत। दु:खक सागरमे डूबल। उदास मोन केँ मारि। कोना नञ कोना अपना केँ घरक काज् परिवार आ सास ससुरक सेवामे लगेने छथि। एतबहु पर विधाता केँ संतोष नञ होइत छन्हि आओर दोख हारि थाकि केँ हुनकेँ माथ फुटैत अछि। खैर समाजक कुव्यवस्था ओ अज्ञानी की बुझत जे जाहि पिंजरा सँ ओ बाहर भऽ आयल छलीह ओकरा विभिन्न प्रकारक वन्हनमे बान्हि। पुनः पाँखि काटि ओकरा माथ पर पहाड़ खसा पिंजरामे बन्द कए देलक अछि।

मुदा तखनहु बापक आन आओर पतिक शानक हेतु जीवनक सभ रंग केँ मलिन करैत महायज्ञमे अपन सभटा खुशी केँ आहूति दए। पति प्रेममे पागल भए। जीवनक अंतिम साँसँ तक पति केर संग जीवन रूपि नैया केँ पार उतारय लेल कटिबद्ध छथि। एहि रेगिस्तानमे ओकरा लेल एकटा पानिक सितुआ ओहो कतय। कोना आ किएक ओकरा जीवन सँ बिछुड़ि अदृश्य भऽ गेलै... हेरा गेलै... बिला गेलै...।

मुदा एहिमे ओकर की दोख...।।

स्मार्ट मध्य प्रदेश के सहज मुख्यमंत्री शिवराजः माया सिंह

मुख्यमंत्रित्व काल के बारह वर्ष पूरे करने पर श्री शिवराज सिंह चौहान को हार्दिक बधाई। प्रदेश में लगातार भाजपा का विजयी झंडा लहराने वाले, 12 वर्षों से निरंतर सत्ता के शीर्ष में रहने वाले मुख्यमंत्री एक सहज, शालीन और मौन क्रान्तिकारी नेता हैं। श्री चौहान की इन सफलताओं का आधार उनका करिश्माई व्यक्तित्व है जो हर नफरत करने वाले के दिल में भी स्नेह और अपनापन भर देता है। पिछले 12 वर्षों में विकास को एक नई दिशा देने के लिए मुख्यमंत्री श्री चौहान ने अनेकों नवाचार और प्रयोग किए हैं, जिसे पूरे देश ने माना है। विकास के नए आयाम रचने और मध्यप्रदेश की ब्रांड़िग से उन्होंने लगभग हर क्षेत्र में तस्वीर बदल दी है।

शिवराज जी के कार्यकाल में प्रदेश बीमारू की इमेज से उभर कर विकासशील राज्य की श्रेणी में खड़ा हुआ है। पर्यटन क्षेत्र हो या कृषि, लगातार जो अवार्ड मध्यप्रदेश को मिले हैं, वो ना सिर्फ सराहनीय हैं बल्कि भविष्य में इसे बरकरार रखने की चुनौती भी है। हर वर्ग के लिए चिन्तित श्री शिवराज सिंह ने जहां किसानों के लिए भावांतर भुगतान योजना लागू की है, वहीं छात्र-छात्राओं के लिये के मेधावी योजना भी शुरू की है। वे जितने सहज और शालीन हैं, उतने ही कड़े प्रशासक भी हैं।

मुख्यमंत्री के व्यक्तिव का सशक्त पहलू व्यापक विचारधारा है। आम आदमी के जीवन में आनंद का प्रतिशत बढ़ाने की चिंता, बच्चों की शिक्षा, महिलाओं का सशक्तिकरण, महिलाओं और बच्चियों की सुरक्षा, गाँव शहर को स्वच्छता में अव्वल लाने का प्रयास, बुजुर्गों की तीर्थ यात्रा की चिंता, हर तरह की छोटी-छोटी सुविधाओं और खुशियों का ध्यान एक मुख्यमंत्री के पद पर रहकर उन्होंने बखूबी किया है।

सेवा, समर्पण और सुशासन को समर्पित इन बारह सालों में कोई भी वर्ग शेष नहीं है, जिसका कल्याण न हुआ हो। महज 8 से 9 वर्ष की उम्र में ग्रामीण मजदूरों के हित में पहली रैली निकाल कर नर्मदा तट पर दो गुना मजदूरी मिलने तक काम बंद करो का नारा देने वाले आज के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान बचपन से ही हर वर्ग के हितों और समस्याओं के लिए खड़े हुए हैं। गाँवों में सामाजिक क्रांति लाने में शिवराज सिंह चौहान के प्रयास और प्रशंसनीय नेतृत्व अत्यंत सराहनीय रहे हैं जो अनेक राज्यों एवं केन्द्र के लिए अनुकरणीय बने। गाँव की बेटी योजना, जननी सुरक्षा एवं प्रसव योजना, उषा किरण, तेजस्विनी, वन स्टॉप सेन्टर, लाड़ो अभियान, मुख्यमंत्री कन्यादान, विवाह योजना, छात्राओं के लिए मुफ्त पुस्तकें, साइकिल, विभिन्न वर्गो के विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति और नगरीय निकाय में 50 प्रतिशत महिला आरक्षण कर महिला सशक्तिकरण की दिशा में बेहतरीन काम किए है।

आज शिवराज सिंह चौहान मुख्यमंत्री के रूप में अपनी एक अलग पहचान बना चुके हैं, जो भले ही प्रदेश के मुखिया हों परंतु जमीन पर जाकर काम करने में कभी परहेज नहीं करते। एक सेवक के रूप में गाँवों के खेतों में जाकर अपनी बात रखते हैं। गरीबों के बीच बैठकर उनके साथ भोजन कर अपनी सहजता का परिचय देते हैं।

मुख्यमंत्री ने मध्यप्रदेश की प्रगति के लिये कृषि, औद्योगिकीकरण, स्व-रोजगार और कौशल विकास के क्षेत्र में अनेक नवाचार किए हैं। उद्योगपतियों के लिए मध्यप्रदेश बेस्ट डेस्टीनेशन स्टेट के रूप में स्थापित हुआ है। शिवराज जी युवाओं से कहते हैं कि वे स्व-रोजगार स्थापित कर दूसरों को रोजगार उपलब्ध कराएं। इस प्रदेश से भी टाटा और अंबानी निकलें। सरकार हमेशा इन युवाओं को स्थापित करने में मददगार रहती है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के स्वच्छ भारत मिशन ने मध्यप्रदेश में शिवराज के नेतृत्व में उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की है। आज की स्थिति में प्रदेश के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में मिशन के क्रियान्वयन ने जन-आंदोलन का रूप ले लिया है। लोग अपनी बस्ती, ग्राम, शहर और जिले को शौच मुक्त बनाने के लिए नित नये नवाचार कर रहे हैं।

कुल मिलाकर इन बारह वर्ष में मुख्यमंत्री ने मध्यप्रदेश के विकास की एक नई तस्वीर गढ़ी है। अब प्रत्येक प्रदेशवासी गर्व से कह सकता है कि हम मध्यप्रदेश के हैं, जहां बिजली, खेती-किसानी, शिक्षा का देश में सम्मान है।

वि. फीचर

विविध संस्कार: किछु गीत

✍ मनोरमा देवी

सम्पर्क:
ग्राम-मोरवा डीह, पोस्ट-मोरवा,
जिला समस्तीपुर
(बिहार)

जन्मक सोहर

(1)

गखुलामे होरिला जनम लेल, मथुरा प्रगट भेल रे।
ललना रे, ठानल मधुर सुरगणा सुबर सूट बरसल रे।
जब जनमल यदुनन्दन खुजल बन्धन रे,
ललना रे खूजी गेल बज्र केवार पहरू सब सुतल।
मनहि हर्ष बढाई बसुदेव
कहिए देवकी बिचारि यो
सुतल अछि रखबार यादव करब
कोन उपाय यो
सेहे खुनि बालक बिहुसए बिहुसए कहु रे,
ललना रे लए चलु नंद कैँ द्वार
जहां प्रतिपाल हेत रे
प्रतिपाल भवन छुपाय बसुदेव
सगर जल्द बरिसयो नंद कन्या देवि दुर्गा इ लए देवकी समुहयो
निर्तन करिए जुगुत सन मन मन सोचिए रे,
ललना रे दगारिन औरि पसारए लेब इनाम हम रे।

(2)

उतरहि सा ओन चढु भादव चहं दशी कादव रे,
ललना रे देवकी जे दरदे व्याकुल दगरिन चाहिए रे।
एत कत दगारिन पाबिए विधि सँ मना बिए रे।
ललना रे यमुना निकट एक गाम ओतहि बसु दगारिन रे,
जब जनमल यदुनंदन खुजल बंधन रे।
ललना रे खुजू गेल बज्र केबाड
पहरू सब सुतल रे, कृत मुकुट कानन कुण्डल,
ओढन पिताम्बर रे,
ललना रे एहो रे बालक दुख मोचन किए देब
देलनि रे जवि आहा देबकी
डेराऊ कि जनि पछताबिए रे,
ललना रे एहो रे बालक दुख मोचन जगत्र निरंजन रे।

(3)

धन रे अयोध्या कैँ पाटन,
धन राजा दशरथ रे,
ललना रे धन कौशल्या
रानि कैँ भाग
कि राम जन्म लेल रे।
आबध पण्डित बैसथ,
बैसथु चानन चौकी रे
चैत हीशुक्ल पक्ष रोहणी नक्षत्र,
राम जनमत रे
ललना रे राम कैँ लिखल बनवास
बने राम जाएत रे
सेहे सुनि राजा अचेत खसु,
रानि मुरूछी खसु रे,
ललना रे बारह बरस कैँ रा राम,
कि बन कैँ सिघारत रे
जानु आहा राजा अचेत खसु,
रानी मुरछी खसु रे
ललना रे राम कैँ दिअन आर्शीवाद
कतहु राम जीबत रे।

खेलौना

(1)

लुट लेतौ लुट लेतौ लुट ले तौ
माँ गे दीदी कैँ नत्र आनिहे....।
दीदी जे एतौ पिउसा चलि एतौ
पिउसा चलि एतौ
पापा बाला गारि ल जेतौ
माँ गे दीदी कैँ ने आनिहे।
लुट लेतौ लुट लेतौ....।
दीदी जे एतौ भगिना चलि एतौ भगिना चलि एतौ
पापा बला शट पेन्ट ल जेतौ
मां गे दीदी कैँ ने आनिहे।
लुट लेतौ लुट लेतौ माँ....।
दीदी जे एतौ भगनी चलि एतौ
भगनि चलि एतौ छिटल बिटल सारी समेट लेतौ
माँ गे दीदी कैँ नत्र आनिहे।

(2)

कोन गलिमे आजन बाजन
कोन गली शहनाई।
कोन भैया घर बेटा
जनम लेल ननदी बधैया मांगे आइ।
दियौ दियौ ए भौजाइ
अपना होरिल कैँ बधाइ।
कहमा नाचे भाटि भिखारी
कहमा दगरिन दाई,
कहमा नाचे छोटकी ननदिया
मांगे बधाइ
दियौ दियौ ए भौजाइ
अपना होरिल कैँ बधाइ।
दुअरे नाचे भाटि भिखारी
अंगना दगरिन दाइ
मरबा नाचे छोटकी ननदिया
मांगे बधाइ
दियौ दियौ ए भौजाइ
अपना होरिल कैँ बधाइ।
कि सब लेतै भाटि भिखारी
कि सब दगरिन
की सब लेती छोटकी ननदिया
मांगे बधाई
दियौ दियौ ए भौजाइ
अपना होरिल कैँ बधाइ।
दस पाँच रूपया भाटि भिखारी
दस बीसँ दगरिन दाइ
कंगना लेती छोटकी ननदीया
मांगे बधाइ
दियौ दियौ ए भौजाइ
अपना होरिल कैँ बधाई।

जनेऊ गीत

(1)

जनेऊ लाल पियर केरा मारब
ओजे पाने पात छारल हे
ओजे पाने पात छारल हे।
ताही मारब बैसलनि अपन बाबा
ओजे जांघ जोरी अहीअब अम्मा हे।
ओजे जांघ जोरी अहीअब अम्मा हे।।
कोरा भए बैसलनि बरका बरूआ
बाबा लाल जनेऊ दिअ हे
बाबा पिअर जनेऊ दिअ हे।
मरबहि घिब ढारिए गेल
ओजे स्वर्ग इजोत भेल हे।
ओजे स्वर्ग कैँ पित्र आनंनद भेल
बाबु आब बंश बढल हे।
बाबुआब कूल यज्ञ भेल हे।

(2)

काशीमे ठारह भेला बरका बरूआ
बाबा पूकारए रे।
ललना कैँ छथि काशीक बासी
जनेऊ पहिराबथु रे।
काशी बासी विश्वनाथ बाबा
सेहो उठी बाजल रे
ललना हम छियै काशीक बासी
जनेऊ पहिराएब रे।
बाबाधाममे ठारह भेला कौने बरूआ
बाबा पुकारए रे
ललना कैँ छथि बाबाधामक मालिक
जनेऊ पहिराबथु रे।
बाबाधामक मालिक बैद्यनाथ बाबा
सेहो ऊठी बाजल रे
ललना हम छियै
बाबाधामक मालिक
जनेऊ पहिराएब रे।
गाममे ठारह भेला कौने बरूआ
माता माता पुकारए रे
ललना कैँ छथि गामक मालिक
जनेऊ पहिराबथु रे।
गामक मालिक ग्रामकाली माता
सेहो उठी बाजथु रे
ललना हम छियै गाम कैँ मालिक
जनेऊ पहिराएब रे।

बेटा विवाहक गीत

जाही दिन आहो बाबु तोहरो जन्म भेल
माछ मछली नञ सोहाय हे।
माछ रे मछलीया बाबु मनहू नञ भाबए
पानही राखल परान हे।
जखनहि कौने दुलहा
चलला बियाह कर
अम्मा अमोला नेने ठारह हे।
घोटी अमोला पिबु दूलरुआ
बाटहीं ठोर सुखाइ हे।
आहा कैँ अमोला
अम्मा जहर महुलिया हे
सासुक अमोला बर मीठ हे।
नौमास आहो बाबु
ओद्रमे राखल
बतीसो सोआ दूध पिएल हे।
जब हे कौने दूलहा
चलला बियाह कर
अम्मा सँ बोलए कूबोल हे।
गौरी बियाही जब
अएला दुलरूआ
अम्मा आरती नेने ठाढ़ हे।
दान दहेज अम्मा
घरहीमे राखब।
धनी हेती चेरिया तोहार हे।

बेटी विवाहक गीत

झल झल झलकए मिथिला नगरीया।
थर थर कापए बाबु कैँ जांघ यौ।
जंघिया बैसल बेटी गरमी सँ व्याकुल,
आहाँ प्रभु बेनिया डोलाय यो।
हम कोना बेनिया डोलएब सुन्दरि
देखै छथुन बाबु जी तोहार यो।
मागु मागु मागु सुन्दरि बाबु जी सँ
चेरिया उहे चेरिया बेनिया डोलेत यो।
एतबा बचन जब सुनलनि भैया
गले सँ खोलल रुमाल यो।
मरबा बैसल बहिन
गरमी सँ व्याकुल
हम बहिन बेनिया डोलाब यो।
एके कोखी कैँ जनमल भाए बहिनिया
एके सोआ दूध पिएल यो।
भैया कैँ लिखल बाबा
बाबा कैँ सम्पतिया
हमरो लिखल दुर देश यो।

पाबनि - तिहार

✍ पं. रामानन्द ठाकुर

सा.धर्म. आचार्य, एम.ए. मैथिली
कर्मकाण्ड, ज्योतिष, पुराण,
प्रोविन्य कर्म एवं यज्ञानुष्ठान विशेषज्ञ

सपर्क :
एच-292, पु. सीमापुरी
मो. 09871637565

अगहनक इजोरिया

रवि व्रतारंभ	- 19/11/2017
श्री गणेश चतुर्थी	- 22/11/2017
विवाह पंचमी	- 23/11/2017
स्कंध षष्ठी	- 24/11/2017
मोक्षदा एकादशी	- 29/11/2017
प्रदोष त्रयोदशी	- 01/12/2017
प्रदोष चतुर्दशी	- 02/12/2017
पूर्णिमा	- 03/12/2017

पूसक अन्हरिया

लम्बोदर चतुर्थी	- 06/12/2017
सफला एकादशी	- 13/12/2017
प्रदोष त्रयोदशी	- 15/12/2017
प्रदोष चतुर्दशी	- 16/12/2017
दशतारकरिय	- 16/12/2017
अमावश	- 18/12/2017

पूसक इजोरिया

श्री गणेश चतुर्थी	- 21/12/2017
गुरु गोविन्द सिंह जयंती	- 25/12/2017
दशतारकांत	- 28/12/2017
पुत्रदा एकादशी	- 29/12/2017
प्रदोष त्रयोदशी	- 30/12/2017
प्रदोष चतुर्दशी	- 31/12/2017
पूर्णिमा	- 02/01/2018

माघक अन्हरिया

कमला स्नान	- 03/01/2018
भालचन्द्र चतुर्थी	- 05/01/2018
रामानन्दाचार्य जयंती	- 08/01/2018
षट्तिला एकादशी	- 12/01/2018
तिल संक्रांति	- 14/01/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 14/01/2018
नरक निवारण चतुर्दशी	- 15/01/2018
मौनी अमावस	- 17/01/2018

माघक इजोरिया

शिशिर नवरात्रारंभ	- 18/01/2018
गणेश चतुर्थी	- 20/01/2018
सरस्वती पूजा	- 22/01/2018
अचला सप्तमी	- 24/01/2018
भौमी एकादशी	- 27/01/2018
माधव द्वादशी	- 28/01/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 29/01/2018
प्रदोष चतुर्दशी	- 30/01/2018
पूर्णिमा	- 31/01/2018

फागुनक अन्हरिया

हेरम्ब चतुर्थी	- 03/02/2018
विजया एकादशी	- 11/02/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 13/02/2018
प्रदोष चतुर्दशी	- 14/02/2018
महाशिवरात्रि	- 14/02/2018
अमावस	- 15/02/2018

फागुनक इजोरिया

जनकपुर परिक्रमारंभ	- 16/02/2018
गणेश चतुर्थी	- 19/02/2018
आमलकी एकादशी	- 26/02/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 27/02/2018
प्रदोष चतुर्दशी	- 28/02/2018
होलिका दाह	- 01/03/2018

चैतक अन्हरिया

होली सप्ताडोरा	- 02/03/2018
विकट चतुर्थी	- 05/03/2018
पाप मोचनी एकादशी	- 13/03/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 14/03/2018
प्रदोष चतुर्दशी	- 15/03/2018
अमावस	- 17/03/2018

चैतक इजोरिया

वसंत नवरात्रारंभ	- 18/03/2018
गौरी तृती. गणेश चतुर्थी	- 20/03/2018
सुर्य षष्ठी	- 23/03/2018
निशा पूजा अष्टमी	- 24/03/2018
विजया दशमी	- 26/03/2018
कामदा एकादशी	- 27/03/2018
विष्णु द्वादशी	- 28/03/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 29/03/2018
प्रदोष चतुर्दशी	- 30/03/2018
पूर्णिमा	- 31/03/2018

वैशाखक अन्हरिया

वक्रतुण्ड चतुर्थी	- 04/04/2018
कोकिला षष्ठी	- 06/04/2018
बरुथिनी एकादशी	- 12/04/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 13/04/2018
प्रदोष चतुर्दशी	- 14/04/2018
जुड़शीतल	- 15/04/2018
सोमवती अमावस	- 16/04/2018

वैशाखक इजोरिया

अक्षय तृतीया	- 18/04/2018
गणेश चतुर्थी	- 19/04/2018

जान्हवी सप्तमी	- 22/04/2018
जानकी नवमी	- 24/04/2018
विजया एकादशी	- 26/04/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 27/04/2018
प्रदोष चतुर्दशी	- 28/04/2018
रवि व्रतांत	- 29/04/2018
पूर्णिमा	- 30/04/2018

पहिल जेठक अन्हरिया

आखुरथ चतुर्थी	- 03/05/2018
अपरा एकादशी	- 11/05/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 13/05/2018
प्रदोष चतुर्दशी	- 14/05/2018
वट सावित्री अमावस	- 15/05/2018

पहिल जेठक इजोरिया

मलमासारंभ	- 16/05/2018
गणेश चतुर्थी	- 18/05/2018
गंगा दशहरा	- 24/05/2018
पुरुषोत्तमी एकादशी	- 25/05/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 26/05/2018
प्रदोष चतुर्दशी	- 27/05/2018
पुरुषोत्तमी पूर्णिमा	- 29/05/2018

दोसर जेठक अन्हरिया

गणेश चतुर्थी	- 04/06/2018
पदमा एकादशी	- 10/06/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 11/06/2018
प्रदोष चतुर्दशी	- 12/06/2018
मलमासांत	- 13/06/2018

दोसर जेठक इजोरिया

रंभा तृती. गणेश चतुर्थी	- 16/06/2018
निर्जला एकादशी	- 24/06/2018
मैथिल सौराठ सभारंभ	- 25/06/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 25/06/2018
प्रदोष चतुर्दशी	- 26/06/2018
पूर्णिमा स्नान-दान	- 28/06/2018

आषाढ़क अन्हरिया

विघ्नराज चतुर्थी	- 01/07/2018
मैथिल सौराठ सभाअंत	- 05/07/2018
योगिनी एकादशी	- 09/07/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 10/07/2018
प्रदोष चतुर्दशी	- 11/07/2018
अमावसँ स्नान-दान	- 13/07/2018

आषाढ़क इजोरिया

ग्रीष्म नवरात्रारंभ	- 14/07/2018
गणेश चतुर्थी	- 16/07/2018
हरिशयन एकादशी	- 23/07/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 24/07/2018
प्रदोष चतुर्दशी	- 25/07/2018
गुरु पूर्णिमा	- 27/07/2018

साओनक अन्हरिया

सोम व्रतारंभ	- 30/07/2018
गणधिप चतुर्थी	- 31/07/2018
मधुश्रावणी मौना पंचमी	- 02/08/2018
कामदा एकादशी	- 07/08/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 09/08/2018
प्रदोष चतुर्दशी	- 10/08/2018
हरियाली अमावस	- 11/08/2018

साओनक इजोरिया

बरद चतुर्थी	- 14/08/2018
सोमव्रत	- 20/08/2018
पूत्रदा एकादशी	- 21/08/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 23/08/2018
प्रदोष चतुर्दशी	- 24/08/2018
रक्षाबन्धन पूर्णिमा	- 26/08/2018

भादवक अन्हरिया

विनायक चतुर्थी	- 29/08/2018
चन्द्र षष्ठी	- 31/08/2018
कृष्ण जन्म अष्टमी व्रत	- 02/09/2018
कृष्ण जन्म वैष्णव अष्टमी व्रत	- 03/09/2018
अजा एकादशी	- 06/09/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 07/09/2018
प्रदोष चतुर्दशी	- 08/09/2018
कुशी अमावस	- 09/09/2018

आसिनक इजोरिया

हरितालिका तृतीया	- 12/09/2018
चौठ चन्द्र गणेश चतुर्थी	- 13/09/2018
ऋषि पंचमी	- 14/09/2018
राधा अष्टमी	- 17/09/2018
इन्द्रपूजा वामन जयंती	- 21/09/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 22/09/2018
अनन्त चतुर्दशी	- 23/09/2018
अगस्त तर्पण पूर्णिमा	- 25/09/2018

आसिनक अन्हरिया

पितृपक्ष पहिल श्राद्ध	- 26/09/2018
इन्द्रपूजा वि.	- 27/09/2018
गणेश चतुर्थी	- 28/09/2018
जितिया अष्टमी व्रत	- 02/10/2018
मातृ नवमी	- 03/10/2018
इन्दिरा एकादशी	- 05/10/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 06/10/2018
प्रदोष चतुर्दशी	- 07/10/2018
पितृ अमावस	- 08/10/2018
मातामह श्राद्ध	- 09/10/2018

आसिनक इजोरिया

नवरात्रि आरंभ	- 10/10/2018
गणेश चतुर्थी	- 12/10/2018
पाशांकुशा एकादशी	- 20/10/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 22/10/2018
प्रदोष चतुर्दशी	- 23/10/2018
शरद पूर्णिमा कोजागरा	- 24/10/2018

कार्तिक अन्हरिया

करक चतुर्थी	- 27/10/2018
रंभा एकादशी	- 03/11/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 05/11/2018
प्रदोष चतुर्दशी	- 06/11/2018
दीपावली	- 07/11/2018

कार्तिक इजोरिया

गोवर्धन पूजा	- 08/11/2018
भ्रातृ द्वितीया	- 09/11/2018
नहाय खाय	- 11/11/2018
खरना	- 12/11/2018
छठि संध्या अर्घ्य	- 13/11/2018
प्रात: अर्घ्य परणा	- 14/11/2018
अक्षय नवमी	- 17/11/2018
देवोत्थान एकादशी	- 19/11/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 20/11/2018
प्रदोष चतुर्दशी	- 21/11/2018
कार्तिकी पूर्णिमा	- 23/11/2018

अगहनक अन्हरिया

गजानन चतुर्थी	- 26/11/2018
काल भैरब अष्टमी	- 30/11/2018
उत्पन्ना एकादशी	- 03/12/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 04/12/2018
प्रदोष चतुर्दशी	- 05/12/2018
मार्गी अमावस	- 07/12/2018

सामान्य पर्वादिक मन्त्र

✍ पं. श्री भवनाथ झा

सपर्क :
5516/3, फरीदाबाद
मो. 9810024069,
9910024069

1. **साओनक पूर्णिमा केँ रक्षा (राखी) बन्हबाक मन्त्र -**
ऊं येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबल:। तेन त्वां प्रतिबधनामि रक्षे मा चल मा चल।।
2. **भादवक अमावस्याकेँ संग्रहार्थ कुश उखाड़बाक मन्त्र -**
ऊं कुशाग्रे वसते रूद्र: कुशमध्ये तु केशव:। कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान् मे देहि मेदिनी।।
ऊं कुशो'सि कुशपुत्रो'सि ब्रह्मणा निर्मित: पुरा। देव पितृ हितार्थाय कुशमुत्पाटयाम्यहम्।।
3. **भाद्रशुक्ल चतुर्थीचन्द्रक दर्शन करबाक मन्त्र -**
फल लय - सिंह: प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हत:। सुकुमारक मा रोदीस्तयं ह्येष स्यमन्तक:।।
प्रार्थना - नम: शुभ्रांशवे तुभ्यं द्विजराजाय त' नम:। रोहिणीपतये तुभ्यं लक्ष्मीभ्रात्रे नमो'स्तु ते।
दिव्यशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्। नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
4. **भाद्रशुक्ल चतुर्दशी केँ अनन्त धारण करबाक मंत्र** (पुरुष दहिन बांहिं आ स्त्री वाम बांहिंमे बन्हैत छथि) -
प्रार्थना - ऊं अनन्ताय नमस्तुभ्यं सहस्रशिरसे नम:। नमोस्तु पद्मनाभाय नागानां पतये नम:।।
अनन्तसंसारमहासमुद्रे मग्नान् समभ्युद्धर वासुदेव। अनन्तरूपे विनियोजयस्व ह्यानन्तरूपाय नमो नमस्ते।।
बन्धन मन्त्र - ऊं संसारसागरगुहासु सुखं विहर्तु वाञ्छन्ति ये कुरूकुलोभ्द्वशुद्धसत्वा:।
सम्पूज्य च त्रिभुवनेशपनन्तदेवं बध नन्ति दक्षिणकरे वरडोरकन्ते।।
ऊं इदं डोरकमनन्ताख्यं चतुर्दशगुण ाात्मकम् सर्वदेवमयं विष्णो: स्वकरे धारयाम्यहम्।।
5. **भादवक पूर्णिमा केँ अगस्त्यार्घदान (अगस्ति तर्पणक) मन्त्र** - (शंख सँ दक्षिण मुहें अर्घ्यदान करी)
जलअक्षातस्वेतपुष्पलय - ऊं कुम्भयोनिसमुत्पन्न मुनीनां मुनिसत्तम्। उदयन्ते लड्काद्वारे अर्घोऽय प्रतिगृहाताम्।।
फल फूल द्रव्यलय - ऊं शंख पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधाानि च। उदयन्ते लं्काद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
काश-पुष्प लय - ऊं काशपुष्पप्रतीकाश वर्हिमारूत सम्भव। उदयन्ते लेकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
प्रार्थना मन्त्र - ऊं आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबल:। समुद्र: शोषितो येन सँ मंऽगस्त्य: प्रसीदतु।।
आगस्ति पत्नी केँ आर्घ्य - ऊं लोपामुद्रे महाभागे राजपुत्रि पतिव्रते। गृहाणाधर्यं मया दत्तं मैत्राावरूणि वल्लभे।।
6. **तुलासंक्रान्ति (कार्तिक संक्रान्ति) सँ आकाशदीपदानक मन्त्र -**
ऊं दामोदराय नभसि तुलायां लीलया सह। प्रदीपम् जे प्रयच्छकमि नमोऽनन्ताय बेधासे।।
7. **दीपावलिक प्रदोष कालमे उल्का ग्रहण-प्रज्वलन-भ्रमण-विसर्जन सबटा दक्षिण मूहें करी -**
ग्रहण-प्रज्वलन मन्त्र - ऊं शस्त्राशस्त्रहतानां च भूतानां भूतदर्शयो:। उज्ज्वलज्योतिषा देहं निर्दहे व्योमवह्निना।।
भमणमन्त्र- ऊं अग्निदग्धाश्रच सँ जीवा: येप्यदग्धा कुले मम। उज्ज्वलज्योतिषा दग्धास्ते यान्तु परमांगतिम।।
विसर्जन/त्यजनपन्त्र- यमलोकं परित्यज्य आज्ञता ये महालये। उज्ज्वलज्योतिषा वर्त्म प्रपश्यन्तो व्रजन्तु ते।।
8. **भ्रातृद्वितीया दिन भाइ केँ भोजन**

करयबाकाल बहिन केँ निम्न मन्त्र पढ़क चाहि –

छोट बहिन हेतु– भ्रात: तवा'नुजाता'हं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषत:।।

जेठ बहिन हेतु– भ्रात: तवाग्रजाता'हं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषत:।।

9. **देवोत्थान एकादशीक विष्णूत्था–पनक मन्त्र –**

ऊं ब्रहोन्द्ररूद्रैरभिवन्द्यमानो भवानृषिर्वन्दितवन्दनीय:। प्राप्ता तवेयं किल कौमुदाख्या जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ।।

ऊंमेघा गता निर्मलपूर्णचन्द्र: शारद्यपुष्पणि मनोहराणि। अहं ददानीति च पुण्यहेतोर्जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ।।

ऊं उत्तिष्ठोतिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते। त्वया चोत्थीयमानेन उत्थितं भुवनत्रयम्

10. **माघशुक्ल अचला सप्तमी केँ बैर आ आकक पात शिर पर लय स्नान करबाक मन्त्र –**

ऊं यद्यज्जन्मृतं पापं मया सप्तसु जन्मसु। तन्मे रोगं च शोकं च माकरी हन्तु सप्तमी।।

एतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम्। मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताज्ञातं च यत् पुन:।।

इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तसप्तिकेँ सप्तव्याधिसमायुक्तं हर माकरि सप्तमि।।

सूर्यार्घ्य दान – ऊं सप्तसप्तेरह: प्रीते सप्तलोकप्रदीपन। यप्तमीसहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।

प्रणाम् मन्त्र – ऊं जननी सर्वभूतानां सप्तमी सप्तप्तिकेँ सप्तव्याहृतिकेँ देवि नमस्ते रविमण्डले।।

11. **माघशुक्ल भीष्माष्टमी केँ भीष्मक तर्पण करबाक मन्त्र –** (पिताक जिवितो कयल जाइछ)।

तेकुशायवजल लय – ऊं वैयाघ्रपादगोत्राय सांकृतिप्रवराय च। अपुत्राय ददाम्येतज्जलं भीष्माय वर्मणे।।

वसूनामवताराय शान्तनोरात्मजाय च। अर्घ्यं ददामि भीष्माय आबालब्रह्मचारिणे।।

प्रार्थना मन्त्र–ऊं भीष्म: शान्तनवो वीर: सत्यवादी जितेन्द्रिय:। आभिरभ्दिरवाप्नोतु प्रत्रपौत्रोचितां क्रयाम्।।

12. **फाल्गुन पूर्णिमा केँ होलिकादहनक मन्त्र –**

ध्यान मन्त्र – ऊं अस्माभिर्भयसन्त्रस्तै: कृत्वा त्वं होलिकेँ यत:। अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूते भूतिप्रदा भव।।

दाहन मन्त्र – ऊं दीपयामाम्यत्र त' घोरां चितिं राक्षसि त' नम:। हिताय सर्वजगतां प्रीतये पार्वतीपते:।।

भष्म धारण – वन्दिता'सि सुरेन्द्रेण ब्रह्मच्युतशिवादिभि:। अतस्त्वं पाहि नो भीत्या भूषिता भूतिदा भव।।

13. **वैशाख (मेष) संक्रांन्तिकेँ जलपूरिति घटदान विधि –** (ई माता–पिता एवम् स्वयं हेतु कयल जा सकैत अछि)। जाहि निमित्तक जतेक घैल हो, जल भरि क' सरबामे जौ–आम–द्रव्य दय घैलक मूंह झांपि दी। एकटा पात पर एकटा तेकुशा राखी, एकटा पात पर अक्षत–फूल मिला क' अलग आ तिल अलग राखी, तखन एकटा तेकुशा सदिखन हाथमे रखनत्र आगां सब काज करी।

पुष्पाक्षत सँ घैल पर – ऊं वारिपूर्णघटाय नम:। 3 बेर, पात पर राखल तेकुशा पर – ऊं ब्राह्मणाय नम: 3 बेर – तखन तिल–जल लयय (संकल्प)–ऊं अद्य अमुकेँ मासि अमुकेँ पक्षे अमुक तिथौमेषार्कसंक्रमण प्रयुक्तपुण्यकाले अमुकगोत्रस्य मम श्री अमुकशर्मण: सकलपापक्षय पूर्वक ऐहिकसकलमनोरथ सि) पूर्वक अनन्तकालिक स्वर्गप्राप्तिकाम: इमं ब्रह्मविष्णुशिवात्माकं सोपकरण वारिपूर्णघटं वरूणदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाया'हं ददें।।

तेकुशा होथे घैल स्पर्श कय – ऊं एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णु शिवात्मक:। अस्य प्रदानात् सफला मम सन्तु मनोरथ–।।

पुन: तेकुशातिलजल लय, दक्षिणा राखि – ऊं अद्य कृतैतद् वारिपूर्णघट दानप्रतिष्ठार्थ एतावद् द्रव्यमूल्यक हिरण्यम् अग्निदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहं ददे।।

ई स्वयं हेतु घटदानक प्रक्रिया अछि। पितृ–मातृ उद्येश्यक घटदानमे मात्र संकल्म निम्न प्रकारे होयत, शेष पूर्ववते रहत।

मातृ–पितृ उद्येश्यक – ऊं अद्य अमुकेँ मासि अमुकेँ पक्षे अमुक निथौमेषार्कसंक्रमण प्रयुक्तपुण्यकाले अमुकगोत्रस्य पितु: अमुकशर्मण: (अमुकगोत्राया: मातु: अमुकीदेव्या:) स्वर्गप्रप्तिकामनया इमं वारि पूर्णघटं वरूणदैवतं सथानामगोत्राय ब्राह्मणाया'हं ददें।।

14. **वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया) केँ परशुराम केँ अर्घ्य देबाक मन्त्र –**

ऊं जामदग्न्य महावीर क्षत्रियान्तकर प्रभो। गृहाणार्घ्यं मयादात्तं कृपया परमेश्वर।।

आषाढ़शुक्ल रविदिन केँ पुलिकमूल (इसरगत) बन्हबाक मन्त्र –

ऊं शुचिसितदिनकरवारे करमूले बद्धपुलिकमूलस्य। नागारेरिव नागा: प्रयान्ति किल दूरतस्तस्य।।

अन्य व्यवहारिक एवम् सांस्कारिक मन्त्र

✍ पं. श्री भवनाथ झा

वाजसनेयीक यज्ञोपवीतक मन्त्र: ऊं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् आयुष्यमग्यंच प्रतिपुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेज:।

छनदोगक यज्ञोपवीतक मन्त्र: ऊं यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वोपवीतेनोपरह्नमि।।

दूर्वाक्षतक मन्त्र:

ऊं आबह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसि जायतामाराष्ट्रे राजन्य: शूर इषव्यो'तिव्याधी महारथो

जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढ़ान्वानाशु: सप्ति पुरन्धिर्योषा रथेष्ठा: सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतम् निकामे निकामे न: पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधय: पच्यन्ताम् योगक्षेमो न: कल्पताम् मन्त्रार्था: सिद्धय: सन्तु पूर्णा: सन्तु मनोरथा:। शत्रूणां बुद्धिनाशो'स्तु मित्राणामुदयस्तव।।

(एहि सँ आगां पुरुषक हेतु: दीर्घायुर्भव:, आ स्त्रिगणक हेतु - सौभाग्यवती भव, कहल जाइछ)।

वैतरणी गोदान विधि

वैतरणी गोदानक सम्बन्धमे कारी गाय दानक हेतु कहल गेल अछि। अभावमे लोक आनो रंगक गाय अथवा गोमूल्य सेहो दान करैत छथि। कतेक ठाम दान लेनिहार ब्राह्मण उपस्थित रहैत छथिन आ कतेक ठाम नञ। परिस्थिति वश मंत्र आ व्यवस्था बदलि जाइत छैक। कारी गाय हेतु - कृष्ण गवि, बाछा/बाछी सहित हो त' - सवत्सकृष्ण गवि, उज्जर गाय हेतु - कपिल गवि, सेहो बच्चा सहित हो त'-सवत्सकपिल गवि, गायक उपर वस्त्रादि हो त'-सावरण कृष्णगवि, आदि कहक चाहि, आ गोमूल्य हेतु - एतावद्द्रव्यमूल्यक सावरण सवत्सकृष्ण गवि, कहक थिक। ब्राह्मण छथि त' हुनक पैर पर, नञ होथि त' पात पर तेकुशा राखि ताही पर ब्राह्मण छथि त' हुनक पैर पर, नञ होथि त' पात पर तेकुशा राखि ताही पर ब्राह्मणक पूजा करक चाही। एतावता:

दाता पूर्वाभिमुख बैसि शुचि भ' तेकुशा-तिल-जल ल' - ऊं कृष्णगव्यै नम:।।

(सवत्स/सावरण/कपिल/एतावद् द्रव्यमूल्यक यथोपलब्ध वाक्य योजन करी) तीन वेरि गाय पर।। ऊं

ब्राह्मणाय नम:।। तीन वेरि ब्राह्मणक पैर पर अथवा पात पर राखल तेकुशा पर।। ब्राह्मणक उपस्थिति हो त'

तेकुशा हाथे जल ल' - ऊं इमां कृष्णां गां ददानि।। जल ब्राह्मणक हाथमे दी आ ब्राहाण जल लैत - ऊं

ददस्व।। कहथि। तत: दाता गाय कें जल सँ सिक्त क' - ऊं उष्णे वर्षति शीते वा मारूते वाति वा भृशम्।

दातारं त्रायते यस्मात् तस्मात् वैतरण ी स्मृता।। समद्वारे महाघोरे कृष्णा वैतरण ी नदी। तां सन्तर्तु ददाम्यंनां कृष्णां वैतरणीं च गाम्। तत: तेकुशा-तिल-जल ल' - ऊं अद्य अमुकेँ मासि अमुकेँ पक्षे अमुकतिथौ अमुक गोत्रस्य पितु: अमुकशर्मण: यमद्व ारावस्थित वैतरणीनदी सुखसन्तरणकाम इमां कृष्णां गां (एतावद्द्रव्यमूल्यक सवत्सकृष्ण ागवीं) रूद्रदैवताम् यथानामगोत्राय ब्राह्मण ााय दातुमहमुत्सृज्ये।। तत: पात पर दक्षिणा राखि- ऊं तत्सत्।। कहि जल सँ सित्त क' तेकुशा-तिल-जल ल' - ऊं अद्य कृतैतत् कृष्णगवीदान प्रतिष्ठार्थम् एतावद् द्रव्यमूल्यक हिरण्यम् अग्निदैवतम् यथानामगोत्राय ब्राह्मण ााय दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये।। दक्षिणा ब्राह्मण कें द'- ऊं स्वस्ति ।। ई ब्राह्मण कहथि। तत:पर ब्राह्मण गायक नांगरि पकरि क' अपन शाखानुसार कामस्तुति पाठ करथि। यथा- यजुर्वेदी होथि त' - ऊं को दात् कस्पा अदात् कामो दात् कामायादात्। काम: प्रतिगृहीता कामैत्तत्ते।।

सामवेदी होथि त' -

ऊंक इदं कस्मा अदात् कामायादात्।

कामो दाता काम: प्रतिगृहीता काम: समुद्रमाविशत् कामेन त्वा प्रतिगृहामि कामैत्तत्ते।।

दानलेनिहार ब्राह्मणक अनुपस्थितिमे कामस्तुतिक प्रयोजन नञ। इति।।

दाहसंस्कार विधि

कुश आछौल ठइरी पर शव केँ व्यवहारानुसार राखि क' नूतनवस्त्र पुष्पमालादि सँ अलंकृत क'

श्मशान भूमिमे आनि, कार्ता/अग्निदाता स्नान पूर्वक शुचि भ' पूर्वाभिमुख भ' नव मटका (तौला) मे जल भरि तेकुशा हाथे जल केँ अभिमन्त्रित करथि - मन्त्र यथा - ऊं गयादीनि च तीर्थानि ये च पुण्या: शिलोच्चया:। कुरूक्षेत्रं च गंगां च यमुनां च सरिद्वराम्। कौशिकीं चन्द्रभागां च सर्वपाप प्रणाशिनीम्।

भद्रावकाशां सरयूं गण्डकीं तमसां तथा।। धैनवं च वराहं च तीर्थ पिण्डारकं तथा। पृथिव्यां यानि तीर्थानि चतुर: सागरांस्तथा।। ई पढ़ि सब तीर्थक मानसँ ध्यान आ आवाहन कय शव केँ दक्षिण शिर क' स्नान कराय यथा शक्ति वस्त्र-यज्ञोपवीत-पुष्पमाला-चन्दन-सुगन्धादि सँ अलंकृत क' चिता पर उत्तरशिर शयन करावी। (पुरुष केँ अधोमुख आ स्त्री केँ उत्तान राखक लेल कहल गेल अछि। अपन व्यवहारक अनुकूल करी)। चिता केँ काष्ठादि सँ सजा तत: कर्ता अपसव्य भ' दक्षिणाभिमुख भ' आचारात्

हाथमे प्रज्वलित ऊक ल' अगिला दूनू मन्त्र पढ़ि, तीन वेरी चिता कें प्रदक्षिणा क' शव कें मुखाग्नि देथि। मन्त्र यथा – ऊं कृत्वा सुदुष्करं कर्म जानता वाप्यजानता। मृत्युकालवशं प्राप्तं नरं पञ्चत्वमागतम्। धर्माधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतम्। दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकान् सँ गच्छतु।। ततः घृतादिक निक्षेप पूर्वक कपोतावशेष शवदाह क' ऊक पर कुरहैर सँ सात वेर प्रहार क' चिता कें सात वेरि प्रदक्षिणा क' सात टा एक-एक ठुठ्ठीक काठी ल' अगिला मन्त्र पढ़ि बेराबेरी सातो काठी फेकि दी अथवा अपन व्यहार कें अनुसार करी।। मन्त्र यथा – ऊं क्रव्यादाय नमस्तुभ्यम्। ततः शवानुगमन कर्ता (कठियारी गेनिहार) सब गोटे छोट आगु पैघ पाछूक क्रममे एक दोसरक पैरक विनास्पर्श करैत जलाशय जा क' कनेक जलमे जा क' भीजल वस्त्र देह पर ल' क' अपसव्य भ' मोड़ा-तिल ल' मृतकक ध्यान करैक दक्षिणाभिमुख तिलाञ्जलि देथि। मन्त्र यथा – ऊं अद्यामुकगोत्र (पितः) अमुकप्रेत एष तिलतोयाञ्जलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। (संबंधी लोकनि पितः कें स्थान पर अपन सम्बन्धानुसार वाक्य योजन करथि, असंबंधी लोकनि ई शब्द उच्चारण नञ करथि)। ततः अग्निमे जा क' लोह-पाथर-अग्नि-जल स्पर्श व्यवहारानुसार करी। ओना एकर मन्त्र देल गेल अछि। यथा – लौह – ऊं लौहवद् घ्ढ़कायो'स्तु। पाथर स्पर्श – ऊं अश्मेव स्थिरो भूयासम्। अग्नि स्पर्श – ऊं अग्निर्नः शर्म यच्छतु। प्रत्येक वेर जलक स्पर्श विना मन्त्रहिं करी।।

मृतोद्येष्यक सन्ध्या विधि

अस्थिसञ्चयोपरान्त ताही सन्ध्या सँ आरम्भ क' नह-केशक सन्ध्या पर्यन्त करक चाही।

घरक एकटा कोनमे गायक गोबर सँ नीपल जगह पर त्रिकाष्ठ (खड़हीक तेकठी) पर राखल माटिक (कांच) भाण्ड अथवा पिपरक पातक पूड़ामे अलग-अलग जल-दूध-फूलमाला-दीप राखि क' कर्ता दक्षिणाभिमुख भ' बामा जांघ खसा मोड़ा-तिल-जल ल' उपरोक्त प्रत्येक वस्तुक बेराबेरी दान करथि। क्रमयथा – जलदान – ऊं अस्यां सन्ध्यायाम् अमुकगोत्र पितः अमुकप्रेत इदं जलं त' मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ऊं अत्र स्नाहि।। दुग्धदान-ऊं अस्यां सन्ध्यायाम्। ऊं इदं दुग्धं त' मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ऊं इदं दुग्धं पिब।। पुष्पमाल्य दान – ऊं अस्यां सन्ध्याम् अमुकगोत्र पितः अमुकगोत्र पितः अमुकप्रेत एष दीपस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठाताम्। ऊं अनेन पश्य।। इति।।

मिथिलामाहात्म्य

मिथिलां ये नमस्यन्ति देशान्तरगता अपि। तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च जायते नात्र संशयः।।

मिथिलावासमासाद्य जीवन्मुक्तो भवेन्नरः। देहान्ते राघवं प्राप्य तभ्दक्तैः सह मोदते।।

मैथिली शरणम्मम।। कदाचित् अशुद्धिक हेतु क्षमा पार्थी।।

परुङका साल

मैथिली पुत्र प्रदीप भोगेंद्र झा सम्मान से विभूषित

उद्घाटन करते कासिंदसं विवि के वीसी डॉ देवनारायण झा व अन्य

दरभंगा. अखिल भारतीय मिथिला संघ की दिल्ली तथा दरभंगा इकाई के तत्वावधान में आयोजित समारोह में मंगलवार को मैथिली पुत्र प्रदीप को भोगेंद्र झा सम्मान से नवाजा गया. संघ के अध्यक्ष विजय चंद्र झा की अध्यक्षता में आयोजित समारोह का उद्घाटन कासिंद संस्कृत विवि के कुलपति डॉ देवनारायण झा ने इसका उद्घाटन किया.

उन्होंने मैथिली साहित्य के क्षेत्र में ...

चर्चा करते हुए उन्हें संत कवि का ... दिया. अभिनंदन पत्र भीमनाथ झा ... प्रस्तुत किया. समारोह को ब्रजमोहन मिश्र, डॉ प्रेम मोहन मिश्र, डॉ ... कुंवर, डॉ हेमचंद्र झा, राम कु... झा, उदयशंकर मिश्र आदि ने ... विचार व्यक्त किये. स्वागत कार्य... के संयोजक सुरेंद्र नाथ मिश्र ने कि... मौके पर डॉ ममता ठाकुर ने प्र... रचित गीतों की प्रस्तुति दे माहौल ... भक्तिमय बना दिया. संचालन ...

मैथिली पुत्र प्रदीप को भोगेन्द्र झा सम्मा...

दरभंगा | एक प्रतिनिधि

अखिल भारतीय मिथिला संघ दिल्ली एंव दरभंगा की ओर से मंगलवार को जी एम रोड स्थित सीतायन होटल के सभागार में मैथिली पुत्र प्रदीप भोगेन्द्र झा सम्मान से सम्मानित किए गये। केएसडीएस विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ देव नारायण झा ने मैथिली पुत्र को मिथिला चित्र का मोमेन्टो, प्रशस्ति पत्र तथा 5100 रुपये का चेक पुरस्कार के रुप में प्रदान किया।

कुलपति डॉ झा ने मैथिली साहित्य में प्रदीप के अमूल्य योगदान की सराहना की। इससे पूर्व समारोह में पहुंचे मैथिली कलाकार डॉ ममता ठाकुर, पारस पंकज तथा चन्द्रमणि ने प्रदीप रचित भगवति वंदना से समारोह को प्रारंभ किया। समारोह का संचालन अमलेन्दु शेखर पाठक ने किया तथा अभिनंदन पत्र वाचन डॉ भीम नाथ झा ने किया।

समारोह में डॉ ब्रजमोहन मिश्र, डॉ प्रेम मोहन मिश्र, डॉ धर्मेन्द्र कुमर, प्रो. उदय शंकर मिश्र, सीपीआई नेता राम कुमार झा, राम नारायण झा, प्रो. टुनटुन मिश्र, गंगा झा, विनोद कुमार, फूलचन्द्र झा प्रवीण, सुरेन्द्र नारायण मिश्र, चन्द्रशेखर झा बुढ़ा भाई, कमले... ने मैथिली पुत्र के योगदान पर ... प्रकाश डाला।

स्वागत भाषण संघ के ... विद्यानंद ठाकुर ने किया। स... अध्यक्षता संघ के दिल्ली अध्... चन्द्र झा ने की।

प्रदीप को भोगेन्द्र झा सम्मान देते केएसडीएसयू के कुलपति डॉ. देवनारायण झ...

मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह 2016 केर खबरि

AKHIL BHARTIYA MITHILA SANGH

435/7, E BLOCK, SANGAM VIHAR, DELHI - 110062

Balance Sheet As On 31st March 2016

LIABILITIES		Amounts (Rs)	ASSETS		Amounts (Rs)
CAPITAL FUNDS			**FIXED ASSETS**		
Opening Balance	1,621,406.00				
Add: Corpus Fund	708,218.00		FURNITURE	2,453.00	
			Less: Depreciation	245.00	2,208.00
Add : Excess income over expenses during the year	9,610.00	2,339,234.00			
			LAND & BUILDING		
CURRENT LIABILITIES			Najafgarh (Janki Bhawan)	494,814.00	
Expenses Payable (As per Annexure)		466,522.00	Sangam Vihar (Mithila Bhawan)	1,681,427.00	2,176,241.00
			INVESTEMNT		
			Fixed Deposit with Bank	449,079.00	
			Add: Interset Accrued	41,103.00	490,182.00
			CURRENT ASSETS		
			Cash- in- hand		7,570.00
			SBI Current A/c		60,746.00
			SBI Savings A/c		10,282.00
			Syndicate Bank		40,205.00
			TDS Receivable		18,322.00
		2,805,756.00			2,805,756.00

As per our report of even date
For Rajiv Ranjan & Associates
[Chartered Accountant]
[FRN 007225C]

CA Ashutosh Kumar Jha
Partner
M.No.507229
Place: New Delhi
Date: 30-09-2016

(Stamp: RAJIV RANJAN & ASSOCIATES CHARTERED ACCOUNTANTS DELHI)

AKHIL BHARTIYA MITHILA SANGH

PRESIDENT   TREASURER   GEN. SECRETARY

AKHIL BHARTIYA MITHILA SANGH

435/7, E BLOCK, SANGAM VIHAR, DELHI - 110062

Income & Expenditure A/c For The Year Ending 31st March 2016

EXPENDITURE	Amount	INCOME	Amount
To Bank Charges	901.00	By Donation & Other Receipts	804,812.00
To Depreciation	245.00	By Interest from FDR	41,103.00
To Conveyance	22,885.00	By Interest from Savings A/C	1,964.00
To Misc Expenses	400.00		
To Honorarium	60,000.00		
To Smarika Publication	159,390.00		
To Educational Scholarship	11,000.00		
To Environmental Programme	47,155.00		
To Festival Expenses	85,171.00		
To Medical Camp	52,750.00		
To Mithila Diary	22,500.00		
To Poor Relief Programme	49,975.00		
To Printing Statioanry	6,250.00		
To Accounting Charges	10,000.00		
To Meeting & Seminar	5,000.00		
To Mithila Bibhuti Parv Samaroh	289,250.00		
To Postage stamp	9,500.00		
To Audit Fees	5,000.00		
To Assets w/off	147.00		
To Telephone Expenses	750.00		
To Excess of Income Over Expenditure	9,610.00		
	847,879.00		847,879.00

As per our report of even date
For Rajiv Ranjan & Associates
[Chartered Accountant]
[FRN 007225C]

CA Ashutosh Kumar Jha
Partner
M.No.507229
Place: New Delhi
Date: 30-09-2016

(Stamp: RAJIV RANJAN & ASSOCIATES, CHARTERED ACCOUNTANTS, DELHI)

AKHIL BHARTIYA MITHILA SANGH

PRESIDENT | TREASURER | GEN. SECRETARY

AKHIL BHARTIYA MITHILA SANGH

435/7, E BLOCK, SANGAM VIHAR, DELHI - 110062

Balance Sheet As On 31st March 2017

LIABILITIES		Amounts (Rs)	ASSETS		Amounts (Rs)
CAPITAL FUNDS			**FIXED ASSETS**		
Opening Balance	1,631,016.00				
Add: Corpus Fund	1,068,421.00		FURNITURE	2,208.00	
			Less: Depreciation	220.00	1,988.00
Add : Excess income over expenses during the year	8,539.00	2,707,976.00			
			LAND & BUILDING		
CURRENT LIABILITIES			Najafgarh (Janki Bhawan)	494,814.00	
Expenses Payable (As per Annexure)		462,460.00	Sangam Vihar (Mithila Bhawan)	2,031,402.00	2,526,216.00
			INVESTEMNTS		
			Fixed Deposit with Bank	281,223.00	
			Add: Interset Accrued	31,004.00	312,227.00
			CURRENT ASSETS		
			Cash- in- hand		3,270.00
			SBI Current A/c		245,969.00
			SBI Savings A/c		10,805.00
			Syndicate Bank		41,838.00
			TDS Receivable		28,123.00
		3,170,436.00			3,170,436.00

As per our report of even date
For Rajiv Ranjan & Associates
[Chartered Accountant]
[FRN 007225C]

CA Ashutosh Kumar Jha
Partner
M.No.507229
Place: New Delhi
Date: 14-09-2017

RAJIV RANJAN & ASSOCIATES
DELHI
CHARTERED ACCOUNTANTS

AKHIL BHARTIYA MITHILA SANGH

PRESIDENT | ***TREASURER*** | ***GEN. SECRETARY***

AKHIL BHARTIYA MITHILA SANGH

435/7, E BLOCK, SANGAM VIHAR, DELHI - 110062

Income & Expenditure A/c For The Year Ending 31st March 2017

EXPENDITURE	Amount (Rs)	INCOME	Amount (Rs)
To Bank Charges	977.00	By Donation & Other Receipts	730,700.00
To Depreciation	220.00	By Interest from FDR	31,004.00
To Conveyance	14,700.00	By Interest from Saving A/C	2,156.00
To Misc. Expenses	8,050.00		
To Honorarium	60,000.00		
To Smarika Publication	138,600.00		
To Educational Scholarship	11,000.00		
To Environmental Programme	49,750.00		
To Independence day Celebration	6,910.00		
To Medical Camp	53,650.00		
To Social Welfare	10,200.00		
To Poor Relief Programme	50,450.00		
To Printing Staticanry	13,434.00		
To Accounting Charges	10,000.00		
To Meeting & Seminar	44,075.00		
To Mithila Bibhuti Parv Samaroh	260,885.00		
To Pradip Samman Samaroh	12,000.00		
To Audit Fees	10,000.00		
To Electricity Expenses	420.00		
To Excess of Income Over Expenditure	8,539.00		
	763,860.00		763,860.00

As per our report of even date
For Rajiv Ranjan & Associates
[Chartered Accountant]
[FRN 007225C]

CA Ashutosh Kumar Jha
Partner
M.No.507229
Place: New Delhi
Date: 14-09-2017

(Stamp: RAJIV RANJAN & ASSOCIATES, CHARTERED ACCOUNTANTS, DELHI)

AKHIL BHARTIYA MITHILA SANGH

PRESIDENT | TREASURER | GEN. SECRETARY

अखिल भारतीय मिथिला संघक

स्वर्ण जयन्ती समारोह

वास्ते

Reliable
Data Services Ltd.

दिश सं

बहुत रास शुभकामना

निवेदक

अनिल कुमार झा
(निदेशक, आरडीएस)

साल तीन बेहतरीन

"वर्तमान सरकार की जन–कल्याणकारी नीतियों की बदौलत आज हरियाणा विकास की नई बुलन्दियों को छू रहा है। प्रदेश को अग्रिम पंक्ति में बनाए रखने के लिए 'शासन कम–सुशासन अधिकतम' की भावना पर कार्य किया जा रहा है। 'सबका साथ–सबका विकास' की भावना के साथ सभी वर्गों के हित के लिए नित नई योजनाएं क्रियान्वित की जा रही हैं। विकास एवं जन कल्याण द्वारा हरियाणा प्रदेश को देश के मानचित्र पर प्रथम पंक्ति में लाना ही हमारा ध्येय है।

मनोहर लाल, मुख्यमंत्री, हरियाणा

शासन कम–से–कम सुशासन अधिकतम

- सीएम विंडो पर 3,73,139 शिकायतों व सुझावों में से 3,21,729 का समाधान
- सेवा का अधिकार अधिनियम–2014 के तहत 273 सेवाएं अधिसूचित
- ई–दिशा एवं अटल सेवा केन्द्रों के माध्यम से 281 ई–सर्विसिज़
- 9984 स्थापित सांझा सेवा केन्द्रों में से 4979 में सेवाएं शुरू
- ज़मीन की ऑनलाइन खरीद–फरोख्त हेतु 'ई–भूमि' वेब पोर्टल
- पुलिस विभाग में सिटीज़न पोर्टल हरसमय 24x7
- व्यापारियों के लिए ई–रिफंड की ऑनलाइन सुविधा शुरू
- समस्त राज्य पहली अप्रैल, 2017 से कैरोसिन मुक्त घोषित
- अध्यापकों के लिए ऑनलाइन नई स्थानांतरण नीति लागू

नई पहल – नई दिशाएं

वर्तमान सरकार के कार्यकाल की उपलब्धियों की एक झलक

2017

हरियाणा पूर्णतया खुले में शौच मुक्त
सार्वजनिक वितरण प्रणाली
स्वर्ण जयंती स्वच्छता पुरस्कार
स्वर्ण जयंती ग्रामीण विकास निधि योजना
दीनबंधु हरियाणा ग्राम उदय योजना
ई–भूमि वेबपोर्टल
मोटरसाइकिल एम्बुलेंस आरोग्य सेवा
गोल्डन जुबली खेल नर्सरियां

2016

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना
राष्ट्रीय कृषि बाजार पोर्टल कार्यक्रम
प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना
स्वर्ण जयंती महाग्राम विकास योजना
स्वर्ण जयंती गुरु दर्शन यात्रा योजना
स्वर्ण जयंती सिंधु दर्शन यात्रा योजना
ऑनलाइन अध्यापक स्थानान्तरण नीति
बिजली बिल जुर्माना माफी योजना
मुख्यमंत्री सामाजिक सुरक्षा योजना
ई–बिज पोर्टल
दीन–दयाल जन आवास योजना

2015

बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम
सुकन्या समृद्धि खाता योजना
आपकी बेटी–हमारी बेटी योजना
प्रवित ग्रामीण विकास तरुण योजना
हरियाणा खेल एवं शारीरिक उपयुक्तता नीति
सम्पत्ति का ई–रजिस्ट्रेशन
नई आबकारी नीति
ई–दिशा सेवाएं
प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना
प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना
प्रधानमंत्री आवास योजना
प्रधानमंत्री मुद्रा योजना
अटल पेंशन योजना
म्हारा गांव–जगमग गांव
आप्रेशन मुस्कान
हर घर हरियाली योजना
विधायक आदर्श ग्राम योजना
हरियाणा कौशल विकास मिशन
राष्ट्रीय गोकुल मिशन
निवेश एवं उद्यम विकास नीति
थारी पेंशन–थारे पास योजना
गौ–वंश संरक्षण व गौ संवर्द्धन अधिनियम
ई–डैश बोर्ड
स्वदेश दर्शन योजना
एक भारत श्रेष्ठ भारत योजना

2014

सांसद आदर्श ग्राम योजना
स्वच्छ हरियाणा स्वच्छ भारत अभियान
ई–पेंशन स्कीम
नई खनन नीति
सी.एम. विंडो व सी.एम. वेबपोर्टल

वरिष्ठ नागरिकों को सम्मान

- वृद्धावस्था में आय सुनिश्चित करने व असंगठित क्षेत्र के लोगों के लिए अटल पेंशन योजना

कमज़ोर वर्ग का उत्थान

- अनुसूचित जाति के कल्याणार्थ सराहनीय कार्य करने वाली पंचायतों को 50,000 रुपये की प्रोत्साहन राशि
- अनुसूचित जाति व पिछड़े वर्ग के उम्मीदवारों को विभिन्न उच्च प्रतियोगी / प्रवेश परीक्षाओं हेतु मुफ्त प्रशिक्षण
- हरियाणा विमुक्त घुमन्तु जाति विकास बोर्ड का गठन
- सभी श्रेणी के दिव्यांगों को जिला स्तर पर कृत्रिम अंग प्रदान

विवाह शगुन योजना

- मुख्यमंत्री विवाह शगुन योजना के तहत अनुसूचित / विमुक्त / टपरीवास / बीपीएल परिवार तथा सभी वर्ग की विधवाओं को उनकी लड़की की शादी हेतु 51,000 रुपये तक की वित्तीय सहायता
- मुख्यमंत्री सामाजिक समरसता अन्तर्जातीय विवाह योजना के तहत प्रोत्साहन राशि बढ़ाकर की 1,01,000 रुपये

शहीदों का मान

- युद्ध में शहीद सैनिकों व अर्द्धसैनिकों के आश्रितों को अनुग्रह राशि बढ़ाकर 50 लाख रुपये

आर्थिक–सामाजिक सुरक्षा

- सभी प्रकार की सामाजिक पेंशन बढ़ाकर 1600 रुपये मासिक
- 18 वर्ष तक के स्कूल न जा सकने वाले निःशक्त बच्चों को 1,000 रुपये मासिक वित्तीय सहायता
- डीबीटी के माध्यम से शत–प्रतिशत पेंशन सीधे लाभार्थियों के खाते में
- प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत गरीब परिवारों की महिलाओं को गैस कनैक्शन हेतु 1600 रुपये की वित्तीय सहायता

सभी के लिए घर

- आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों के लिए 11,259 ई.डब्ल्यू.एस. फ्लैट्स के निर्माण की मंजूरी
- प्रधानमंत्री आवास योजना 'मिशन सभी के लिए घर 2022' के तहत शहरी गरीबों के आवासीय ऋणों पर ब्याज दरों में 6.5 प्रतिशत रियायत

श्रमिक कल्याण

- वेबसाइट hrylabour.gov.in के माध्यम से योजनाओं का लाभ अधिक से अधिक श्रमिकों तक
- भवन एवं सन्निर्माण कल्याण बोर्ड में अपंजीकृत मजदूर की कार्यस्थल पर दुर्घटना में मृत्यु होने पर सहायता राशि बढ़ाकर 2.5 लाख रुपये
- निःशक्त श्रमिक पेंशन बढ़ाकर 3,000 रुपये मासिक करने की घोषणा

www.haryanacmoffice.gov.in https://twitter.com/cmohry
https://www.facebook.com/HaryanaCMO

सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा

मनोहर सरकार – असरदार सरकार

COMFED
सुधा
वादा शुद्धता का
Sudha Paneer
Sudha Dahi
Sudha Lassi
Sudha Rassogulla
INDIAN SWEETS
Sudha Gulab Jamun
Sudha
Sudha Cham Cham
KALAKAND
Sudha Belgrami
मिथिला दुग्ध संघ
मिथिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लि.
समस्तीपुर डेयरी, औद्योगिक क्षेत्र, पो : हरपुर एलौथ, जिला : समस्तीपुर - 848 101 (बिहार)

सबका साथ-सबका विकास
हरियाणा
साल 3
बेहतरीन
ये तो सबने जाना
सबसे आगे अपना हरियाणा
"हमने अपने प्रदेश को विकास के हर क्षेत्र में अग्रणी राज्य बनाने की ठानी है। अधिकतर क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर ली गई। यह सब आपके अथक परिश्रम एवं सहयोग से ही सम्भव हुआ है। आइए, हम सब हरियाणा को देश का विकसित प्रदेश बनाने का पुनः संकल्प लें।"
मनोहर लाल, मुख्यमंत्री, हरियाणा
वर्ष 2016–17 में प्रति व्यक्ति आय 1,80,174 रुपये, देश के बड़े राज्यों में सर्वाधिक में से एक
पहला प्रमुख राज्य, जहां डी.बी.टी. के माध्यम से शत–प्रतिशत लाभार्थियों की पेंशन सीधा खाते में
पहली बार व्यापारियों हेतु ई–रिफंड की ऑनलाइन सुविधा
देश का पहला राज्य, जहां देसी गाय का पास्चुरीकृत 'ए–2' दूध बीटा बूथों पर उपलब्ध
online
tax refund
पहली बार मूंग की सरकारी खरीद न्यूनतम समर्थन मूल्य पर
NATIONAL INSTITUTE OF DESIGN
ओलम्पिक खेलों में पदक विजेता खिलाड़ियों को दी जाने वाली पुरस्कार राशि देश में सर्वाधिक में से एक
केंद्रीय पूल में खाद्यान्न योगदान देने वाले राज्यों में हरियाणा का दूसरा स्थान
देश की पहली सी.एन.जी. आधारित डी.ई.एम.यू. रेल सेवा रेवाड़ी-रोहतक शुरू
प्रतिदिन प्रति व्यक्ति 878 ग्राम दूध उपलब्धता के साथ हरियाणा देश में दूसरे स्थान पर
उत्तर भारत का पहला राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थान (एन.आई.डी.), कुरुक्षेत्र में स्थापित
गन्ने का भाव 330 रुपये प्रति क्विंटल तक, देश में सर्वाधिक में से एक
देश का पहला डिजिटल जांच, प्रशिक्षण एवं विश्लेषण केंद्र गुरुग्राम में
अन्तर्राष्ट्रीय सौर गठबन्धन का वैश्विक सचिवालय गुरुग्राम में
देश का पहला अत्याधुनिक आंगनवाड़ी केन्द्र 'नंदघर' गांव हसनपुर (सोनीपत) में
सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा

हरियाणा में निवेश कर रहे देश-विदेश

हैपनिंग हरियाणा बना निवेशकों की पहली पसन्द

- गुरुग्राम में जनवरी 2017 को हुए प्रवासी हरियाणा सम्मेलन में **24 एम.ओ.यू. साईन,** जिससे **20,430 करोड़ रुपये का निवेश** होने तथा **लगभग 45,000 लोगों को रोज़गार** मिलने की सम्भावना।
- वर्ष 2016 में गुरुग्राम में आयोजित **'हैपनिंग हरियाणा ग्लोबल इन्वेस्टर्स सम्मिट'** बेहद सफल रहा। वर्ष 2018 में इस सम्मिट का पुनः आयोजन करने का निर्णय।
- युनाइटेड टेक्नोलॉजी कॉरपोरेशन, एलगोनक्वीन कॉलेज, अप्लाईड मैटिरियल, गूगल (डिजिटल साक्षरता हेतु) तथा **सिस्को के साथ पांच महत्वपूर्ण समझौते।**
- जनवरी 2016 में मुख्यमंत्री के **चीन एवं जापान दौरे के दौरान** बीजिंग में सम्भावी निवेशकों के साथ **8 समझौते।**
- सार्वजनिक विकास परियोजनाओं के लिए सरकार को स्वेच्छा से दी गई ज़मीन की खरीद के लिए **ई–भूमि वैबपोर्टल** शुरू।
- सोनीपत के बरही में **177 करोड़ रुपये के निवेश** से मैगा फूड पार्क की स्थापना, जिससे 12,000 व्यक्तियों के लिए रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा

म्हारा हरियाणा
न्यारा हरियाणा

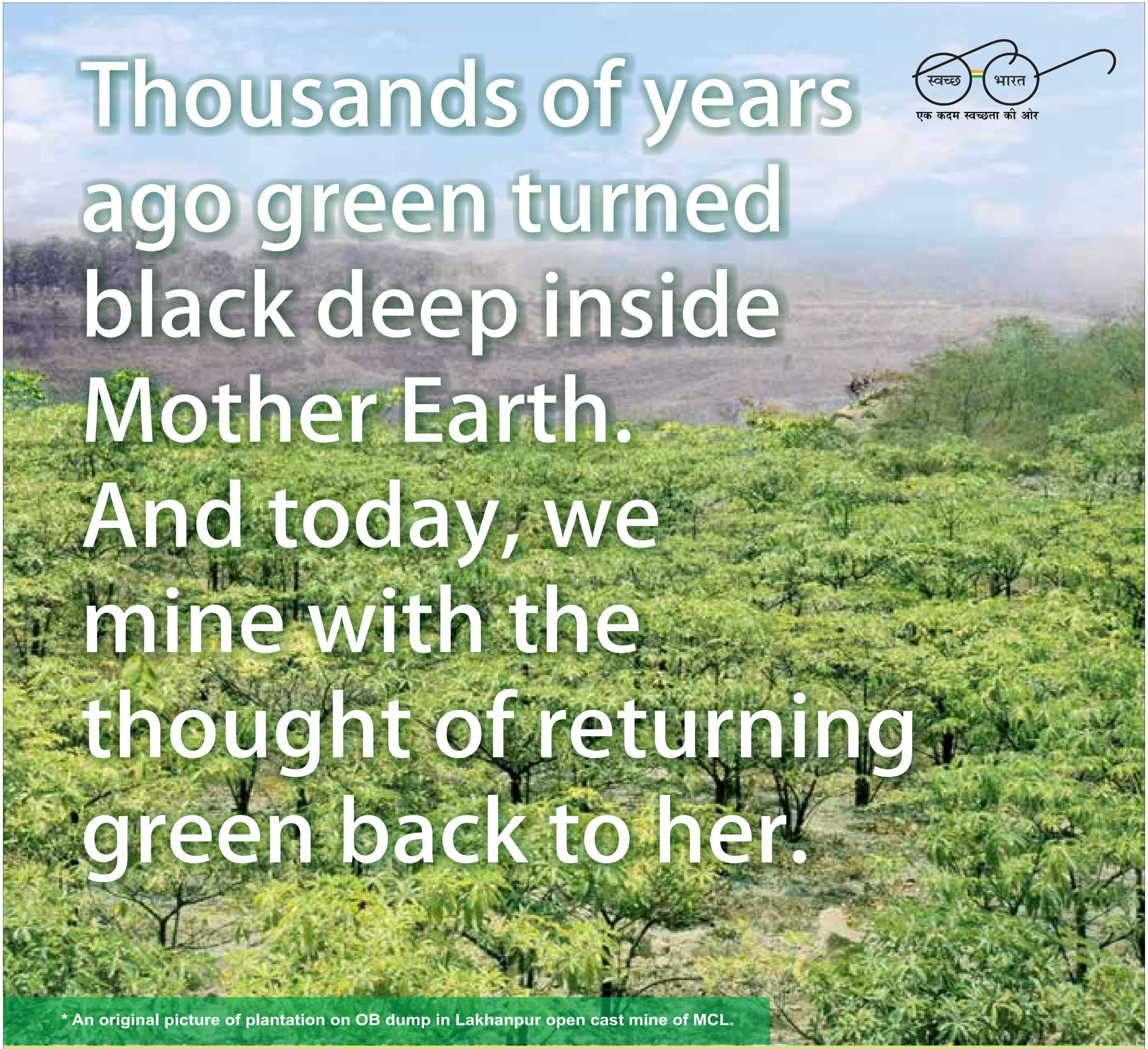

Some of our efforts in a bid to turn Coalfields into 'Green Fields' are.....

- Planting over 5.15 million trees in and around MCL's command area in Odisha.
- Being the 1st company to introduce Eco-friendly Surface Miner In 1999, which completely eliminates drilling, blasting and crushing operations in mining of coal.
- Installing Mobile Water Sprinklers, Fixed Automatic Sprinklers, Instant Showering Systems and Mist Spraying arrangements at CHP to reduce air pollution.
- Treating industrial waste water in Mine Discharge Treatment Plant and introducing Sedimentation ponds, oil & grease traps in workshops and domestic effluent treatment plant in colonies to help minimise pollution.

25 Years of Mining Excellence

ମହାନଦୀ କୋଲ୍‌ଫିଲଡ୍‌ସ୍ ଲିମିଟେଡ୍
महानदी कोलफील्डस लिमिटेड
Mahanadi Coalfields Limited
(A subsidiary of Coal India Limited)

Corporate Office: Jagruti Vihar, Burla, Sambalpur, Odisha - 768 020, www.mahanadicoal.in

प्रकाशक आ मुद्रक विजयचंद्र झा द्वारा अखिल भारतीय मिथिला संघक दिशसँ मकान नंबर एच-435, गली नं. 7, ई-ब्लॉक, संगम विहार, नई दिल्ली-110062 सं प्रकाशित आ जे.के. ऑफसेट, बी-278, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्लीसँ मुद्रित।
संपादक : ऋतेश पाठक